देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
July 2026
Vol.-24

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

नेपाल सम्मेलन विशेषांक

Issue Editor :
Dr. Vikas Sharma

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 24 | जुलाई 2026 (नेपाल सम्मेलन विशेषांक) | ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. विकास शर्मा

गुरू विद्यापीठ, अजायब, रोहतक (हरियाणा)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व शिक्षा अधिकारी,
साहित्यकार,
चरखी दादरी (हरियाणा)

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि.
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी
हिन्दी विभाग, त्रिभुवन वि.वि.
काठमाण्डू, नेपाल।

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता, हिंदी
पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू, नेपाल।

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. इस्पाक अली
पूर्व प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
श्रीराम कॉलेज,
नई दिल्ली।

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास।

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
साहित्यकार व अनुवादक,
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वूमैन
त्रिवन्तपुरम, केरल।

डॉ. शिवकरण निमल
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
एसपीसी राजकीय महा. भीम, राजस्थान।

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
भारत कला भवन
वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत विभाग
हरियाणा सरकार।

डॉ. नीलम आर्या
संस्कृत विभाग
उत्तर प्रदेश।

डॉ. रवि सुण्डयाल
हॉयर एजुकेशन डिपार्टमेंट
जम्मू कश्मीर।

प्रो. नरेन्द्र सोनी
सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी,
हरियाणा सरकार।

डॉ. रोहतास
एस.जी.पी.जी.आई.एम.एस.
लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य,
कैलिफोर्निया।

पठान चिन्ना जानी
सहायक प्राध्यापक
सी.एच.एस.डी. सेंट थेरेसा
महिला महाविद्यालय (ए)
एलुरु, आंध्र प्रदेश

डॉ. वैशाली सिंह
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग, एस.एम.टी. अनार देवी
टी.टी. कॉलेज, बखराना
(कोटपुतली) राजस्थान।

डॉ. रेखा रानी
गवर्नमेंट रणबीर कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. अंकिता चतुर्वेदी, प्रवक्ता
भीमसेन डिग्री कॉलेज
(आगरा यूनिवर्सिटी)

शिओंग छन श्यू
चीन

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अनुक्रमाणिका – जुलाई 2026

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. विकास शर्मा	11–12
2.	हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी क्षितिज (ध्यान सूत्र : एक व्यावहारिक संदर्भ में)	डॉ. अवनिन्द्र कुमार	13–18
3.	भारत–नेपाल संबंधों में साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता : वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ	अनामिका केण्डिया	19–23
4.	Shared Technology for Pollution Control of Himalayan Rivers : A Study Review	Dr. Anita Solanki	24-32
5.	सम्प्रभुता और समानता : आधुनिक कूटनीति के आधार स्तंभ	अंजना ठाकुर	33–35
6.	Availability and Impact of Open Educational Resources for Researchers and Scholars in India and Nepal : Advancing Digital Knowledge Sharing and Cross-Border Academic Collaboration	Dr. Archana Dubey	36-41
7.	नेपाल के संस्कृत–साहित्य पर महाकवि कालिदास का प्रभाव	डॉ. आरती सरोज	42–46
8.	जनकपुर– रामायणकालीन संस्कृति में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम – एक दार्शनिक विश्लेषण	डॉ. बबिता सिंह	47–51
9.	SPIRITUAL EDUCATION AND CULTURAL AWARENESS AS CATALYSTS FOR STRENGTHENING INDO-NEPAL RELATIONS	Baburam K. C.	52-56
10.	भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का एक अध्ययन	प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह	57–64
11.	सांस्कृतिक सेतु तथा भाषाई आदान प्रदान : हिंदी साहित्य के विकास में नेपाली साहित्यकारों की देन	डॉ. दीपिका शर्मा	65–68
12.	मुण्डाओं में विवाह परंपराओं का दस्तावेजीकरण भारत के संदर्भ में	दीत ओड़ेया	69–75
13.	विमुद्रीकरण (DEMONETIZATION) और नेपाल पर इसका प्रभाव	Dr. Dilip Kumar Parsendiya	76-81
14.	An Empirical Study on Foreign Trade of Nepal with India : Strategies for increasing its export	Dr. Indu Kumari	82-88

15.	नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	जसकरण सिंह गिल, नीलम भटेले	89–95
16.	नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन और भारत–नेपाल संबंधों का नया आयाम	डॉ. जितेन्द्र कुमार	96–101
17.	जलवायु परिवर्तन : ग्लेशियरों का पिंघलना और चुनौतियाँ	ज्योति	102–105
18.	**The 1950 Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship : An Article-by-Article Analysis and its Contemporary Relevance**	**Krishnakant Sharma, Akash Pandey**	**106-110**
19.	जनकपुर में मुण्डाओं का रामायण कालीन संस्कृति का जीवंत केंद्र	लेखन प्रकाश मुण्डा	111–116
20.	प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध	डॉ. के. माधवी	117–119
21.	भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध विभिन्न पहलुओं	डॉ. बी. मल्लिका	120–123
22.	भारत के संदर्भ में सार्क (SAARC) एवं बिम्सटेक (BIMSTEC) संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन	**Dr. Manish Choudhary**	**124-127**
23.	चक्रीय अर्थव्यवस्था	डॉ.(श्रीमती) मंजुलता कश्यप	128–131
24.	नेपाल और भारत में मनाए जाने वाले साझा त्योहार : एक सांस्कृतिक अध्ययन	प्रो. मनोहर सिंह मेवाडा	132–135
25.	आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का साझा विकास – भारत और नेपाल के संदर्भ में	नवीन कुमार मिश्र	136–137
26.	स्थल-रूद्ध नेपाल और समुद्री पहुँच : चीन के रणनीतिक विस्तार के परिप्रेक्ष्य में भारत की पारगमन कूटनीति	नेहा नाज	138–142
27.	सीमापार लोकतंत्र की यात्रा : भारत के चुनाव आयोग और नेपाल के मध्य सहयोग का तुलनात्मक विश्लेषण	लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया	143–146
28.	भारत और नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत में नाथ सम्प्रदाय और गुरू गोरखनाथ का प्रभाव : एक मूल्याकंन	डॉ. प्रतिभा राय	147–149
29.	**Media Representation of Janakpur as a Living Center of Ramayana-Era Culture: Implications for India-Nepal Cultural Relations**	**Pratyush Kumar**	**150-153**
30.	**India's Neighbourhood First Policy and Nepal : Advancing Regional Integration and Sustainable Partnership in South Asia**	**Pravesh Bhalse**	**154-158**

31.	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान	प्रिन्स कुमार	159–164
32.	Varanasi : A Historical Hub for Nepali Scholars and Education	Dr. Priya Singh	165-170
33.	Climate Change and the Cryosphere: Melting Glaciers and Challenges in Hindu Kush Himalayan	Dr. Ragini	171-176
34.	Use of Nepali Handicrafts in Indian Temples	Rajan Kar, Dr. Sephali Pradhan	177-179
35.	JANAKPUR : A LIVING CENTER OF RAMAYANA-ERA CULTURE	Ram Ashish Yadav	180-183
36.	भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान	डॉ. रामकली शर्मा	184–189
37.	हिमालयी संगम का भविष्य : भारत–नेपाल संबंध एवं भारत के आंतरिक सुरक्षा परिदृश्यों में मधेशी समुदाय की भूमिका	Raushan Kumar	190-196
38.	ग्रामीण कृषक जीवन में ई–गवर्नेंस का प्रभाव : भारत और नेपाल का एक तुलनात्मक अध्ययन	रविन्द्र सोलंकी	197–199
39.	मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी का समाज पर प्रभाव एवं चुनौतियों का एक अध्ययन (भारत और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों का एक अध्ययन)	समीक्षा झा, प्रो. चंद्रशेखर सिंह	200–204
40.	Climate Change : Melting Glaciers and the Challenge	Dr. Sanjay Kumar Sinha	205-210
41.	हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज	डॉ. सरोज बाला श्याग बिश्नोई	211–217
42.	Sultanpur National Park as a Wintering Ground : Linking the Indo-Gangetic Plains with Himalayan Avian Migration Routes	Seema Kumari, Umesh Kumar	218-221
43.	पारंपरिक लोक संगीत–गंधर्व और भारतीय लोक वाद्ययंत्र (नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्र के संदर्भ में)	डॉ. सेवन्ती डावर	222–226
44.	नेपाली साहित्य में भारतीय कवियों का प्रभाव	डॉ. शबनम खान	227–231
45.	जनकपुर : रामायण कालीन संस्कृति का जीवन केंद्र तथा भारत नेपाल के संबंध	डॉ. शर्मिला चौहान	232–235
46.	नेपाल में पाली और प्राकृत भाषाओं का संरक्षण	शोभा मेवाड़ा	236–238
47.	नेपाल के प्रमुख त्योहार (दशई, तिहार) और भारतीय रूप	सिंगराय मुण्डा	239–243

48.	नेपाल की अर्थव्यवस्था में भारतीय विदेशी प्रत्यक्ष निवेश : एक विश्लेषण	डॉ. सोनम गुप्ता	244–251
49.	**Digital Payments and UPI Expansion in Nepal : Opportunities and Challenges for India–Nepal Economic Cooperation**	**Sonam Yadav**	**252-257**
50.	प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध	डॉ. सुनिता सारस्वत	258–263
51.	नेपाल की लैंड-लाक्ड से लैंड-लिंक्ड बनने की यात्रा	तृप्ति मौर्या	264–268
52.	सार्क के पुनरूद्धार में भारत और नेपाल की भूमिका : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं भविष्य की दिशा	डॉ. विनीता भालसे	269–273
53.	**Himalaya Sangam : A Global Model For World Peace and Stability**	**Dr. Vinita Swarnkar**	**274-279**
54.	**Cartographic Nationalism and Bilateral Diplomacy : From Historical Boundaries to Contemporary Politics in the Nepal–India Border Dispute**	**Yash Singh Thakur**	**280-284**
55.	प्राचीन भारत एवं नेपाल के पौराणिक संबंध धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन	डॉ. वंदना चौहान	185–289
56.	**Digital Inequality and the Reproduction of Social Stratification in South Asia : A Sociological Analysis**	**Dr. Ruqqia Hashmi**	**290-294**
47.	नेपाल और भारत : मानवाधिकार पर सांझा वैश्विक परिदृश्य	डॉ. मो. रियाज खान	295–297

संपादकीय...

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक विरासत, प्राकृतिक संपदा और सभ्यतागत निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। इसी हिमालय की गोद में स्थित भारत और नेपाल सदियों से ऐसे आत्मीय संबंधों से जुड़े रहे हैं, जिनकी जड़ें राजनीतिक सीमाओं से कहीं अधिक गहरी हैं। साझा इतिहास, सांस्कृतिक निकटता, धार्मिक आस्था, भाषायी समानता, पारिवारिक संबंध और परस्पर विश्वास ने दोनों देशों को एक अद्वितीय साझेदारी में बांध रखा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जब अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति निरंतर परिवर्तित हो रही है, तब भारत और नेपाल के संबंधों का अध्ययन नए दृष्टिकोणों और संभावनाओं के साथ करना समय की आवश्यकता बन गया है।

भारत और नेपाल के संबंधों की विशेषता यह है कि ये केवल सरकारों के बीच नहीं, बल्कि जन–जन के बीच स्थापित संबंध हैं। दोनों देशों के नागरिक बिना किसी विशेष प्रतिबंध के आवागमन करते हैं, व्यापार करते हैं, शिक्षा प्राप्त करते हैं और पारिवारिक जीवन का हिस्सा बनते हैं। यह खुलापन और आत्मीयता विश्व के अनेक देशों के लिए एक उदाहरण है। नेपाल की सांस्कृतिक पहचान में भारतीय परंपराओं की झलक दिखाई देती है, वहीं भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक विरासत में नेपाल के पवित्र स्थलों का महत्वपूर्ण स्थान है। जनकपुर, लुंबिनी और पशुपतिनाथ जैसे तीर्थस्थल दोनों देशों की साझी आस्था के केंद्र हैं।

इक्कीसवीं सदी का वर्तमान दौर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण और डिजिटल परिवर्तन का युग है। इस युग में भारत और नेपाल के संबंधों को केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं और चुनौतियों के संदर्भ में भी देखने की आवश्यकता है। आर्थिक विकास, ऊर्जा सुरक्षा, जल संसाधन प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन, सीमा क्षेत्र विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा डिजिटल संपर्क जैसे क्षेत्र दोनों देशों के सहयोग के लिए व्यापक अवसर प्रदान करते हैं।

ऊर्जा क्षेत्र में भारत और नेपाल के बीच सहयोग की अपार संभावनाएँ हैं। नेपाल जल संसाधनों से समृद्ध देश है और जलविद्युत उत्पादन की विशाल क्षमता रखता है। दूसरी ओर भारत ऊर्जा की बढ़ती मांग वाला देश है। यदि दोनों राष्ट्र दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ ऊर्जा साझेदारी को आगे बढ़ाएँ, तो यह न केवल आर्थिक समृद्धि का आधार बनेगी, बल्कि क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा को भी मजबूत करेगी। हरित ऊर्जा और सतत विकास के क्षेत्र में यह सहयोग भविष्य के लिए एक आदर्श मॉडल सिद्ध हो सकता है।

जलवायु परिवर्तन आज हिमालयी क्षेत्र के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। हिमनदों का पिंघलना, अनियमित वर्षा, बाढ़, भूस्खलन और जैव विविधता पर बढ़ते खतरे पूरे क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं। इन चुनौतियों का समाधान किसी एक देश के प्रयासों से संभव नहीं है। भारत और नेपाल को संयुक्त अनुसंधान, पर्यावरण संरक्षण, आपदा पूर्व चेतावनी प्रणाली तथा सतत विकास योजनाओं के माध्यम से साझा रणनीति विकसित करनी होगी। हिमालयी पारिस्थितिकी का संरक्षण दोनों देशों की सामूहिक जिम्मेदारी है।

शिक्षा और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में भी सहयोग के नए आयाम उभर रहे हैं। दोनों देशों के विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों और अकादमिक समुदायों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देकर ज्ञान–आधारित समाज के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा, बौद्ध एवं वैदिक अध्ययन, योग, आयुर्वेद, संस्कृति, भाषा और साहित्य जैसे विषय साझा अकादमिक सहयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकते हैं।

पर्यटन भी भारत–नेपाल संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार है। धार्मिक, सांस्कृतिक, साहसिक और पर्यावरणीय पर्यटन की दृष्टि से दोनों देशों के पास असाधारण संभावनाएँ हैं। रामायण सर्किट, बौद्ध सर्किट तथा हिमालयी पर्यटन परियोजनाएँ न केवल आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकती हैं, बल्कि जन–से–जन संपर्क को भी सुदृढ़ बना सकती हैं। पर्यटन के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और स्थानीय रोजगार सृजन के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

डिजिटल युग में तकनीकी सहयोग का महत्व और अधिक बढ़ गया है। डिजिटल भुगतान प्रणाली, ई–गवर्नेंस, साइबर सुरक्षा, स्टार्टअप संस्कृति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और नवाचार आधारित उद्योगों में सहयोग दोनों देशों को नई दिशा प्रदान कर सकता है। युवा शक्ति और उद्यमशीलता के क्षेत्र में साझेदारी भविष्य की अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार बन सकती है।

यद्यपि समय–समय पर कुछ राजनीतिक, कूटनीतिक और सीमा संबंधी मुद्दे सामने आते रहे हैं, तथापि दोनों देशों ने संवाद और आपसी समझ के माध्यम से संबंधों को निरंतर आगे बढ़ाया है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि भारत और नेपाल के संबंधों की वास्तविक शक्ति उनकी सांस्कृतिक निकटता और जनविश्वास में निहित है। यही आधार भविष्य की चुनौतियों का समाधान खोजने में सहायक होगा।

'हिमालयी संगम' वस्तुतः साझा विरासत, साझा जिम्मेदारी और साझा भविष्य का प्रतीक है। यह केवल दो देशों के बीच सहयोग की अवधारणा नहीं, बल्कि पूरे हिमालयी क्षेत्र में शांति, समृद्धि, पर्यावरणीय संतुलन और मानवीय विकास की व्यापक परिकल्पना है। आज आवश्यकता इस बात की है कि दोनों राष्ट्र अपनी ऐतिहासिक मित्रता को आधुनिक संदर्भों में नई ऊर्जा प्रदान करें तथा सहयोग के उन नए क्षितिजों को स्पर्श करें जो आने वाली पीढ़ियों के लिए विकास, स्थिरता और सद्भाव का मार्ग प्रशस्त करें।

इस संगोष्ठी का विषय हमें यह स्मरण कराता है कि भारत और नेपाल का भविष्य परस्पर सहयोग, विश्वास और साझा विकास की भावना में निहित है। हिमालय की ऊँचाइयों की भाँति दोनों देशों की मित्रता भी निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे और मानवता के कल्याण, क्षेत्रीय शांति तथा सतत विकास का मार्ग प्रशस्त करे– यही इस विमर्श का मूल संदेश है।

–संपादक

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 13-18

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी क्षितिज (ध्यान सूत्र : एक व्यावहारिक संदर्भ में)

डॉ. अवनिन्द्र कुमार

शोधार्थी, बौद्ध–अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

1. सार :

भारत और नेपाल का सम्बन्ध केवल भौगोलिक पड़ोस का सम्बन्ध ही नहीं है। बल्कि यह एक गहरे सभ्यतागत संगम का सम्बन्ध है, जिसकी जड़ें 'बुद्ध की जीवन–यात्रा' में निहित हैं। भगवान बुद्ध का जन्म नेपाल की लुम्बिनी भूमि में हुआ और उनका 'सम्बोधि–लाभ भारत की बोधगया' में हुआ। इसी साझी आध्यात्मिक भूमि को मैं 'हिमालयी संगम' कहता हूँ। प्रस्तुत शोध पत्र इस संगम को किसी अमूर्त विचार के रूप में नहीं बल्कि एक मूर्त वस्तु के माध्यम से समझने का प्रयास करता है। वह वस्तु है 'नादपात्र' जिसे आज संसार 'सिंगिंग बाउल' के नाम से जानता है। यह नादपात्र विश्व–बाजार में तिब्बती कहलाया किंतु इसकी वास्तविक उत्पत्ति नेपाल और उत्तरी भारत की हिमालयी बौद्ध परम्परा में हुई। इसकी नाद–तरंग ध्यान का आलंबन बनती है और यहीं यह मेरे पूर्व–प्रतिपादित चित्त–आलंबन–नियंत्रणा सिद्धांत का जीवंत उदाहरण बन जाती है। इस प्रकार एक अकेली वस्तु आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक और भविष्य की कूटनीतिक तीनों धाराओं को एक सूत्र में पिरो देती है। यही मेरे इस शोध पत्र का केंद्रीय प्रतिपाद्य है।

मुख्य शब्द : हिमालयी संगम, भारत–नेपाल संबंध, नादपात्र, बुद्ध, लुम्बिनी, बोधगया, चित्त–आलंबन, सांस्कृतिक कूटनीति।

2. प्रस्तावना :

हिमालय को प्रायः एक दीवार के रूप में देखा जाता रहा है जो भूखंडों को विभाजित करती है। किंतु इतिहास की गहराई में उतरने पर हिमालय एक दीवार नहीं बल्कि एक मिलन–स्थल प्रतीत होता है। भारत और नेपाल इसी मिलन–स्थल की दो भुजाएँ हैं। दोनों के बीच जो सेतु है वह केवल व्यापार और सीमा का नहीं है। वह धर्म और भाषा और तीर्थ की साझी विरासत का सेतु है।

इस एक उद्घोष में दोनों राष्ट्रों की आत्मा एक साथ गूँजती है। जिस महामानव ने संसार को करुणा और प्रज्ञा का मार्ग दिखाया उसका जन्म नेपाल की लुम्बिनी भूमि में हुआ। और जिस वृक्ष के नीचे उसे सम्बोधि प्राप्त हुई वह बोधगया भारत की धरती पर खड़ा है। जन्म नेपाल में और ज्ञान भारत में। यही वह आधारभूत सत्य है

जो भारत और नेपाल को किसी भी अन्य द्विपक्षीय सम्बन्ध से भिन्न और अद्वितीय बना देता है। बुद्ध पर न केवल नेपाल का अधिकार है और न केवल भारत का। बुद्ध इस संगम की साझी निधि हैं।

जब मैं इस साझी विरासत पर विचार करता हूँ तब मुझे यह प्रश्न उद्वेलित करता है कि क्या इस अमूर्त सभ्यतागत बंधन को किसी ठोस और इंद्रिय–ग्राह्य वस्तु के माध्यम से समझा जा सकता है। इसी जिज्ञासा ने मुझे नादपात्र तक पहुँचाया। यह वही धातु–पात्र है जो आज ध्यान–कक्षों से लेकर चिकित्सा–केंद्रों तक अपनी गूँज फैला रहा है।

इस आधार पर मैं अपना केंद्रीय शोध–प्रश्न रखता हूँ। एक अकेली सांस्कृतिक वस्तु नादपात्र किस प्रकार भारत–नेपाल के युगीन संगम को मूर्त रूप देती है और उसकी ध्यान–साधना में प्रयुक्त नाद किस प्रकार चित्त–आलंबन–नियंत्रणा के सिद्धांत को सिद्ध करता है। साथ ही यह संगम भविष्य के किन बहुआयामी क्षितिजों की ओर संकेत करता है।

3. साहित्य-समीक्षा एवं पूर्व-मत :

इस शोध से दो भिन्न विमर्श जुड़े हुए हैं और दोनों की समीक्षा यहाँ आवश्यक है।

पहला विमर्श नादपात्र की उत्पत्ति को लेकर है। विश्व–बाजार में यह पात्र तिब्बती सिंगिंग बाउल के नाम से इतना प्रचलित हुआ कि अधिकांश लोग इसे तिब्बत की देन मान बैठे। किंतु गहन अध्ययन इस धारणा को चुनौती देता है। एक तिब्बती लेखक ने स्वयं टोरंटो स्टार में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध आलेख में स्पष्ट लिखा कि तिब्बती सिंगिंग बाउल वस्तुतः तिब्बती नहीं हैं। ऐतिहासिक प्रमाण यह संकेत नहीं देते कि इन पात्रों की उत्पत्ति तिब्बत में हुई। थाईलैंड के एक नाद–चिकित्सक अमन शाही का कथन है कि उस समय के अनेक व्यापारियों ने इन पात्रों को तिब्बती बताकर बेचा क्योंकि इससे इनका मूल्य बढ़ जाता था। वास्तव में ये नेपाल में ही बनाए गए थे। अधिकांश इतिहासकार नेपाल और उत्तरी भारत को ही इनका वास्तविक उद्‌गम मानते हैं और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि नेपाल बुद्ध की जन्मभूमि है।

इस मत को नेपाली नामकरण से भी बल मिलता है। नेपाली भाषा में इस पात्र को डबका अथवा बती अथवा बाटा कहा जाता है जिसका अर्थ ही कटोरा है। प्रचलित नेपाली नादपात्रों में थडोबती और जमबती तथा उल्टाबती और रेमुना एवं नागा प्रकार आते हैं। भारतीय पक्ष भी कम सबल नहीं है। हिंदू अनुष्ठानों में घंटियों का प्रचलन और घ का उच्चारण इस ओर संकेत करते हैं कि उत्तरी भारत का हिमालयी क्षेत्र भी इन खड़ी घंटियों का उद्‌गम रहा। कुछ देशज पात्र तो सीधे भारतीय मूल की ओर इंगित करते हैं जैसे शिव से जुड़ा लिंगम पात्र और भारतीय राज्य के नाम पर मणिपुरी पात्र तथा संस्कृत के मुद्रा शब्द से जुड़ा मणि पात्र हैं।

इन दोनों पक्षों की एक साझी सीमा यह है कि लोकप्रिय तिब्बती नाम ने नेपाल और भारत की वास्तविक हिमालयी जड़ों को धुँधला कर दिया। मेरे विचार में इस धुँधलके को हटाना केवल ऐतिहासिक न्याय नहीं है। यह भारत–नेपाल के साझे सांस्कृतिक अधिकार की पुर्नस्थापना भी है।

दूसरा विमर्श भारत–नेपाल सम्बन्धों की प्रकृति को लेकर है। एक दृष्टि इन सम्बन्धों को मात्र सामरिक और आर्थिक हितों की दृष्टि से देखती है। दूसरी दृष्टि इन्हें सभ्यतागत और आध्यात्मिक विरासत की निरंतरता के रूप में समझती है। मेरा झुकाव दूसरी दृष्टि की ओर है क्योंकि नादपात्र जैसा एक छोटा–सा उदाहरण भी यह सिद्ध करता है कि इन दोनों राष्ट्रों की एकता बाजार से नहीं बल्कि बुद्ध से उपजी है।

4. शोध-पद्धति :

यह शोध तीन पद्धतियों के समन्वय पर आधारित है। पहली पद्धति पाठ–विश्लेषण की है जिसमें बौद्ध ग्रंथों और नादपात्र से जुड़े ऐतिहासिक विवरणों का अध्ययन किया गया है। दूसरी पद्धति सांस्कृतिक–ऐतिहासिक विवेचन की है जिसमें भारत–नेपाल की साझी विरासत के मूर्त प्रतीकों को परखा गया है। तीसरी पद्धति तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण की है जिसके माध्यम से नादपात्र की ध्यान–उपयोगिता को चित्त–आलंबन–नियंत्रणा के सिद्धांत से जोड़ा गया है।

प्राथमिक स्रोतों में बौद्ध परम्परा के ग्रंथ और लुम्बिनी तथा बोधगया से जुड़े ऐतिहासिक साक्ष्य सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में नादपात्र के इतिहास पर उपलब्ध समकालीन विवरण और भारत–नेपाल सम्बन्धों पर हो रहा सांस्कृतिक विमर्श सम्मिलित है। इस प्रकार आध्यात्मिक प्रमाण और ऐतिहासिक साक्ष्य दोनों को एक साथ रखकर निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

5. मुख्य विश्लेषण एवं तर्क :

5.1 हिमालयी संगम का दार्शनिक आधार :

भारत–नेपाल सम्बन्ध की आत्मा को समझने के लिए मानचित्र से अधिक तीर्थ–पथ की ओर देखना होगा। बुद्ध की समस्त जीवन–यात्रा इन दोनों भूखंडों पर अंकित है। लुम्बिनी में जन्म और कपिलवस्तु में बाल्यकाल नेपाल से जुड़े हैं। बोधगया में सम्बोधि और सारनाथ में प्रथम धर्म–चक्र–प्रवर्तन तथा कुशीनगर में महापरिनिर्वाण भारत से जुड़े हैं। यह एक ही जीवन की धारा है जो सीमारेखाओं की परवाह किए बिना दोनों देशों में बहती है। इसी कारण मैं इस सम्बन्ध को हिमालयी संगम कहता हूँ। जैसे प्रयाग में दो नदियाँ मिलकर एक हो जाती हैं और फिर यह कहना कठिन हो जाता है कि कौन–सी जलधारा किसकी है वैसे ही बुद्ध की विरासत में नेपाल और भारत इस प्रकार घुले–मिले हैं कि उन्हें अलग करना न सम्भव है और न उचित। यह संगम ही वह दार्शनिक आधार है जिस पर शेष समस्त विश्लेषण खड़ा है।

5.2 नादपात्र : एक व्यावहारिक उदाहरण :

इस अमूर्त संगम को मैं एक मूर्त वस्तु के माध्यम से स्पष्ट करना चाहता हूँ। वह वस्तु है नादपात्र। यह उलटी रखी घंटी के समान एक धातु–पात्र है जो छड़ी के स्पर्श से एक गहरी और निरंतर गूँज उत्पन्न करता है। इसे खड़ी घंटी अथवा उपचार–पात्र अथवा प्रार्थना–पात्र अथवा ध्यान–पात्र भी कहा गया है।

इस पात्र की रचना ही दोनों देशों के संगम की कथा कहती है। यह साधारण धातु से नहीं बनता। परम्परागत रूप से यह पंचधातु अथवा सप्तधातु के मिश्रण से ढाला जाता है जिसमें ताँबा और राँगा तथा जस्ता और लोहा एवं सीसा के साथ सोना और चाँदी सम्मिलित होते हैं। नेपाल की काठमांडू घाटी के कुशल कारीगरों का इस शिल्प में सबसे बड़ा योगदान रहा है। उत्तरी भारत की धातु–परम्परा और ऊँ की अंकित लिपि इसे भारतीय आध्यात्मिकता से जोड़ती है। इस प्रकार एक ही पात्र में नेपाल का शिल्प और भारत का मंत्र दोनों एक साथ ढल जाते हैं।

इस पात्र का प्रयोग कोई नया चलन नहीं है। हिमालयी क्षेत्र में दो हजार वर्षों से अधिक समय से इसका उपयोग ध्यान और आध्यात्मिक अनुष्ठानों तथा नाद–चिकित्सा के लिए होता आया है। कुछ विवरण इसकी तकनीक को और भी प्राचीन मानते हैं और इसके प्रसार को रेशम–मार्ग से जोड़ते हैं। बीसवीं शताब्दी के सातवें

दशक के बाद यह पूरे विश्व में ध्यान और नाद–उपचार के माध्यम के रूप में प्रसिद्ध हुआ। मेरे लिए यह तथ्य विशेष महत्त्व रखता है कि जो वस्तु बुद्ध की भूमि से उपजी वही आज विश्व के मन को शांति देने का साधन बनी हुई है।



चित्र 1 : परम्परागत हिमालयी नादपात्र जिसे विश्व सिंगिंग बाउल के नाम से जानता है।

5.3 ध्यान सूत्र से सम्बन्ध :

अब मैं उस बिंदु पर पहुँचता हूँ जहाँ यह सांस्कृतिक वस्तु एक गहन ध्यान–सिद्धांत की व्याख्या बन जाती है। नादपात्र पर जब छड़ी का आघात होता है तब एक तीव्र ध्वनि उत्पन्न होती है। यदि उस छड़ी को पात्र के किनारे पर निरंतर घुमाते रहें तो वह ध्वनि बिना किसी नए आघात के देर तक बनी रहती है। और जैसे ही छड़ी की गति रुकती है ध्वनि भी शांत हो जाती है।

ध्यान–साधना से इसका साम्य गहरा है। आरंभिक श्वास वह प्रथम आघात है जो साधक को समाधि में प्रवेश कराता है। उसके बाद कर्मस्थान पर टिका चित्त उस छड़ी की निरंतर गति के समान है जो बिना नए स्थूल श्वास के समाधि को बनाए रखता है। यहीं मेरा चित्त–आलंबन–नियंत्रणा सिद्धांत मूर्त रूप ले लेता है। काँसे पर चोट लगने के बाद जो सूक्ष्म प्रतिध्वनि देर तक गूँजती रहती है वही चित्त में निमित्त–आलंबन बन जाती है। अर्थात नाद का चित्त में रूपांतरण ही ध्यान का वास्तविक आधार है। इस प्रकार नादपात्र केवल एक वाद्य नहीं है। वह ध्यान–विज्ञान का एक मूर्त सूत्र है। यही इस शोध के उपशीर्षक का अभिप्राय है कि ध्यान सूत्र को एक व्यावहारिक उदाहरण के रूप में देखा जाए।

नीचे दी गई तालिका इस त्रि-आयामी संगम को स्पष्ट करती है।

आयाम	नादपात्र का स्वरूप	संगम का प्रकटीकरण
शिल्प एवं भौतिक	काठमांडू घाटी का धातु–शिल्प तथा भारतीय ॐ–लिपि	नेपाल का शिल्प एवं भारत का मंत्र एक पात्र में
आध्यात्मिक	नाद का ध्यान–आलंबन के रूप में प्रयोग	चित्त–आलंबन–नियंत्रणा का मूर्त उदाहरण
सांस्कृतिक एवं	बुद्ध की भूमि से	साझी विरासत का
वैश्विक	उपजकर विश्व तक प्रसार	सार्वभौमिक विस्तार

6. समकालीन एवं तुलनात्मक दृष्टि : बहुआयामी क्षितिज :

यह संगम केवल अतीत की स्मृति नहीं है। यह भविष्य की अनेक सम्भावनाओं का द्वार भी है। नादपात्र

के उदाहरण से मुझे एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा मिलती है। जिस वस्तु को तिब्बती ब्रांड ने वैश्विक पहचान दी वही वस्तु अपने वास्तविक उद्‌गम से वंचित रह गई। यदि भारत और नेपाल मिलकर इस विरासत को हिमालयी पहचान के रूप में प्रस्तुत करें तो यह विवाद का नहीं बल्कि सहयोग का विषय बन सकता है।

पहला क्षितिज सांस्कृतिक कूटनीति का है। लुम्बिनी और बोधगया तथा सारनाथ एवं कुशीनगर को जोड़ने वाला बौद्ध तीर्थ–परिपथ दोनों देशों को एक साझे पर्यटन–मानचित्र पर ला सकता है। दूसरा क्षितिज आरोग्य और नाद–चिकित्सा का है। आज जब विश्व मानसिक तनाव से जूझ रहा है तब नादपात्र पर आधारित नाद–उपचार एक उभरता हुआ क्षेत्र है। यह क्षेत्र दोनों देशों के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से लाभकारी हो सकता है। तीसरा क्षितिज सामुदायिक शिल्प का है। काठमांडू घाटी के कारीगरों के पारम्परिक ज्ञान और भारत की विशाल धातु–शिल्प परम्परा को जोड़कर एक साझा कौशल–तंत्र विकसित किया जा सकता है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो भारत–नेपाल का यह सभ्यतागत बंधन विश्व के अन्य द्विपक्षीय सम्बन्धों से इसलिए भिन्न है क्योंकि इसकी नींव किसी संधि–पत्र में नहीं बल्कि एक साझे आध्यात्मिक अनुभव में है। यही अनुभव इस सम्बन्ध को स्थायित्व देता है। बुद्ध का दिखाया मार्ग दोनों देशों की साझी पूँजी है और नादपात्र उस पूँजी का एक मूर्त सिक्का है।

7. नवीन योगदान :

इस शोध का मौलिक योगदान यह है कि यह भारत–नेपाल सम्बन्ध को किसी अमूर्त राजनयिक ढाँचे के स्थान पर एक मूर्त सांस्कृतिक वस्तु के माध्यम से प्रस्तुत करता है। मैं इसे संगम–प्रतिमान कहना चाहूँगा। इस प्रतिमान के अनुसार किसी साझी विरासत की वस्तु को विवाद का विषय न बनाकर सहयोग का सेतु बनाया जा सकता है।

नादपात्र इस प्रतिमान का आदर्श उदाहरण है क्योंकि यह एक साथ चार धरातलों को जोड़ता है। यह आध्यात्मिक धरातल पर ध्यान का आलंबन है। यह सांस्कृतिक धरातल पर साझी विरासत का प्रतीक है। यह आर्थिक धरातल पर शिल्प और आरोग्य–उद्योग का आधार है। और यह कूटनीतिक धरातल पर सद्‌भावना का माध्यम है। इन चारों धरातलों को एक वस्तु में पिरो देना ही इस शोध की नवीनता है। मेरा विश्वास है कि यह संगम–प्रतिमान भविष्य के सांस्कृतिक अध्ययनों के लिए एक नई दिशा खोलता है जिसमें छोटी वस्तुओं के माध्यम से बड़े सभ्यतागत सम्बन्धों को समझा जा सकता है।

8. निष्कर्ष :

इस समस्त विवेचन का सार यह है कि भारत और नेपाल का सम्बन्ध एक साधारण पड़ोस का सम्बन्ध नहीं है। यह बुद्ध की भूमि का साझा उत्तराधिकार है। लुम्बिनी का जन्म और बोधगया का ज्ञान मिलकर एक ऐसा हिमालयी संगम रचते हैं जिसका कोई दूसरा प्रतिमान संसार में नहीं है। नादपात्र इस संगम का मूर्त उदाहरण है। उसके निर्माण में नेपाल का शिल्प है और उसकी लिपि में भारत का मंत्र है और उसकी गूँज में सम्पूर्ण मानवता के लिए शांति का संदेश है।

मैं इस नादपात्र को केवल एक वस्तु के रूप में नहीं बल्कि एक जीवन–सूत्र के रूप में देखता हूँ। जैसे उसकी ध्वनि आघात से उठकर चित्त में विलीन हो जाती है वैसे ही दो राष्ट्रों के बीच का यह सम्बन्ध इतिहास से उठकर भविष्य में विलीन होता जाएगा। भावी शोध की दृष्टि से अनेक सम्भावनाएँ खुली हैं। नादपात्र की

धातु–संरचना और उसकी नाद–आवृत्ति का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सकता है। बौद्ध तीर्थ–परिपथ की साझी ब्रांडिंग पर अध्ययन हो सकता है। और नाद–चिकित्सा के क्षेत्र में दोनों देशों के संयुक्त अनुसंधान की रूपरेखा बनाई जा सकती है। अंत में मैं इस शोध का सार एक पंक्ति में कहना चाहूँगा।

"जहाँ एक का जन्म और दूसरे का ज्ञान मिलते हैं, वहीं हिमालय का सच्चा संगम बजता है, और उसी संगम की गूँज है यह नादपात्र।"

9. संदर्भ-ग्रंथ-सूची :

- उपाध्याय, बलदेव. 1999. बौद्ध दर्शन एवं निबंध मीमांसा. वाराणसी : चौखंबा विद्याभवन.
- जैन, धर्मचंद. 1983. बौद्ध सिद्धांतों का विवेचन. कुरुक्षेत्र : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय.
- त्रिपाठी, रमाशंकर. अभिधम्मसंग्रहो, भाग 1 एवं 2. वाराणसी : संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय.
- द ओम स्टोर. द वाइल्ड एंड फैसिनेटिंग हिस्ट्री ऑफ सिंगिंग बाउल्स : व्हेयर डिड सिंगिंग बाउल्स ऑरिजिनेट फ्रॉम? theohmstore.co.
- रेवनसाउंड्स. हिस्ट्री एंड ओरिजिन ऑफ सिंगिंग बाउल्स. ravensounds.com.
- शास्त्री, स्वामी द्वारिका दास. 1998. महावग्गपालि. वाराणसी : बौद्ध भारती.
- शीलखन्धवग्ग–पाली. 1998. इगतपुरी : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरी.
- सराओं, के.टी.एस. 2005. प्राचीन भारतीय बौद्ध–धर्म : उद्‌भव, स्वरूप एवं पतन. दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
- टोरंटो स्टार. तिब्बतन सिंगिंग बाउल्स आर नॉट तिब्बतन : सिंसियरली अ तिब्बतन पर्सन. टोरंटो.
- टेन थाउजेंड विलेजेज. सिंगिंग बाउल्स : मेटीरियल एंड ट्रेडिशन. tenthousandvillages.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 19-23

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत–नेपाल संबंधों में साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता : वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

अनामिका केण्डिया
पी.एच.डी. शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महू, इंदौर (म.प्र.)

सारांश :

21वीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने विश्व को डिजिटल युग में प्रवेश कराया है। भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ रहे हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, व्यापारिक गतिविधियों, डिजिटल सेवाओं एवं इंटरनेट उपयोग में वृद्धि ने विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं, किन्तु इसके साथ–साथ साइबर अपराध, डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी, साइबर आतंकवाद तथा डिजिटल सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। वर्तमान समय में साइबर सुरक्षा किसी एक देश की समस्या नहीं बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बन चुकी है। भारत और नेपाल के बीच साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि दोनों देशों के नागरिक, संस्थान और सरकारी तंत्र डिजिटल माध्यमों पर तेजी से निर्भर हो रहे हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत–नेपाल साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता, वर्तमान चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : साइबर सुरक्षा, भारत–नेपाल संबंध, डिजिटल सुरक्षा, साइबर अपराध, डेटा संरक्षण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग।

1. प्रस्तावना :

वर्तमान युग को डिजिटल युग कहा जाता है। इंटरनेट, मोबाइल तकनीक, डिजिटल भुगतान, ई–गवर्नेंस, सोशल मीडिया तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। भारत और नेपाल दोनों ही देश डिजिटल परिवर्तन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। भारत में डिजिटल इंडिया अभियान तथा नेपाल में डिजिटल गवर्नेंस और सूचना प्रौद्योगिकी विस्तार कार्यक्रमों ने नागरिकों को अनेक ऑनलाइन सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं। भारत और नेपाल के बीच लगभग 1,850 किलोमीटर लंबी खुली सीमा है, जिसके कारण दोनों देशों के नागरिकों का आवागमन, व्यापार एवं सामाजिक संपर्क अत्यंत सहज है। यही विशेषता साइबर अपराधियों के लिए भी अवसर उत्पन्न करती है। साइबर अपराध की घटनाएँ सीमाओं से बंधी नहीं होतीं, इसलिए इनके नियंत्रण के लिए द्विपक्षीय सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

2. भारत–नेपाल संबंधों का डिजिटल परिप्रेक्ष्य :

भारत और नेपाल के संबंध प्राचीन काल से ही ''रोटी–बेटी'' के संबंध के रूप में जाने जाते हैं। वर्तमान समय में दोनों देशों के संबंध केवल सांस्कृतिक एवं राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि डिजिटल एवं तकनीकी क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ रहा है। दोनों देशों में निम्न क्षेत्रों में डिजिटल सहयोग बढ़ा है –

डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में भी नेपाल ने उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्ष 2024 के प्रारम्भ में नेपाल में लगभग 15.4 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता थे तथा इंटरनेट पहुँच लगभग 49.6 प्रतिशत दर्ज की गई। इसके अतिरिक्त नेपाल में 37.47 मिलियन से अधिक मोबाइल कनेक्शन सक्रिय थे, जो देश की कुल जनसंख्या से भी अधिक हैं। यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि नेपाल में डिजिटल सेवाओं का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था का आधार मजबूत हो रहा है। भारत और नेपाल के मध्य डिजिटल सहयोग केवल भुगतान प्रणाली तक सीमित नहीं है, बल्कि ई–गवर्नेंस, ऑनलाइन बैंकिंग, दूरसंचार सेवाओं, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर अवसंरचना तथा डिजिटल शिक्षा के क्षेत्रों में भी निरंतर बढ़ रहा है। दोनों देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा न्च् और नेपाल के National Payments Interface (NPI) को जोड़ने के लिए समझौते किए गए हैं, जिससे भविष्य में सीमा–पार डिजिटल लेनदेन और अधिक सुरक्षित तथा सुगम हो सकेंगे। हालाँकि डिजिटल संपर्कों के विस्तार के साथ साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी, डेटा चोरी, फिशिंग, सोशल मीडिया हैकिंग तथा साइबर हमलों जैसी घटनाएँ दोनों देशों के लिए चिंता का विषय बनती जा रही हैं। इसलिए आवश्यक है कि भारत और नेपाल साइबर सुरक्षा, डिजिटल फॉरेंसिक, साइबर अपराध नियंत्रण तथा सूचना साझाकरण के क्षेत्र में संयुक्त सहयोग को और अधिक मजबूत बनाएं। एक प्रभावी साइबर सुरक्षा ढाँचा न केवल दोनों देशों की डिजिटल संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा, बल्कि भविष्य में सुरक्षित एवं विश्वसनीय डिजिटल साझेदारी की नींव भी स्थापित करेगा।

डिजिटल संपर्कों के विस्तार के साथ साइबर खतरों की संभावना भी बढ़ी है। इसलिए दोनों देशों को संयुक्त साइबर सुरक्षा ढाँचा विकसित करने की आवश्यकता है।

3. साइबर सुरक्षा की अवधारणा :

साइबर सुरक्षा से तात्पर्य कंप्यूटर नेटवर्क, डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन डेटा तथा सूचना प्रणालियों को अनधिकृत पहुँच, चोरी, क्षति अथवा दुरुपयोग से सुरक्षित रखने की प्रक्रिया से है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण आयाम साइबर सुरक्षा बन चुका है।

4. भारत और नेपाल के समक्ष प्रमुख साइबर चुनौतियाँ :

4.1 साइबर अपराधों में वृद्धि – दोनों देशों में ऑनलाइन धोखाधड़ी, बैंकिंग फ्रॉड, फिशिंग, पहचान चोरी तथा सोशल मीडिया अपराधों की घटनाएँ लगातार बढ़ रही हैं।

प्रमुख अपराध – UPI धोखाधड़ी, फिशिंग ईमेल, व्ज्च् फ्रॉड, क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, सोशल मीडिया हैकिंग, साइबर स्टॉकिंग।

4.2 डेटा सुरक्षा की समस्या – सरकारी विभागों, वित्तीय संस्थानों तथा निजी संगठनों के पास बड़ी मात्रा में नागरिकों का डेटा उपलब्ध है। यदि यह डेटा साइबर अपराधियों के हाथ लग जाए तो गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

4.3 साइबर आतंकवाद – साइबर आतंकवादी संगठन डिजिटल नेटवर्कों पर हमले कर राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। सरकारी वेबसाइटों, रक्षा संस्थानों तथा महत्वपूर्ण अवसंरचना पर साइबर हमले दोनों देशों के लिए चिंता का विषय हैं।

4.4 डिजिटल साक्षरता की कमी – नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों तथा भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी डिजिटल साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत कम है। साइबर जागरूकता के अभाव में लोग आसानी से साइबर अपराधों का शिकार बन जाते हैं।

4.5 सीमा पार साइबर अपराध : भारत–नेपाल खुली सीमा के कारण अपराधी विभिन्न डिजिटल माध्यमों से सीमा पार अपराधों को अंजाम दे सकते हैं। ऐसे मामलों में जांच एवं अपराधियों की पहचान करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

5. भारत–नेपाल साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता :

वर्तमान डिजिटल युग में भारत और नेपाल के बीच साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है। दोनों देशों के मध्य ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा भौगोलिक निकटता के कारण लोगों, व्यापारिक संस्थाओं और सरकारी तंत्रों के बीच डिजिटल संपर्क तेजी से बढ़ा है। डिजिटल भुगतान प्रणाली, ऑनलाइन बैंकिंग, ई–गवर्नेंस सेवाओं, दूरसंचार नेटवर्क तथा इंटरनेट आधारित गतिविधियों के विस्तार ने दोनों देशों को साइबर खतरों के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया है। ऐसे में साइबर सुरक्षा केवल तकनीकी विषय न होकर राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास तथा सामाजिक स्थिरता से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा बन गई है।

भारत और नेपाल के बीच साइबर सुरक्षा सहयोग का पहला महत्वपूर्ण आधार साझा सुरक्षा हित हैं। वर्तमान समय में दोनों देशों की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिरता डिजिटल अवसंरचना पर निर्भर होती जा रही है। सरकारी सेवाओं, वित्तीय संस्थानों, संचार नेटवर्क तथा डिजिटल प्लेटफॉर्मों के बढ़ते उपयोग के कारण साइबर हमलों का प्रभाव व्यापक हो सकता है। यदि किसी देश की महत्वपूर्ण डिजिटल प्रणाली प्रभावित होती है, तो उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव दूसरे देश पर भी पड़ सकता है। इसलिए साझा सुरक्षा हितों की रक्षा तथा क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए दोनों देशों के बीच प्रभावी साइबर सुरक्षा सहयोग आवश्यक है। साइबर अपराध नियंत्रण भी भारत–नेपाल सहयोग की एक प्रमुख आवश्यकता है। साइबर अपराधों की प्रकृति सीमाहीन होती है, जहाँ अपराधी किसी एक देश में बैठकर दूसरे देश के नागरिकों, संस्थानों अथवा सरकारी तंत्र को निशाना बना सकते हैं। फिशिंग, ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी, सोशल मीडिया हैकिंग, डेटा चोरी तथा साइबर ठगी जैसे अपराधों में अक्सर अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का उपयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में अपराधियों की पहचान, डिजिटल साक्ष्यों का आदान–प्रदान, जांच प्रक्रिया तथा गिरफ्तारी के लिए दोनों देशों की कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच समन्वय और सूचना साझाकरण अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

महत्वपूर्ण अवसंरचना की सुरक्षा भी साइबर सहयोग का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्तमान समय में ऊर्जा, बैंकिंग, दूरसंचार, परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सरकारी संस्थानों का संचालन डिजिटल प्रणालियों के माध्यम से किया जाता है। यदि साइबर हमलों के कारण इन प्रणालियों में व्यवधान उत्पन्न होता है, तो इसका प्रभाव राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, जनजीवन तथा प्रशासनिक व्यवस्था पर पड़ सकता है। इसलिए दोनों देशों को महत्वपूर्ण अवसंरचना की सुरक्षा हेतु संयुक्त रणनीति, तकनीकी सहयोग, साइबर जोखिम मूल्यांकन तथा आपातकालीन

प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त डिजिटल अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए भी साइबर सुरक्षा सहयोग अनिवार्य है। वर्तमान समय में भारत और नेपाल के बीच डिजिटल भुगतान, ई–कॉमर्स, ऑनलाइन व्यापार तथा वित्तीय लेनदेन का दायरा लगातार बढ़ रहा है। निवेशकों और उपभोक्ताओं का विश्वास तभी बना रह सकता है जब डिजिटल वातावरण सुरक्षित और विश्वसनीय हो। एक मजबूत साइबर सुरक्षा ढाँचा न केवल साइबर अपराधों को कम करेगा बल्कि व्यापार, निवेश, नवाचार तथा डिजिटल उद्यमिता को भी प्रोत्साहित करेगा। परिणामस्वरूप दोनों देशों की डिजिटल अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी तथा क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा प्राप्त होगा।

अतः स्पष्ट है कि साझा सुरक्षा हितों की रक्षा, साइबर अपराध नियंत्रण, महत्वपूर्ण अवसंरचना की सुरक्षा तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए भारत और नेपाल के मध्य साइबर सुरक्षा सहयोग समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। भविष्य में यह सहयोग दोनों देशों के बीच सुरक्षित, स्थायी और विश्वासपूर्ण डिजिटल संबंधों की आधारशिला सिद्ध हो सकता है।

6. भारत–नेपाल साइबर सुरक्षा सहयोग के वर्तमान प्रयास – दोनों देशों के बीच विभिन्न स्तरों पर तकनीकी एवं सुरक्षा सहयोग विकसित हो रहा है।

प्रमुख प्रयास – साइबर अपराध संबंधी सूचना साझा करना, डिजिटल भुगतान सुरक्षा सहयोग, तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम, कानून प्रवर्तन एजेंसियों का सहयोग, साइबर अपराध जांच में समन्वय, डिजिटल अवसंरचना विकास। हालाँकि अभी भी सहयोग का स्तर अपेक्षाकृत सीमित है तथा इसे और अधिक संस्थागत स्वरूप देने की आवश्यकता है।

7. भविष्य की संभावनाएँ :

7.1 संयुक्त साइबर सुरक्षा समझौता – भारत और नेपाल को व्यापक साइबर सुरक्षा समझौता विकसित करना चाहिए, जिसमें सूचना आदान–प्रदान, तकनीकी सहयोग एवं अपराध जांच की स्पष्ट व्यवस्था हो।

7.2 साइबर इंटेलिजेंस साझा मंच – दोनों देशों के बीच साइबर खतरों की वास्तविक समय में जानकारी साझा करने हेतु एक संयुक्त मंच विकसित किया जा सकता है।

7.3 संयुक्त प्रशिक्षण केंद्र – साइबर विशेषज्ञों, पुलिस अधिकारियों तथा प्रशासनिक अधिकारियों के लिए संयुक्त प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की जा सकती है।

7.4 साइबर फॉरेंसिक सहयोग – डिजिटल साक्ष्यों की जांच के लिए आधुनिक साइबर फॉरेंसिक प्रयोगशालाओं में सहयोग बढ़ाया जा सकता है।

7.5 कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सुरक्षा प्रणाली – AI आधारित साइबर सुरक्षा प्रणालियाँ साइबर हमलों की पहचान और रोकथाम में प्रभावी सिद्ध हो सकती हैं।

7.6 साइबर जागरूकता अभियान – ग्रामीण एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में संयुक्त साइबर जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जा सकते हैं।

8. सुझाव :

- साइबर अपराध संबंधी सूचनाओं का त्वरित आदान–प्रदान सुनिश्चित किया जाए।
- दोनों देशों में साइबर जागरूकता अभियान एवं डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।

- साइबर फॉरेंसिक प्रयोगशालाओं का आधुनिकीकरण किया जाए।

9. निष्कर्ष :

भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंधों की भाँति साइबर सुरक्षा सहयोग भी समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुका है। डिजिटल तकनीकों के बढ़ते उपयोग के कारण साइबर अपराधों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जो दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता तथा नागरिकों की गोपनीयता के लिए चुनौती प्रस्तुत करती है। ऐसी स्थिति में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में संयुक्त रणनीति, सूचना साझाकरण, तकनीकी सहयोग तथा साइबर जागरूकता कार्यक्रमों का विस्तार अत्यंत आवश्यक है। यदि दोनों देश समन्वित प्रयासों के माध्यम से साइबर सुरक्षा ढाँचे को मजबूत करते हैं, तो न केवल साइबर अपराधों पर नियंत्रण संभव होगा, बल्कि डिजिटल विकास और क्षेत्रीय स्थिरता को भी नई दिशा मिलेगी।

संदर्भ :

- जोशी, पी. (2021). साइबर सुरक्षा और भारत की डिजिटल चुनौतियाँ. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।
- सिंह, वीरेन्द्र (2020). अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं दक्षिण एशिया. जयपुर, यूनिक पब्लिशर्स।
- कुमार, अरुण (2022). साइबर अपराध और सूचना प्रौद्योगिकी कानून. नई दिल्ली : ओरिएंट पब्लिशिंग।
- Sharma, R. & Adhikari, S. (2023). "Cyber Security Challenges in South Asia: A Comparative Study of India and Nepal." South Asian Journal of Policy and Governance, 15(2), pp. 45-60.
- Verma, S. & Singh, A. (2024). "Cyber Diplomacy and Regional Security in South Asia." Journal of Strategic Studies, 12(4), pp. 88-104.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 24-32

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Shared Technology for Pollution Control of Himalayan Rivers : A Study Review

Dr. Anita Solanki

Asst. Professor, Department of Zoology,

BLP. Govt. P. G. College Mhow, DAVV University Indore, M.P., India.

Abstract :

Among the world's major river systems, the Ganges, Brahmaputra, Indus, Koshi, Gandak, and their tributaries originate in the Himalayas. These rivers connect countries such as India, Nepal, Bhutan, China, Pakistan, and Bangladesh. The rivers of India and Nepal are the backbone of South Asia's ecology, agriculture, drinking water, fisheries, and energy production. The interdependence between the upper and lower reaches of the river necessitates the development of a shared river system in an integrated manner through mutual cooperation among the riparian countries (Golam Rasul, 2013). Pollution in these river systems is rapidly increasing due to population growth, urbanization, industrialization, agricultural runoff, sedimentation, solid waste, and climate change. Since these rivers are transboundary, pollution control by any single country is insufficient (Santosh K. Rai etal; 2022).This paper proposes a shared technological framework for pollution control in Himalayan rivers, which includes digital monitoring, sensor networks, GIS, remote sensing, AI-based forecasting, wastewater treatment, nature-based solutions, and integrated river basin management (IRBM). This paper aims to analyze the potential for shared technologies, joint monitoring systems, artificial intelligence-based monitoring, biotechnology, floating wetlands, wastewater treatment plants, and drone-based surveys for river pollution control between India and Nepal. Developing a joint river management system between the two countries could increase the efficiency of pollution control. AI-based monitoring, real-time sensors, GIS mapping, and biological treatment technologies could provide lower-cost and more effective solutions (Swastik Ghimire etal; 2022).

Keywords : Himalayan rivers, pollution control, shared technology, river basin management, water quality, GIS, IoT

Introduction :

Himalayan rivers are the foundation of Asia's water security. Millions of people depend on them for drinking water, agriculture, energy, and ecosystem services. The Himalayan river systems are characterized by their catchment areas spanning multiple countries; therefore, a collaborative model for pollution and water quality management is essential. Environmental engineering is concerned with quantifying water quality over time and space, and with wastewater treatment processes to adapt it to water quality standards for river water, etc. The indiscriminate discharge of sewage and industrial waste poses significant risks to both human health and the environment. Climate-related pollution hazards disproportionately affect vulnerable groups, including women, the disabled, and marginalized populations (Onlyias 2024). Rivers are considered the lifeline of any civilization. Several international rivers flow between India and Nepal, which are used for irrigation, hydropower, domestic water supply, and religious activities. The Himalayan rivers are facing a growing problem of sediment transport, organic pollution, and chemical waste. Most of the water from Nepal's rivers enters the plains of India, so pollution impacts both countries. The waters feeding the Koshi Basin support a rich biodiversity and are a source of valuable ecosystem services that sustain the lives and livelihoods of communities in China, India, and Nepal. The Bagmati River, flowing through Nepal's capital, Kathmandu, is currently highly polluted due to domestic sewage, industrial waste, and solid waste.The main sources of pollution are urban sewage,industrial waste, agricultural chemicals, plastic and solid waste, sedimentation from construction and mining,glacial melt, and climate change.

Objectives of the Study :

The objectives of this study are :

(a) To study the sources of pollution in major rivers of India and Nepal.

(b) To analyze the current status of shared river management.

(c) To review modern technologies for pollution control.

(d) To evaluate the potential for using AI, GIS, drones, and biological technologies.

(e) To present joint policy recommendations for both countries.

Major Common Rivers of India and Nepal :

Nepal is the source of many rivers that flow into India, primarily tributaries of the Ganges and Brahmaputra rivers. Major rivers originating in Nepal and entering India include the Gandak, Kosi (Saptakoshi), Mahakali, Tamor, Rapti, Mahananda, Karnali, Ghaghra, Babai, Teesta and Mechi, and the Bagmati River.

Ganges Basin** – Formed by the Gandak-Ganga, Kosi-Ganga, and other tributaries.Gandak/ Narayani** – The main river originating in Nepal, enters India in Bihar. Contributes to the Gandaki

system (via the Kali Gandaki/Trishuli confluence).***Kali Gandaki** (tributary of the Karnali in the wider system) - It flows from central Nepal and joins the Gandak system through basin links, while the Kali Gandaki itself flows southward into the Ganges system through confluences within Nepal.***Kosi (Saptakoshi) System**: The Saptakoshi River is formed by the confluence of several rivers within Nepal, which enter India as the Kosi River.***Tamor** - The headstream of the Nepal Saptakoshi.

Mahananda** - This river originates in the Himalayan foothills in eastern Nepal and enters West Bengal.Rapti (West Rapti)** - Originates in Nepal (central-western) and flows into Uttar Pradesh as the Rapti.***Kali/Mahakali** - It is called the Sharda River on the India-Nepal border. It enters India before joining the Ghaghra.***Karnali** - The major Himalayan river of western Nepal. Upon entering India (Uttar Pradesh), this river becomes the Ghaghra River and is a major left-bank tributary of the Ganges.***Seti and Bheri** - Both rivers are tributaries that feed the Karnali in Nepal.***Rapti and Babai** - Rivers from central western Nepal that reach India; the Rapti drains into Uttar Pradesh, and the Babai flows internally.

Brahmaputra Basin** - The Teesta, Mechi, and Mahananda rivers form the Brahmaputra Basin.Teesta River** - It originates in eastern Nepal or near the Nepal-Sikkim border. It flows through Sikkim and West Bengal into Bangladesh.***Mechi River** - It originates in eastern Nepal and flows into India (West Bengal) to join the Mahananda/Mechi water system, supplying water to major watercourses.

***Rivers** originating in eastern Nepal (small Himalayan streams) after entering India join the Teesta-Brahmaputra and Mahananda water systems.The Bagmati River originates in Nepal and enters the Indian region of Bihar. It is of great religious importance, but is currently highly polluted (Prakash Raj et al; 2007).The Koshi River faces significant sediment transport and erosion. Himalayan erosion significantly increases the river's sediment load (S.P. Upadhyay, 1996).The Gandak River is important for irrigation and hydroelectric projects, but agricultural runoff and anthropogenic pollution are affecting its water quality (Mahendra B. Baniya etal; 2019). The Mahakali River An important example of India-Nepal water governance, highlighting the need for technical cooperation and data sharing.

Major Sources of River Pollution The major sources of river pollution are as follows :-

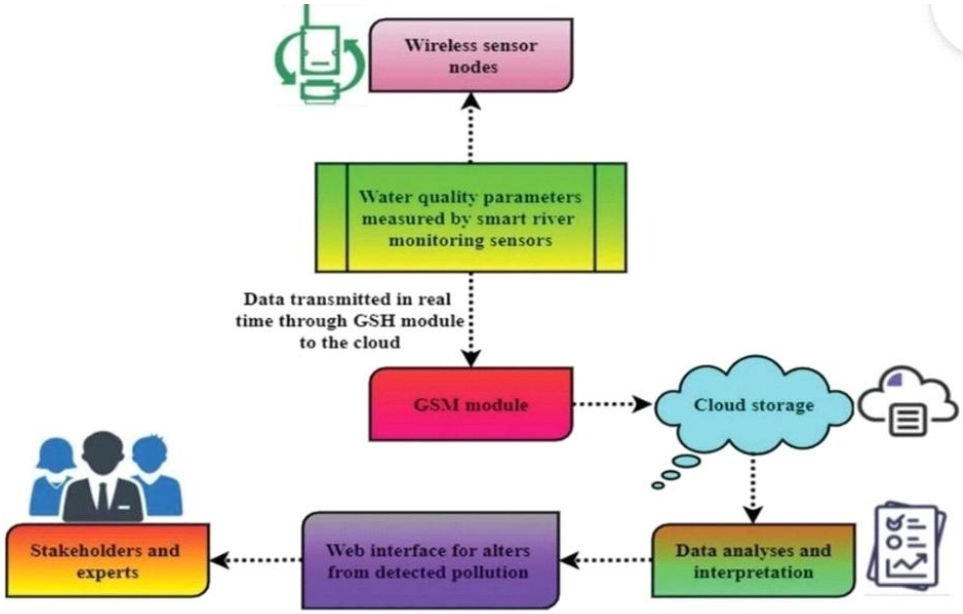
1. **Domestic Sewage -** Most urban areas in Nepal and India lack wastewater treatment plants, resulting in untreated sewage being discharged directly into rivers.
2. **Industrial Waste -** Heavy metals and toxic chemicals from the chemical, textile, leather, and food industries contaminate river water.
3. **Agricultural Runoff -** Chemical fertilizers and pesticides reach rivers with rainfall, leading

to eutrophication.

4. **Solid Waste -** Plastic, organic waste, and religious materials contribute to river pollution.

Shared Technologies for Pollution Control :

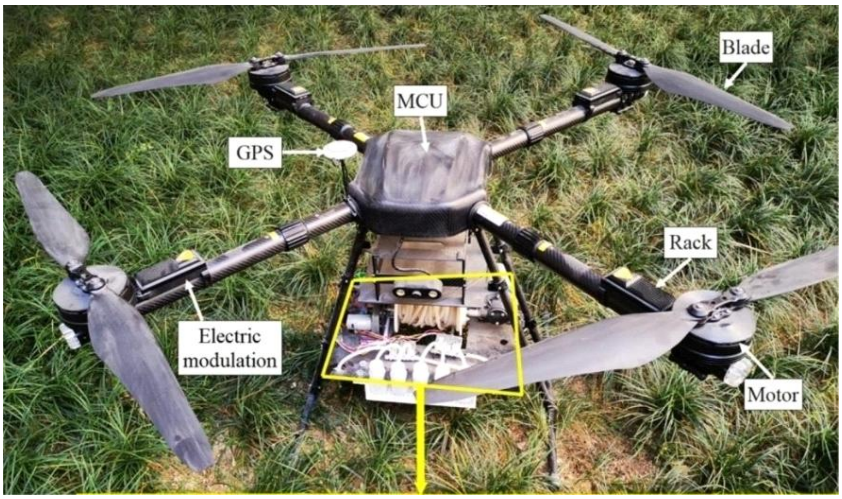
1. **AI-Based Monitoring Systems** - AI-based sensor networks can provide real-time monitoring of water quality.



AI-based pollution monitoring systems are being developed in India (Aditi Madhukar, 2026). These systems enable continuous monitoring of pH, DO (Dissolved Oxygen), BOD, COD, temperature, and heavy metals.

2. **GIS and Remote Sensing** - GIS-based water quality mapping can identify pollution hotspots.

3. **Drone-Based Surveys** - Drone technology can monitor illegal waste disposal, sewage outfalls, and sediment transport along river banks. Drone surveys have been initiated in the Ganga and Yamuna basins in India (Indiatimes).



4. Floating Wetland Technology - Artificial floating islands help remove nitrogen and phosphorus from water. This technology is low-cost, environmentally friendly, and helps conserve biodiversity and increase oxygen levels.



5. Bioremediation - The biological decomposition of pollutants by microorganisms and aquatic plants.

The main biological agents are algae, bacteria, water hyacinth, and phytoplankton.

6. Wastewater Treatment Plant (STP/ETP) - Modern STP technologies include the Activated Sludge Process, Membrane Bioreactor, Anaerobic Digestion, and Constructed Wetlands.

Current Status of Pollution in Himalayan Rivers :-

(a) Biological Pollution - Caused by high BOD, COD, and pathogenic microorganisms.

(b) Chemical Pollution - This type of pollution is mainly caused by nitrates, phosphates, and heavy metals.

(c) Physical Pollution - Physical pollution is caused by sedimentation and microplastics.Activities between the upper and lower catchments directly affect river quality (Nishikant Gupta etal; 2021). Therefore, basin-level management is essential. The densely populated areas of the basin are in the plains of Nepal and Bihar,with approximately 40 million people dependent on its resources (Neupane etal; 2015).The Kosi basin plays a vital role in irrigating downstream areas and has a large potential for hydropower development.However, the basin is highly prone to erosion,

sedimentation, and natural hazards, which may worsen with climate and other changes (Neera S.P;2022). The Kosi's tendency to carry high loads of silt from its upper catchment areas in Nepal to the lower plains of Bihar is resulting in obstruction of its water flow, leading to continuous changes in the river's course (Sinha etal;2019).

Shared Technology Framework :

Shared technology models have been developed as follows :-

1. Integrated River Basin Management (IRBM) - IRBM is a system for the coordinated management of water, land, ecosystems, and human use. It involves data sharing and joint decision-making across countries.Its key components are shared policy, shared data platforms, joint monitoring, and water quality standards.

2. IoT-based Water Quality Monitoring - This utilizes pH sensors, DO sensors, TDS sensors, and real-time data logger technology. These technologies enable continuous monitoring, rapid alert systems and easy identification of pollution sources. The potential for using real-time sensor-based data platforms in the Ganga Basin is demonstrated. This data combines old data determined from laboratory tests on physical samples and new data from real-time sensors collected from the Ganga basin (Sandeep S.S. etal; 2017).

3. GIS and Remote Sensing-based Monitoring -It is used for land use change analysis, sediment mapping, pollution hotspot identification, and river flow modeling. GIS-based basin information systems can form the basis for collaborative management. A prerequisite for integrated land and water resources management (ILWRM) is a holistic river basin assessment. The latter requires information and data from various scientific disciplines. Establish protocols that facilitate data and information access and sharing among various stakeholders, and trigger further collaboration between various institutions in support of watershed-based assessment, management, and planning (Badjana, H. M. etal; 2015).

4. AI and Digital Twin Technology -

This Digital Twin technology is a real-time digital model of a river. It is used for pollution forecasting, flood modeling, water quality simulation, and policy testing.The initiative to develop a Digital Twin model for the Ganga Basin is considered an important step towards scientific river management (Gaurav Talukdar, 2025).

5. Advanced Wastewater Treatment -

The following technologies are used for advanced wastewater treatment :-

(i) Membrane Bioreactor (MBR) - This provides high-quality treatment.

(ii) Constructed Wetlands - This can be established at a low cost and is ecologically friendly.

(iii) Bio-remediation - This allows for microbial-based treatment.

(iv) Decentralized Treatment Systems - This is also an advanced wastewater treatment technology.

6. Nature-Based Solutions (NbS) -

Number of natural solutions such as riparian afforestation, wetland restoration, biofilters, and catchment protection can also protect river water from pollution. Ecosystem-based adaptation in Himalayan river basins can reduce both disaster risk and pollution (Prakash K. Paudel etal;2021).

The Need for India-Nepal Cooperation -The rivers of India and Nepal are international watercourses, so efforts by one country alone will not suffice. Shared cooperation can have benefits such as shared data banks, joint research laboratories, real-time data sharing, joint water quality standards, shared disaster management, etc.

Koshi River Basin Model's successful elements include shared data, risk early warning, basin information system, and community participation (Neera S.P., 2022 and Shahriar Wahid, 2016).

Proposed multi-level shared technology framework - At the local level, IoT sensor technology can be used for real-time monitoring.

At the regional level, GIS technology can be used to conduct pollution mapping studies. At the national level, AI models can be used for forecasting purposes. At the international level,Shared data portal technology can be used for collaboration.

Challenges -

1. Financial limitations – High investment is required to deploy advanced technology.

2. Policy disparities – Environmental standards differ between the two countries.

3. Lack of public awareness – Local communities are not adequately aware of river conservation.

4. Climate change – Melting glaciers and erratic monsoons are affecting river pollution and sediment transport.

Policy Suggestions -

A common river commission for Himalayan countries should be adopted to control pollution in Himalayan rivers.

Integrated water quality standards, cross-border data exchange, AI-based early warning networks, community monitoring systems, and climate-friendly pollution control investments should be adopted. Establish an India-Nepal Joint River Commission. Develop a shared AI-based monitoring platform. Establish a real-time sensor network on each major river. Promote floating wetland projects. Implement community-based river conservation programs. Develop cross-border pollution control laws. Develop green belts along riverbanks.

Conclusion -

Local treatment alone is not sufficient to control pollution in Himalayan rivers. Shared technologies, joint data platforms, digital monitoring, nature-based solutions, and integrated management at the river basin level are essential. In the future, a "Smart Transboundary River Governance" model could become the foundation for water security and ecological sustainability in the Himalayan region. Rivers draining the Himalayan region, such as the Indus, Ganges, and Brahmaputra (IGB), often defy spatial boundaries and temporal markers of riparian states, spanning China, Nepal, India, Bangladesh, Bhutan, and Pakistan. These are the source of our knowledge about multifaceted sociopolitical, historical, and ecological landscapes and, therefore, punctuate the rise and fall of civilizations (Santosh K. Rai et al., 2022). The World Bank and its partners, including the South Asia Water Initiative (SAWI), provide funding and analysis to promote regional cooperation in managing transboundary rivers and groundwater.

References -

1. Badjana, H. M., Zander, F., Kralisch, S., Helmschrot, J., & Flügel, W.-A. (2015). An information system for integrated land and water resources management in the Kara River Basin (Togo and Benin). Proceedings of the International Association of Hydrological Sciences: 366, 29–34.
2. Baniya, M. B., Asaeda, T., K.C., S., & Jayashanka, S. M. D. H. (2019). Hydraulic parameters for sediment transport and prediction of suspended sediment for Kali Gandaki River Basin, Himalaya, Nepal. Water: 11(6), 1229.
3. Deepali Virmani,Savneet Kaur, Lowlesh N. Yadav,V. Subedha, R.D. sathiya and Firos A.(2025).Developing AI-Based Pollution Source Identification Models: A Deep Learning Approach Using Satellite Data in Industrial Regions. International Journal of Environmental Sciences: 11(23s), 962–969.
4. Dixit, A., Upadhya, M., Dixit, K., et al. (2021). "Rich water, poor people: Potential for transboundary flood management between Nepal and India." Current Research in Environmental Sustainability: 3, 100031.
5. Mehra, A. (2026). Delhi govt signs pact with IIT Kanpur for AI-operated air pollution monitoring system. The Tribune.
6. Muhammad, A., Shangguan, D.,Rasool, G., Khan, A. A., Butt, A. Q., Hussain, A., & Mukhtar, M. A. (2024). A localized evaluation of surface water quality using GIS-based water quality index along Satpara Watershed, Skardu Baltistan, Pakistan. ISPRS International Journal of Geo-Information, 13(11), 393.
7. Neupane, N., et al. (2015). Koshi Basin Programme. International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD), Kathmandu, Nepal.
8. Ozarkar, V. (2026). BMC instructed to deploy AI, IoT-based systems to track pollution sources: Fadnavis.

The Indian Express.

9. Ghimire, S., Pokhrel, N., Pant, S., Gyawali, T., Koirala (2022). Assessment of technologies for water quality control of the Bagmati River in Kathmandu valley, Nepal. Groundwater for Sustainable Development: 18,100770.
10. Gupta, N., Dahal, S., Kumar, A., Kumar, C., Kumar, M., Maharjan, A., Mishra, D., Mohanty, A., Navaraj, A., Pandey, S., Prakash, A., Prasad, E., Shreshtha, K., Shrestha, M., Subedi, R., Subedi, T., Tiwary, R., Tuladhar, R., & Unni, A. (2021). Rich water, poor people: Potential for transboundary flood management between Nepal and India. Current Research in Environmental Sustainability: 3, 100031.
11. Paudel P.K., Sinha R., and Pal I. (2004).Enhancing ecosystem-based adaptation to disaster risk reduction in the Himalayan river basin: Integrating traditional and local knowledge in disaster management plan in Nepal, India and Bangladesh, apn-gcr.org:https://doi.org/10.30852/p.18629.
12. Rai, S. K., Shah, R. A., & Das, S. (2022). Cooperative management of Himalayan rivers among the riparian states. In A. K. Tiwari, A. Kumar, A. K. Singh, T. N. Singh, E. Suozzi, G. Matta, & L. S. Russo (Eds.), Current Directions in Water Scarcity Research : Vol.5,59–71.
13. Rasul, G. (2013). Why Eastern Himalayan Countries Should Cooperate in Transboundary Water Resource Management. Water Policy:15(S2), 20–38.
14. Sandeep S. Sandha, Biplav Srivastava and Sukanya Randhawa (2017).The GangaWatch Mobile App to Enable Usage of Water Data in Every Day Decisions Integrating Historical and Real-time Sensing Data,arXiv:1701,08212.
15. Srivastava, B., Sandha, S., Raychoudhury, V., Randhawa, S., Kapoor, V., & Agrawal, A. (2016). An Open, Multi-Sensor, Dataset of Water Pollution of Ganga Basin and its Application to Understand Impact of Large Religious Gathering. arXiv preprint arXiv:1612,05626.
16. Upadhyay, S. P. (1996). Erosion and sedimentation processes and river training works in Nepal. Journal of Nepal Geological Society, 14, 139–142.
17. Zach M., Asher M., Gal E. and Frederik (2020).HydroNets: Leveraging River Structure for Hydrologic Modeling, arXiv: 2007.00595.

Email- educationhealthandfitness@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 33-35

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सम्प्रभुता और समानता : आधुनिक कूटनीति के आधार स्तंभ

अंजना ठाकुर

शोधार्थी, दीनदायल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला।

शोध सार :–

आधुनिक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण दो प्रमुख सिद्धांतों सम्प्रभुता और समानता पर आधारित है। सम्प्रभुता का अर्थ है कि प्रत्येक राज्य अपने आंतरिक और बाह्य मामलों में स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार रखता है, जबकि समानता का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय में सभी राज्यों को समान कानूनी दर्जा प्राप्त हो। वर्तमान वैश्वीकरण, क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक परस्पर निर्भरता तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों की बढ़ती भूमिका के बावजूद ये दोनों सिद्धांत आज भी विश्व राजनीति और कूटनीति के मूल आधार बने हुए हैं। यह शोध–पत्र सम्प्रभुता और समानता की अवधारणा, उनके ऐतिहासिक विकास, आधुनिक कूटनीति में उनकी भूमिका– समकालीन चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। अंतरराष्ट्रीय शांति, सहयोग और स्थिरता के लिए इन दोनों सिद्धांतों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

संकेत शब्द – संप्रभुता, समानता, वैश्वीकरण, ऐतिहासिक, कूटनीति।

प्रस्तावना –

आधुनिक विश्व व्यवस्था अनेक स्वतंत्र राष्ट्र–राज्यों से मिलकर बनी है। प्रत्येक राज्य अपनी राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने का प्रयास करता है। राज्यों के बीच संबंधों को संचालित करने के लिए कुछ सार्वभौमिक सिद्धांत विकसित हुए हैं, जिनमें सम्प्रभुता और समानता का विशेष महत्व है। सम्प्रभुता की अवधारणा का विकास 1648 की Peace of Westphalia के बाद हुआ, जिसने राज्य की सर्वोच्चता और स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान की। इसके साथ ही राज्यों की कानूनी समानता की अवधारणा भी विकसित हुई, जिसके अनुसार बड़ा या छोटा. शक्तिशाली या कमजोर – सभी राज्यों को समान अधिकार प्राप्त हैं। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है।

सम्प्रभुता की अवधारणा –

सम्प्रभुता का तात्पर्य राज्य की सर्वोच्च सत्ता से है। यह वह शक्ति है जिसके माध्यम से राज्य अपने क्षेत्र, जनसंख्या और शासन व्यवस्था पर पूर्ण अधिकार रखता है। सम्प्रभुता के दो प्रमुख आयाम हैं–पहली आंतरिक सम्प्रभुता–राज्य को अपने संविधान, कानून, प्रशासन और नीतियों के निर्माण का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त होता है। दूसरी–बाह्य सम्प्रभुता कोई अन्य राज्य किसी स्वतंत्र राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

प्रत्येक राज्य अपनी विदेश नीति स्वयं निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र होता है।

समानता की अवधारणा –

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में समानता का अर्थ यह नहीं है कि सभी राज्यों की शक्ति, जनसंख्या या आर्थिक क्षमता समान हो, बल्कि इसका आशय कानूनी समानता से है। प्रत्येक राज्य को अंतरराष्ट्रीय कानून के समक्ष समान अधिकार और दायित्व प्राप्त होते हैं।

आधुनिक कूटनीति में सम्प्रभुता का महत्व –

आधुनिक कूटनीति का मुख्य उद्देश्य राज्यों के बीच सहयोग और शांति स्थापित करना है। सम्प्रभुता इस प्रक्रिया का आधार है क्योंकि यह राज्यों की स्वतंत्र पहचान को सुरक्षित रखती है। पहला सम्प्रभुता राज्यों की बाहरी हस्तक्षेप से सुरक्षा प्रदान कर दूसरा, यह राष्ट्रीय हितों की रक्षा का साधन है। तीसरा, यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में स्थिरता बनाए रखती है। वर्तमान समय में जब साइबर सुरक्षा, डिजिटल शासन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे नए क्षेत्र उभर रहे हैं, तब डिजिटल सम्प्रभुता की अवधारणा भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। राज्य अपने डेटा, तकनीकी अवसंरचना और डिजिटल संसाधनों पर नियंत्रण बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र और सम्प्रभु समानता –

1945 में स्थापित United Nations ने सम्प्रभुता और समानता को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का मूल सिद्धांत बनाया। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार–सभी सदस्य राज्य सम्प्रभु रूप से समान हैं। विवादों का समाधान शांतिपूर्ण तरीकों से किया जाना चाहिए। किसी राज्य की क्षेत्रीय अखंडता के विरुद्ध बल प्रयोग नहीं किया जा सकता। सदस्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। इन सिद्धांतों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय शांति और स्थिरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वैश्वीकरण और सम्प्रभुता :–

वैश्वीकरण ने सम्प्रभुता की पारंपरिक अवधारणा को नई चुनौतियाँ दी है। आज व्यापार, निवेश, संचार और तकनीकी नेटवर्क राष्ट्रीय सीमाओं से परे कार्य करते हैं। इसके परिणामस्वरूप–आर्थिक निर्णयों पर वैश्विक संस्थाओं का प्रभाव बढ़ा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका महत्वपूर्ण हुई है। साइबर क्षेत्र में नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर सामूहिक कार्रवाई की आता एकता बढ़ी है।

समकालीन चुनौतियाँ :–

शक्ति असंतुलन यद्यपि सभी राज्य कानूनी रूप से समान है, परंतु वास्तविक शक्ति और संसाधनों में असमानता बनी हुई है। मानवीय हस्तक्षेप मानवाधिकार उल्लंघनों की स्थिति में अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप और राज्य की सम्प्रभुता के बीच संतुलन स्थापित करना चुनौतीपूर्ण है। साइबर सुरक्षा साइबर हमले राज्य की सम्प्रभुता के लिए नई चुनौती बनकर उभरे हैं। क्षेत्रीय विवाद सीमा विवाद और क्षेत्रीय संघर्ष आज भी सम्प्रभुता और समानता की परीक्षा लेते हैं। वैश्विक शासन जलवायु परिवर्तन, महामारी और आतंकवाद जैसे मुद्दों के समाधान के लिए राज्यों को अपनी कुछ शक्तियाँ साझा करनी पड़ती है।

भारत के संदर्भ में महत्व :–

भारत की विदेश नीति में सम्प्रभुता, रणनीतिक स्वायत्तता और समानता को विशेष महत्व दिया गया है। भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सभी देशों की समान भागीदारी, संयुक्त राष्ट्र सुधार तथा विकासशील देशों के हितों

की वकालत करता है। भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भी सम्मान, सहयोग और समानता पर आधारित है।

निष्कर्ष :-

सम्प्रभुता और समानता आधुनिक कूटनीति के दो ऐसे आधार स्तंभ हैं जिन पर संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था टिकी हुई है। सम्प्रभुता राज्यों की स्वतंत्रता, सुरक्षा और पहचान की रक्षा करती है, जबकि समानता अंतरराष्ट्रीय संबंधों में न्याय, संतुलन और सहयोग सुनिश्चित करती है। वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन के इस युग में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। यद्यपि अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं, फिर भी अंतरराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और सहयोग के लिए सम्प्रभुता और समानता का संरक्षण अनिवार्य है। भविष्य की विश्व व्यवस्था इन्हीं सिद्धांतों के संतुलित अनुप्रयोग पर निर्भर करेगी। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ आर्थिक परस्पर निर्भरता, तकनीकी विकास और बहुपक्षीय संस्थाओं का प्रभाव बढ़ रहा है, वहाँ भी संप्रभुता और समानता की प्रासंगिकता बनी हुई है। अंतरराष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, राज्यों के बीच विश्वास निर्माण तथा वैश्विक शांति और सुरक्षा की स्थापना में इन सिद्धांतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यद्यपि शक्तिशाली और कमजोर देशों के बीच व्यावहारिक असमानताएँ दिखाई देती हैं, फिर भी अंतरराष्ट्रीय कानून और कूटनीतिक व्यवहार इन मूल्यों को संरक्षित करने का प्रयास करते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि संप्रभुता और समानता केवल सैद्धांतिक अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि आधुनिक कूटनीति के ऐसे अनिवार्य तत्व हैं जो न्यायपूर्ण, स्थिर और सहयोगपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. आनंद, आर. पी. (1966). अंतरराष्ट्रीय कानून में राज्यों की सम्प्रभु समानता. इंटरनेशनल स्टडीज.
2. ब्राउनली, इयान. (2008). सार्वजनिक अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांत (7वाँ संस्करण). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. पैट्रिसिया. (2023). विश्व राजनीति का वैश्वीकरण अंतरराष्ट्रीय संबंधों का परिचय (9वाँ संस्करण). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. https://www.un.org
5. https://legal.un.org
6. https://arxiv.org
7. https://pesd.princeton.edu

Email id : anjana941295@gmail.com

M. 9317622143

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 36-41

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Availability and Impact of Open Educational Resources for Researchers and Scholars in India and Nepal: Advancing Digital Knowledge Sharing and Cross-Border Academic Collaboration

Dr. Archana Dubey

Librarian, St. Aloysius College Jabalpur.

Abstract :

Open Educational Resources (OERs) and Open Access (OA) initiatives have emerged as transformative tools for democratizing knowledge and enhancing equitable access to scholarly information. This study examines the availability, accessibility, and impact of OERs in India and Nepal through major initiatives such as NDLI, Shodhganga, SWAYAM, e-PG Pathshala, NepJOL, and university repositories.

The study reveals that Open Access resources significantly enhance research visibility, academic collaboration, digital learning, and scholarly communication. Academic libraries play a pivotal role in supporting these initiatives through digital repository management, information literacy, and research support services. However, challenges including inadequate ICT infrastructure, digital divide, language barriers, copyright issues, and sustainability concerns continue to hinder effective utilization.

The paper highlights the need for stronger India–Nepal academic collaboration through shared repositories, collaborative research networks, and digital knowledge-sharing frameworks. It concludes that policy support, technological innovation, institutional partnerships, and capacity-building initiatives are essential for building an inclusive, sustainable, and knowledge-driven Open Access ecosystem in South Asia.

Keywords :

Open Educational Resources, Open Access, Academic Libraries, Digital Knowledge Sharing, Research Collaboration, India, Nepal.

- **Introduction :**

The twenty-first century has witnessed an unprecedented revolution in the creation, dissemination, and democratization of knowledge, driven by rapid advancements in Information and Communication Technologies (ICTs). The emergence of digital scholarship has profoundly transformed higher education and research by fostering global academic connectivity, collaborative learning, and innovative knowledge exchange.

Despite this digital progress, scholars and institutions in many developing nations continue to face serious barriers in accessing expensive scholarly resources. These limitations hinder research excellence, academic participation, and intellectual growth, thereby deepening the global knowledge divide. In this context, the Open Access (OA) movement and Open Educational Resources (OERs) have emerged as transformative instruments for ensuring equitable, inclusive, and unrestricted access to knowledge.

India has emerged as a pioneering force in the Open Access ecosystem through landmark initiatives such as the National Digital Library of India, Shodhganga, SWAYAM, and e-PG Pathshala. Likewise, Nepal has made commendable progress through Nepal Journals Online (NepJOL), institutional repositories, and collaborative digital learning platforms. These initiatives have significantly enhanced educational accessibility, research visibility, and scholarly empowerment in both nations.

In the contemporary knowledge society, academic libraries have evolved from traditional repositories into dynamic digital knowledge hubs that facilitate research support, information literacy, digital preservation, and scholarly communication. Given the deep-rooted educational, cultural, and geographical ties between India and Nepal, there exists immense potential for strengthening regional academic cooperation through collaborative Open Access initiatives.

This study critically examines the availability and impact of Open Educational Resources in India and Nepal and explores their strategic role in advancing digital knowledge sharing, research innovation, and cross-border academic collaboration in South Asia.

2. Objectives of the Study :

The study seeks to :

- Examine the availability and accessibility of Open Educational Resources in India and Nepal.
- Assess the impact of Open Access resources on research productivity and scholarly communication.
- Analyse the role of academic libraries in facilitating access to digital educational resources.
- Identify major challenges affecting the effective utilization of Open Access resources.

- Explore opportunities for strengthening India–Nepal academic collaboration through digital knowledge-sharing initiatives.
- **Methodology :**

This study adopts a descriptive and analytical research design based on an extensive review of secondary sources. Data were collected from peer-reviewed journal articles, conference proceedings, policy documents, institutional reports, digital repositories, library websites, and international Open Access platforms. The analysis focuses on major Open Access initiatives, their impact on research and education, and the emerging prospects for bilateral academic cooperation between India and Nepal.

4. Open Educational Resources Landscape in India and Nepal :

The Open Access ecosystem in India and Nepal has witnessed remarkable growth over the past decade, driven by technological advancement, institutional commitment, and the global movement toward knowledge democratization.

India has emerged as a leading force in South Asia through transformative initiatives such as the National Digital Library of India (NDLI), Shodhganga, SWAYAM, e-PG Pathshala, e-ShodhSindhu, NPTEL, and VIDWAN. These platforms have revolutionized access to scholarly information, digital learning, and research visibility. Additionally, institutional repositories developed through DSpace and EPrints, along with the support of organizations like INFLIBNET and the National Knowledge Network (NKN), have significantly strengthened digital scholarship and academic collaboration across the country.

Similarly, Nepal has made commendable progress in promoting Open Access and digital scholarship through initiatives such as Nepal Journals Online (NepJOL), university repositories, digital library services, and e-learning platforms. Universities including Tribhuvan University, Kathmandu University, Pokhara University, and Nepal Open University are actively preserving and disseminating scholarly outputs through digital repositories. Nepalese researchers also benefit from global Open Access platforms such as DOAJ, DOAB, ResearchGate, Zenodo, and Google Scholar. International support from organizations like UNESCO and INASP has further enhanced digital publishing, research communication, and capacity building.

Collectively, these initiatives have enhanced the accessibility, visibility, and dissemination of scholarly knowledge, fostering inclusive education, research innovation, and stronger academic collaboration in South Asia.

5. Impact of Open Educational Resources on Research and Scholarship :

The availability of Open Educational Resources has generated substantial benefits for

researchers, educators, and students in both countries.

Firstly, OERs significantly enhance access to scholarly information by eliminating economic barriers associated with commercial databases and subscription-based journals. This has been particularly beneficial for researchers working in resource-constrained institutions.

Secondly, unrestricted access to current research literature contributes to improved research quality by enabling scholars to conduct comprehensive literature reviews, identify research gaps, and adopt innovative methodologies.

Thirdly, Open Access publishing increases the visibility, discoverability, and citation impact of scholarly work. Researchers are able to reach broader audiences, thereby strengthening international academic engagement and collaboration.

Furthermore, OERs have become indispensable tools for online and blended learning environments. The widespread adoption of digital educational resources during and after the COVID-19 pandemic demonstrated their importance in ensuring continuity of education and research activities.

Open Access platforms also facilitate interdisciplinary and cross-border collaboration by enabling researchers to share knowledge, exchange ideas, and participate in collaborative projects regardless of geographical location.

Additionally, digital repositories contribute to the preservation and dissemination of indigenous knowledge, cultural heritage, and local research outputs, thereby supporting cultural sustainability and knowledge diversity.

6. Role of Academic Libraries in the Open Access Ecosystem :

Academic libraries play a transformative role in promoting Open Access, digital scholarship, and knowledge dissemination. Modern libraries have evolved into dynamic digital knowledge hubs that support institutional repositories, research visibility, and scholarly communication. They facilitate access to theses, dissertations, research papers, datasets, and learning resources while promoting information literacy through training and user education programs. Libraries also provide essential research support services such as plagiarism checking, citation management, bibliometric analysis, and scholarly publishing assistance, thereby enhancing research quality and academic integrity.

In addition, academic libraries contribute to digitization and digital preservation initiatives, safeguarding valuable cultural heritage and institutional knowledge. Through technological innovation, advocacy, and capacity building, libraries continue to strengthen the digital research ecosystem and foster an inclusive, accessible, and sustainable knowledge society.

7. Challenges and Opportunities :

Despite notable progress, several challenges continue to impede the effective utilization of

Open Educational Resources.

Key challenges include inadequate ICT infrastructure, disparities in internet access, limited awareness of Open Access platforms, language-related barriers, copyright complexities, and sustainability concerns associated with maintaining digital repositories.

Nevertheless, these challenges also present opportunities for innovation and collaboration. Strategic investments in digital infrastructure, multilingual content development, librarian training, and policy support can significantly enhance the effectiveness and reach of Open Access initiatives.

8. India–Nepal Academic Collaboration: Future Prospects :

India and Nepal share deep-rooted historical, cultural, and educational relations that offer immense potential for strengthening regional academic cooperation in the digital era. Through collaborative Open Access initiatives, shared digital repositories, joint research projects, faculty and librarian exchange programs, and technology-enabled knowledge networks, both countries can promote seamless scholarly communication and research integration. Collaborative efforts in Open Educational Resources (OERs), MOOCs, digital libraries, and information literacy programs can significantly enhance educational accessibility and digital learning opportunities. Joint research in areas such as Himalayan studies, climate change, biodiversity conservation, public health, indigenous knowledge, and cultural heritage preservation can generate valuable regional insights and address common developmental challenges.

By fostering institutional partnerships and promoting the free exchange of knowledge, India and Nepal can strengthen research visibility, academic innovation, and interdisciplinary collaboration, contributing to the development of an inclusive, sustainable, and globally connected South Asian knowledge ecosystem.

9. Conclusion :

Open Educational Resources (OERs) and Open Access (OA) initiatives have emerged as indispensable pillars of contemporary higher education and research. By enhancing access to scholarly information, improving research visibility, and fostering collaborative knowledge creation, these initiatives significantly contribute to educational equity, academic excellence, and digital scholarship. The experiences of India and Nepal highlight the transformative potential of Open Access in strengthening research ecosystems and promoting regional knowledge sharing. Although challenges related to infrastructure, awareness, digital divide, and sustainability persist, strategic cooperation among governments, academic institutions, libraries, and researchers can effectively address these barriers.

Strengthening India–Nepal collaboration in Open Access initiatives can create a dynamic

regional framework for scholarly communication, research innovation, and sustainable knowledge development. Such collaborative efforts will play a vital role in building an inclusive, technology-driven, and globally connected academic ecosystem across South Asia.

References :-

- Budapest Open Access Initiative. (2002). Read the Budapest Open Access Initiative. Retrieved from https://www.budapestopenaccessinitiative.org
- Crow, R. (2002). The case for institutional repositories: A SPARC position paper. Washington, DC: SPARC.
- Das, A. K. (2015). Open access in India: Current status and emerging trends. The International Information & Library Review, 47(1–2), 1–15.
- Directory of Open Access Books (DOAB). (2025). Retrieved from https://www.doabooks.org
- Directory of Open Access Journals (DOAJ). (2025). Retrieved from https://doaj.org
- INFLIBNET Centre. (2025). Shodhganga: A reservoir of Indian theses. Retrieved from https://shodhganga.inflibnet.ac.in
- Lynch, C. A. (2003). Institutional repositories: Essential infrastructure for scholarship in the digital age. portal: Libraries and the Academy, 3(2), 327–336.
- National Digital Library of India. (2025). Retrieved from https://ndl.iitkgp.ac.in
- National Programme on Technology Enhanced Learning (NPTEL). (2025). Retrieved from https://nptel.ac.in
- Nepal Journals Online (NepJOL). (2025). Retrieved from https://www.nepjol.info
- OpenDOAR. (2025). Directory of Open Access Repositories. Retrieved from https://v2.sherpa.ac.uk/opendoar
- Singh, J., & Kaur, T. (2020). Role of academic libraries in promoting open access resources and scholarly communication. Library Philosophy and Practice, 1–15.
- Suber, P. (2012). Open access. Cambridge, MA: MIT Press.
- Tripathi, M., & Kumar, S. (2019). Open educational resources and higher education in South Asia: Opportunities and challenges. Journal of Information and Knowledge Management, 18(4), 1–14.
- UNESCO. (2021). UNESCO recommendation on Open Science. Paris: UNESCO.
- University Grants Commission. (2024). e-PG Pathshala: Gateway to postgraduate education. New Delhi: Ministry of Education.
- Ministry of Education, Government of India. (2025). SWAYAM: Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds. Retrieved from https://swayam.gov.in
- ResearchGate. (2025). Research networking and scholarly communication platform. Retrieved from https://www.researchgate.net
- National Knowledge Network (NKN). (2025). Connecting knowledge institutions across India. Retrieved from https://www.nkn.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 42-46

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल के संस्कृत-साहित्य पर महाकवि कालिदास का प्रभाव

डॉ. आरती सरोज

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0प्र0।

शोध-सारांश :

प्राचीनकाल से ही किसी भी काल में रचित साहित्य का प्रभाव उत्तरोत्तर काल की रचनाओं पर पड़ता रहा है। साहित्यिक रचनाएं कालजयी होती हैं। जिसका प्रभाव बाद की रचनाओं पर पड़ता ही है। इस दृष्टि से भारतीय कृतियों का पड़ोसी देशों के साहित्य पर प्रभाव होना, कोई आश्चर्यगत विषय नही है। हिमालय की गोद में अवस्थित नेपाल और भारत के मध्य अनादिकाल से सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक एकरूपता प्राप्त होती है। अतः यहाँ के संस्कृत साहित्य पर भी भारतीय कवियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जिसमें भारतीय कविकुलगुरू महाकवि कालिदास का प्रभाव स्पष्टतया व्यापक एवं गहन स्वरूप में परिलक्षित होता है। कालिदास का उपमा वैशिष्ट्य, वैदर्भी रीति, छंद विधान, प्रकृति वर्णन एवं मानवीकरण नेपाली संस्कृताचार्यों के लिए उपजीव्य रहा है। नेपाली राजकवियों, प्राचीन शिलालेखों के लेखकों और आधुनिक साहित्यकारों ने कालिदास की कृतियों का गहन विश्लेषण एवं उसका अनुकरण किया है।

नेपाल में संस्कृत–साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है, जो ईसा की चौथी–पाँचवीं शताब्दी के लिच्छविकालीन अभिलेखों से प्रारम्भ होकर आधुनिक काल तक अनवरत प्रवाहमान है। भारतीय साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि कालिदास की कृतियाँ रघुवंश महाकाव्यम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् नेपाली साहित्याचार्यों के लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। नेपाल के राजकवियों ने न केवल कालिदास की शैली का अनुकरण किया, अपितु कालिदासीय सौन्दर्यबोध को नेपाल की भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में स्थापित किया।

नेपाल के लिच्छविकालीन राजाओं के शिलालेखों पर उत्कीर्ण लेख संस्कृत काव्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें कालिदासकृत 'रघुवंशम्' के राजाओं के चरित्र चित्रण और उपमा की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। राजा मानदेव के चांगुनारायण अभिलेख से इसकी स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है।

तस्याग्रतस्तनयवान् विनयावनम्रो
मान्यो मनीषी जगदुत्तरकीर्तिधारी।
मानदेवो नृपतिः प्रथितोरूकीर्तिः
सर्वप्रजापतिरिव प्राथितो बभूव।।[1]

उपरोक्त श्लोक 'रघुवंशम्' के प्रथम सर्ग के श्लोक से पूर्णतः प्रभावित है।

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि...।[2]

इस श्लोक में राजा के विनय और प्रजापालक रूप को कालिदासीय उपमाओं से अलंकृत किया गया है।

इसी प्रकार 'अंशुवर्मा का हांडीगाँव अभिलेख' के श्लोक में राजा की तुलना कामदेव और साक्षात् धर्म से की गयी है, जो 'कुमारसंभवम्' के कामदेव–दहन प्रसंग तथा रघुवंशम् की राज–स्तुति का शैली उदाहरण है।

पुण्यान्वयाज्जगति संप्रथितोरूकीर्तिः
सर्वप्रजाप्रशमनैकहिताभियुक्तः।
राजा सदा विजयते मदनस्वरूपो,
धर्मक्रियाविधिपरः क्षितिपालवन्द्यः।।[3]

नेपाल के मल्ल राजा उच्च कोटि के कवि और नाटककार थे। कालिदास की रचनाओं का प्रभाव मल्लकालीन कृतियों पर भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। राजा जगज्ज्योतिर्मल्लकृत 'हरगौरी विवाह' नाटक के मंगलाचरण से स्पष्ट होता है।

पश्येयं वदनं सुधांशुविमलं गौरी हरस्यान्तिके,
लज्जाकुञ्चितलोचना प्रमुदिता मन्दस्मितं तन्वती।
कल्याणं कुरूतां सदा त्रिजगतां देवः पिनाकी मुदा,
भूषा यस्य कपालकुण्डलधरा गंगा च जूटस्थिता।।[4]

यह मंगलाचरण कालिदास के 'कुमारसंभवम्' के शिव–पार्वती विवाह प्रसंग तथा 'शाकुंतलम्' के 'अष्टमूर्ति शिव की स्तुति (या सृष्टिः स्रष्टुराधा') के विन्यास पर आधारित है।

राजा सिद्धिनरसिंह मल्लकृत 'कृष्णचरितम् काव्य का अधोलिखित पद्य कालिदासकृत 'ऋतुसंहार' के शरद ऋतु वर्णन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उपजाति छंद का प्रवाह और शब्दावली कालिदासीय माधुर्य गुण से ओत–प्रोत है।

शरदविमलचन्द्रे भासमाने समन्ताद्,
विकसितकुमुदानां गन्धमादाय वायुः।
रमयति व्रजनारीः कामदेवेन मुग्धा,
मुरलिरवतरंगैरंजिता कृष्णकेलिः।।[5]

नेपाल के आधुनिक संस्कृत–महाकाव्यों में कालिदास के 'रघुवंशम्' को आदर्श रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है। महाकवि सोमनाथ सिग्देल ने अपनी कृति 'आदर्शराघवम् महाकाव्यम्' में कालिदास की शैली को पुनः आधार बनाकर उसे जीवित रखा है।

हिमालयो नाम नगाधिराजः पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य।
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः संलक्ष्यते यस्य शृंगमुच्चैः।।[6]

उपरोक्त श्लोक कालिदासकृत 'कुमारसंभवम्' के प्रथम श्लोक **अस्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा....।**[7] का आंशिक शाब्दिक रूपांतरण है। जहाँ नेपाल के भौगोलिक गौरव हिमालय को पृथ्वी का मानदण्ड कहा गया है।

सोमनाथ सिग्देल रचित 'आदर्शराघवम् महाकाव्यम्' का अधोलिखित श्लोक कालिदासकृत 'रघुवंशम्' के

12वें सर्ग के राम–चरित्र से साम्यता रखता है। जो वैदर्भी रीति और प्रसाद गुण का अनूठा सम्मिश्रण है।

सत्यप्रतिज्ञः पितृवाक्यवर्ती रामो वनं गन्तुमनाः सहर्षम्।
न राज्यलोभं न च सौख्यचिन्तां चकार चित्तं विमलात्मवृत्तिः।।[8]

इसी प्रकार पूर्णप्रसाद ब्राह्मणकृत 'सत्यहरिश्चन्द्रमहाकाव्यम्' का प्रस्तुत श्लोक कालिदासकृत 'रघुवंशम्' में राजा दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा का वर्णन **(तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुम्.....)**[9] की उपमा पद्धति का साक्षात् उदाहरण रानी शैव्या के त्याग की तुलना 'तपोमयी मूर्ति' और 'चन्द्रलेखा' से साम्यता रखता है।

कृशापि सा भूपतिधर्मपत्नी तपोमयी मूर्तिरिव प्रदीप्ता।
अनुव्रजंती दयितं वनान्ते रराज देवी शशिखेव रात्रौ।।[10]

कालिदासकृत 'मेघदूतम्' ने एक सम्पूर्ण विधा दूतकाव्य परम्परा अथवा संदेशकाव्य परम्परा को जन्म दिया। जिसका आश्रय लेकर नेपाली विद्वानों ने मन्दाक्रान्ता छंद युक्त संदेशकाव्यों की रचना की। पं0 रोहिणीवल्लभ शर्मा पोखरेलकृत 'अभिनवमेघदूतम्' इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

मन्दाक्रान्ता विरहविधुरा कापि कान्ता विदूरे,
याते कान्ते जनपदमहो शून्यमेवाद्य जातम्।
याचे मेघं तदिह कुशलं प्रापयेः सुप्रियायै,
मार्गे पश्यन् ललितलतिकां काठमाण्डूपुरीं च।।[11]

उपरोक्त श्लोक में मन्दाक्रान्ता छन्द, वियोग का भाव, मेघ से याचनादि श्लोक में विद्यमान सभी तत्व कालिदासीय हैं, किन्तु कालिदास की अलकापुरी के स्थान पर यहाँ नेपाल की 'काठमाण्डू नगरी' का भौगोलिक चित्रण प्राप्त होता है।

इसी प्रकार से पं0 कुलचन्द्र गौतम कृत 'मनोदूतम्' से कालिदासकृत 'पूर्वमेघ' के जिस प्रकार उज्जयिनी के प्रसादों और मंदिरों का वैभव वर्णित है उसी प्रकार कूटशैली में यहाँ काठमाण्डू के पैगोड़ा शेली के स्वर्ण और ताम्र मंदिरों का वर्णन मन्दाक्रान्ता छंद में दृष्टिगोचर होता है।

गच्छन् दूतमयि चपलतां मा कृथाः पन्थि वर्गे,
नेपालस्य प्रथितविमलां राजधानीं समीक्ष्य।
यस्यां रम्याः कनककलशाः सान्ति देव्यालयानां,
ताम्राकाराः शिखरशिरसि भ्राजमाना विशालाः।।[12]

कवि शिरोमणि 'लेखनाथ पौड्याल' कृत 'राधाकृष्णकेलि' में कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुंतलम् के समान प्रकृति की संवेदनशीलता को स्वीकार करते हुए नेपाल के वनों और कुंजों पर कालिदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से द्योतित होता है।

कालिदासकृत ऋतुसंहार और मालविकाग्निमित्रम् के वसंतोत्सव वर्णन का प्रभाव प्रो0 जनार्दन शर्मा कृत 'वसन्तविहारकाव्य' के आम्र मंजरी और कोयल के माध्यम से वसंत के कामोद्दीपक रूप का चित्रण स्पष्टतया परिलक्षित होता है।

आम्राणां कलिकामवेक्ष्य मुदिता गानं तनोति प्रियां,
कूजदुभीः कलकोकिलैः सहचरीं संप्रार्थयन् कामुकः।

कालिदासस्य वसन्तवैभवमिहागच्छेत् पुनर्नूतनं,
नेपाले वनराजिचुम्बितटे रम्ये हिमालान्तिके।।[13]

पं0 जीवनाथ उपाध्यायकृत 'भक्ततरंगिणी' में शिष्य के ज्ञान की तुलना सूर्य की किरणों से खिलने वाले कमल से की गयी है जो कालिदास के रघुवंशम् के 'संचारिणी दीपशिखेव....' के उपमा शिल्प का साक्षात् प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

शिष्यो गुरूं भजति शुद्धमतिः प्रपन्नो,
विद्यां यथा विमलकीर्तिधरा विनीता।
सूर्यांशुसंपर्कवशाद् विकासं,
प्राप्नोति पद्मसमुदाय इव प्रभाते।[14]

नेपाली संस्कृत साहित्य में अलंकारों के प्रयोग में कालिदास के समान ही सहज भाव दिखायी देता है। उपमा अलंकार के प्रयोग में नेपाल के कवियों जिसमें चातुर्य परिलक्षित है। पं0 हरिनारायण दीक्षितकृत **'नेपालमहिमा काव्यम्'**[8] में कवि यह स्वयं स्वीकार करता है कि नेपाल की पावन भूमि का सौंदर्य ऐसा प्रतीत होता है मानो वह कालिदास के काव्य–प्रवाह में स्नान करके और अधिक पवित्र हो गयी हो।[15]

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि नेपाली संस्कृत साहित्य, भारतीय काव्य एवं नाट्य परम्परा से न केवल प्रभावित ही दिखायी देता है, अपितु इन प्रवृत्तियों का आत्मसात करके अपनी मौलिक पहचान भी प्रतिष्ठित की है। नेपाली संस्कृत साहित्य की आत्मा मौलिक पहचान भी प्रतिष्ठित की है। नेपाली संस्कृत साहित्य की आत्मा महाकवि कालिदास के काव्यराशि से प्रकाशित है। प्राचीन शिलालेख, मल्लकालीन रचनाएं और आधुनिक काल की रचनाएं और कवियों ने कालिदास के कोमल, माधुर्य और हृदयस्पर्शी गुण, उपमायें अलंकारों, रीति एवं छंद चयन, प्रकृति प्रेम एवं नाट्यकला को सहर्ष आत्मसात किया है। कालिदासीय ग्रन्थों का यह प्रभाव न केवल भारत और नेपाल का सम्बन्ध स्थापित करता है अपितु उसके अटूट साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सेतु के जीवंत प्रमाण को प्रतिष्ठापित कर प्रासंगिक और उपादेय बनाता है।

संदर्भ सूची :

1. धनवज्र वज्राचार्य, लिच्छविकाल का अभिलेख, नेपाल और एशियाई अध्ययन संस्थान (CNAS), त्रिभुवन विश्वविद्यालय, पृ0सं0 4।
2. रघुवंशम्, प्रथम सर्ग, 24वाँ श्लोक।
3. नेपाल का प्राचीन अभिलेख, हरिराम जोशी, साझा प्रकाशन, काठमांडू, पृ0 92।
4. मल्लकालीन संस्कृत नाटक, देवीप्रसाद लम्साल, नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, पृ0 54।
5. मल्लकालीन काव्यधारा, पं0 नयराज पंत, संशोधन मण्डल, काठमांडू, पृ0 38।
6. आदर्शराघवम् महाकाव्यम्, सोमनाथ सिग्देल, कौशिका प्रकाशन, काठमांडू, प्रथमसर्ग का प्रथम श्लोक, पृ0 12।
7. कुमासंभवम्, प्रथम सर्ग, प्रथम श्लोक।
8. आदर्शराघवम् महाकाव्यम्, सोमनाथ सिग्देल, कौशिका प्रकाशन काठमांडू, द्वितीय सर्ग, 45वॉ श्लोक,

पृ0 34।
9. रघुवंशम्, द्वितीय सर्ग, 74 श्लोक।
10. सत्यहरिश्चन्द्र महाकाव्यम्, पूर्णप्रसाद ब्राह्मण, नेपाल राष्ट्रीय पुस्तकालय संस्करण, सर्ग 5, श्लोक 18, पृ0 68।
11. अभिनवमेघदूतम्, पं0 रोहिणीवल्लभ शर्मा पोखरेल, वि0सं0 2041 संस्करण, पृ0 3।
12. मनोदूतम्, पं0 कुलचन्द्र गौतम, वाराणसी संस्करण (नेपाली विद्वत समाज), पृ0 15।
13. वसन्तविहार काव्य संग्रह, प्रो0 जनार्दन शर्मा, वि0सं0 पृ0 27।
14. नेपाल का संस्कृत साहित्य : एक ऐतिहासिक अनुशीलन, अनन्ता जरनल, भाग 9, अंक 3, पृ0 440।
15. नेपाल महिमाकाव्यम्, पं0 हरिनारायण दीक्षित, दिल्ली संस्करण, पृ0 5।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 47-51

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जनकपुर– रामायणकालीन संस्कृति में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम – एक दार्शनिक विश्लेषण

डॉ. बबिता सिंह

सहायक प्राध्यापक (दर्शनशास्त्र विभाग)

माता जीजाबाई शास. (स्वशासी) स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण भारतीय संस्कृति का दर्पण है। रामायण केवल एक ऐतिहासिक महाकाव्य नहीं अपितु यह मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का जीवंत दर्शन है। जिसमें श्री राम कोई पौराणिक या ऐतिहासिक पात्र न होकर धर्म के साक्षात् स्वरूप, एक युग पुरुष हैं।

रामायणकालीन संस्कृति में जहाँ जनकपुर (मिथिला) ब्रह्मज्ञान, आत्मविद्या और दार्शनिक विमर्श का वैश्विक केन्द्र था वहीं अयोध्या नीति, राजधर्म और (कर्तव्य) कर्म की धुरी। जनकपुर के आध्यात्मिक प्रभामंडल में सीता स्वयंवर के अवसर पर श्री राम का पदार्पण मात्र विवाह संस्कार की घटना नहीं थी बल्कि परब्रह्म (राम) का, ज्ञान (जनक) व शक्ति (सीता) से साक्षात्कार था। प्रकृति (सीता) और पुरुष (राम) का मिलन था, ब्रह्माण्डीय संतुलन का संदेश थाय जो उन मनुष्यों, देवों एवं ऋषि–मुनियों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ जो राक्षसों के आतंक से भयभीत थे। स्वयंवर में शिव धनुष का भंजन मात्र शक्ति प्रदर्शन नही बल्कि इस बात का प्रतीक था कि मानव के भीतर धनुष रूपी अज्ञानता (जड़ता), रूढ़िवादिता और अहंकार का स्पर्श जब ब्रह्म (ईश्वर) से होता है तो जीव का जड़त्व और अहंकार छिन्न–भिन्न हो जाता है।

यद्यपि श्री राम देव हैं, फिर भी वे समस्त वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक गुणों के अनुकरणीय पुरुष एवं पारिवारिक मूल्यों के कीर्ति अवलम्बन हैं। शील, शक्ति और सौन्दर्य के मूर्त विग्रह हैं। अपने शील स्वभाव से उन्होंने क्षत्रिय कुल द्रोही परशुराम को विनीत बना दिया। यह उनका शील स्वभाव ही था जिससे वनमार्ग में आने वाले समस्त हिंसक व तमोगुणी जीवों ने अपने विषैले स्वभाव का परित्याग कर दिया –

जिन्हहि निरखि मग साँपिनी बीछी।
तजही विषम विषु तामस तीछी।।[1]

अर्थात् उनके शील स्वभाव ने दुर्जनों को भी सज्जन बना दिया। इसलिए महर्षि अत्रि ने उनके शील स्वभाव की प्रशंसा करते हुए कहा कि – "इस विश्व में आपके समान कोई दूसरा नहीं है। इसलिए महादेवी लक्ष्मी ने सभी देवों का परित्याग करके आपको पति के रूप में वरण किया है।"[2]

शील के साथ–साथ वे शक्ति और सौन्दर्य के भी प्रतिमान हैं। जिस प्रचंड अजगव धनुष को रावण और बाणासुर जैसे महा–बलशाली तिल भर भी हिला नहीं सके उसी कठोर धनुष को श्री राम ने सहजता से तोड़ दिया। उनके सौन्दर्य (लोकाभिराम रूप) को देखकर राजा दशरथ के दरबार में प्रथम बार आये विश्वामित्र अपनी अपनी देह को भूल गये :– **राम देखि मुनि देह बिसारी**[3] और जनकपुर में राजा जनक अपनी सुध–बुध भूलकर विदेह हो गये – **मूरती मधुर मनोहर देखि। भयऊ बिदेह बिदेहु विसेषी।।**[4]

इस प्रकार श्री राम मानवीय विशिष्टताओं से परिपूर्ण अनुकरणीय आदर्श हैं। उनका देवत्व जिन सद्गुणों के कारण निखरता है उसके मूल में मर्यादा है। इसलिए अपने गुण, कर्म, शौर्य, त्याग, करुणा, क्षमाशीलता, वाक् संयम, सत्य–संकल्प के कारण वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। उनकी मातृ–पितृ भक्ति, भ्रातृ–प्रेम, पत्नी–प्रेम, प्रजा के प्रति वात्सल्यभाव पारिवारिक मूल्यों की आधारशिला है।

पुत्र रूप में श्री राम का आचरण आदर्श के उच्चतम स्वरूप को प्रस्तुत करता है। पिता के वचन – **'प्राण जाहु बरू बचन न जाई'** की मर्यादा के लिए उन्होंने चौदह वर्ष का वनवास सहजता से स्वीकार कर लिया और वनागमन पश्चात् चित्रकूट में माता कैकेयी के चरण को सर्वप्रथम स्पर्श करना पुत्र धर्म की श्रेष्ठता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रथम राम भेंटी कैकेयी। सरल सुभायँ भगति मति भेरी।।
पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी। काल करम बिधि–सिर धरि खोरी।।[5]

इसी प्रकार भाइयों के प्रति श्री राम का निःस्वार्थ प्रेम अपनी अनुल्लंघ्य मर्यादा की समीक्षा करने के लिए भी उद्यत हो जाता है। चौदह वर्ष का वनवासी जीवन जीने वाले अटल निश्चयी राम, लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर भ्रातृ–प्रेम में भाव विह्वल होकर अनायास ही कहते हैं कि – **जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू।।**[6]

इसी प्रकार श्री राम व भरत द्वारा एक दूसरे के पक्ष में राज्याधिकार का सहर्ष त्याग, रक्त रंजित सिंहासन की प्राप्ति की वैश्विक इतिहास धारा के समक्ष भारतीय पारिवारिक मूल्यों का अद्भुत व अनुल्लंघ्य आदर्श प्रस्तुत करते है।

पुनः रावण द्वारा सीता के अपहरण पश्चात् व्याकुल होकर – **'हे खग हे मृग हे मधुकर श्रेनीय तुम्ह देखि सीता मृगनैनी'**[7] कहकर सीता का पता पूछना, सीता के प्रति उनके प्रेम व करुणा को दर्शाता है। इस प्रकार इन पारिवारिक मूल्यों के प्रतिष्ठा रूप में ही राम के स्वरूप की अवधारणा चरितार्थ होती है।

पुनश्च, वनमार्ग में श्री राम का सुग्रीव, विभीषण, निषाद के प्रति मैत्रीभाव और शरणागत वत्सल्यता अप्रतिम और अपूर्व है। उनका मैत्री भाव, व्यवहार–भूमि की अपेक्षा आध्यात्म भूमि पर प्रतिष्ठित है। इसलिए श्री राम कहते हैं कि –

'जे न मित्र होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी।।[8]

अर्थात् जो मित्र के दुःख में दुःखी नहीं होता, उसे देखने पर भी पाप लगता है।

भारतीय संस्कृति में शरणागत वत्सलता का अत्यधिक महत्त्व है। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार धर्म मात्र कर्मकाण्ड नहीं है बल्कि उन सद्गुणों का पुंजीभूत रूप है जिससे श्रेष्ठत्व का निर्धारण होता है और शरणागत वत्सलता उसमें शीर्षस्थ है। श्री राम शरणागत वत्सल हैं। सुग्रीव द्वारा विभीषण के आगमन का विरोध करने पर

राम अपने संकल्प की घोषणा करते हुए कहते हैं कि –

आर्त्तो वा यदि वा दृप्तः परेशां शरणं गतः।
अरिः प्राणान परित्यज्य रक्षितव्यः कृतात्मना।।[9]

• • •

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं हि मम।।[10]

अर्थात् जो एक बार मेरी शरण में आकर 'मैं तुम्हारा हूँ' ऐसा कहकर मुझसे रक्षा की प्रार्थना करता है, तो उसे मैं समस्त प्राणियों से अभय कर देता हूँ य यह मेरा सदा के लिए व्रत है। अर्थात् – **'मम पन शरणागत भय हारी।'**[11] उनकी शरणागत वत्सलता सर्वात्मभावेन है।

इसलिए वनमार्ग में भील, किरात, निषाद, अन्य वनवासी, वानर, रीछ, पशु–पक्षी जो भी उनके कार्य में किंचित रूप से भी सहायक हुए उनके प्रति श्री राम ने स्नेहिल कृतज्ञता व्यक्त की और उन्हें भरत से भी अधिक प्रिय घोषित किया। इस प्रकार श्री राम केवल प्रेम के नाते बंधे हैं। जाति, धर्म, धन व बड़ाई उन्हें धारण नहीं कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने शबरी (भीलनी) के द्वारा दिये गये जूठे बेरों को प्रशंसा करते हुए प्रेम से खाया–

कंद मूल फल सरस अति, दिये राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए, बार बार बखानि।।[12]

और शबरी द्वारा अपनी अधमता का वर्णन करने पर कहा कि – हे भामिनी! मैं केवल भक्ति (प्रेम) का नाता मानता हूँ, मेरी दृष्टि में कुल और जाति का कोई मूल्य नहीं है। इसलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि –

अधम ते अधमय अधम अति नारि। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।।
कह रघुपति सुनु भामिनी बाता। मानऊँ एक भगति कर नाता।।[13]

इस प्रकार श्री राम ने समाज के वंचित और उपेक्षितों को गले लगाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ा और सम्मान प्रदान किया क्योंकि तत्त्वतः सभी एक हैं और समाज के वर्ग होने के कारण सबका समान महत्त्व है। सभी वर्गों के बीच सौहार्द और समझ के बिना स्वस्थ व आदर्श समाज का निर्माण नहीं हो सकता। इसलिए वे कहते हैं कि –

संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया।
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।[14]

इस प्रकार श्री राम ने सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करके मानव को उसके भीतर के देवत्व का अनुभव कराया।

पुनश्च, श्री राम धर्म के मूर्त विग्रह रूप हैं – **'धर्मो विग्रहवान् धर्मः'**। उनका वाक् और संकल्प (कर्म) उनकी स्थितप्रज्ञता के तथा वचन और आचरण धर्म के परिचायक हैं। रामायण में धर्म केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सत्य, त्याग और कर्तव्य का समन्वित रूप है। श्री राम के लिए धर्म व्यक्तिगत लाभ का माध्यम नहीं बल्कि लोक कल्याण का साधन है। उन्होंने अपनी प्रजा के हित के लिए व्यक्तिगत प्रेम (सीता) का भी त्याग कर दिया इसलिए वे कहते है कि –

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।

आराधनाय लोकास्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।[15]

अर्थात् प्रजा को प्रसन्न रखने (लोकाराधन) के लिए यदि मुझे अपने स्नेह, दया, सुख और यहाँ तक कि अपनी प्राण प्रिया जानकी का भी त्याग करना पड़े तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।

स्पष्ट है कि श्री राम एक श्रेष्ठ लोक नायक हैं जिन्हें पाकर प्रजा धन्यता का अनुभव करती है। राम के राज्य में सभी मनुष्य परस्पर प्रेमपूर्वक निवास करते हुए अपने धर्मपालन में तत्पर थे। स्वप्न में भी किसी को कोई दुःख नहीं था। सभी पुरुष व स्त्री रामभक्ति के प्रति परायण और मोक्ष के अधिकारी थे। धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत में परिपूर्ण हो रहा था। इसी संदर्भ में तुलसीदास जी कहते हैं कि–

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहूँ अघ नाहीं।।
राम भगति रत नर अरू नारी। सकल परम गति के अधिकारी।।[16]

इस प्रकार राम का राज्य एक आदर्श राज्यव्यवस्था थी। उनके रामराज्य का वर्णन करते हुए वाल्मीकि जी कहते हैं कि –

काले वर्षति पर्जन्यः सुभिक्ष विमला दिशः।
हृष्ट पुष्ट जनाकीर्ण पुरं जनपदास्तथा।।
न काले म्रियते कश्चित् व्याधिः प्राणिनां तथा।
नानर्थो विद्यते कश्चिद् रामे राज्यं प्रशासति।।[17]

अर्थात् राम के राज्य में मेघ समय पर वर्षा करते थे जिससे सुकाल ही रहता था, कभी अकाल नहीं पड़ता था, सम्पूर्ण दिशाएं प्रसन्न थीं तथा नगर एवं जनपद हृष्ट पुष्ट मनुष्यों से भरे रहते थे। इस प्रकार रामराज्य भौतिक व आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से समृद्ध था।

अंततः हम देखते हैं कि श्री राम के नैष्ठिक कर्म इसी लोक के लिए समर्पित थे और उनके लौकिक कर्मों ने ही उन्हें अलौकिक बना दिया। वह केवल मर्यादा पुरुषोत्तम ही नहीं अपितु नर से नारायण की यात्रा के पश्चात् ईश्वर के साक्षात् अवतार के रूप में मान्य हुए। इसलिए बलदेव जी कहते है कि–

"मानव भी राम हैं अतिमानव भी राम हैं।"
उसी रूप में सुलभ जिसको जिससे काम है।।[18]

किन्तु वर्तमान में अपसंस्कृति और चरित्र के कठिन दौर में, जब हमारी समस्त नियमावलियाँ अपने वास्तविक रूप को खो चुकी हैं, तो ऐसे में मनुष्य यह नहीं जानता कि वह किस अंधी सुरंग में फँस गया है और कहाँ जाकर गिरेगा, और कैसे उसका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। विकासवाद के मकड़जाल में फँसा हुआ आज का मानव विवश और निरीह हो गया है। चारित्रिक संकट और अविश्वास के इस घोर अंधकारमय वातावरण में श्री राम ही अपने चरित्रा से विश्वास का प्रकाश उत्पन्न करने में सक्षम हैं। इसलिए मैथिलीशरण जी कहते हैं कि–

'त्रेतायुग के नहीं राम, राम तो युग युग के प्रेरणा धाम हैं।
पूर्ण पुरातन चिर नवीन वे, भाव स्रोत हृदयाभिराम हैं।
राम सत्य हैं, रामत्व और भी सत्य कि जिसकी चाह हमें है।
नई परिस्थिति के बीच से सजग देखनी राह हमें है।'[19]

निष्कर्षतः : अन्ततोगत्वा हम देखते हैं कि श्री राम भारतीय मनीषा के विराट सांस्कृतिक उत्कर्ष हैं। जीवन

के उदात्त भावों को अपने कार्य व्यवहारों में निरन्तर रूप देने वाले श्री राम, संस्कृति, मूल्य, चेतना, आस्था और विश्वास के शिखर हैं जिन्हें जनकपुर की धरती ने अयोध्या के राजकुमार से उठाकर वैश्विक मर्यादा पुरूषोत्तम के दार्शनिक स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया। इस प्रकार श्री राम समग्रता में जीवन को अर्थ देने वाले संतुलित आचरण का अमोघ मांत्रिक नाम है। इसलिए मैथिलीशरण जी कहते हैं कि –

"राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज सम्भाव्य है।"[20]

संदर्भ ग्रंथ :

1. रामचरितमानस, 2/261/4, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
2. रामचरितमानस, 3/5ख/4, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
3. रामचरितमानस, 1/206/3, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
4. रामचरितमानस, 1/214/4, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
5. रामचरितमानस, 2/243/4, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
6. रामचरितमानस, 6/60ख/3, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
7. रामचरितमानस, 3/29ख/5, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
8. रामचरितमानस, 4/6/1, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
9. वाल्मिकी रामायण, 6/18/28, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
10. वाल्मिकी रामायण, 6/18/33, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
11. रामचरितमानस, 5/42/4, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
12. रामचरितमानस, 3/34, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
13. रामचरितमानस, 3/34/2, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
14. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत अष्टम सर्ग पृष्ठ 3, प्रकाशन साहित्य सदन चिरगांव, झांसी, (उ.प्र.)।
15. भवभूति, उत्तर रामचरितम, 1/12, प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय, वाराणसी।
16. रामचरितमानस, 7/20/2, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
17. वाल्मिकी रामायण, 7/89/9–10, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
18. बलदेव प्रसाद मिश्र, रामराज्य (प्रबंध काव्य), प्रस्तावना पृष्ठ 11, प्रकाशक हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनउ (उ.प्र.)
19. बलदेव प्रसाद मिश्र, रामराज्य (प्रबंध काव्य), प्रस्तावना पृष्ठ 11, प्रकाशक हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनउ (उ.प्र.)
20. मैथिलीशरण गुप्त, साकेत, मंगलाचरण, प्रकाशन साहित्य सदन चिरगांव, झांसी, (उ.प्र.)।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 52-56

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

SPIRITUAL EDUCATION AND CULTURAL AWARENESS AS CATALYSTS FOR STRENGTHENING INDO-NEPAL RELATIONS

Baburam K. C.
Principal, Mahan Siddhartha High School,
Chabahil, Kumarigal, Kathmandu, Nepal.



Abstract :

"Education is incomplete without spiritual values; knowledge without ethics and respect for human dignity can become a challenge to society."

This paper explores the role of spiritual education and cultural awareness in strengthening Indo-Nepal relations and promoting sustainable peace. India and Nepal share a unique civilizational bond rooted in Vedic wisdom, Buddhist philosophy, common cultural traditions, pilgrimage networks, and enduring people-to-people connections. In an era marked by materialism, social fragmentation and moral challenges, spiritual education offers a framework for cultivating universal values such as compassion, tolerance, self-discipline, truthfulness and non-violence. Likewise, cultural awareness fosters mutual respect, understanding and appreciation of shared heritage. The study highlights the relevance of spiritual principles such as *Samadarshinah Sarvatra* (equal vision toward all beings), *Ahimsa Paramo Dharma* (non-violence as the highest virtue) and *Vasudhaiva Kutumbakam* (the world is one family) in strengthening bilateral harmony. It further examines the significance of cultural exchanges, educational collaboration and shared religious traditions in deepening Indo-Nepal friendship. The paper concludes that integrating spiritual and cultural education into modern learning systems can serve as a powerful catalyst for sustainable peace, ethical development and stronger Indo-Nepal relations.

Keywords :

- Spiritual Education,
- Indo-Nepal Relations,

- Cultural Harmony,
- Sustainable Peace,
- Cultural Awareness,
- Peace Education

INTRODUCTION :

The relationship between India and Nepal extends far beyond geographical proximity and political cooperation. It represents one of the oldest civilizational partnerships in the world, founded upon shared spiritual traditions, cultural values and historical interactions. Both nations have inherited a common legacy from Vedic civilization, Buddhist teachings, Sanskrit scholarship and centuries of people-to-people exchanges.

In the contemporary era, societies are experiencing rapid technological advancement alongside increasing social fragmentation, moral uncertainty and cultural conflicts. Economic development alone has not been sufficient to ensure peace, happiness and ethical living. Consequently, spiritual education and cultural awareness have emerged as important instruments for strengthening social harmony and international friendship.

Spiritual education nurtures universal values such as compassion, truthfulness, tolerance, discipline and non-violence. The Bhagavad Gita's teaching, "समदर्शिनः सर्वत्र" (Equal vision toward all beings), encourages respect and equality among all individuals. Likewise, the principle "अहिंसा परमो धर्मः" promotes peaceful coexistence, while "वसुधैव कुटुम्बकम्" presents the ideal of universal brotherhood. These principles continue to provide a strong foundation for Indo-Nepal relations.

HISTORICAL AND CULTURAL FOUNDATIONS OF INDO-NEPAL RELATIONS :

India and Nepal share one of the world's oldest cultural and spiritual relationships. Their historical interactions predate modern nation-states and are deeply rooted in shared religious traditions, linguistic similarities and common philosophical heritage.

The birthplace of Gautama Buddha in Lumbini and the development of Buddhism across the Indian subcontinent symbolize a profound spiritual connection between the two countries. Similarly, sacred sites such as Pashupatinath, Janakpur, Ayodhya and Varanasi serve as enduring symbols of shared faith and cultural continuity.

Common festivals including Dashain, Tihar, Holi, Chhath and Buddha Jayanti foster social cohesion and mutual understanding among people on both sides of the border. Open borders, intermarriages, educational exchanges and cultural interactions have further strengthened bilateral relations.

The Gurukul tradition and Sanskrit learning facilitated intellectual cooperation and cultural

transmission for centuries. These historical ties demonstrate that spiritual and cultural unity can transcend political boundaries and provide a durable basis for peaceful coexistence.

IMPORTANCE OF SPIRITUAL EDUCATION IN MODERN SOCIETY :

Modern societies have achieved unprecedented advancements in science and technology. Nevertheless, challenges such as stress, violence, intolerance, selfishness and ethical decline continue to affect communities worldwide. Contemporary education often emphasizes academic achievement and professional success while neglecting character formation and moral development.

Spiritual education addresses this gap by promoting self-awareness, ethical conduct and social responsibility. It focuses on universal human values rather than sectarian religious identities. The Bhagavad Gita's teaching "योगः कर्मसु कौशलम्" (Excellence in action is yoga) encourages sincerity, discipline and selfless service.

Similarly, Buddhist teachings emphasize mindfulness, compassion and loving-kindness as essential qualities for harmonious living. Spiritual education helps individuals develop emotional balance, empathy and respect for diversity. Students exposed to value-based learning are more likely to become responsible citizens committed to peace and social justice.

Therefore, integrating spiritual education into educational institutions can significantly contribute to the development of ethical leadership, social harmony and stronger Indo-Nepal friendship.

ROLE OF CULTURAL AWARENESS IN STRENGTHENING INDO-NEPAL HARMONY :

Culture encompasses language, traditions, customs, arts, beliefs and social values. Cultural awareness refers to understanding, respecting and appreciating the cultural heritage of others. In the context of Indo-Nepal relations, cultural awareness acts as a powerful bridge connecting communities and fostering mutual trust.

India and Nepal share numerous cultural practices influenced by Vedic and Buddhist traditions. Shared festivals, rituals, literature and artistic expressions reinforce collective identity and strengthen emotional bonds.

Educational institutions can play a vital role by organizing cultural exchange programs, seminars, workshops and heritage studies. Student exchanges and collaborative cultural activities can help younger generations appreciate shared traditions and values.

The Vedic prayer, "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः" reflects the universal aspiration for peace, well-being and harmony. Such teachings encourage respect for diversity while strengthening social cohesion and international friendship.

SPIRITUAL AND CULTURAL EDUCATION FOR SUSTAINABLE PEACE :

Sustainable peace requires more than political agreements and economic cooperation. Lasting peace emerges from ethical consciousness, mutual respect and responsible citizenship. Spiritual and cultural education contribute significantly to this process by transforming attitudes and behaviors.

Modern conflicts frequently arise from intolerance, prejudice, greed and misunderstanding. Spiritual education cultivates compassion, self-control and moral responsibility, while cultural awareness promotes respect for diversity and intercultural understanding.

The philosophy of "वसुधैव कुटुम्बकम्" encourages individuals to view humanity as one global family. This principle is particularly relevant to India and Nepal because of their longstanding spiritual and cultural connections.

Collaborative initiatives in Sanskrit studies, Buddhist philosophy, yoga education, cultural heritage preservation and religious tourism can strengthen bilateral cooperation. Pilgrimage routes connecting Lumbini, Janakpur, Pashupatinath and Bodh Gaya offer valuable opportunities for promoting people-to-people diplomacy and cultural understanding.

Therefore, spiritual and cultural education can serve as effective tools for achieving sustainable peace, ethical development and regional cooperation.

CONCLUSION :

The relationship between India and Nepal represents a unique model of spiritual, cultural and human unity. Rooted in shared civilization, Vedic wisdom and Buddhist philosophy, this relationship extends far beyond political and economic interactions.

In an age characterized by materialism, social fragmentation and ethical uncertainty, spiritual education and cultural awareness have become increasingly important. Spiritual education promotes compassion, tolerance, wisdom, discipline and non-violence, while cultural awareness strengthens mutual respect, understanding and social harmony.

The timeless principles of "समदर्शिनः सर्वत्र", "अहिंसा परमो धर्मः" and "वसुधैव कुटुम्बकम्" provide valuable guidance for building peaceful societies and strengthening Indo-Nepal relations. Educational institutions, policymakers and scholars should therefore integrate spiritual and cultural education into contemporary learning systems.

Such initiatives can contribute not only to stronger Indo-Nepal friendship but also to sustainable peace, ethical progress and global harmony.

REFERENCES :

- Acharya, S. (2014). Nepal-India relations: A historical perspective.

- Upadhyay, S. (2018). Cultural ties between India and Nepal: Continuity and change. Journal of South Asian Studies, 33(2), 45-60.
- Singh, R. (2010). Cultural diplomacy and international relations. International Journal of Cultural policy, 16(3), 245-260.
- UNESCO. (2021). Education for global citizenship and cultural understanding. UNESCO Publishing.
- UNESCO. (2021). *Education for Sustainable Development: A Roadmap*.

Email: *baburamkc7@gmail.com*

Contact: *+977 9851041122, +977 9741717249*

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 57-64

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का एक अध्ययन

प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सारांश :

भारत और नेपाल के युगीन संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक आधारों पर विकसित एक जटिल एवं बहुआयामी प्रक्रिया को दर्शाते हैं। यह अध्ययन उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के माध्यम से इन संबंधों के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास करता है। प्राचीन काल से ही दोनों देशों के बीच गहरे सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध स्थापित रहे हैं, जिन्हें विद्वानों जैसे Romila Thapar और D. R. Regmi ने अपने अध्ययनों में रेखांकित किया है। औपनिवेशिक काल में Sugauli Treaty ने भारत–नेपाल संबंधों की प्रकृति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, जबकि स्वतंत्रता के पश्चात India–Nepal Treaty of Peace and Friendship ने द्विपक्षीय संबंधों की नई दिशा निर्धारित की। समकालीन दौर में, संबंधों में सहयोग और तनाव दोनों के तत्व दिखाई देते हैं, जिनका विश्लेषण S.D. Muni और C. Raja Mohan जैसे विद्वानों ने किया है। यह साहित्यिक समीक्षा दर्शाती है कि भारत–नेपाल संबंध केवल भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह साझा इतिहास, परंपराओं और पारस्परिक निर्भरता पर आधारित हैं। साथ ही, यह अध्ययन यह भी इंगित करता है कि बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिदृश्यों के कारण इन संबंधों में नई चुनौतियाँ और अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। अंततः, यह शोध संतुलित और बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देता है, जिससे दोनों देशों के बीच सहयोग को और सुदृढ़ किया जा सके।

मुख्य बिंदु :

- भारत–नेपाल संबंध ऐतिहासिक रूप से अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी रहे हैं, जिनकी जड़ें सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक समानताओं में निहित हैं।
- प्राचीन काल में दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक एकता और धार्मिक आदान–प्रदान को Romila Thapar तथा D. R. Regmi जैसे विद्वानों ने विशेष रूप से रेखांकित किया है।
- औपनिवेशिक काल में Sugauli Treaty भारत–नेपाल संबंधों में एक निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसने नेपाल की सीमाओं और राजनीतिक स्थिति को प्रभावित किया।
- स्वतंत्रता के बाद India–Nepal Treaty of Peace and Friendship ने दोनों देशों के बीच विशेष संबंधों (Special Relationship) की नींव रखी।

- S.D. Muni के अनुसार, भारत–नेपाल संबंधों में पारस्परिक निर्भरता (Interdependence) एक प्रमुख तत्व है।
- B.C. Upreti ने 1950 की संधि में असमानता और पुनरीक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है।
- समकालीन समय में C. Raja Mohan ने भारत–नेपाल संबंधों में चीन के बढ़ते प्रभाव को एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में चिन्हित किया है।
- भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, और दोनों देशों के बीच खुली सीमा आर्थिक एवं सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देती है।
- सांस्कृतिक दृष्टि से धार्मिक स्थलों (जैसे काशी और पशुपतिनाथ) के माध्यम से लोगों के बीच गहरे संबंध बने हुए हैं।
- वर्तमान समय में सीमा विवाद, राजनीतिक अस्थिरता और कूटनीतिक तनाव जैसी चुनौतियाँ संबंधों को प्रभावित कर रही हैं।
- समग्र रूप से, भारत–नेपाल संबंध सहयोग, विश्वास और समय–समय पर उत्पन्न चुनौतियों का मिश्रण हैं, जिनके लिए संतुलित और संवेदनशील कूटनीति की आवश्यकता है।

प्रस्तावना :

दक्षिण एशिया में भारत और नेपाल के संबंध अत्यंत प्राचीन, बहुआयामी और विशिष्ट रहे हैं। दोनों देशों के बीच केवल भौगोलिक निकटता ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषायी और सामाजिक समानताएँ भी गहरी हैं। यह संबंध "रोटी–बेटी" के संबंध के रूप में भी प्रसिद्ध हैं, जो पारंपरिक सामाजिक जुड़ाव का प्रतीक है। भारत और नेपाल के संबंधों को "युगीन संबंध" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह संबंध विभिन्न ऐतिहासिक कालों 'प्राचीन, मध्यकालीन, औपनिवेशिक और आधुनिक' में निरंतर विकसित होते रहे हैं। दक्षिण एशिया के परिप्रेक्ष्य में भारत और नेपाल के संबंध एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ दो संप्रभु राष्ट्रों के बीच केवल कूटनीतिक या राजनीतिक संबंध ही नहीं, बल्कि गहरे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संबंध भी विद्यमान हैं। यह संबंध हजारों वर्षों की ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम हैं, जो समय के साथ विकसित होते हुए आज एक बहुआयामी साझेदारी के रूप में स्थापित हुए हैं। भारत और नेपाल की भौगोलिक निकटता 'विशेष रूप से खुली सीमा' इन संबंधों को और अधिक सशक्त बनाती है। लगभग 1800 किलोमीटर लंबी खुली सीमा न केवल व्यापार और आवागमन को सुगम बनाती है, बल्कि दोनों देशों के लोगों के बीच घनिष्ठ सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को भी प्रोत्साहित करती है। यही कारण है कि भारत–नेपाल संबंधों को अक्सर "रोटी–बेटी का संबंध" कहा जाता है, जो केवल एक रूपक नहीं बल्कि वास्तविक सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारत और नेपाल के संबंध प्राचीन काल से ही धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर विकसित हुए। रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में नेपाल क्षेत्र का उल्लेख मिलता है, जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों क्षेत्रों के बीच प्राचीन काल से ही संपर्क और आदान–प्रदान होता रहा है। विशेष रूप से सीता का जन्म नेपाल के जनकपुर में माना जाना, दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त गौतम बुद्ध का जन्म लुंबिनी में होना, भारत और नेपाल को बौद्ध धर्म के माध्यम से भी गहराई से जोड़ता है। मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल में भी भारत–नेपाल संबंधों में निरंतरता बनी रही, यद्यपि इन कालों में

राजनीतिक परिस्थितियों के कारण संबंधों का स्वरूप बदलता रहा। विशेष रूप से एंग्लो–नेपाल युद्ध और उसके परिणामस्वरूप हुई सुगौली संधि ने नेपाल की भौगोलिक सीमाओं और राजनीतिक स्थिति को प्रभावित किया, जिससे भारत–नेपाल संबंधों की नई दिशा निर्धारित हुई। आधुनिक काल में, विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद, भारत और नेपाल के संबंधों को संस्थागत रूप देने के लिए भारत–नेपाल शांति और मैत्री संधि 1950 एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। इस संधि ने दोनों देशों के बीच खुली सीमा, आर्थिक सहयोग, सुरक्षा साझेदारी और नागरिकों के लिए आवागमन की स्वतंत्रता जैसे महत्वपूर्ण प्रावधानों को स्थापित किया। यह संधि आज भी दोनों देशों के संबंधों की आधारशिला मानी जाती है।

भारत–नेपाल संबंधों की विशेषता यह है कि ये केवल राज्य–स्तरीय (State-to-State) संबंध नहीं हैं, बल्कि जन–स्तर (People-to-People) पर भी अत्यंत मजबूत हैं। धार्मिक यात्राएँ, सांस्कृतिक उत्सव, भाषा और परंपराएँ– ये सभी तत्व दोनों देशों को एक साझा सभ्यता के रूप में जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर और भारत का काशी विश्वनाथ मंदिर दोनों देशों के श्रद्धालुओं के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, इन गहरे और बहुआयामी संबंधों के बावजूद, भारत और नेपाल के संबंध समय–समय पर विभिन्न चुनौतियों का सामना भी करते रहे हैं। सीमा विवाद, राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक निर्भरता और क्षेत्रीय शक्तियों 'विशेष रूप से चीन' का बढ़ता प्रभाव, इन संबंधों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। इसके बावजूद, दोनों देशों ने संवाद, सहयोग और कूटनीति के माध्यम से अपने संबंधों को संतुलित बनाए रखने का प्रयास किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है, जिसमें उनके ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक आधार, राजनीतिक आयाम, आर्थिक सहयोग, रणनीतिक महत्व और समकालीन चुनौतियों का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। यह अध्ययन न केवल अतीत और वर्तमान को समझने का प्रयास है, बल्कि भविष्य में इन संबंधों की संभावनाओं का भी मूल्यांकन करता है। इस प्रकार, भारत–नेपाल संबंध एक जीवंत और गतिशील प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो समय, परिस्थितियों और वैश्विक परिवर्तनों के साथ निरंतर विकसित हो रही है।

भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का अध्ययन करते समय "साहित्यिक समीक्षा" (Literature Review) अत्यंत महत्वपूर्ण घटक होता है, क्योंकि यह विषय से संबंधित पूर्व शोध, विचारधाराओं और निष्कर्षों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है। नीचे इस विषय पर एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है :

साहित्यिक समीक्षा :

भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत गहरे और बहुआयामी रहे हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, साझा सांस्कृतिक विरासत और पारस्परिक निर्भरता इन संबंधों की विशेषता है। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों, इतिहासकारों और शोधकर्ताओं ने अलग–अलग दृष्टिकोणों से इन संबंधों का अध्ययन किया है।

प्राचीन एवं मध्यकालीन संबंधों पर साहित्य :

प्राचीन काल में भारत और नेपाल के संबंधों का उल्लेख धार्मिक ग्रंथों, पुराणों और ऐतिहासिक अभिलेखों में मिलता है। विद्वान Romila Thapar और D. R. Regmi ने अपने कार्यों में यह स्पष्ट किया है कि नेपाल, भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र का अभिन्न अंग रहा है।

- D. R. Regmi ने नेपाल के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालते हुए यह बताया कि नेपाल में हिंदू और बौद्ध धर्म का विकास भारत के प्रभाव से हुआ।
- वहीं Romila Thapar ने भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक विस्तार में नेपाल की भूमिका को रेखांकित किया है।

मध्यकाल में भी काठमांडू घाटी और उत्तर भारत के राज्यों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता रहा, जिसका उल्लेख विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों में मिलता है।

औपनिवेशिक काल और ब्रिटिश प्रभाव :

औपनिवेशिक काल में भारत–नेपाल संबंधों पर ब्रिटिश नीति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। Sugauli Treaty इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण घटना है।

- इस विषय पर John Whelpton ने विस्तार से चर्चा की है, जिन्होंने नेपाल के राजनीतिक इतिहास और ब्रिटिश–नेपाल संबंधों का विश्लेषण किया।
- Leo E. Rose ने अपनी पुस्तक "Nepal : Strategy for Survival" में बताया कि नेपाल ने ब्रिटिश भारत और चीन के बीच संतुलन बनाए रखने की नीति अपनाई।

स्वतंत्रता के बाद के संबंधों पर साहित्य :

भारत की स्वतंत्रता के बाद भारत–नेपाल संबंधों में एक नया अध्याय शुरू हुआ। India–Nepal Treaty of Peace and Friendship इस संबंध में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

- B.C. Upreti ने इस संधि को भारत–नेपाल संबंधों की आधारशिला माना है, लेकिन साथ ही इसमें असमानता की आलोचना भी की है।
- S.D. Muni ने भारत–नेपाल संबंधों में "विशेष संबंध" (Special Relationship) की अवधारणा को विस्तार से समझाया है।

इन अध्ययनों में यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक सहयोग, सुरक्षा चिंताएँ और राजनीतिक स्थिरता इन संबंधों के प्रमुख आयाम रहे हैं।

समकालीन अध्ययन और चुनौतियाँ :

समकालीन समय में भारत–नेपाल संबंधों पर कई नए मुद्दे उभरे हैं, जैसे सीमा विवाद, जल संसाधन, और राजनीतिक अस्थिरता।

- Pushpa Kamal Dahal (प्रचंड) के नेतृत्व में नेपाल की राजनीति में आए बदलावों ने भारत–नेपाल संबंधों को नए आयाम दिए।
- C. Raja Mohan ने भारत–नेपाल संबंधों में चीन के बढ़ते प्रभाव को एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में देखा है।

2015 के नेपाल संविधान और उसके बाद के भारत–नेपाल संबंधों में आई तनावपूर्ण स्थिति पर भी कई शोध कार्य हुए हैं, जिनमें यह बताया गया है कि आपसी विश्वास में कमी आई है।

आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों पर अध्ययन :

भारत और नेपाल के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों पर भी व्यापक साहित्य उपलब्ध है।

- व्यापार और निवेश पर विभिन्न आर्थिक सर्वेक्षणों में यह दर्शाया गया है कि भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।
- सांस्कृतिक दृष्टि से दोनों देशों के बीच धार्मिक पर्यटन (जैसे पशुपतिनाथ और काशी) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समालोचनात्मक विश्लेषण :

उपरोक्त साहित्य का विश्लेषण करने पर कुछ महत्वपूर्ण बिंदु सामने आते हैं :

- अधिकांश प्रारंभिक अध्ययन भारत–केंद्रित दृष्टिकोण से लिखे गए हैं।
- नेपाल के विद्वानों ने भारत के प्रभाव को कभी–कभी "हस्तक्षेप" के रूप में देखा है।
- समकालीन शोध अधिक संतुलित और बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाते हैं।

साहित्यिक समीक्षा से स्पष्ट होता है कि भारत–नेपाल संबंधों का अध्ययन बहुआयामी और निरंतर विकसित होने वाला क्षेत्र है। प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों से लेकर आधुनिक राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों तक, इन संबंधों में निरंतर परिवर्तन देखा गया है। भविष्य के शोध के लिए यह आवश्यक है कि दोनों देशों के दृष्टिकोण को समान महत्व दिया जाए और नए वैश्विक संदर्भों में इन संबंधों का पुनर्मूल्यांकन किया जाए।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

प्राचीन काल :

प्राचीन काल में भारत और नेपाल के संबंध धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर विकसित हुए।

- रामायण में वर्णित सीता का जन्म नेपाल के जनकपुर में हुआ माना जाता है।
- महाभारत में भी नेपाल क्षेत्र का उल्लेख मिलता है।
- गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी में हुआ, जिससे दोनों देशों के बीच धार्मिक संबंध मजबूत हुए।

मध्यकालीन काल :

मध्यकाल में नेपाल और भारत के विभिन्न राजवंशों के बीच राजनीतिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान जारी रहा।

- काठमांडू घाटी में भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
- व्यापारिक संबंध भी इस काल में मजबूत हुए।

औपनिवेशिक काल :

ब्रिटिश शासन के दौरान नेपाल ने अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी, लेकिन भारत के साथ उसके संबंध अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए।

- एंग्लो–नेपाल युद्ध के बाद सुगौली संधि हुई, जिसने नेपाल की सीमाओं को निर्धारित किया।
- ब्रिटिश भारत और नेपाल के बीच सैनिक सहयोग भी विकसित हुआ।

आधुनिक काल में भारत–नेपाल संबंध :

1950 की शांति और मैत्री संधि :

भारत और नेपाल के आधुनिक संबंधों की नींव भारत–नेपाल शांति और मैत्री संधि 1950 पर आधारित है।

इस संधि के प्रमुख बिंदु :

- खुली सीमा व्यवस्था।
- नागरिकों को आवागमन और रोजगार की स्वतंत्रता।
- सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग।

राजनीतिक संबंध (Political Relations)

भारत और नेपाल के बीच राजनीतिक संबंध समय–समय पर उतार–चढ़ाव से गुजरे हैं।

मुख्य विशेषताएँ :

- नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना में भारत की भूमिका।
- नेपाल का संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बनना।
- सीमा विवाद (जैसे कालापानी मुद्दा)।

भारत नेपाल की आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करने की नीति अपनाता है, लेकिन दोनों देशों के बीच रणनीतिक महत्व के कारण संबंध संवेदनशील बने रहते हैं।

आर्थिक संबंध (Economic Relations)

भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।

मुख्य बिंदु :

- नेपाल के कुल व्यापार का बड़ा हिस्सा भारत के साथ।
- भारत द्वारा नेपाल में निवेश (ऊर्जा, सड़क, शिक्षा)
- जलविद्युत परियोजनाएँ (Hydropower Projects)

नेपाल की अर्थव्यवस्था में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है, विशेषकर :

- पेट्रोलियम आपूर्ति
- खाद्य सामग्री
- निर्माण सामग्री

सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध (Cultural & Social Relations)

भारत और नेपाल के संबंधों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सांस्कृतिक एकता है।

मुख्य पहलू :

- साझा धर्म (हिंदू और बौद्ध धर्म)
- भाषा समानता (हिंदी और नेपाली)
- विवाह संबंध (रोटी–बेटी संबंध)

धार्मिक स्थल :

- पशुपतिनाथ मंदिर (नेपाल)
- काशी विश्वनाथ मंदिर (भारत)

ये स्थल दोनों देशों के लोगों के बीच आध्यात्मिक संबंध को मजबूत करते हैं।

सुरक्षा और रणनीतिक संबंध (Security & Strategic Relations)

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा (1800 किमी) है, जो दोनों देशों के लिए अवसर और चुनौती दोनों

है।

मुख्य मुद्दे :

- सीमा पार अपराध
- तस्करी
- अवैध गतिविधियाँ

भारत और नेपाल मिलकर सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने का प्रयास कर रहे हैं।

समकालीन चुनौतियाँ (Contemporary Challenges)

सीमा विवाद :

- कालापानी, लिपुलेख, लिम्पियाधुरा क्षेत्र विवाद।

चीन का प्रभाव :

- चीन का नेपाल में बढ़ता प्रभाव।
- बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

राजनीतिक अस्थिरता :

- नेपाल में सरकारों का बार–बार बदलना।

भारत-नेपाल संबंधों के लाभ (Advantages)

- क्षेत्रीय स्थिरता।
- आर्थिक विकास।
- सांस्कृतिक एकता।
- रणनीतिक सहयोग।

भविष्य की संभावनाएँ (Future Prospects)

भारत और नेपाल के संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए :

- विश्वास निर्माण।
- आर्थिक सहयोग बढ़ाना।
- सीमा विवाद का समाधान।
- सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा।

निष्कर्ष :

भारत और नेपाल के संबंध केवल दो देशों के बीच के कूटनीतिक संबंध नहीं हैं, बल्कि यह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक जुड़ाव का उदाहरण हैं। समय–समय पर उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, दोनों देशों ने अपने संबंधों को बनाए रखा है। भविष्य में, यदि दोनों देश पारस्परिक सम्मान, सहयोग और विश्वास के आधार पर आगे बढ़ते हैं, तो यह संबंध दक्षिण एशिया में शांति और विकास का महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं। भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का गहन अध्ययन यह दर्शाता है कि ये संबंध समय के साथ निरंतर विकसित होते रहे हैं और इनकी प्रकृति स्थिर न होकर गतिशील रही है। ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक एकरूपता ने एक मजबूत आधार तैयार किया, जिसे Romila Thapar तथा D. R. Regmi जैसे

विद्वानों ने विस्तार से स्पष्ट किया है। यह आधार आज भी जन–स्तर (People-to-People Relations) पर संबंधों को मजबूत बनाए रखता है। औपनिवेशिक काल में Sugauli Treaty ने नेपाल की राजनीतिक स्वायत्तता और क्षेत्रीय सीमाओं को प्रभावित करते हुए संबंधों में एक नया आयाम जोड़ा। वहीं, स्वतंत्रता के बाद India–Nepal Treaty of Peace and Friendship ने दोनों देशों के बीच औपचारिक और संस्थागत संबंधों की नींव रखी, जिसने सुरक्षा, व्यापार और आवागमन को सुदृढ़ किया। साहित्यिक समीक्षा के समग्र विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत–नेपाल संबंधों को समझने के लिए केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, बल्कि राजनीतिक, आर्थिक और भू–रणनीतिक (Geostrategic) पहलुओं को भी समान रूप से महत्व देना आवश्यक है। S.D. Muni ने इन संबंधों में "विशेष संबंध" की अवधारणा को महत्वपूर्ण बताया है, जबकि B. C. Upreti ने इसमें असमानता और पुनर्संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया है। समकालीन संदर्भ में, C. Raja Mohan के अनुसार, चीन का बढ़ता प्रभाव, सीमा विवाद, और नेपाल की आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता, भारत–नेपाल संबंधों के लिए नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, 21वीं सदी में वैश्वीकरण, क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका, और आर्थिक सहयोग के नए अवसर भी इन संबंधों को प्रभावित कर रहे हैं।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि भारत–नेपाल संबंध न केवल ऐतिहासिक विरासत का परिणाम हैं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार निरंतर पुनर्परिभाषित हो रहे हैं। इन संबंधों की स्थिरता और सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है कि दोनों देश पारस्परिक सम्मान, संप्रभुता की स्वीकृति, और संतुलित कूटनीति को प्राथमिकता दें। साथ ही, विश्वास–निर्माण, आर्थिक साझेदारी, और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देकर इन संबंधों को और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ :

1. भारत–नेपाल शांति और मैत्री संधि, 1950
2. दक्षिण एशियाई राजनीति पर शोध पत्र।
3. नेपाल सरकार और भारत सरकार की आधिकारिक रिपोर्ट।
4. ऐतिहासिक ग्रंथ (रामायण, महाभारत)
5. अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर अकादमिक पुस्तकें।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 65-68

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सांस्कृतिक सेतु तथा भाषाई आदान प्रदान : हिंदी साहित्य के विकास में नेपाली साहित्यकारों की देन

डॉ. दीपिका शर्मा

.....

शोध संक्षेप :

भाषा–साहित्य भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं को पारकर वैश्विक मानवीय संवेदनाओं को जोड़ने का माध्यम बनते हैं। भारत और नेपाल के ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक अन्तर्सम्बन्धों ने दोनों देशों के बीच एक सदृढ़ भाषा एवं साहित्य के नियमों को जन्म दिया है। हिंदी और नेपाली दोनों की भाषाएँ देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्धेश्य ही हिंदी साहित्य के विकास में नेपाली मूल तथा भारतीय नेपाली साहित्यकारों के योगदान का विश्लेष्णात्मक मूल्याकंन करने से हैं। देवनागरी लिपि की सांझी विरासत को समेटे इस भाषाई विनियम दार्जिलिंग, वाराणसी और कोलकाता जैसे मुद्रण और शिक्षा केन्द्रों की भूमिका के लिए रही है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि नेपाली लेखकों ने हिंदी के समस्त साहित्य में अपनी एक अनूठी सोच को आगे समृद्ध किया है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक सेतु, भाषाई आदान–प्रदान, नेपाली साहित्यकार, आधुनिक हिंदी नेपाली साहित्य।

हिंदी भाषा न केवल भारत की सीमाओं तक ही रही है अपितु इसने भारत से बाहर निकलकर वैश्विक स्तर पर भी अपनी अतुल छाप बना कर अपनी अद्भुत छवि मानवीय मस्तिष्क पर छोड़ी है। हिंदी भाषा के साथ–साथ चाहे हम हिंदी साहित्य की बात भी करें, तब भी हिंदी साहित्य ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व स्तर पर अपनी बुलंदी को छुआ है इसके लिए अनेकों विदेशी लेखकों ने हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में एक अहम भूमिका निभाई है, जोकि एक ऐतिहासिक रहा है। विभिन्न देशों के विभिन्न विद्वानों जैसे फादर कामिल बुल्के, रुसी विद्वान प्रो. गेरासिस लेन्चेदेत, प्रो मैक्समूलर, जॉन गिलक्रिस्ट, एफ ई पीके, के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिन्होंने समय–समय पर हिंदी भाषा साहित्य पर विशेष रूप से कार्य कर हिंदी साहित्य और भारतीय चिन्तन को वैश्विक मान्यता दिलाने में सहायता प्रदान की। इतिहास गवाह रहा है "हरेक भाषा के साहित्य का सम्बन्ध मानवता से है। अतः साहित्य असीमित और निर्बाध है। मानवी मूल्यों का पक्षगामी होने के कारण इसे एक भाषा–भाषी लोग दूसरी भाषा–साहित्य का अनुसरण करते हैं।"[1] क्योंकि साहित्य किसी भी समाज का दर्पण होने के साथ–साथ वहां के लोगों की भावनाओं को भी व्यक्त करता है। हिंदी भी एक ऐसी भाषा है जिसका साहित्य इतना विशाल है जो राष्ट्रीय परिधि से बाहर निकलकर वैश्विक स्तर पर भी साहित्यिक परिणाम

में वृद्धि करती रही है। जिसका एक मात्र कारण है यहाँ की भारतीय संस्कृति। भारत की अद्‌भुत संस्कृति ने अनेकों देशों के लेखकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। "आंकड़ों के अनुसार से यह कहा जाए तो विश्व स्तर पर भी हिंदी प्रेमियों की संख्या 1103 मिलियन है। जिसमें पाकिस्तानी, नेपाली, भूटान, अफगानिस्तान, वर्मा, बंगलादेश, श्रीलंका, जापान, कनाडा, मार्रिशस, तजाकिस्तान, उज्केजिस्तान, थाईलैंड।"[2] जैसे देश शामिल हैं जो हिंदी भाषा में लिखकर हिंदी साहित्य के विकास में योगदान देते रहे हैं। जिस देश ने भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य में सबसे ज्यादा योगदान देने में आपनी प्रमाणिकता सिद्ध की है उस देश में नेपाल सबसे पहली पंक्ति में सैदव खड़ा रहा है। हिन्दी नेपाल के लोगों की प्रथम या द्वितीय भाषा नहीं है फिर भी उन सबों के लिए उतनी ही उपयोगी है, जितना हिंदी का अच्छा ज्ञान नेपाली के अच्छे ज्ञान में स्वाभाविक रूप से उपयोगी होता है। "लोहिया ने इसी सुझाव में यह भी कहा था कि मानस और नृवंशीय दृष्टि से ये देश चीन की अपेक्षा भारत के अधिक निकट है हमें नेपाल का प्रसंग इससे अलग नहीं समझना चाहिए। भारत और नेपाल के संबंध उतने ही प्राचीन कहे जा सकते हैं, जितनी इन दोनों देशों में विकसित जीवन–परंपरा, संस्कृति और सभ्यता है।"[3] नेपाल में हिंदी का अच्छा ज्ञान होने के कारण समय–समय पर हिंदी का साहित्य भी उपलब्ध होता रहा है। नेपाल में उपलब्ध हिंदी साहित्य की अनेकों हस्तलिखित प्रतियाँ मिलती रही है। "प्राचीन साहित्यकारों में नाथपन्थी एवं विद्यापति की रचनाओं से लेकर विगत शताब्दी तक की कई रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियाँ स्थान स्थान पर देखने को मिलती हैं। वहां के अनेक मल्लकालीन रचनाओं की हिंदी रचनाएँ भी उपलब्ध होती है। मल्ल रचनाओं का समय आज से दो सो वर्ष पूर्व से लेकर छः सौ वर्ष पूर्व से भी अधिक तक ठहरता है। इसी काल में एक मानवीर कछीपति नाम के व्यक्ति का लिखा नाटक 'श्री कृष्ण चरित प्याप्त' नेपाल के तत्कालीन हिंदी साहित्य का नुमना है।"[4]

इसके अतिरिक्त नेपाली साहित्य की कई महान हस्तियाँ प्राचीन एवं समसामयिक रही हैं जैसे आशुकवि शंभुप्रसाद दुन्गेल, मोतीराम भट्ट, लेखनाथ पौडयाल, गिरीश बल्लभ जोशी, रघुनाथ भोट,उद्यानंद अज्यार्ल से लेकर आधुनिक कथाकार उपन्यासकार भवानी भिक्षु (श्री भिक्षु तो मूलतः हिंदी भाषी और हिंदी लेखक ही थे) सरदार रुदाज पांडे, लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, सूर्यविक्रम व्यथित आदि वरिष्ठ नेपाली साहित्यकारों के भी कई हिंदी रचनाएँ मिलती हैं।" नेपाली लेखक शुभप्रसाद देवकी नन्दन खत्री के उपन्यास 'चन्द्रकान्ता और चंद्रकांता सन्तित' से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने उन्हीं के मार्दर्शन पर चलते हुए हिंदी में 'प्रेमकांता' को आठ भागों में तथा 'प्रेमकांता सन्तित' उपन्यास बारह भागों में लिखा जो प्रकाशित भी हुआ है।

"आधुनिक लेखकों में से जिन विशिष्ट नेपाली साहित्यकारों की उल्लेखनीय हिंदी रचनाएँ मिलती हैं "उनमें मोहनराज शर्मा, डॉ धुव्रचन्द्र गौतमा, चेतन कार्की, दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ उपेन्द्र, धूस्वां सापमि आदि का नाम प्रमुख है। मूल रूप से सिर्फ हिंदी में लिखने वालों में श्री बुन्नीलाल एक ऐसे लेखक हैं जिनकी रचनाओं में नेपाल के पूर्वांचल के जीवन का सुंदर चित्रण पाया जाता है। बुन्नीलाल नेपाल में फणीश्वर नाथ रेणु और नागार्जुन की याद दिलाते हैं। इनकी शैली पाठकों में अपना एक रस बाँधने पर विवश कर देती है इनके अतिरिक्त तारिणी प्रसाद यादव, केदार मानंधर आदि लेखकों की भी सशक्त रचनाएँ मिलती है" जिनकी वास्तव में नेपाल में हिंदी साहित्यिक गतिविधि काफी उत्साहवर्धक रही है।

अगर हम बीसवी ओर इक्किसवी सदी के शुरआती दौर की बात करें तो जब नेपाल और भारत की

सीमाओं के साथ लगते क्षेत्रों से लोग काम करने या पढ़ाई हेतु बनारस या कोलकाता आए तो हिंदी को ही अपना माध्यम बनाया। इन लेखकों ने न केवल नेपाली भाषा को नवीन रूप दिया बल्कि हिंदी में बहुत सारी रचनाएँ भी लिखी। यह मात्र भाषाई लेन–देन या धार्मिकता से नहीं जुड़ा हुआ था अपितु समाज की सच्चाई को यथार्थ रूप से चित्रित करने के लिए भी था। हिंदी साहित्य के जिन क्षेत्रों में नेपाली लेखकों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वो निम्नलिखित हैं –

काव्य के क्षेत्र में योगदान :

काव्य के क्षेत्र में जिन नेपाली मूल के कवियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनमें 'गोपाल सिंह नेपाली' का नाम प्रथम श्रेणी में आता है। उन्होंने कठिन हिंदी भाषा के स्थान पर सरल और संगीतात्मक भाषा का प्रयोग किया। उनके काव्य संग्रह 'उमंग' और 'पंछी' जोकि 1933 में प्रकाशित हुए थे। हिंदी प्रेमियों के हृदय में बहुत लोकप्रिय हुए थे। इसी प्रकार देश भक्ति की भावना को व्यक्त करने के लिए उन्होंने 1962 में 'हिमालय की पुकार' नामक काव्य लिखकर भारत के लोगों में देश भक्ति की भावना कूट–कूट कर भर दी थी। उन्होंने 54 से ज्यादा हिंदी फिल्मों के लिए लगभग 400 से ज्यादा गाने भी लिखें। अपने गानों के माध्यम से उन्होंने साधारण हिंदी को भारत के कोने–कोने तक पहुंचाने का कार्य किया।

कहानी के क्षेत्र में योगदान लोगों के जीवन संघर्ष को अपने विषयों का केंद्र बना कर अनेकों कहानियों की रचना की है। उनमें से महत्वपूर्ण कहानीकार 'इन्दर बहादुर राई' {1927–2011} ने अपनी कहानी 'रात भर हुरी चल्यो' अर्थात् रात भर आंधी चलती रही, का हिंदी में अनुवाद हुआ। इस कहानी में इंसानी दिमाग तथा अकेलेपन की त्रासदी को समझाने का एक नवीन ढंग बताया गया है।

उपन्यास के क्षेत्र में योगदान :

उपन्यास समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करने वाले होते हैं। जिन नेपाली उपन्यासकारों के हिंदी अनुवादकों ने हिंदी पाठकों को वहां के पहाड़ों और सीमावर्ती इलाकों के यथार्थ और समस्याओं से परिचित करवाने का प्रयास किया उनमें 'लीलबहादुर छेत्री' तथा 'लैन सिंह बांग्देव' का नाम महत्वपूर्ण हैं। 'लीलबहादुर' द्वारा लिखित उपन्यास 'बसांई' अर्थात् बस्ती में गरीबी और कर्ज के कारण गाँव छोड़कर जाने वाले लोगों के करूणा भरे जीवन की दास्तान है। इस उपन्यास को प्रेमचन्द के उपन्यास 'गोदान' की तरह ही सम्मान मिलता है। उसी तरह लैन सिंह बांग्देव द्वारा लिखित उपन्यास 'मुलुक बाहिर' अर्थात् देश के बाहर के अंतर्गत प्रवासियों की मानसिक एवं सामाजिक जीवन की दर्दनाक स्थिति का चित्रण मिलता है जो अपने पुश्तैनी घर छोड़कर नई जगह पर आ कर बसते हैं। इस उपन्यास के द्वारा मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को लिखने के लिए एक नई दिशा प्रदान हुई है।

नाटक के क्षेत्र में योगदान :

नाटक सदैव से ही जनता के साथ भावनाओं के आदान प्रदान और सीधे जुड़ने का माध्यम होता है। उसी श्रेणी में जिन नेपाली नाटककारों ने भी हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनमें बालकृष्ण सम {1902–1981} है उन्हें नेपाल का शेक्सपियर की संज्ञा दी जाती है। उनके प्रसिद्ध नाटकों में 'मुटुको व्यथा', 'मुकुंद इन्द्रा', 'अमर सिंह','प्रेमपिंड', 'भीम सेन को अन्त्य', 'प्रल्हाद', 'ध्रुव्र' हैं। उसी प्रकार गोपाल प्रसाद रिमाल ने अपने नाटकों में सामाजिक समस्याओं की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया है। 'मसान' {श्मशान} में

महिलाओं के अधिकारों और उनके साथ होने वाले सामाजिक भेदभाव को चित्रित किया है।

अनुवाद के क्षेत्र में योगदान :

भारत–नेपाल की सांस्कृतिक और भाषाई सेतु को मजबूत करने में अनुवाद सबसे अहम भूमिका निभाता है। डॉ. कमला सांकृत्यायन ने कई नेपाली किताबों का हिंदी में अनुवाद किया। जैसे 'नेपाली साहित्य का इतिहास' नामक हिंदी पुस्तक लिखी। उसी तरह लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा जैसे नेपाली कवियों की रचनाओं को साहित्य अकेदमी ने छपवाकर हिंदी के साहित्य को अधिक समृद्ध बनाने का प्रयास किया है।

अंतः उपरोक्त सम्पूर्ण विवेचन से यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य का इतिहास न केवल हिंदी भाषा राज्यों तक सीमित रहा है बल्कि नेपाली मूल के लेखकों में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यह पूरा भाषाई और सांस्कृतिक लेन–देन किसी भी धार्मिक यात्रा या संकीर्ण सोच से अलग, पूरी तरह से मानवीय संवेदना, समाज से यथार्थ, किताबों की छपाई और परस्पर भाईचारे और सद्भावना पर आधारित है। गोपाल सिंह नेपाली के सरल गीत, लीलबहादुर छेत्री के यथार्थवादी उपन्यास तथा बालकृष्ण सम के वैचारिक नाटक आज हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर बन चुके हैं। इसलिए हिंदी साहित्य के पूरे इतिहास को समझने के लिए नेपाली लेखकों के इस योगदान को हमेशा स्मरणीय रखा जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. लक्ष्मी प्रसाद शर्मा, भारतेंदु हरिचन्द्र एवं पं. मोतीराम भट्ट के साहित्यिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Advanced Academic Studies , पृष्ठ. सं–328
2. डॉ. अमृता सिंह, हिन्दी साहित्य को प्रवासी साहित्यकारों का योगदान, कश्मीर विश्वविद्यालय, https://hindi.uok.edu.in
3. डॉ. गोमा देवी शर्मा, भारतीय नेपाली साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. पहला संस्करण 2025, पृष्ठ. सं. 20.
4. सूर्यनाथ गोप, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, http://bharatdiscovery.org/india.
5. सूर्यनाथ गोप, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, http://bharatdiscovery.org/india.
6. सूर्यनाथ गोप, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, http://bharatdiscovery.org/india.
7. सूर्यनाथ गोप, नेपाल में हिन्दी और हिन्दी साहित्य, http://bharatdiscovery.org/india.
8. गोपाल सिंह नेपाली, काव्य संग्रह उमंग, लहरिया सराय, पुस्तक भंडार, 1933.
9. कमला सांस्कृत्यायन, नेपाली साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, 1980.
10. लीलबहादुर क्षेत्री, बसाई उपन्यास हिंदी अनुवाद बस्ती, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी, 2002.
11. शोधगंगा डिजिटल डेटाबेस : हिंदी और नेपाली कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, शोधप्रबंध.
12. साहित्य अकादेमी आधिकारिक प्रकाशन, नेपाली– हिंदी अनुदित कृतियों की सूची, नई दिल्ली.

दूरभाष–8899247612

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 69-75

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मुण्डाओं में विवाह परंपराओं का दस्तावेजीकरण भारत के संदर्भ में

दीत ओड़ेया

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची।

सृष्टि के निरंतर संचालन और मानव जीवन की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए विवाह की परंपरा विकसित हुई। प्रकृति में भी विभिन्न रूपों में मेल और समन्वय दिखाई देता है, जैसे धरती और आकाश के संबंध से जीवन तथा वर्षा का निर्माण होता है। इसी मानव समुदाय में विवाह को जीवन का एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। आदिवासी समाज में सामान्यतः युवक युवती वयस्क होने के बाद ही विवाह योग्य माने जाते हैं। विवाह से पहले यह देखा जाता है कि वह अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्व को निभाने में सक्षम है या नहीं। परंपरागत रूप से लड़कों को खेती–बाड़ी और कृषि उपकरणों के उपयोग का ज्ञान होना चाहिए। जबकि लड़कियों को घरेलू कार्यों तथा हस्तकला जैसे चटाई बनाने का कौशल आना आवश्यक माना जाता है।

विवाह के लिए यह भी जरूरी होता है कि लड़का और लड़की एक ही समुदाय से संबंधित हो। लेकिन उनके गोत्र या वंश अलग–अलग हो। अधिकांश मामलों में युवक और युवती एक दूसरे को पहले से जानते हैं और उनकी आपसी सहमति भी महत्वपूर्ण होती है। इसके साथ ही दोनों परिवारों की स्वीकृति भी आवश्यक मानी जाती है। विवाह संबंध स्थापित करने की पूरी प्रक्रिया में एक मध्यस्थ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिसे अगुआ कहा जाता है। यह व्यक्ति दोनों परिवारों के बीच संपर्क स्थापित करता है और विवाह संबंधी बातचीत को आगे बढ़ाता है। विवाह की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं या शंकाओं को दूर करने में भी उसकी विशेष भूमिका रहती है।

अगुआ के मार्गदर्शन में दोनों पक्ष जब विवाह के लिए सहमत हो जाते हैं। तब विवाह संबंध को औपचारिक रूप देने की प्रक्रिया शुरू होती है। इस प्रक्रिया में कई सामाजिक और सांस्कृतिक चरण शामिल होते हैं। सामान्यतः इसके तीन प्रमुख चरण माने जाते हैं – कन्या देखना, वर देखना और विवाह संस्कार आयोजन। तेल पूजन संपन्न होने के बाद अगुआ के नेतृत्व में वर पक्ष के कुछ अनुभवी एवं सम्मानित सदस्य, जिसमें बिरादरी तथा कुटुंब के लोग सम्मिलित रहते हैं, वधू पक्ष के घर जाते हैं। वहां पहुंचने पर उनका पारंपरिक रीति रिवाज के अनुसार स्वागत एवं आदर सत्कार किया जाता है। इसके बाद दोनों पक्षों के बीच औपचारिक परिचर्चा आरंभ होती है। जिसमें विवाह से संबंधित विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया जाता है।

कन्या पक्ष – प्रिय अतिथि गण! आपका हमारे द्वार पर स्वागत है। ऐसे तो हम हाट बाजार में मिलते हैं।

कुशल मंगल पूछते हैं और अपने रास्ते चल देते हैं। लेकिन आज आप सब लाठी भाला लिए इतनी बड़ी टोली बनाकर हमारे आंगन तक कैसे आ पहुंचे? आखिर कौन सा काम से आना पड़ा है? कृपया अवगत कराएं।

वर पक्ष – प्रिय अतिथि! गण वास्तव में हम तो जंगल की ओर शिकार खेलने निकले थे। शिकार के दौरान हमारे तीर से एक सुंदर हिरणी घायल हो कर भाग निकली। उसी का पीछा करते–करते हम यहां तक पहुंच गए हैं। हमें विश्वास है कि वह हिरणी इसी गांव में कहीं छुपी है।

कन्या पक्ष – घायल हिरणी? (आश्चर्य प्रकट करते हुए अपने लोगों से पूछते हैं) क्या किसी ने ऐसे हिरणी को गांव में आते देखा है? उत्तर देते हैं – नहीं, हमने तो कोई हिरणी नहीं देखी।

वर पक्ष – नहीं, ऐसे कैसे हो सकता है! हमारी आंखें धोखा नहीं खा सकती। हिरणी इसी ओर भागी थी। जरूर कहीं ना कहीं छुपी होगी।

कन्या पक्ष – अच्छा यदि ऐसा है तो खोज लेते हैं। कहीं ऐसा ना हो कि वह गोहार में बकरियों के बीच दुबकी बैठी हो।

एक व्यक्ति गोहार देखने का बहाना बनाते हुए घर के भीतर चला जाता है। थोड़ी देर बाद घर के अंदर से भावी दुल्हन अपनी सहेलियों और कुछ औरतों के साथ धीरे–धीरे बाहर आती है। वे सभी उपस्थित मेहमानों को जोवार करती हुई आगे बढ़ती है। इसी बीच वर पक्ष के कोई चंचल युवक लंगड़ाती चल रही एक वृद्ध महिला की ओर इशारा करके कह उठता है। अरे! हां यही तो वह हिरणी है। जिसे हमारे तीर ने छू लिया था। अभी भी घायल स्थिति में है। यह सुनते ही चारों ओर उसके ठहाके गूंज उठते हैं। कोई दूसरा मजाक में जोड़ देता है – यदि यही हिरणी है तो इसे पहचान कर बांध लो।

सबको जोवार करने की औपचारिकता पूर्ण होने के बाद भावी वधू अपनी सहेलियों के साथ मेहमानों के पैर धोने की रस्म निभाती है। इसी समय वर पक्ष का एक बुजुर्ग कहता है– भाइयों यही शुभ अवसर है इस हिरणी को बांधने का। इसके बाद लड़के के मामा को बुलाया जाता है। वधू उनके पैर धोती है और मामा आशीर्वाद एवं स्नेह के प्रतीक के रूप में उसे उपहार स्वरूप एक साड़ी ओढ़ाता है। तत्पश्चात अन्य अतिथियों के पैर धोए जाते हैं तथा दोनों पक्ष जोवार, चुना–तम्बाकु और खान–पान के बीच अगुआ की देखरेख में वर देखने की तारीख तय कर सम्मान पूर्वक विदा लेते हैं।

लड़का (वर) देखना – तय किए गए तारीख पर ठीक वैसे ही जैसे कन्या दर्शन के अवसर पर होता है, तेल पूजन पूर्ण होने के बाद कन्या पक्ष के लोग अगुआ के नेतृत्व में प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही कन्या के घर से प्रस्थान करते हैं। घर पहुंचने पर स्वागत सत्कार किया जाता है। अतिथियों को उचित स्थान पर बैठाया जाता है और जलपान कराए जाते हैं। इसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होता है। अब वर पक्षए उनके आगमन का उद्देश्य पूछता है। इसके उत्तर में कन्या पक्ष के लोग सांकेतिक और लोक रूपकों से युक्त शैली में अपनी बात इस प्रकार रखते हैं – मेहमानों हमारे इस आकस्मिक आगमन का कारण यह है कि नदी किनारे हमने कद्दू और कोहड़े की खेती कर रखी है। कुछ समय से हम देख रहे हैं कि एक बियर केड़ा (बलशाली भैंसा) अपने प्रबल सींगों से बाड़ को तोड़कर हमारे खेत में प्रवेश कर जाता है और हमारे फसल को नुकसान पहुंचता है। जब हम उसे खदेड़ने का प्रयास करते हैं तो वह इसी दिशा में भाग निकलता है। आज हम उसके पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए यहां तक पहुंच गए हैं।

वर पक्ष – घेरा तोड़ने वाला बियर केड़ा?

कन्या पक्ष – हां वही बियर केड़ा अत्यंत शक्तिशाली और बड़े सींगों वाला होगा, क्योंकि उसने अगल–बगल के आड़ मेढ़ों तक को ध्वस्त कर दिया है।

वर पक्ष – अरे कोई जाकर देखो, हमारे बियर केड़ा में से कोई ऐसी हरकत तो नहीं कर रहा है?

कन्या पक्ष – हां–हां, यदि वह सामने आएगा तो हम उसकी पहचान कर लेंगे।

वर पक्ष – (अपनी बिरादरी के लोगों से कहा) अरे जाकर पता करो कि वह किस बियर केड़ा की बात कर रहे हैं।

एक व्यक्ति गोहार घर देखने का बहाना बनाकर घर के भीतर प्रवेश करता है। वधू दर्शन की प्रक्रिया को भावी दूल्हे के साथ भी दोहराया जाता है। लड़की का मामा भावी दूल्हे को धोती ओढ़ाकर सम्मान करता है। इसके पश्चात लड़का उठकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पुनः उपस्थित सभी लोगों को जोवार करता है। इसके पश्चात 'दर दाम' (वधू मूल्य निर्धारण) की प्रक्रिया होती है। दोनों पक्ष अलग–अलग बैठकर अगुआ के माध्यम से वधू मूल्य पर विचार विमर्श करते हैं। सहमति बनने पर जबन (वधू मूल्य) के रूप में 'एक जोड़ा बैल', 'एंगा बागे' (मां बिछुड़न) के लिए एक बकरी, 'डाली टका' के नाम से कुछ धनराशि तथा कुछ वस्त्र निर्धारित किए जाते हैं।

इसके बाद अतिथियों के चरण धोये जाते हैं। तथा 'सिसिर इलि' पिलाई जाती है। नए वैवाहिक संबंध स्थापित होने की खुशी में उपस्थित लोग इस लोकगीत को गाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं –

सुता मम तंड़ि केदा निंदिरम	धागा तुमने खींच दिया है मकड़ी
नेआ–दारू हेना–दारू	इस पेड़ उस पेड़
सुता मम तंड़ि केद	धागा तुमने खींच दिया है मकड़ी
सुता मम तंड़ि केदा निंदिरम	धागा तुमने खींच दिया है मकड़ी
नवा–पेड़ा नवा कुटुम	नए मेहमान नए कुटुंब
कुपुलम बइ केद	रिश्ता तुमने बना दिया है मकड़ी

दोनों पक्ष की सुविधाओं और परंपराओं के अनुसार विवाह की तिथि निर्धारित करते हैं। जलपान के पश्चात मेहमानों को बड़े हषील्लास के साथ इस लोकगीत को गाते हुए विदा किया जाता है –

ओको कोरे बुड़म पुतम तना	हे दादू कहां अगुआ कर रहे हैं
मयङ रेदो बुड़ा ससं दुति	कमर में दादू हल्दी रंगे धोती
चिमय कोरे बुड़म चले तना	हे दादू कहां रिश्ता जोड़ रहे हैं
तरन रेदो बुड़ा मेरोम डुंडि	कंधा पर दादू खस्सी डुंडि

मुण्डा परंपरा के अनुसार विदाई के समय सभी मेहमानों को हल्दी लगाकर सम्मान पूर्वक विदा किया जाता है। इस अवसर पर अगुआ की धोती को हल्दी लगाकर पूरी तरह से पीला कर दिया जाता है। साथ ही विशेष सम्मान और उपहार स्वरूप उसे खस्सी का डुंडि भेंट दिया जाता है। कन्या दर्शन और वर दर्शन की यात्राओं में सगुन का विशेष महत्व होता है यद्यपि पूरी यात्रा के दौरान प्राप्त संकेत पर ध्यान दिया जाता है। फिर

भी दोनों गांव की सीमाओं के भीतर दिखाई देने वाले संकेत अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

शुभ संकेत –

- गाय का बछड़े को दूध पिलाना।
- किसी स्त्री द्वारा चावल भरा घड़ा सिर पर लिए चलना।
- बाघ, सांप अथवा अन्य वन्य जीवों का बिना रास्ता काटे अपने मार्ग पर चले जाना।

अशुभ संकेत –

- सांड का रंभना करते हुए पैरों से मिट्टी खुरेदना।
- किसी के द्वारा सूखे लकड़ी को ले जाते हुए दिख जाना।
- गिलहरी का रास्ता काटना।
- किसी स्त्री द्वारा खाली घड़ा सर पर लिए चलना।
- पेड़ काटने की आवाज।

विवाह संबंध की बातचीत में वधू मूल्य पर अंतिम निर्णय लेने से पहले दोनों पक्ष यात्रा के दौरान प्राप्त हुए सगुण और अपशगुणों का मूल्यांकन करते हैं। समुदाय की मान्यता के अनुसार शुभ संकेत भावी दम्पतिय जीवन के मंगलमय होने का संकेत देते हैं। यदि कोई साधारण अपशगुण दिखाई दें तो दोनों पक्ष इसके अर्थ और प्रभाव पर विचार विमर्श कर अनुकूल निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। तथापि कुछ संकेत ऐसे माने जाते हैं, जिन्हें अत्यधिक अशुभ समझा जाता है और उनके प्रकट होने पर व्यावहारिक वार्ता बाधित भी हो सकती है। जैसे मार्ग में किसी बड़े पेड़ की शाखा का अचानक टूटकर गिर जाना, हाथी, बाघ अथवा सर्प जैसे जीवों द्वारा रास्ता रोक लेना, अथवा किसी हिंसक पशु का अपने शिकार पर आक्रमण करते हुए दिखाई देना अनिष्ट सूचक माना जाता है।

ववाह की तिथि निश्चित हो जाने के बाद दोनों परिवार के विवाह प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। इस निमंत्रण में हल्दी से रंगे चावल के दाने और सुपारी को साल पत्तों में रखकर प्रेषित किया जाता है। इसमें विवाह की निर्धारित तिथि और अन्य आवश्यक विवरण भी संप्रेषित किए जाते हैं।

तैयारी :

मण्डापाचादन – विवाह के लिए निर्धारित दिन प्रातः गांव के पुरुष निकटवर्ती जंगल से साल की डालियां लाकर मंडप तैयार करते हैं। विवाह वेदी के और पूजा स्थल के लिए आवश्यक खूंटे वर तथा कन्या के बहनोई द्वारा स्थापित किए जाते हैं। मध्य खूंटे के साथ महुआ, बांस, बेलवा, सेकेरे और मरंग अटकिर की लताएं बांधी जाती है। जिन्हें दीर्घायु समृद्धि और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। वेदी का निर्माण तथा उसकी अल्पना सजाने का कार्य प्रायः दो अविवाहित लड़कियां संपन्न करती है। मंडप निर्माण पूर्ण होने पर इस कार्य में सहयोग देने वाले सभी लोगों को सम्मान स्वरूप इलि पिलाई जाती हैं।

हल्दी तेल – विवाह वेदी की सजावट पूर्ण करने वाली अविवाहित युवतियां वर और कन्या को तेल मिश्रित हल्दी का लेप लगाती है। यह अनुष्ठान उन्हें आगामी वैवाहिक संस्कारों के लिए तैयार करने तथा मानसिक रूप से संयमित और एकाग्र रहने का संदेश देता है। इस रस्म के पश्चात वर एवं कन्या के स्वतंत्र रूप से घर से बाहर जाने पर प्रायः रोक लगा दी जाती है। यद्यपि किसी आवश्यक कारणवश उन्हें बाहर जाना पड़े तो कोई

उनके साथ रहता है।

कलश स्थापना – विवाह मंडप में वेदी के पश्चिमी भाग में पूर्व दिशा की ओर मुख करके एक पवित्र कलश स्थापित किया जाता है। इस कलश में धान, कसैली, हल्दी तथा तांबे के सिक्के रखे जाते हैं। इसके बाद कलश के ऊपरी भाग पर अर्पण का लेप लगाया जाता है और धान की बालियां से अलंकृत किया जाता है। कलश के शीर्ष पर मिट्टी का दीपक प्रज्वलित किया जाता है, जिसे विवाह अनुष्ठान की संपूर्ण अवधि तक निरंतर जलाएं रखना आवश्यक माना जाता है क्योंकि विवाह की प्रक्रिया प्रायः तीन दिनों तक चलती है। इसलिए दीपक में समय–समय पर तेल डालकर उसकी लौ को अक्षुण रखा जाता है।

मंडप पूजन – वर अथवा कन्या पक्ष की विवाहित महिलाएं जैसे माता, चाचा, मामी या भाभी में से किन्हीं तीन महिलाएं अक्षत, धूप, दीप तथा पवित्र दूब घास अर्पित कर मंडप की विधि पूर्वक पूजा करती है। इस अनुष्ठान का उद्देश्य विवाह समारोह के सभी संस्कारों को मंगल और सफलतापूर्वक संपन्न होने की कामना करना होता है। मंडप पूजन के माध्यम से सुख शांति का आवाहन किया जाता है।

सर्व देवता संबोधन एवं आह्वान – इस अवसर पर प्रकृति और लोक विश्वास से जुड़े विभिन्न देवताओं एवं शक्तियों का विधि पूर्वक स्मरण किया जाता है। आकाश, पाताल, वन, पर्वत, नदी, नाले, वायु, जल, सिंगबोंगा, ग्राम देवता तथा सीमान देवताओं का आह्वान कर उनसे प्रार्थना की जाती है कि वह विवाह स्थल के समीप उपस्थित रहकर पूरे समारोह पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें।

हल्दी तेल लेपन एवं पानी काटना – शुद्धता के लिए वर कन्या को हल्दी लगाने के बाद चुंआं, दाड़ी या तालाब के निकट जाकर जल देवता की पूजा कर जल लेने की अनुमति प्राप्त करते हैं। इसके बाद घड़े में भरे जल को भाई–बहन प्रतीकात्मक रूप से तलवार से स्पर्श करते हैं। केला पेड़ के पीछे अरांड़ा के ऊपर माता पिता बैठते हैं और माता पिता के आगे वर और वधु गोद में बैठते हैं और उसको स्नान कराते है। लोकमान्यता है अरांड़ा के ऊपर माता पिता के आगे वर और वधु को गोद में बैठाकर स्नान कराने का कारण यह है कि अब माता पिता बूढ़े हो गए, अब नया वर और वधू के हाथ में घर की सारी जिम्मेदारी आ गई है।

आम साक्षी – बारात जाने के पूर्व एक विशेष अनुष्ठान किया जाता है। वर अपने परिवारजनों और संबंधियों के साथ मार्ग में स्थित किसी कुंवारा आम वृक्ष के नीचे बैठकर इसकी विधिवत पूजा करता है। अपनी माता की गोद में बैठकर गुड़ के साथ आम के मुकुल की कसम तीन बार खा लेता है और यह संकल्प व्यक्त करता है कि विवाह संस्कार पूर्ण होने तक वह अन्न ग्रहण नहीं करेगा। साथ ही वह वृक्ष को साक्षी मानकर यह प्रतिज्ञा करता है कि कन्या को सम्मान पूर्वक वधू बनाकर लाएगा। अनुष्ठान की समाप्ति पर वह जमीन पर बैठे माता का आशीर्वाद प्राप्त करता है, उन्हें दोनों हाथों से उठाया जाता है और बिना पीछे मुड़े बरात के लिए प्रस्थान करता है।

बारातियों का स्वागत – बारात को पाइका नृत्य, स्त्री पुरुषों एवं युवतियों के दल द्वारा गाजे–बाजे के साथ उनका स्वागत किया जाता है। स्वागत अनुष्ठान के दौरान सुहागिन महिलाएं सखुआ के दोनें में रखें गोबर एवं चावल चूर्ण के लड्डू, गुड़ मिठाई, तेल हल्दी–लेई, अरवा चावल, सरसों, आग के अंगारे कुदाल में, लोटे में मौजूद जल सहित पांच पत्तों वाली आम टहनी तथा पूजन सामग्री लेकर वर के समीप पहुंचती हैं। आम की छोटी–छोटी टहनियों पर बंधे मशालों को प्रज्वलित कर वे चारों ओर घूमती हैं। यह अनुष्ठान अनिष्टकारी शक्तियों

से वर की रक्षा तथा विवाह संपन्न करने के लिए किया जाता है।

इसके उपरांत गोबर एवं चावल चूर्ण के लड्डुओं को पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में फेंका जाता है, ताकि संभावित अनिष्टकारी शक्तियां उनसे आकर्षित होकर वर एवं बारातियों से दूर हट जाएं। तत्पश्चात वर के चरण धोए जाते हैं। उसके माथे पर सरसों का स्पर्श कराया जाता है। तथा हल्दी अर्पण का लेप लगाया जाता है। अंत में कन्या पक्ष का कोई युवक वर को कंधे पर उठाकर मंडप तक ले जाता है। जहां कन्या के माता–पिता की उपस्थिति में आगे की वैवाहिक पूजा संपन्न की जाती है।

वर माला – कन्या को सजाकर डलिया में बैठाते हैं और विवाह मंडप में वर के समक्ष लाते हैं। वर और कन्या दोनों के हाथों में गुलइंची और आक फूलों से निर्मित मालाएं रहती है। जिनका वह परस्पर आदान प्रदान करते हैं। वरमाला के दौरान कन्या के भाई प्रायः हंसी खुशी में वर को तुरंत माला पहनाने नहीं देते हैं। इसके बदले वे डलिया दाम की मांग करते हैं। राशि प्रदान करने के बाद ही कन्या को मंडप में रखते हैं।

प्रारंभ में कन्या वर के दाहिनी ओर बैठती है। विवाह संबंध की औपचारिक स्वीकृति के पश्चात उसे वर के बाएं ओर में बैठा दिया जाता है। इसके बाद दोनों के दाहिने हाथों को एक दूसरे के ऊपर रखकर वैवाहिक बंधन की पुष्टि की जाती है। सिंदूर का सिंघोरा उनकी संयुक्त हथेलियां में रखा जाता है और पहान अंतिम बार दोनों की सहमति सुनिश्चित करता है। इस प्रक्रिया के पूर्ण होते ही विवाह की मुख्य धार्मिक विधियां आरंभ हो जाती है।

सिंदूरदान की रस्म – विवाह की प्रमुख विधियों के इस अनुष्ठान में वर परंपरनुसार कपड़े की ओट में कन्या की मांग में सिंदूर भरता है। इसके उपरांत कन्या भी वर के मस्तक पर सिंदूर का तिलक लगाती है।

विवाह मंडप की परिक्रमा और आशीर्वाद – विवाह संस्कार संपन्न होने के बाद वर वधू विवाह मंडप में स्थापित दीपक की साथ परिक्रमा करते हैं। यह परिक्रमा सृष्टिकर्ता सिंगबोंगा तथा समस्त देवी देवताओं को साक्षी मानकर सुखी, समृद्ध और दीर्घ वैवाहिक जीवन की कामना के साथ की जाती है। परिक्रमा के दौरान वधू का भाई लावा प्रदान करता है, जिसे वर वधू प्रत्येक फेरे में सात बार छिड़कते हैं। यह अनुष्ठान भाई और उसके परिवार की समृद्धि, धन–धान्य तथा कल्याण की मंगल कामना का प्रतीक माना जाता है। इस अवसर पर उपस्थित लोग हल्दी मिश्रित चावल वर वधू पर छिड़क कर उन्हें आशीर्वाद देते हैं।

विवाह पूर्ण होने के बाद वर अपने संकल्प को पूरा मानते हुए वधू के घर में भोजन ग्रहण करता है। इसी प्रकार वर वधू के माता–पिता भी विवाह की सभी रस्में संपन्न द्वारा अभिव्यक्त करती है। चुमावन प्रक्रिया के दौरान इस लोकगीत को गाते हैं–

एंगामे को चुमानदो	तुम्हारी माता का चुमावन
आपुमे को चुमानदो	अपने पिताओं का चमावन
सोना लेका तेलाएमे	सोने की तरह स्वीकार करो
रूपा लेका अताडेमे, सुगाड़ा	रूपा की तरह स्वीकृत करो, हे प्रिय।

विदाई – विदाई विवाह संस्कार का अत्यंत भावनात्मक चरण है, जिसमें कन्या अपने माता–पिता और परिवार से विदा होकर नए जीवन की ओर अग्रसर होती हैं। आदिवासी समाज में कन्या को सम्मान समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। विवाह के साथ उसकी प्रतिष्ठा और सामाजिक गरिमा बनाए रखने के लिए

कन्या मूल्य की परंपरा का विशेष महत्व है।

विदाई के अवसर वर 'घर–भरे' की रस्म सम्पन्न की जाती है। इसमें कन्या का भाई उसकी अंजली में तीन बार धान रखता है, जिसे वह पीछे की ओर डालती है। यह अनुष्ठान परिवार के निरंतर समृद्धि तथा भाई के सुख समृद्धि जीवन की मंगल कामना का प्रतीक माना जाता है।

गृह प्रवेश – ससुराल पहुंचने पर नव वधू का स्वागत किया जाता है। महिलाएँ जल, अग्नि तथा अन्य शुभ प्रतिकों से नव दंपति की रक्षा और कल्याण की कामना करती हैं। गृह प्रवेश के समय वर की बहनें हास–परिहास की रस्म निभाती हैं और उपहार प्राप्त करने के बाद नव वधू को घर में प्रवेश की अनुमति देती है। इसके बाद परिवार के सदस्य नव दंपति का सत्कार करते हैं।

अगले दिन स्नान कर मंडप पूजन तथा पूजा की आराधना की जाती है। पूर्वजों और ग्राम देवताओं से प्रार्थना की जाती है कि वे नव वधू को परिवार का अभिन्न अंग स्वीकार करें तथा उसके जीवन को सुख, समृद्धि और सुरक्षा प्रदान करें। साथ ही जल देवताओं की पूजा कर उसके तथा भावी संतानों की कल्याण और संरक्षण की कामना की जाती है। इस प्रकार विदाई और गृह प्रवेश की यह परंपराएं केवल सामाजिक रीति रिवाज नहीं बल्कि परिवार और प्रकृति के प्रति आदर एवं सामूहिक मंगल कामना की अभिव्यक्ति है।

संदर्भ सूची –

1. मानकी, रतन सिंह, अड़न्दी बोंगा, रुम्बुल, 2016
2. मुण्ड़ा, डॉ. रामदयाल, अड़न्दी बोंगा, रुम्बुल, 2016
3. मानकी, रतन सिंह, आदि धर्म, राजकमल, 2020
4. मुण्ड़ा, डॉ. रामदयाल, आदि धर्म, राजकमल, 2020
5. ओड़ेया, मेनस राम, मतुरा : कनि – भाग 5, सत्य भारती रांची, 1989

deetmunda58@gmail.com
+918986743817

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 76-81

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विमुद्रीकरण (DEMONETIZATION) और नेपाल पर इसका प्रभाव

Dr. Dilip Kumar Parsendiya
ASSISTANT PROFESSOR (COMMERCE)
GOVT. ADARSH P. G. COLLEGE, JHABUA (M.P.)

सारांश :

विमुद्रीकरण करना किसी देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण और संवेदनशील निर्णय होता है। भारत सरकार द्वारा किया गया विमुद्रीकरण का उद्देश्य काले धन पर नियंत्रण लगाना, जाली नोटों की रोकथाम करना, भ्रष्टाचार में कमी लाना तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देना था। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, गहरे आर्थिक संबंध एवं सांस्कृतिक निकटता के कारण इस निर्णय का प्रभाव नेपाल पर भी व्यापक रूप से पड़ा था। विमुद्रीकरण के बाद नेपाल में भारतीय मुद्रा रखने वाले नागरिकों, व्यापारियों, पर्यटकों तथा वित्तीय संस्थाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। इस शोध पत्र में विमुद्रीकरण की अवधारणा, वस्तु विनिमय, विमुद्रीकरण से भारत और नेपाल पर होने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

कुट शब्द : विमुद्रीकरण, वस्तु विनिमय, इलेक्ट्रिक मुद्रा, कागजी मुद्रा, डिजिटलीकरण, अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना :

भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में जब मुद्रा का आविष्कार नहीं हुआ था तब सभी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान–प्रदान करते थे और अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा किया करते थे। आधुनिक काल में वस्तु विनिमय का स्थान मुद्रा विनिमय ने ले लिया है। वर्तमान भारत में कागजी मुद्रा, प्लास्टिक मुद्रा, टंकण मुद्रा, इलेक्ट्रिक मुद्रा आदि प्रचलन में है। लेकिन भारत की अधिकतर आबादी आज भी नकद (कागजी) मुद्रा पर निर्भर है। किसी देश में प्रचलित मुद्रा की सरकार द्वारा कानूनी मान्यता रद्द कर देना, विमुद्रीकरण कहलाता है, यह प्रक्रिया प्रायः आर्थिक सुधार, अवैध धन पर नियंत्रण या नई मुद्रा प्रणाली लागू करने के उद्देश्य से की जाती है। भारत सरकार द्वारा 8 नवम्बर 2016 को रू. 500 और रू. 1000 के प्रचलित नोटों को अमान्य घोषित करने का निर्णय लिया गया था। इस कदम का उद्देश्य काले धन पर नियंत्रण, जाली नोटों की रोकथाम, भ्रष्टाचार में कमी तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देना था। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, गहरे आर्थिक संबंध, व्यापारिक निर्भरता तथा सांस्कृतिक निकटता के कारण इस निर्णय का प्रभाव

नेपाल पर भी व्यापक रूप से देखने को मिला था। नेपाल की अर्थव्यवस्था भारतीय मुद्रा और व्यापारिक गतिविधियों से अत्यधिक प्रभावित रहती है। विमुद्रीकरण के बाद नेपाल में भारतीय मुद्रा रखने वाले नागरिकों, व्यापारियों, पर्यटकों तथा वित्तीय संस्थाओं को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

नेपाल पर विमुद्रीकरण का प्रभाव :

भारत में समय–समय पर विमुद्रीकरण की प्रक्रिया अपनाई गई है, किंतु 2016 का विमुद्रीकरण सबसे अधिक चर्चित और प्रभावशाली निर्णय माना जाता है। भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से अत्यंत गहरे हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा होने के कारण व्यापार, रोजगार, पर्यटन तथा पारिवारिक संबंधों का निरंतर आदान–प्रदान होता रहता है। नेपाल की अर्थव्यवस्था काफी हद तक भारतीय बाजार और भारतीय मुद्रा पर निर्भर करती है। नेपाल राष्ट्र बैंक द्वारा भारतीय मुद्रा के कुछ नोटों को वैध मान्यता दी गई थी, जिसके कारण नेपाल में भारतीय मुद्रा का व्यापक उपयोग होता रहा है। जब भारत सरकार द्वारा 8 नवम्बर 2016 को 500 रू. और 1000 रू. के प्रचलित नोटों को अमान्य घोषित किया, तब नेपाल में मौजूद बड़ी मात्रा में भारतीय मुद्रा अचानक अमान्य हो गई। इससे नेपाल के नागरिकों, व्यापारियों और बैंकों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा था। नेपाल एक स्थलरुद्ध देश है और उसके अधिकांश आयात–निर्यात भारत के माध्यम से होते हैं। भारत देश, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत और नेपाल के बीच लगभग 1850 किलोमीटर लंबी खुली सीमा है। दोनों देशों के नागरिक बिना वीजा के एक–दूसरे के देश में आवागमन कर सकते हैं। नेपाल में भारतीय मुद्रा विशेष रूप से सीमा क्षेत्रों और पर्यटन उद्योग में व्यापक रूप से उपयोग की जाती रही है। भारतीय पर्यटकों और व्यापारियों के कारण भारतीय नोट नेपाल के बाजारों में प्रचलित रहे हैं।

नेपाल के अधिकांश आवश्यक वस्तुओं जैसे पेट्रोलियम, दवाइयाँ, खाद्यान्न और निर्माण सामग्री का आयात भारत से होता है। इसलिए भारत की आर्थिक नीतियों का सीधा प्रभाव नेपाल पर पड़ता है। भारत में हुए विमुद्रीकरण का नेपाल पर बहुआयामी प्रभाव पड़ा है। नेपाल में बड़ी संख्या में लोगों के पास भारतीय 500 रू. और 1000 रू. के नोट थे। विमुद्रीकरण के बाद ये नोट अचानक अमान्य हो गए। नेपाल के नागरिकों को अपने नोट बदलवाने में कठिनाई हुई क्योंकि नेपाल में भारतीय बैंकिंग प्रणाली सीधे उपलब्ध नहीं थी। भारत–नेपाल सीमा पर होने वाला व्यापार अस्थायी रूप से प्रभावित हुआ। छोटे व्यापारी और सीमा क्षेत्रों के दुकानदार नकदी की कमी से परेशान हुए। कई व्यापारिक लेन–देन रुक गए और बाजारों में मंदी की स्थिति उत्पन्न हुई। नेपाल का पर्यटन उद्योग भारतीय पर्यटकों पर काफी निर्भर करता है। विमुद्रीकरण के कारण भारतीय पर्यटकों के पास नकदी की कमी हो गई, जिससे नेपाल आने वाले पर्यटकों की संख्या में कमी आई। होटल, परिवहन और स्थानीय व्यवसाय प्रभावित हुए। नेपाल के हजारों नागरिक भारत में कार्यरत हैं। विमुद्रीकरण के बाद उन्हें मजदूरी भुगतान और बैंकिंग सुविधाओं में समस्याएँ आईं। इससे उनके परिवारों की आय प्रभावित हुई। नेपाल राष्ट्र बैंक के पास बड़ी मात्रा में भारतीय पुराने नोट जमा थे। भारत सरकार द्वारा इन्हें बदलने की प्रक्रिया स्पष्ट न होने के कारण बैंक को वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ा है। नेपाल के बैंकों में भारतीय मुद्रा जमा कराने वालों की संख्या बढ़ गई। लेकिन भारतीय मुद्रा विनिमय के लिए स्पष्ट दिशा–निर्देश न होने के कारण बैंकिंग प्रणाली पर अतिरिक्त दबाव पड़ा। भारतीय मुद्रा की अस्थिरता के कारण नेपाल की मुद्रा व्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ा है। नेपाल की मुद्रा भारतीय रुपये से जुड़ी हुई है, इसलिए नेपाल की आर्थिक स्थिरता प्रभावित हुई है।

वस्तु विनिमय प्रणाली :

वस्तु विनियम में वस्तुओं का वस्तुओं से विनिमय होता है। इस प्रथा में कम उपयोगी वस्तु के बदले अधिक उपयोगी वस्तु विनिमय की जाती है। यह तो स्पष्ट नहीं है कि किसी एक वस्तु के लिए दूसरी वस्तु से विनिमय की क्या आधार या मात्रा होती थी, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता की तीव्रता और अपने पास रखी वस्तु या सेवा की पूर्ति के हिसाब से वस्तुओं का आदान प्रदान तय कर लेते थे। जैसे रेगिस्तान की तपती धूप में एक बाटल पानी की कीमत प्यासा आदमी ज्यादा देगा अन्य आदमी की तुलना में। आधुनिक भारत में आज कई प्रकार की मुद्रा का चलन होने से 21वीं सदी की नई पीढ़ी वस्तु विनिमय को लगभग भूल सी गई है लेकिन भारत के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी वस्तु विनिमय प्रचलित है। जैसे–जैसे मुद्रा का चलन प्रारंभ हुआ वैसे–वैसे वस्तु विनियम व्यवस्था मुद्रा विनियम में बदलती गई लेकिन इसकी अस्तित्व कभी खत्म नहीं हुआ और ना ही कभी खत्म हो सकता है। जैसे यदि आपको किसी से कोई काम अप्रत्यक्ष रूप से करवाना है तो आप उसे कोई महँगा उपहार देकर करवा सकते है या उसे कोई विशेष सेवा प्रदान करवा सकते है। बड़ी–बड़ी कम्पनियों में अपने कर्मचारियों को अच्छे कार्य करने हेतु प्रोत्साहन स्वरूप उपहार दिए जाते है, विदेश भ्रमण तथा अन्य सेवाएँ दी जाती है।

दीपावली (2016) पर एक कंपनी ने अपने कर्मचारियों को मकान तथा कार गिफ्ट में दी है। यह भी वस्तु विनिमय है। वस्तु विनिमय इसलिए भी प्रचलन में है, क्योंकि मुद्रा का मूल्य परिवर्तनशील होता है तथा मुद्रा की पूर्ति भी सीमित होती है। कभी–कभी मुद्रा के चलन से बाहर होने का भी भय बना रहता है। इसलिए अधिकतर व्यक्ति अपना धन मुद्रा की अपेक्षा मूल्यवान वस्तुओं के रूप में संचित करते है। क्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान होता है कि मुद्रा का मूल्य निरंतर कम होता जाता है और वस्तुओं का मूल्य निरन्तर बढ़ता रहता है। चाहे वह कम मात्रा में ही क्यों न हो।

सुबह से शाम चाय, दूध, फल–सब्जी से लेकर किराना सामान, जनरल सामान, गारमेन्ट्स मेले, हाट–बाजार, यात्रा किराया के साथ समस्त छोटे–बड़े काम भारत में आज भी नकद में ही किए जाते है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि भारत में वर्तमान समय मुद्रा विनिमय का है, लेकिन वस्तु विनिमय को आवश्यकता होने पर काम में लाया जाता है जैसे आपका पर्स कहीं गिर गया और आप कहीं अनजान जगह पर है और आपको रूपयों की या वस्तुओं/सेवाओं की सख्त आवश्यकता है, तब आप अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अपने हाथ की घड़ी, अँगुठी, गले की चैन या मोबाइल आदि वस्तुओं का आदान प्रदान करते है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी घर में रखा सामान अनाज के बदले जरूरत का सामान लिया जाता है। क्योंकि उनके पास नकद राशि अपनी फसल विक्रय या मजदूरी कि एक निश्चित अवधि के बाद ही आती है। कई बार प्राकृतिक आपदाओं में भी वस्तु विनियम का ही उपाय व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है। वस्तु विनिमय भारत में इसलिए भी प्रचलित है, क्योंकि भारत का अधिकांश समाज पिछड़ा हुआ है। यातायात के साधनों का गाँवों में अभाव है, भाग्यवादी व्यक्ति अधिक है, इसलिए इनकी सीमित आवश्यकताएँ है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि वस्तु विनियम सदैव क्रियाशील रहेगा।

विमुद्रीकरण में वस्तु विनिमय :

भारत के इतिहास में वर्ष 2016 को सदा याद रखा जाएगा जब देश के माननीय प्रधानमंत्री ने 8 नवम्बर

2016 की मध्य रात्री से 500 व 1000 रू. मूल्य के नोटों के रद्द करने का ऐलान किया। पूरे भारत में मानो भूचाल आ गया। जिन अनैतिक व्यक्तियों ने यह समाचार रात में ही सुन लिया उन्हें पूरी रात नींद नहीं आयी और अपने नोटों का हिसाब लगाना शुरू कर दिया, कई काले कारोबारी सोचने पर मजबूर हो गए कि अब अपना धन कहाँ समायोजित करे, सोना–चाँदी खरीदें या किसी को ऋण दे दें या अन्य उपाय ढूंढे जाए। जब आम जनता को सुबह समाचार–पत्र और न्यूज चैनलों पे खबर पता चली तो अपवाहों का दौर चल पड़ा। कई लोगों को अपनी मेहनत की कमाई के 500 और 1000 के नोटों से वियोग का गहरा सदमा लगा। इसमें दयनीय स्थिति उन रेल यात्रियों की थी जो 7 नवम्बर को घर से चले थे व 9 नवम्बर को गंतव्य स्थान पर पहुंचने वाले थे। 9 नवम्बर को यह स्थिति हो गई की लोग 100 के और इससे कम मूल्य के नोट खर्च इस प्रकार करने लगे मानो ये कोई लुप्त होने वाले हो। और करे भी क्यों नहीं क्योंकि अगले चार–पांच दिनों तक उन्हें इन्हीं बचे हुए नोटों से काम चलाना था। लेकिन लोगों के पास एक प्राचीन विकल्प हमेशा से उपलब्ध है, वस्तु विनिमय कई जगह पुरानी दवाइयों के बदले नई दवाइयां ली गई। शादी–ब्याह में उधारी से काम चलाया व कई वस्तुओं का आदान–प्रदान किया। कई जगह पेट्रोल व डिजल के बदले वस्तुएँ दी गई क्योंकि पेट्रोल पम्पों पर ये नोट चल रहे थे। गांवों में तो हर व्यक्ति अपने घरों में रखा अनाज देकर किराना सामान व फल–सब्जियों लेकर काम चला रहे थे।

इस बीच डेबिट कार्ड तथा इलेक्ट्रीक मुद्रा का भी काफी उपयोग किया गया लेकिन खास बात यह थी कि जरूरत की आवश्यक छोटी–छोटी वस्तुएँ तो नकद में ही क्रय–विक्रय की जाती हैं। वैसे छोटे–छोटे व्यापारी व घर–गृहस्थी वाले व्यक्ति तो हमेशा से ही छोटे नोट का ही उपयोग करते है। जैसे छोटे किराना व्यापारी, छोटे रेस्टारेन्ट, नगरीय यात्री बसे, छोटे रिक्शा चालक, फल–सब्जी व्यापारी आदि। अतः इन्हें अपेक्षाकृत कम परेशानी का सामना करना पड़ा था। देश में आए अचानक नोट बंदी के फैसले से और इसकी पूरी जानकारी आम लोगों को पता होने तक समाज के प्रत्येक वर्ग में अफरा–तफरी मची थी। लोगों ने 100 रू. मूल्य के नोट को 1000 रू. का नोट मानकर उसे सुरक्षित कर लिया क्योंकि दो दिन के लिए यही देश का सबसे बड़ा नोट हो गया था। और लोग 100 का नोट देकर सामान लेने के बजाय विभिन्न वस्तुएं देकर सामान लेने लगे थे और गांवों में तो हर दिन भंगार, खाली बारदान, रद्दी देकर फल–सब्जी व अन्य जनरल सामान लिया जाता है परन्तु उस दिन हर आदमी ने इस पर व्यंग्य जोड़कर खरीददारी की थी।

इस प्रकार देश में काले धन पर हुई अचानक सर्जिकल स्ट्राइक से ब्लेक मनी व ब्लाक मनी पर तीखा प्रहार हुआ। देश का प्रत्येक सच्चा नागरिक सही सोच रहा है कि देश का सिपाही तो रोज खड़ा होकर देश की रक्षा करता है। यदि हम चार दिन बैंकों की लाइनों में खड़े होकर देश से नकली नोट व काले धन खत्म कर सके तो हम करेंगे क्योंकि सिपाही को तो बदले में गोली मिलती है पर हमें तो पुराने नोट के बदले नये नोट मिलेंगे। कई लोग अपनी दैनिक मजदूर, काम–धंधा छोड़कर नोट बदलवाने कई घण्टों लाइन में खड़े है। इस सब के बीच आम जनता को परेशानी का सामना करना पड़ा। कई राजनीतिक पार्टिया दबी जुबान से इसकी तारीफ करने लगी और जनता को होने वाली परेशानी को भुनाने लगी। इस अच्छी सुखद परेशानी में भारतीय संस्कृति ने अपना रंग दिखाया जो हमेशा मुश्किल की घड़ी में ही दिखता है, बैंक के सेवानिवृत्त कर्मचारी अपनी सेवाएं देने बैंक पहुंचे व इसे अपना देश धर्म मान कर सेवाएँ दी, कई नौजवानों ने भीड़ में लगी जनता को मुफ्त में चाय व पानी की सेवा दी, बुजुर्ग व्यक्तियों को लाइन में बैठने हेतु टेबल–कुर्सी की व्यवस्था दी कई जगह

तो लोग लाइन में खड़े होकर वंदे मातरम् व भारत माता की जय के नारे लगाते देखे गए।

देश की ईमानदार व नैतिक जनता यही सोचकर परेशानी उठा रही थी मानों यदि हमारे शरीर का कोई हिस्सा खराब हो जाए तो उसे निकालने के लिए जो ऑपरेशन किया जाता है और तकलीफ उठानी पड़ती है बस वही यह तकलीफ है और इसके बाद पूरा शरीर स्वस्थ्य हो जाता है। यह भी हमारे देश में एक चिकित्सकीय क्रिया है कुछ तकलीफ के बाद हमारा देश भी स्वस्थ जो जाएगा। लेकिन सकारात्मक पहलू यह है, कि भारत का प्रत्येक नागरिक अपने आने वाले चार दिनों का बंदोबस्त करके रखता है केवल दूध, फल–सब्जी तथा अन्य शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं को छोड़कर। ऐसी स्थिति में उधार पर सामान तथा कई व्यक्तियों द्वारा मुफ्त वस्तुएँ देने का चलन है। जैसे 9 एवं 10 नवम्बर को एक सज्जन धार शहर में अपने पास रखे 100–100 रू. के लाखों नोट आम जनता को स्टेज लगाकर 500–1000 रू. के नोटों के छुट्टे दे रहा था। इसी प्रकार हमारे देश में कभी न खत्म होने वाली वस्तु विनिमय प्रणाली भी इन दिनों काफी चली तथा लोगों द्वारा इस प्रणाली से अपनी आवश्यकता की पूर्ति की गई।

भारत में वस्तु विनिमय प्रणाली :

यह प्रणाली छिपे रूप में हमारे देश में आज तक प्रचलित है और आगे भी रहेगी जैसे – ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों में काम करने वाले मजदूर प्रमुख रूप से गेहूँ की फसल में पानी पिलाने वाले मजदूरों को प्रति हेक्टेयर प्रति पानी की मजदूरी का भुगतान गेहूँ की फसल आने पर गेहूँ (फसल) के रूप में दिया जाता है तथा आज भी गाँवों में दाढ़ी–कटिंग का काम करने वाले नाई जाति के लोगों को वर्षभर की गई उनकी सेवा का भुगतान गेहूँ ,मक्का व चावल आदि खाद्यानों में किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में पुराने कपड़ों के बदले नये बर्तन देने का प्रचलन है। कई शहरों में इलेक्ट्रिक सामानों जैसे टीवी फ्रीज, वाशिंग मशीन आदि के ऑफर दिए जाते है कि पुराने उपकरण लाइये व नए ले जाइये। इसी प्रकार पुराने वाहनों से नये वाहनों का एक्सचेन्ज ऑफर होता है। ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में कई ऐसे घरेलू नौकर होते हे जिनकी सेवा का भुगतान भोजन व वस्त्र देकर किया जाता है। गाँवों में आज भी फसल बोवनी व काटने की मजदूरी अनाज में तथा उनके पशुओं हेतु चारागाह उपलब्ध कराके दी जाती है। म.प्र. सोयाबीन प्रधान राज्य है, यहाँ पर सितम्बर–अक्टूबर को सोयाबीन की कटाई की जाती है तथा उसके बाद खेतों से शेष बची सोयाबीन को आमजन द्वारा चुनने की प्रथा है। इस प्रकार एकत्रित की गई सोयाबीन से निर्धन वर्ग हाट–बाजारों में आवश्यक सामान वस्तु विनिमय द्वारा क्रय करता है।

आधुनिक युग इंटरनेट का युग है। इंटरनेट पर कई वेबसाइड ऐसी है जिनमें हम अपने पुराने सामान को वेबसाइड पर उपलब्ध सामान से बदल सकते है। इसी प्रकार का इंदौर व अन्य शहरों में एक सराहनीय कार्य "नेकी की दीवार" द्वारा किया जा रहा है, जिसमें हम अपने उपयोग में न आने वाली वस्तुएँ वहाँ रखकर वहाँ से उपयोगी वस्तुएँ ला सकते है। जब–जब विश्व में आपातकाल, युद्ध तथा प्राकृतिक आपदाएँ घटित होती है, तब हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति या तो किसी के द्वारा दी गई राहत से करते है या हमारे पास उपलब्ध वस्तुओं के विनिमय द्वारा करते है। एक खास बात यह कि दो या दो से अधिक देशों के मध्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वस्तु विनिमय पर आधारित होता है। जैसे किसी देश के पास पेट्रोलियम पदार्थ की बहुतायत है किन्तु खाद्यान्न या अन्य पदार्थों की नहीं तो वह देश उस देश को पेट्रोलियम पदार्थ निर्यात करने में प्राथमिकता देगा जो उसे खाद्यान्न या अन्य आवश्यक वस्तुएँ देने को तैयार हो। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि इस

विश्व में वस्तु विनिमय कभी समाप्त नहीं किया जा सकता है। इसके कई विकल्प विकसित किये जा सकते है। लेकिन उन विकल्पों के मूल में भी वस्तुएँ ही होती है। नोटों (करेन्सी) का निर्गमन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा एक निश्चित मूल्य का स्वर्ण रखकर किया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में उनकी करेन्सी निर्गमन की अलग–अलग नीतियाँ हो सकती है। लेकिन मूल में सदा ही वस्तु रहती है। वस्तु विनिमय प्रणाली का क्षेत्र काफी सीमित होता है, क्योंकि इसके कई दोष है जैसे सर्वमान्य मूल्य मापन का अभाव होता है इसलिए व्यक्ति अपनी आवश्यकता की तीव्रता के आधार पर कुछ भी मूल्य चुकाने को तैयार हो जाता है। इसी प्रकार दोहरे संयोग का अभाव पाया जाता है क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि जो वस्तु हमें चाहिए वह हमें हमारी अन्य वस्तु के बदले आसानी से मिल जाए इस हेतु हमें उस वस्तु के विनिमय करने वाले को खोजना होता है जो एक दुर्गम कार्य है। मूल्यों को संचित करना, स्थगित भुगतान तथा मूल्य हस्तातंरण करना कठीन है, इसमें वस्तु विभाजन की समस्या भी होती है, क्योंकि कई वस्तुओं को विभाजित करने पर उनका मूल्य शून्य होता है। जैसे जीवित पशु आदि, कई कठिनाइयाँ इस प्रणाली को सीमित बनाती है। भारत में आज भी यह प्रणाली इसलिए प्रचलित है क्योंकि हमारे देश में कई व्यक्तियों की सीमित आवश्यकताएँ है, अशिक्षा है, सीमित क्षेत्र जैसे गाँव, पिछड़ापन तथा गांवों में मजदूरी का भुगतान वस्तुओं में करना आदि कई कारण विद्यमान है। अतः हम यह कह सकते है कि वस्तु विनिमय प्रणाली हमारे सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में सदैव बनी रहेगी।

निष्कर्ष :

विमुद्रीकरण भारत की एक महत्वपूर्ण आर्थिक नीति थी, जिसका प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा बल्कि नेपाल जैसे अन्य पड़ोसी देशों पर भी व्यापक रूप से पड़ा। नेपाल की अर्थव्यवस्था भारत से गहराई से जुड़ी होने के कारण वहां नकदी संकट, व्यापारिक मंदी, वित्तीय समस्याएँ और सामाजिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हुईं। विशेष रूप से सीमा क्षेत्रों, छोटे व्यापारियों, मजदूरों और आम नागरिकों को अधिक परेशानी का सामना करना पड़ा। हालांकि विमुद्रीकरण ने डिजिटल भुगतान और औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था को बढ़ावा देने जैसे कुछ सकारात्मक परिणाम भी दिए, लेकिन नेपाल के संदर्भ में इसके नकारात्मक प्रभाव अधिक स्पष्ट दिखाई दिए। इस घटना ने यह सिद्ध किया कि वैश्विक और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में किसी भी बड़े आर्थिक निर्णय का प्रभाव सीमाओं से परे जाता है। भारत और नेपाल के बीच घनिष्ठ संबंधों को ध्यान में रखते हुए भविष्य में ऐसी नीतियों के लिए बेहतर समन्वय, पारदर्शिता और पूर्व तैयारी आवश्यक है। दोनों देशों को आर्थिक सहयोग, डिजिटल वित्तीय प्रणाली और बैंकिंग समन्वय को मजबूत बनाकर भविष्य की चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. प्रो. एस. एल. कोठारी, डॉ. मिलिन्द कोठारी व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं वाणिज्यिक भूगोल।
2. समाचार पत्र दैनिक भास्कर 9 नवम्बर 2016।
3. समाचार पत्र नई दुनिया 9 नवम्बर 2016।
4. दत्त, रुद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. भारतीय अर्थव्यवस्था।
5. शर्मा, आर.सी. आर्थिक विकास एवं नियोजन।
6. Reserve Bank of India — Annual Report 2016-17.
7. Nepal Rastra Bank — Economic Review Reports.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 82-88

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

An Empirical Study on Foreign Trade of Nepal with India : Strategies for increasing its export

Dr. Indu Kumari

Assistant Professor (Senior Scale)

H.O.D, Economics, B.N. College, Bhagalpur, T.MB.U

Abstract :

The economic development of any country depends upon the foreign trade. As per Josiah Child "foreign trade produces riches, riches produce power, power preserves our trade and religion." The country must increase their exports and reduce their imports. As a result they can earn foreign exchange by surplus foreign trade and they will establish their political and economic power across the country. Nepal is the neighbor country of India and there is a strong relationship between this to countries regarding foreign trade, religion, language and culture. India shares its five state boundaries with Nepal that is Sikkim, Bihar, Uttar Pradesh, Uttrakhand and West Bengal as a 1751 Km long boundary. One of the historic trading relationships has been exist between India and Nepal. This study emphasizes on the objectives, to understand the role of foreign trade in Nepal, and to identify the significance of trade between India and Nepal and it tries to analyze trade deficit and the strategies to enhance Nepal exports. This study has used secondary sources of data from the internet, newspaper, survey report, magazine and books.

Keynote : Foreign Trade, International Trade, Deficit, Import, Export.

Introduction :

Foreign trade refers to the situation when two countries are associated with each other country for purchasing or selling goods and services. It means there should be a bilateral trade relationship between one country and the rest of the world through import and export. In South Asia there is a bilateral trade relationship between Nepal and India and India plays a very important role for Nepal

foreign direct investment because India is the main source of Nepal FDI. These two neighboring countries have strong bonding in historical, geographical, cultural and economic aspects. In present time there are several connectivity areas that have been developed like people to people linkages, physical, energy and digital. India plays a vital role as a developing partner for Nepal as it has been flourishing from the last 15 years to facilitate communication with Nepal. Rail links, Road project and integrated check posts have been taken up to establish the development of both countries. India uses Kolkata and Visakhapatnam port for exporting goods and services to Nepal.

Objectives :

- To understand the role of foreign trade for Nepal.
- To identify the significance of the trade treaty between India and Nepal.
- To analyze the trade deficit and the strategies to enhance Nepal exports.

Trade relationship with Nepal :

The trade relationship with Nepal has been established since an earlier period. Citizens of both countries exchanged goods and services as they have similar types of culture and favorable geographical locations. The trade relation between India and Nepal is based on several treaties like, Trade treaty, treaty of peace and friendship (1950) etc. New economic policies of India have been given the opportunity to establish significant trade with their neighbor countries, due to increased export from India to Nepal, Nepal faces a trade deficit. Treaty of peace and friendship was signed in 1950 this is a very important agreement for the both countries which has encouraged economic and political relations between India and Nepal because it provides three moments of goods and citizens across these two nations. A trade treaty in 1996 became a landmark agreement because it enhanced significant improvement in Nepali's export to India due to duty free access of Nepal's manufactured products.

Role of foreign trade :

There are several products which have been imported by Nepal from India as follows: machinery and equipment, pharmaceuticals, cement and construction material, consumer products, agriculture goods, vehicle and spare parts, iron and steel products, and petroleum products, electronic, crude soya bean oil, telecommunication equipments, fertilizer, readymade garments and coal etc.

Whereas are some products exported by Nepal to India or as follows: Jute products, handicrafts, herbal and medicinal plants, soybean oil, palm oil, tea, carpets, cardamom, and iron and steel products.

The table given below shows the details of foreign trade between India and Nepal from 2020 to 2023.

Table No. 1, Nepal foreign trade with India

Particular	Financial Years		
	2020-21	2021-22	2022-23
Volume	1077.97	1355.37	1134.53
Share in %	64.12	63.90	64.13
Import (NPR Billion)	971.60	1200.15	1027.84
Export (NPR Billion)	106.37	155.22	106.69

Source : Nepal Rastra Bank through the Embassy of Nepal, New Delhi

Table No. 2, Export of India and Nepal in US $ million

Year	India's export to Nepal	Nepal's exports to India	Total Trade
2020-21	6,838.46	673.16	7,5116.2
2021-22	9,645.74	1,371.04	11,016.79
2022-23	8,015.99	839.62	8,855.61
2023-24	7,040.98	831.11	7,872.09
2024-25	7,334.87	1,201.48	8,536.35

Source : Ministry of Commerce and Industry, Govt. of India

Significance of trade treaty between two nations :

There are several trade agreements between Nepal and India which are playing vital roles to establish strong economic relationships and also enhance regional cooperation. The importance of trade treaty are given below:

- **Economic growth** : It is helpful to raise economic development in both countries. As both countries have a market for their production. India got an opportunity to invest in Nepal and Nepal has the benefits from India by importing needful products which production cost is comparatively higher in Nepal. Treaty of peace and friendship (1950) given opportunity to the citizens of both countries of economic cooperation.
- **Promotion of bilateral trade** : Trade treaties at the international level give mobility of goods and services across the country. It encourages transportation of goods and services to the rest of the world.
- **Minimization of trade barriers :** It diminishes customs duties and tariffs which makes trade more impactful and cost-effective. Tread treaty between India and Nepal provides foreign products to the consumers of concerned countries.
- **Motivation for investment :** The trade treaty always encourages the foreign direct investment

of India in Nepal and in recent years 30 to 35% FDI has been approved for different projects. In Nepal the main sectors which have received investment are manufacturing, banking, and financial services, telecommunication, education, healthcare, hydropower and energy, tourism's hospitality.

- **Strengthening political and strategic Relationship** : The economical and commercial trade relationship between two countries established on strong political relationship. The modern bilateral trade relation based on the treaty of peace and friendship (1950). The high level of political engagement and development of a partnership for education, health, connectivity energy etc.
- **Employment generation :**

Labour mobility across these countries is possible under the provision of the treaty of peace and friendship of 1950. Employment has been generated by developmental projects of India and tourism between these countries.

- **Support for the development of Nepal** :

The development of any country depends upon the facilities of connectivity, communication, infrastructural development which is possible through the investment in human resource development, and energy cooperation to increase the production of electricity.

Trade Deficit is great challenge for Nepal :

Trade deficit is a situation when a country is exporting less goods and services than its import from the other country. Nepal imported a large number of goods from India rather than its exports of goods to India. Hence the balance of trade is negative.

Balance of trade (BOT) = Export - Import,

When BOT > 0 = surplus trade and BOT = 0, it is balance trade, and when BOT < 0 = Trade deficit,

Balance of trade of Nepal = Export to India - Import from India

Table No. 3, Trade Deficit in US $ million

Year	Export from India to Nepal / Import of Nepal	Import of India from Nepal / export of Nepal to India	Trade deficit
2020-21	6,838.46	673.16	-6165.3
2021-22	9,645.74	1,371.04	-8274.7
2022-23	8,015.99	839.62	-7176.37
2023-24	7,040.98	831.11	-6209.87
2024-25	7,334.87	1,201.48	-6133.39

Source : Ministry of Commerce and Industry, Govt. of India

Figure : 1

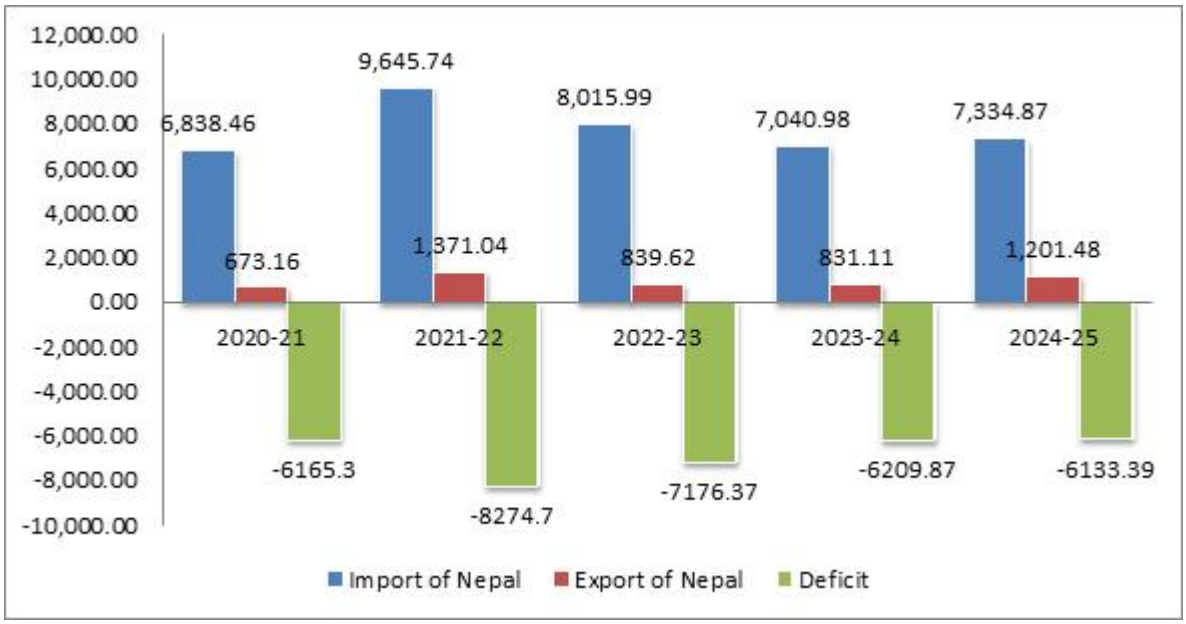


Table no. 3 and figure no. 1, shows the trade deficit of Nepal in US $ Million. The above table highlighted that Nepal imported goods from India is greater than the exported goods from Nepal to India .Hence, the trade deficit of Nepal is greater than India.

Strategies for improving Export of Nepal :

Exports play significant roles in the economic development of any country. It will reduce foreign deficit, increase earning through FDI and it also generate employment opportunities for the citizens and enhance industrialization by the production of imported commodities. Nepal exports have not florist due to the weak and limited development of the industrial area, lack of infrastructural facilities, paucity of innovative technology, high transportation cost. Strategies are as follows :

- Nepal has the capability to supply agricultural and herbal products attract tourists for tourism and handicrafts. Hence, Nepal should produce diversified agricultural products for export and also use food processing methods to utilize surplus agricultural food grain. Promote hand made products, increase the production of ayurvedic and herbal items. It should encourage organic farming and produce high value crops, develop agricultural diversification supportive systems like marketing, packaging, cold storage facilities.
- Nepal should improve the economic infrastructure because its weak infrastructure raises production costs. Suitable electricity supply, better railway connectivity to India, build road and highways, construct better cold storage facilities, high speed internet for fast connectivity.
- The geographical location of Nepal enables it to export hydropower. Trade deficit can be minimized by using hydropower export because it will be helpful to earn foreign exchange. Hence,

Nepal should develop Electricity Transmission infrastructure, motivate foreign investment in the energy generating sector, and establish large scale hydropower generating projects.

- Nepal should develop manufacturing industries to supply finished goods to the rest of the world which increase its foreign exchange and reduce its trade deficit. Encourage textile and handicraft industries, develop agro processing industries, setup export oriented industries, Provide tax incentives and industrial subsidy to maintain value-added products for earning foreign exchange and maintain standard of international market.
- Global recognition can be maintained by the quality of production and high quality products can influence consumers and maintain their confidence in the supply product. Improvement in the quality of the product Nepal must be established in a quality testing lab and using the International quality standard, use updated brand and packaging system.
- Nepal tourism is an important source for reducing foreign deficit by increasing foreign exchange. Nepal must promote tourism infrastructure and promote religious tourism.
- Promote foreign direct investment to improve international market approach and adopt modern Technology for the development of foreign trade. for it give investment security.

Conclusion :

Nepal's economy depends on India for its import as India exports machinery products, medicines, food items, industrial raw material vehicles, petroleum products etc. Hence, India poses a central position for Nepal trade as this country has imported 65% of good science services from India. Several Indian and Nepali citizens work by crossing the border area in their daily routine. In the financial year 2024-25, Nepal is 14th largest export destination of India although it was 28th in 2014. However, Nepal has the capacity to expand its exports by promoting agriculture diversification, tourist services, handicraft products, and industrial products, hydropower generation. If Nepal tries to implement strong foreign trade related strategies then it will successfully reduce the trade deficit by increasing FDI and create more job opportunities in the country.

Reference :

- Embassy of Nepal, New Delhi. (2025, May 8). Trade and commerce between Nepal and India. Government of Nepal.
- Embassy of India, Kathmandu. (2026). Commerce wing brief. Government of India.
- Vashisht, P. (2024). Analyzing India–Nepal economic integration: Status, challenges and way forward (RIS Discussion Paper No. 290). Research and Information System for Developing Countries (RIS).

- https://in.nepalembassy.gov.np/content/15/trade-and-commerce-between-nepal-and-india/
- https://www.indembkathmandu.gov.in/commerce-wing-brief
- https://www.ris.org.in/sites/default/files/Publication
- https://en.wikipedia.org
- https://www.mea.gov.in
- https://www.ris.org.in

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 89-95

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जसकरण सिंह गिल

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर।

नीलम भटेले

कन्या कमलाराजा गर्ल्स पीजी कॉलेज, मध्य प्रदेश ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

सारांश –

नेपाल में 1996 से 2006 तक चले माओवादी जनयुद्ध ने देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप हजारों लोगों की मृत्यु हुई तथा नेपाल लंबे समय तक राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा का सामना करता रहा। ऐसी परिस्थिति में शांति स्थापना और लोकतांत्रिक व्यवस्था की पुनर्स्थापना नेपाल के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई। नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत ने एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक भूमिका निभाई, जिसने संघर्षरत पक्षों के बीच संवाद स्थापित करने तथा शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में अनुकूल वातावरण तैयार करने में सहायता प्रदान की। यह शोध पत्र नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत के कूटनीतिक योगदान का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि भारत ने किस प्रकार राजनीतिक दलों, माओवादी समूहों तथा अन्य हितधारकों के बीच संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित किया। विशेष रूप से 2005 के 12 सूत्रीय समझौते तथा 2006 के व्यापक शांति समझौते की पृष्ठभूमि में भारत की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। भारत ने लोकतांत्रिक शक्तियों को समर्थन प्रदान करने, वार्ता प्रक्रिया को सुगम बनाने तथा नेपाल में स्थिर और लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

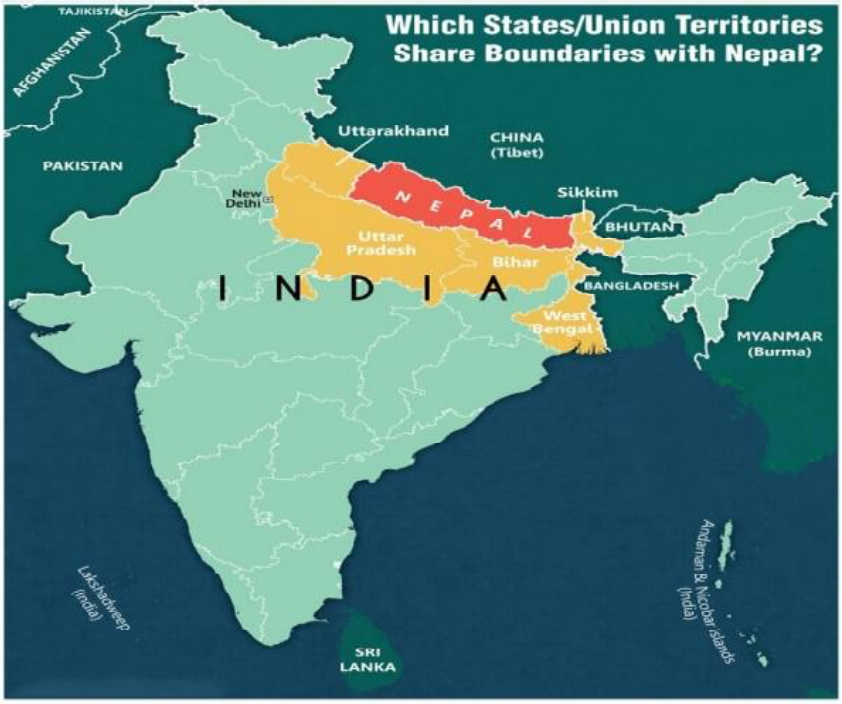
अध्ययन में यह भी पाया गया है कि भारत की भूमिका को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण मौजूद हैं। एक ओर भारत को शांति प्रक्रिया का सहयोगी और स्थिरता का समर्थक माना गया, वहीं दूसरी ओर कुछ वर्गों ने इसे नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में भी देखा। इसके बावजूद, भारत की कूटनीतिक सक्रियता ने नेपाल में लोकतांत्रिक संक्रमण, संविधान निर्माण प्रक्रिया तथा दीर्घकालिक शांति स्थापना में सकारात्मक प्रभाव डाला। नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का योगदान बहुआयामी और प्रभावशाली रहा है। भारत ने क्षेत्रीय स्थिरता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे नेपाल में शांति और राजनीतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को गति मिली।

मूलशब्द – नेपाल, शांति प्रक्रिया, भारत की कूटनीति, , माओवादी आंदोलन, लोकतंत्रीकरण, राजनीतिक स्थिरता

1. **प्रस्तावना –**

नेपाल दक्षिण एशिया का एक महत्वपूर्ण देश है, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भौगोलिक दृष्टि से भारत के साथ घनिष्ठ संबंध रखता है। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, रोटी-बेटी का संबंध तथा साझा सांस्कृतिक विरासत ने द्विपक्षीय संबंधों को विशेष स्वरूप प्रदान किया है। किंतु बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक और इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में नेपाल गंभीर राजनीतिक अस्थिरता और सशस्त्र संघर्ष के दौर से गुजरा। वर्ष 1996 में नेपाल में माओवादी विद्रोह आरंभ हुआ, जिसका उद्देश्य राजशाही व्यवस्था को समाप्त कर एक नई राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना करना था। यह संघर्ष लगभग एक दशक तक चला और इसके परिणामस्वरूप हजारों लोगों की मृत्यु हुई तथा देश की आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।नेपाल में बढ़ती हिंसा और राजनीतिक संकट ने शांति स्थापना की आवश्यकता को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। इस संदर्भ में वर्ष 2006 का व्यापक शांति समझौता नेपाल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुआ, जिसने लंबे समय से चल रहे सशस्त्र संघर्ष का अंत क र लोकतांत्रिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। इस शांति प्रक्रिया में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पक्षों ने योगदान दिया, जिनमें भारत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

भारत ने नेपाल की शांति प्रक्रिया में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण कूटनीतिक योगदान दिया। भारत ने नेपाल के प्रमुख राजनीतिक दलों और माओवादी नेतृत्व के बीच संवाद स्थापित करने, लोकतांत्रिक शक्तियों को समर्थन प्रदान करने तथा राजनीतिक सहमति निर्माण में सहयोग किया। वर्ष 2005 के 12 सूत्रीय समझौते को सफल बनाने में भी भारत की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है, जिसने आगे चलकर शांति प्रक्रिया और लोकतांत्रिक संक्रमण को गति प्रदान की।



भारत – नेपाल का मानचित्र

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत के कूटनीतिक योगदान का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

साथ ही यह शोध भारत की नीतियों, उनकी प्रभावशीलता तथा नेपाल की राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक विकास पर पड़े उनके प्रभाव का मूल्यांकन करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन भारत-नेपाल संबंधों की समकालीन समझ को समृद्ध करने के साथ-साथ दक्षिण एशिया में संघर्ष समाधान और शांति निर्माण की प्रक्रियाओं को समझने में भी सहायक सिद्ध होगा।

2. अध्ययन के उद्देश्य :

1. नेपाल की शांति प्रक्रिया का अध्ययन करना।
2. शांति प्रक्रिया में भारत की कूटनीतिक भूमिका का विश्लेषण करना।
3. भारत की मध्यस्थता एवं सहयोग के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. भारत-नेपाल संबंधों पर शांति प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. शोध प्रश्न :

1. नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की क्या भूमिका रही ?
2. भारत ने किन कूटनीतिक उपायों का प्रयोग किया ?
3. भारत के योगदान का नेपाल की राजनीतिक स्थिरता पर क्या प्रभाव पड़ा ?

4. शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध "नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर आधारित है। इस अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, क्योंकि इसका उद्देश्य नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की भूमिका, नीतियों तथा कूटनीतिक प्रयासों का विश्लेषण करना है। इस शोध में मुख्य रूप से **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक** (पद्धति को अपनाया गया है। अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्य एवं आंकड़े द्वितीयक स्रोतों से संकलित किए गए हैं। इन स्रोतों में पुस्तकें, शोध-पत्र, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नल, सरकारी दस्तावेज, भारत एवं नेपाल के विदेश मंत्रालय की रिपोर्टें, संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टें, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोत शामिल हैं। अध्ययन में नेपाल के माओवादी आंदोलन (1996–2006), 12 सूत्रीय समझौते, व्यापक शांति समझौते (2006) तथा लोकतांत्रिक संक्रमण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक एवं राजनीतिक संदर्भों में विश्लेषण किया गया है। साथ ही, भारत द्वारा अपनाई गई कूटनीतिक रणनीतियों, राजनीतिक संवाद, मध्यस्थता, लोकतांत्रिक समर्थन तथा विकासात्मक सहयोग का भी मूल्यांकन किया गया है।

शोध के दौरान प्राप्त तथ्यों का **तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण** कर निष्कर्ष निकाले गए हैं। अध्ययन का उद्देश्य किसी पक्ष का समर्थन या विरोध करना नहीं है, बल्कि उपलब्ध तथ्यों एवं स्रोतों के आधार पर भारत के कूटनीतिक योगदान का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। अतः यह शोध गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की भूमिका को समग्र रूप से समझने और उसका मूल्यांकन करने में सहायक सिद्ध होता है।

5. नेपाल की शांति प्रक्रिया : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

नेपाल की शांति प्रक्रिया को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन आवश्यक है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में नेपाल गंभीर राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानता और आर्थिक पिछड़ेपन की समस्याओं से जूझ रहा था। यद्यपि वर्ष 1990 के जनआंदोलन के परिणामस्वरूप बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई,

फिर भी राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की कमी जैसी समस्याएँ बनी रहीं। इन परिस्थितियों ने असंतोष को जन्म दिया और अंततः माओवादी आंदोलन के रूप में एक सशस्त्र संघर्ष सामने आया।

1. माओवादी जनयुद्ध (1996–2006) 13 फरवरी 1996 को Communist Party of Nepal के नेतृत्व में माओवादी विद्रोह की शुरुआत हुई। इस आंदोलन का उद्देश्य राजशाही व्यवस्था को समाप्त कर जनवादी गणराज्य की स्थापना करना था। माओवादियों ने सरकार के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया। लगभग दस वर्षों तक चले इस संघर्ष में 13,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई तथा हजारों लोग विस्थापित हुए। संघर्ष ने नेपाल की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

2. राजशाही और लोकतंत्र के बीच संघर्ष - नेपाल में राजशाही लंबे समय से सत्ता का प्रमुख केंद्र रही थी। वर्ष 2001 में हुए राजपरिवार हत्याकांड के बाद राजनीतिक संकट और गहरा गया। इसके पश्चात ज्ञानेंद्र शाह ने सत्ता अपने हाथों में केंद्रित करने का प्रयास किया। वर्ष 2005 में संसद को भंग कर प्रत्यक्ष शासन लागू कर दिया गया, जिससे लोकतांत्रिक शक्तियों और राजशाही के बीच संघर्ष तीव्र हो गया। इस स्थिति ने राजनीतिक दलों और माओवादी समूहों को एक-दूसरे के निकट आने के लिए प्रेरित किया।

3. 12 सूत्रीय समझौता (2005)- नवंबर 2005 में नेपाल के सात प्रमुख राजनीतिक दलों और माओवादियों के बीच 12 सूत्रीय समझौता हुआ। इस समझौते ने राजशाही के विरुद्ध लोकतांत्रिक शक्तियों को एक साझा मंच प्रदान किया। समझौते का मुख्य उद्देश्य पूर्ण लोकतंत्र की स्थापना तथा निरंकुश राजशाही का अंत करना था। यह समझौता नेपाल की शांति प्रक्रिया की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

4. जनआंदोलन और लोकतात्रिक परिवर्तन (2006)- अप्रैल 2006 में व्यापक जनआंदोलन (लोकतंत्र आंदोलन) आरंभ हुआ, जिसमें लाखों नेपाली नागरिकों ने भाग लिया। जनदबाव के कारण राजा को संसद पुनर्स्थापित करनी पड़ी और लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की वापसी हुई। यह घटना नेपाल के राजनीतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई।

5. व्यापक शांति समझौता 2006 - 21 नवंबर 2006 को नेपाल सरकार और माओवादियों के बीच Comprehensive Peace Agreement पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते ने दस वर्षों से चल रहे सशस्त्र संघर्ष का औपचारिक अंत कर दिया। समझौते के अंतर्गत युद्धविराम, माओवादी लड़ाकों का प्रबंधन, मानवाधिकारों की रक्षा तथा संविधान सभा के चुनाव कराने जैसे प्रावधान शामिल थे।

6. गणतंत्र की स्थापना और संविधान निर्माण- शांति प्रक्रिया के परिणामस्वरूप वर्ष 2008 में नेपाल में राजशाही का औपचारिक अंत हुआ और देश को संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया। इसके बाद संविधान सभा के माध्यम से नए संविधान के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हुई। अंततः वर्ष 2015 में नेपाल का नया संविधान लागू हुआ, जिसने लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को संस्थागत आधार प्रदान किया।

6. भारत की भूमिका का विश्लेषण :

नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण रही। भारत ने राजनीतिक दलों और माओवादियों के बीच संवाद को

बढ़ावा देकर शांति वार्ताओं के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया। 2005 के 12 सूत्रीय समझौते और 2006 के व्यापक शांति समझौते की प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक सहयोग उल्लेखनीय था। इसके अतिरिक्त भारत ने लोकतांत्रिक संस्थाओं को समर्थन, आर्थिक सहायता तथा पुनर्निर्माण कार्यों में सहयोग प्रदान किया। हालाँकि, कुछ नेपाली राजनीतिक समूहों ने भारत की भूमिका को नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में भी देखा। इसके बावजूद समग्र रूप से भारत का योगदान नेपाल में शांति स्थापना, लोकतांत्रिक संक्रमण और राजनीतिक स्थिरता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ।

- **निदर्शन एवं शोध प्रविधि :**

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन निदर्शन के रूप में किया गया। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया, जिसमें नेपाल की राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, शांति अध्ययन तथा भारत-नेपाल संबंधों से संबंधित जानकारी रखने वाले व्यक्तियों को सम्मिलित किया गया।अध्ययन हेतु एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई, जिसके माध्यम से उत्तरदाताओं की राय प्राप्त की गई। प्राप्त आंकड़ों को प्रतिशत एवं सारणीकरण के माध्यम से प्रस्तुत कर उनका विश्लेषण किया गया। इस प्रकार अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का प्रयोग किया गया है।

तालिका 1 : उत्तरदाताओं की राय के आधार पर भारत की भूमिका का मूल्यांकन (n = 100)

क्र.सं.	राय	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	अत्यंत सकारात्मक	35	35
2	सकारात्मक	40	40
3	तटस्थ	15	15
4	नकारात्मक	7	7
5	अत्यंत नकारात्मक	3	3
	कुल	100	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता (75%) नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की भूमिका को सकारात्मक या अत्यंत सकारात्मक मानते हैं। विशेष रूप से राजनीतिक संवाद, शांति समझौते और लोकतांत्रिक संक्रमण में भारत का योगदान महत्वपूर्ण माना गया। इससे नेपाल में शांति स्थापना और राजनीतिक स्थिरता को बल मिला।

7 शांति प्रक्रिया पर भारत के योगदान का प्रभाव :

भारत के कूटनीतिक सहयोग ने नेपाल की शांति प्रक्रिया को गति प्रदान की। भारत द्वारा राजनीतिक संवाद और लोकतांत्रिक शक्तियों को समर्थन मिलने से संघर्षरत पक्षों के बीच विश्वास निर्माण हुआ तथा शांति वार्ताओं को सफलता मिली। इसके परिणामस्वरूप माओवादी संघर्ष का अंत हुआ और लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को मजबूत आधार प्राप्त हुआ। भारत की आर्थिक एवं विकासात्मक सहायता ने पुनर्निर्माण और राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा दिया। साथ ही, संविधान निर्माण और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार भारत का योगदान नेपाल में दीर्घकालिक शांति,

लोकतांत्रिक संक्रमण और भारत-नेपाल संबंधों की मजबूती के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

8. निष्कर्ष :

नेपाल की शांति प्रक्रिया दक्षिण एशिया के इतिहास में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन का उदाहरण है, जिसने लंबे समय तक चले सशस्त्र संघर्ष को समाप्त कर लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रक्रिया में भारत ने एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक सहयोगी के रूप में भूमिका निभाई। भारत ने राजनीतिक संवाद को प्रोत्साहित किया, लोकतांत्रिक शक्तियों का समर्थन किया तथा शांति वार्ताओं के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया।

यद्यपि भारत की भूमिका को लेकर कुछ आलोचनाएँ भी सामने आईं, फिर भी समग्र रूप से उसका योगदान नेपाल में शांति, राजनीतिक स्थिरता और लोकतांत्रिक संक्रमण को सुदृढ़ करने में सहायक रहा। अतः कहा जा सकता है कि नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक योगदान सकारात्मक, प्रभावशाली और क्षेत्रीय स्थिरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है।-

❖ संदर्भ सूची :

1. बसु, नयनिमा (24 जनवरी 2021). "भारत-नेपाल पीस ट्रीटी क्या है, और नेपाल को इससे दिक्कतें क्यों हैं". द प्रिंट. 1 नवंबर 2022 को लिया गया। 31 जुलाई 1950 को, भारत और नेपाल ने "इन संबंधों को मज़बूत करने और विकसित करने और दोनों देशों के बीच शांति को बनाए रखने" की कोशिश में शांति और दोस्ती की संधि पर साइन किए।
2. एम.एस.एन. मेनन (5 अप्रैल 2002)। "भारत में नेपाल के लिए थोड़ी सद्भावना"। द ट्रिब्यून, भारत। 17 अक्टूबर 2015 को लिया गया।
3. डिक होडर, सारा जे. लॉयड, कीथ स्टेनली मैकलाचलन। अफ्रीका और एशिया के लैंड-लॉक्ड स्टेट्स। पेज 177. रूटलेज, 1998. ISBN 0-7146-4829-9
4. माओवादी 1950 की भारत-नेपाल संधि को खत्म करेंगे। www.rediff.com.
5. सुषमा स्वराज ने अपनी पहली नेपाल यात्रा को 'बहुत सफल' बताया". News18. 27 जुलाई 2014. 25 मई 2017 को पुनःप्राप्त.
6. वाग्मती नदीमा संयुक्त अध्ययन". ekantipur.com. 27 दिसंबर 2019 को मूल से संग्रहीत.
7. नेपाली भूमि राष्ट्रको हितविरुद्ध प्रयोग हुन दिन्नौं : मन्त्री सोनल. 26 दिसंबर 2019. मूल से 27 दिसंबर 2019 को संग्रहीत। 27 दिसंबर 2019 को पुनः प्राप्त।
8. बराल, एल. आर. (2006). नेपाल: शासन की समस्याएं। एड्रोइट पब्लिशर्स। पेज 47.
9. भट्टाराई, बी. (2003). नेपाल के पिछड़ेपन का नेचर और रीजनल स्ट्रक्चर। एड्रोइट पब्लिशर्स। पेज 113
10. इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप। (2005)नेपाल के माओवादी: उनके लक्ष्य, स्ट्रक्चर और स्ट्रैटेजी इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप। पेज 14.
11. झा, पी. (2014). नए रिपब्लिक की लड़ाइयां: नेपाल का आज का इतिहास। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। पेज 101
12. मुनि, एस. डी. (2012). इंडिया और नेपाल: बदलते रिश्ते। कोणार्क पब्लिशर्स। पेज 81
13. रियाज़, ए., और बसु, एस. (एडिटर्स). (2007). पैराडाइज़ खो गया? नेपाल में स्टेट फेलियर। लेक्सिंगटन बुक्स। पेज

14. सिंह, ए. (2009). नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत की भूमिका। स्ट्रेटेजिक एनालिसिस, 33(3), 412
15. थापा, डी., और सिजापति, बी. (2004). घेराबंदी में एक राज्य: नेपाल का माओवादी विद्रोह, 1996–2003। ज़ेड बुक्स। 22

सरकारी एवं रिपोर्ट सोर्स :

1. नेपाल में यूनाइटेड नेशंस मिशन। (2008)। UNMIN सालाना रिपोर्ट। यूनाइटेड नेशंस। पेज 16
2. विदेश मंत्रालय। (2006). भारत-नेपाल संबंध और शांति प्रक्रिया दस्तावेज। भारत सरकार। पृ. 20

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 96-101

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन और भारत–नेपाल संबंधों का नया आयाम

डॉ. जितेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

सारांश :

नेपाल के हालिया चुनाव परिणामों को राजनीतिक भूकंप कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं है। दशकों से राजनीतिक परिदृश्य पर प्रभुत्व रखने वाले पारंपरिक दलों और नेताओं को निर्णायक रूप से खारिज कर दिया गया है। इसके स्थान पर युवा, पेशेवर तथा तकनीकी रूप से दक्ष नेतृत्व उभरकर सामने आया है जिसे हाल के जनआंदोलनों – विशेषकर युवा–नेतृत्व वाले आंदोलनों का व्यापक समर्थन प्राप्त है। वस्तुतः यह परिवर्तन केवल सत्ता परिवर्तन नहीं है बल्कि जन–आकांक्षाओं के पुनर्संयोजन का संकेत है। नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन चुकी है। भारत–नेपाल के बीच खुली सीमा व्यवस्था (Open Border System) जहाँ एक ओर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करती है, वहीं दूसरी ओर यह सुरक्षा जोखिमों जैसे तस्करी, आतंकवाद, और अवैध गतिविधियों को भी बढ़ावा देती है। नेपाल में हाल ही में हुए चुनावी परिवर्तन भारत के पड़ोसी देशों के बदलते राजनीतिक परिदृश्य का संकेत देते हैं। भारत के लिये, ऐसे परिवर्तन नेपाल के साथ उसके ऐतिहासिक रूप से घनिष्ठ संबंधों के बदलते स्वरूप को उजागर करते हैं, जो साझा सभ्यता, खुली सीमा और गहरे जन–संबंधों पर आधारित हैं। समय के साथ, यह संबंध सांस्कृतिक समन्वय से आगे बढ़कर रणनीतिक, आर्थिक और विकासात्मक सहयोग तक विस्तृत हो गया है। इस संदर्भ में भारत–नेपाल संबंधों को अपनी पारंपरिक साझेदारी को बनाए रखते हुए नई राजनीतिक वास्तविकताओं के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द :- भारत और नेपाल, जनआंदोलन, सीमा व्यवस्था, युवा–नेतृत्व।

भूमिका –

भारत और नेपाल के बीच संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत गहरे और विशिष्ट रहे हैं। दोनों देशों के बीच लगभग 1,770 किलोमीटर लंबी खुली सीमा (Open Border) है, जो विश्व में अद्वितीय मानी जाती है। यह सीमा न केवल लोगों के आवागमन को सहज बनाती है, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक एकता को भी मजबूत करती है। किन्तु इसी खुली सीमा के कारण सुरक्षा चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं, विशेषकर

तब जब नेपाल के भीतर राजनीतिक अस्थिरता बनी रहती है। नेपाल में बार–बार सरकार परिवर्तन, संविधानिक विवाद, माओवादी आंदोलन की विरासत, और संस्थागत कमजोरी ने उसकी आंतरिक स्थिरता को प्रभावित किया है। इसका सीधा प्रभाव भारत–नेपाल सुरक्षा सहयोग और सीमा प्रबंधन पर पड़ता है।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता –

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास पर दृष्टि डालना आवश्यक है। राजशाही से लोकतंत्र तक नेपाल लंबे समय तक राजशाही शासन के अधीन रहा। 1990 में बहुदलीय लोकतंत्र की स्थापना हुई, किन्तु यह स्थिर नहीं रह सका। नेपाल में 1996 से 2006 तक चला माओवादी आंदोलन देश की राजनीतिक अस्थिरता का प्रमुख कारण रहा। इस संघर्ष में हजारों लोगों की मृत्यु हुई और राज्य की संस्थाएँ कमजोर हो गईं। राजशाही का अंत और गणतंत्र की स्थापना 2008 में नेपाल को संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया। इसके बाद भी संविधान निर्माण, सत्ता संघर्ष और दलों के बीच मतभेद जारी रहे। संविधान 2015 और उसके बाद 2015 में नया संविधान लागू हुआ, लेकिन मधेशी आंदोलन और क्षेत्रीय असंतोष ने राजनीतिक अस्थिरता को और बढ़ाया।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता के प्रमुख कारण –

1. दलगत विभाजन और सत्ता संघर्ष नेपाल की राजनीति में दलों के बीच लगातार टूट–फूट और गठबंधन सरकारों की अस्थिरता प्रमुख समस्या है।
2. संस्थागत कमजोरी न्यायपालिका, प्रशासन और सुरक्षा संस्थाओं में समन्वय की कमी और राजनीतिक हस्तक्षेप से शासन कमजोर हुआ है।
3. क्षेत्रीय और जातीय असंतुलन मधेशी, जनजातीय और पहाड़ी समुदायों के बीच असमानता ने राजनीतिक तनाव को बढ़ाया।
4. बाहरी प्रभाव भारत और चीन जैसे पड़ोसी देशों का प्रभाव भी नेपाल की राजनीति में परिलक्षित होता है, जिससे संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

भारत–नेपाल संबंध : सुरक्षा परिप्रेक्ष्य –

भारत और नेपाल के बीच 1950 की शांति और मित्रता संधि (Treaty of Peace and Friendship) सुरक्षा सहयोग का आधार है। इसके तहत दोनों देशों के नागरिकों को मुक्त आवागमन और आर्थिक गतिविधियों की अनुमति है। सुरक्षा सहयोग के प्रमुख आयाम–खुफिया जानकारी का आदान–प्रदान आतंकवाद विरोधी सहयोग सीमा पर संयुक्त निगरानी सैन्य प्रशिक्षण और सहयोग खुली सीमा और सुरक्षा चुनौतियाँ। भारत–नेपाल सीमा खुली होने के कारण अनेक सुरक्षा चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। अवैध आवागमन खुली सीमा के कारण बिना दस्तावेज के लोगों का आना–जाना आसान है, जिससे अपराध और अवैध गतिविधियों की संभावना बढ़ती है। तस्करी मादक पदार्थ, हथियार, मानव तस्करी, नकली भारतीय मुद्रा, आतंकवादी गतिविधियाँ, कुछ आतंकी संगठनों द्वारा नेपाल की भूमि का उपयोग भारत में घुसपैठ के लिए किया गया है। संगठित अपराध सीमा क्षेत्र में अपराधी नेटवर्क सक्रिय हैं, जो दोनों देशों की सुरक्षा के लिए खतरा हैं।

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता का सीमा सुरक्षा पर प्रभाव –

कमजोर शासन व्यवस्था राजनीतिक अस्थिरता के कारण नेपाल की सरकार प्रभावी ढंग से सीमा प्रबंधन

नहीं कर पाती। सुरक्षा एजेंसियों की सीमित क्षमता संसाधनों की कमी और समन्वय के अभाव में नेपाल की सुरक्षा एजेंसियाँ कमजोर पड़ती हैं। नीति निरंतरता का अभाव सरकारों के बार–बार बदलने से सुरक्षा नीतियों में निरंतरता नहीं रहती। बाहरी शक्तियों की भूमिका राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर बाहरी शक्तियाँ नेपाल में अपनी रणनीतिक उपस्थिति बढ़ाती हैं, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएँ बढ़ती हैं।

राजनीतिक परिवर्तन के संबंध में प्रमुख बिंदु –

नेपाली मतदाताओं ने राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (RSP) को स्पष्ट बहुमत प्रदान करते हुए बालेंद्र शाह के नेतृत्व में एक नई सरकार को अवसर दिया है। यह जनादेश पारंपरिक राजनीति के विरुद्ध असंतोष का प्रतीक है। हालाँकि, यह समझना आवश्यक है कि यह मतदान किसी सुविचारित वैकल्पिक नीति–ढाँचे के समर्थन में नहीं, बल्कि पुरानी व्यवस्था के प्रति निराशा की अभिव्यक्ति अधिक है। अतः नई सरकार के सामने अपेक्षाएँ अत्यधिक हैं, परंतु स्पष्ट नीतिगत दिशा का अभाव एक चुनौती बन सकता है। युवाओं के लिए पर्याप्त रोजगार सृजन, विदेश पलायन को नियंत्रित करना, समावेशी एवं तीव्र आर्थिक विकास सुनिश्चित करना, भ्रष्टाचार और भाई–भतीजावाद पर अंकुश, सुशासन की स्थापना, यद्यपि इतिहास बताता है कि नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन के बाद अपेक्षाओं का प्रबंधन कठिन रहा है। माओवादी आंदोलन के बाद लोकतांत्रिक मुख्यधारा में उनका समावेश, राजशाही का अंत और नए संविधान का अंगीकरण – इन सबके बावजूद नए नेपाल की आशाएँ शीघ्र ही धूमिल हो गई थीं। यदि वर्तमान परिदृश्य भी उसी दिशा में जाता है, तो यह एक गंभीर विफलता होगी। राजनीतिक आंदोलनों और चुनावी जीत को परिवर्तन का प्रारंभ माना जा सकता है, परंतु वास्तविक परीक्षा शासन में होती है। जनसमर्थन को ठोस नीतिगत परिणामों में बदलना ही सबसे बड़ी चुनौती है। नई सरकार को यह समझना होगा कि जनादेश केवल परिवर्तन का अवसर देता है, सफलता नहीं। यदि शीघ्र परिणाम नहीं दिखते, तो जन असंतोष पुनः उभर सकता है। इसलिए दीर्घकालिक सुधारों के साथ–साथ अल्पकालिक, दृश्यमान उपलब्धियाँ भी आवश्यक होंगी।

भारत–नेपाल संबंध : नई संभावनाएँ –

नेपाल के राजनीतिक परिवर्तन के संदर्भ में भारत की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। भारत ने अपेक्षाकृत संयमित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए बिना हस्तक्षेप के उक्त राजनीतिक परिवर्तन को समर्थन दिया है। हाल के वर्षों में द्विपक्षीय संबंध विकास, बुनियादी ढाँचा, ऊर्जा और डिजिटल कनेक्टिविटी जैसे व्यावहारिक क्षेत्रों पर केंद्रित रहे हैं। यह दृष्टिकोण भविष्य में भी सहयोग को मजबूत आधार प्रदान कर सकता है। भारत–नेपाल संबंध ऐतिहासिक विरासत, विशेषकर औपनिवेशिक काल की संरचनाओं से प्रभावित रहे हैं। वर्तमान वैश्विक और क्षेत्रीय परिवर्तनों को देखते हुए इन संबंधों का पुनर्संतुलन आवश्यक है। वस्तुतः दोनों देशों को चाहिए कि – पारंपरिक सोच से बाहर निकलें, लंबित मुद्दों का व्यावहारिक समाधान खोजें , जन–केंद्रित सहयोग को प्राथमिकता दें।

वैश्विक भू–राजनीतिक आयाम –

नेपाल की राजनीतिक घटनाएँ एक व्यापक क्षेत्रीय प्रवृत्ति का हिस्सा हैं। बांग्लादेश, श्रीलंका आदि में भी युवा–नेतृत्व वाले आंदोलनों ने स्थापित राजनीतिक व्यवस्थाओं को चुनौती दी है। ये आंदोलन तेज विकास और बेहतर शासन की मांग को दर्शाते हैं। ऐसे में, नए उभरते नेतृत्व को केवल ऐतिहासिक धारणाओं के आधार पर

भारत–विरोधी मानना उचित नहीं है। व्यावहारिक राजनीति में सहयोग की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट रूप से उभर रही है। क्षेत्रीय राजनीति में चीन और पाकिस्तान की भूमिका भविष्य में भी महत्वपूर्ण रहेगी। हालांकि, नेपाल में हालिया घटनाक्रमों के बाद चीन का प्रभाव कुछ हद तक कमजोर हुआ है, विशेषकर भ्रष्टाचार से जुड़े आरोपों के कारण। नेपाल के नए नेता संतुलित विदेश नीति अपनाते हुए आर्थिक हितों के आधार पर चीन के साथ सहयोग बनाए रख सकते हैं। इस संदर्भ में भारत को अपने पारंपरिक संदेहों को कम करते हुए अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। जहाँ तक यूनाइटेड स्टेट्स का प्रश्न है, उसकी नीतियाँ अभी अनिश्चित दिखाई देती हैं, विशेषकर वैश्विक सहायता और क्षेत्रीय रणनीतियों के संदर्भ में। समय के साथ भारत–नेपाल संबंधों में किस प्रकार परिवर्तन आए हैं?

सुरक्षा संरक्षकवाद और आधारभूत युग (1950–1990)

वर्ष 1950 की संधि का प्रतिमान : शांति और मैत्री संधि ने 'असममित पारस्परिकता' की व्यवस्था स्थापित की, जिसके अंतर्गत नेपाल को सुरक्षा आश्वासन और आर्थिक पहुँच प्राप्त हुई, जबकि इसके बदले भारत के हिमालयी सुरक्षा हितों के साथ सामंजस्य अपेक्षित था। भारत के लिये सामरिक अवरोध के रूप में नेपाल वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद भारत ने नेपाल को एक महत्त्वपूर्ण सुरक्षा अवरोध के रूप में और अधिक महत्त्व दिया, क्योंकि हिमालय को चीन के विरुद्ध भारत की प्राकृतिक रक्षा–रेखा माना जाता है। प्रारंभिक सहयोग में कोसी और गंडक बांध जैसी विशाल परियोजनाओं का वर्चस्व था, जो सिंचाई प्रदान करने के साथ–साथ नेपाल में जल राष्ट्रवाद के प्रारंभिक स्रोत भी बन गए। वर्ष 1989 का पहला बड़ा परिवर्तन तब हुआ जब राजा बीरेंद्र द्वारा चीन से हथियार खरीदने के प्रयास के परिणामस्वरूप भारत ने 15 महीनों का आर्थिक अवरोध लागू किया।

लोकतांत्रिक संक्रमण और राजतंत्रोत्तर पुनर्संरेखण (1990–2015)

बहुदलीय लोकतंत्र का समर्थन : भारत ने राजतंत्र के समर्थन से हटकर माओवादी समूहों और मुख्यधारा के राजनीतिक दलों के बीच वर्ष 2005 के 'बारह सूत्रीय समझौते' को सुगम बनाया। भारत ने अपनी 'द्वि–स्तंभ' नीति (राजतंत्र–लोकतंत्र) को त्यागकर एक पंथनिरपेक्ष संघीय गणराज्य का समर्थन किया, जो ऐतिहासिक सभ्यतागत संबंधों से हटकर राजनीतिक यथार्थवाद की दिशा में एक परिवर्तन था। वर्ष 2015 का नए संविधान के प्रख्यापन से एक बड़ा विवाद उत्पन्न हुआ। मधेशी आंदोलनों के प्रति भारत के कथित समर्थन और उसके पश्चात् हुए 'अनौपचारिक अवरोध' ने नेपाल में प्रबल अतिराष्ट्रवाद को जन्म दिया। राजनीतिक तनावों के बावजूद इस काल में इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट (ICP) तथा पंचेश्वर बहुउद्देश्यीय परियोजना जैसी पहलों की परिकल्पना हुई, जिनका उद्देश्य व्यापार को संस्थागत स्वरूप प्रदान करना था।

भू–राजनीतिक विविधीकरण और 'मानचित्र विवाद' (2015–2024)

के. पी. शर्मा ओली के नेतृत्व में नेपाल ने चीन के साथ परिवहन और पारगमन समझौते पर हस्ताक्षर किये। वर्ष 2018 में अंतिम रूप दिये गए इस कदम का उद्देश्य व्यापार मार्गों का विविधीकरण करना तथा भारत पर दीर्घकालिक निर्भरता को कम करना था। वर्ष 2020 में कालापानी–लिपुलेख क्षेत्र को लेकर विवाद के बाद नेपाल ने 'नया मानचित्र' संशोधन पारित किया, जिससे यह संकेत मिला कि नेपाल सीमा प्रबंधन में अब 'यथास्थिति' को स्वीकार नहीं करेगा। भारत ने 'मौन कूटनीति' की ओर रुख किया और प्रत्यक्ष राजनीतिक हस्तक्षेप के बिना 'उच्च प्रभाव वाले सामुदायिक विकास परियोजनाओं (HICDP)' को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित

किया, ताकि जनसमर्थन पुनः प्राप्त किया जा सके। कूटनीति के रूप में संपर्क का प्रयोग मोतीहारी–अमलेखगंज अंतर–सीमा पेट्रोलियम पाइपलाइन के उद्घाटन ने 'ठोस अवसंरचना आधारित पारस्परिक निर्भरता' की दिशा में परिवर्तन का संकेत दिया।

व्यावहारिक परिवर्तन (2025-वर्तमान)

वर्ष 2025 का जेनर्द – विद्रोह नेपाल में सितंबर 2025 में एक बड़ा राजनीतिक उथल–पुथल देखने को मिला, जब सरकार द्वारा प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर प्रतिबंध लगाने से युवाओं के नेतृत्व में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए, जिन्हें लोकप्रिय रूप से 'जेनर्दृ आंदोलन' कहा गया। प्रदर्शनकारियों पर की गई कार्रवाई ने प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली को इस्तीफा देने के लिये विवश कर दिया। इस संकट ने भारत के लिये एक रणनीतिक शून्यता को उजागर किया, जो लंबे समय से नेपाल में केवल उच्च–स्तरीय राजनीतिक नेतृत्व के साथ संवाद पर निर्भर रहा था। इसके परिणामस्वरूप खुली सीमा के निकट अस्थिरता की आशंकाओं के बीच नई दिल्ली को सावधानीपूर्ण 'प्रतीक्षा और अवलोकन' की नीति अपनानी पड़ी। मार्च 2026 के चुनावों के पश्चात नेपाल के राजनीतिक परिदृश्य में एक निर्णायक परिवर्तन हुआ, जिसमें नेपाल की राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (RSP) ने ऐतिहासिक जनादेश प्राप्त किया और पारंपरिक पार्टियों के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया। वर्तमान में भारत–नेपाल संबंध अधिक व्यावहारिक और संस्थागत ढाँचे की ओर अग्रसर हैं, जिनका केंद्र जलविद्युत निर्यात, डिजिटल संपर्क तथा वित्तीय प्रौद्योगिकी के एकीकरण जैसे क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग है।

निष्कर्ष –

नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता केवल उसकी आंतरिक समस्या नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव भारत–नेपाल संबंधों और क्षेत्रीय सुरक्षा पर भी पड़ता है। खुली सीमा व्यवस्था जहां एक ओर दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक निकटता को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर यह सुरक्षा चुनौतियों को भी जन्म देती है। नेपाल के चुनाव परिणाम केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि जन–आकांक्षाओं के पुनरुत्थान का संकेत हैं। नई सरकार के सामने अवसर और चुनौतियाँ दोनों ही व्यापक हैं। भारत और नेपाल के लिए यह समय द्विपक्षीय संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने का है, ताकि वे बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में परस्पर सहयोग को सुदृढ़ कर सकें। यद्यपि इस परिवर्तन की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि क्या नई नेतृत्व–व्यवस्था जन अपेक्षाओं को वास्तविक नीतिगत परिणामों में परिवर्तित करती है या नहीं। वस्तुतः यदि ऐसा होता है, तो यह न केवल नेपाल के लिए, बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए एक सकारात्मक उदाहरण सिद्ध हो सकता है। भारत और नेपाल के बीच सुरक्षा सहयोग को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है, विशेषकर सीमा प्रबंधन के संदर्भ में। इसके लिए दोनों देशों को राजनीतिक इच्छाशक्ति, संस्थागत क्षमता और तकनीकी संसाधनों का समुचित उपयोग करना होगा। एक स्थिर, समृद्ध और सुरक्षित नेपाल न केवल उसके नागरिकों के लिए बल्कि भारत और पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची :

1. Bhattarai, Gaurav, (2023) Implications on Nepal`s Foreign Affairs of the Sino & Indian Rapprochement over Lipulekh, Unity Journal 4 No- 1.

2. Pant, Bhubaneswar, (2018) Socio & Economic Impact of Undeclared Blockade of India on Nepal, Research Nepal Journal of Development Studies 1, No. 1.
3. Khanal, Bharat, (2021) Geo & Strategic Imperative of North &Western Border : Triangular Region Kalapani – Lipulekh and Limpiadhura of Nepal, Unity Journal- 2, No- 1.
4. Shrestha, Buddhi Narayan, (2022) International Boundaries of Nepal, New Delhi : Nirala Publication.
5. Shrestha, Buddhi Narayan, (2003), Border Management of Nepal, Kathmandu : Bhumichitra, Co. Pvt. Ltd.
6. बराल, लोक राज,(2012), नेपाल शासन की समस्याएँ, काठमांडू, एड्रॉइट पब्लिशर्स।
7. भारत सरकार, (1950). भारत–नेपाल शांति और मित्रता संधि, नई दिल्ली, विदेश मंत्रालय।
8. झा, प्रदीप, (2017), नए गणराज्य की चुनौतियाँ, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, (2022), भारत–नेपाल रक्षा सहयोग रिपोर्ट. नई दिल्ली।
10. पंत, हर्ष वी, (2019), भारत की विदेश नीति और नेपाल, मैनचेस्टर, मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. साउथ एशिया टेररिज्म पोर्टल, (2021), दक्षिण एशिया सुरक्षा मूल्यांकन रिपोर्ट. नई दिल्ली।
12. उप्रेती, बिश्नु राज, (2006), नेपाल में सशस्त्र संघर्ष और शांति प्रक्रिया. काठमांडू।

मो0 नं0 – 8182834300
ई–मेल :– jeetuphd@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 102-105

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जलवायु परिवर्तन : ग्लेशियरों का पिंघलना और चुनौतियाँ

ज्योति

सहायक प्रोफेसर, आर. पी.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन खोड, अटेली– मंडी (महेंद्रगढ़) हरियाणा।

सारांश (Abstract)

समय में जलवायु परिवर्तन विश्व की सबसे गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं में से एक बन चुका है। पृथ्वी के औसत तापमान में लगातार वृद्धि के कारण हिमनद (Glaciers) तीव्र गति से पिघल रहे हैं। इसका प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव जीवन, कृषि, जल संसाधनों, जैव विविधता और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। हिमालय क्षेत्र, विशेषकर नेपाल, इस संकट से अत्यधिक प्रभावित क्षेत्रों में शामिल है। नेपाल के ग्लेशियरों के पिंघलने से बाढ़, भूस्खलन, जल संकट तथा प्राकृतिक आपदाओं की संभावना बढ़ रही है। यह शोध पत्र जलवायु परिवर्तन के कारणो, ग्लेशियरों के पिघलने की प्रक्रिया, नेपाल पर इसके प्रभावों तथा संभावित समाधानों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

बीज शब्द (Keywords)

जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियर, हिमालय, नेपाल, वैश्विक तापमान वृद्धि, पर्यावरण, जल संसाधन, प्राकृतिक आपदा।

प्रस्तावना (Introduction)

जलवायु परिवर्तन (Climate Change) का अर्थ पृथ्वी के जलवायु तंत्र में दीर्घकालिक परिवर्तन से है। औद्योगिकीकरण, जीवाश्म इंधनों का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई तथा प्रदूषण के कारण वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ रही है। इससे पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे वैश्विक तापवृद्धि (Global Warming) कहा जाता है।

ग्लेशियर पृथ्वी के महत्वपूर्ण मीठे जल स्रोत है। हिमालय क्षेत्र को ''तीसरा ध्रुव'' भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ विश्व के सबसे बड़े हिमनदों में से कई स्थित है। नेपाल, जो हिमालय क्षेत्र का महत्वपूर्ण भाग है, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का गंभीर रूप से सामना कर रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, हिमालयी ग्लेशियर तेजी से सिकुड़ रहे हैं, जिससे भविष्य में जल संकट और प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ सकता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण

1. ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि :

कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4) और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें वातावरण में गर्मी को रोकती हैं। इनके बढ़ने से पृथ्वी का तापमान बढ़ता है।

2. औद्योगिकीकरण :

कारखानों और वाहनों से निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषण बढ़ता है तथा तापमान वृद्धि में योगदान देता है।

3. वनों की कटाई :

पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं। वनों की कटाई से वातावरण में CO_2 की मात्रा बढ़ती है।

4. जीवाश्म इंधनों का उपयोग :

कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैसों के अत्यधिक प्रयोग से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है।

ग्लेशियर के पिंघलने की प्रक्रिया :

जब पृथ्वी का तापमान बढ़ता है, तब हिमनदों की बर्फ तेजी से पिघलने लगती है। वैज्ञानिकों के अनुसार हिमालय क्षेत्र का तापमान वैश्विक औसत से अधिक तेजी से बढ़ रहा है। इससे नेपाल के कई हिमनदों का आकार घटता जा रहा है। ग्लेशियरों के पिलाने से ग्लेशियल झीलें (Glacial Lakes) बनती है। ये झीले कभी–कभी टूट जाती है, जिससे अचानक बाढ (Golf-Glacial Lake Outburst Flood) आती है। नेपाल में इस प्रकार की घटनाएँ कई बार देखी गई है।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :

1. जल संसाधनों पर प्रभाव :

अधिकांश नदियाँ हिमालयी ग्लेशियरों से निकलती है। ग्लेशियरों के पिंघलने से प्रारंभ में जल प्रभाव प्रवाह बढ़ता है, लेकिन भविष्य में जल संकट उत्पन्न हो सकता है।

2. कृषि पर प्रभाव :

पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन मुख्यतः कृषि पर आधारित है। अनियमित वर्षा, सुखा और बाढ़ कृषि उत्पादन को प्रभावित करते हैं।

3. प्राकृतिक आपदाएँ :

भूस्खलन, बाढ़ और हिमस्खलन जैसी घटनाँ बढ़ रही है। पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का जीवन अधिक जोखिमपूर्ण हो गया है।

4. जैव विविधता पर प्रभाव :

जलवायु परिवर्तन के कारण कई वनस्पति और जीव प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे में है।

5. मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव :

तापमान बढ़ने से नई बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। स्वच्छ जल की कमी और प्रदूषण भी स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा कर रहे हैं।

चुनौतियाँ :

1. आर्थिक संसाधनों की कमी।
2. तकनीकी विकास की सीमाएँ।
3. पर्यावरणीय जागरूकता का अभाव।

4. पर्वतीय क्षेत्रों में कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ।
5. अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता।

समाधान और उपाय :

1. **वृक्षारोपण :**

अधिक से अधिक पेड़ लगाकर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा कम की जा सकती है।

2. **नवीनीकरण ऊर्जा का उपयोग :**

सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत का उपयोग बढ़ाना चाहिए।

3. **प्रदूषण नियंत्रण :**

कारखानों और वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करना आवश्यक है।

4. **जन जागरूकता :**

लोगों को जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूक करना चाहिए।

5. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग :**

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है, इसलिए सभी देशों को मिलकर कार्य करना होगा।

नेपाल सरकार और अंतरराष्ट्रीय प्रयास :

नेपाल सरकार ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कई योजनाएँ शुरू की है –

1. राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन नीति।
2. हिमालय क्षेत्र की निगरानी।
3. आपदा प्रबंधन कार्यक्रम।
4. नवीनीकरण ऊर्जा को बढ़ावा।
5. अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ सहयोग।

ICIMOD तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) जैसी संस्थाएँ भी नेपाल की सहायता कर रही है।

निष्कर्ष (Conclusion)

जलवायु परिवर्तन और ग्लेशियरों का पिंघलना आज मानवता के सामने एक गंभीर चुनौती है। नेपाल जैसी हिमालय देशों पर इसका प्रभाव अधिक दिखाई देता है। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में जल संकट, प्राकृतिक आपदाएँ और पर्यावरणीय असंतुलन और अधिक बढ़ सकते हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और वैश्विक सहयोग के सहयोग से इस समस्या का समाधान संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Reference)

1. Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC). Climate Change 2023: Synthesis Report. Geneva: IPCC, 2023.
2. United Nations Environment Programme (UNEP).

3. Global Climate Change Report. Nairobi: UNEP Publications, 2022.
4. International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD).
5. The Hindu Kush Himalaya Assessment. Kathmandu: ICIMOD, 2019.
6. World Glacier Monitoring Service (WGMS). Global Glacier Change Bulletin. Zurich: WGMS, 2022.
7. NASA Earth Observatory. Climate Change and Melting Glaciers Studies. Washington D.C.: NASA Publications, 2021.
8. World Meteorological Organization (WMO). State of the Global Climate Report. Geneva: WMO, 2023.
9. United Nations Development Programme (UNDP). Nepal Human Development and Climate Risk Report. New York: UNDP, 2020.
10. Shrestha, A.B. and Aryal, R. Climate Change in Nepal and its Impact on Himalayan Glaciers. Journal of Hydrology, Vol. 45, 2018.
11. Eriksson Mats et al. The Changing Himalayas: Impact of Climate Change on Water Resources and Livelihoods in the Greater Himalayas. Kathmandu: ICIMOD, 2009.
12. Food and Agriculture Organization (FAO).Climate Change and Food Security in Mountain Regions. Rome: FAO Publications, 2021.
13. National Geographic Society. Melting Glaciers and Rising Sea Levels. Washington D.C., 2022.
14. UNESCO World Water Assessment Programme. Water and Climate Change Report. Paris: UNESCO 2020.

मोबाइल नंबर – 8708065930

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 106-110

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The 1950 Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship : An Article-by-Article Analysis and its Contemporary Relevance

Krishnakant Sharma,

Akash Pandey, Research Scholars

School of Social Sciences, DAVV Indore (M.P)

Abstract –

The ten-article Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship, which was signed in the 1950, is the cornerstone of diplomacy and governs the two countries' bilateral relations. It preserves both countries' national sovereignty and territorial integrity while envisioning enduring peace and harmony between them. In addition to effective collaboration on issues of foreign and defence relations, the treaty permits the unrestricted movement of people and goods between the two governments. The treaty facilitates the dialogue and information sharing with each other to overcome frictions to sustain better ties and relationship.

Key Word's - India, Nepal, Bilateral Relation, Peace and Friendship Treaty, Diplomacy, Territory, Border.

Research Methodology –

This paper relies on primary source as the text of the 1950 Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship treaty to draw finding and to evaluate the treaty, to see its impact on bilateral relation between two nations and mechanisms being provided in the treaty to resolve the issues.

Introduction :

India and Nepal have a long-standing relationship that was legally established by the Treaty of Peace and Friendship, which was signed on behalf of Government of India and Government of Nepal on 31st July 1950 by, Shri Chandreshwar Prasad Narain Singh, Ambassador of India in Nepal and Mohun Shamsher Jang Bahadur Rana, Maharaja, Prime Minister and Supreme Commander-in-Chief of Nepal. Nepal shares borders with five Indian states: Sikkim, West Bengal, Bihar, Uttar Pradesh, and Uttarakhand having land border of 1751 kilometre. The between India and Nepal is an example of

the long-standing civilisational and cultural ties between the two nations. India's "Neighbourhood First" Policy makes Nepal a top partner with strong people-to-people bond. Demands for changes to the peace and friendship treaty have been prominent since August 2008. During his 2014 visit to Nepal, Indian Prime Minister Narendra Modi reiterated India's support for changing the treaty's tenets. This research study examines the treaty's present applicability, article by article, and its impact on improving bilateral relations between India and Nepal.

Objective –

To evaluate the treaty every article and to analyse that, is there any need for a new treaty or amendment/amendments to strengthen the ties between nations in present context especially after recent Gen-Z revolution in Nepal and formation of new democratic government in Nepal under Prime Minister Balen Shah.

The treaty evaluation with emphasis on each article :

Article 1 talks about everlasting peace and friendship, while acknowledging mutual respect for each other territorial integrity while maintaining respect for each other sovereignty and independence. The open border with 98% demarcated boundary though facilitates people to people relations along with trade and cultural ties helping maintaining peace and prosperity especially for border areas. Time and again with regime change or elections in Nepal the border dispute emerges for the Kalapani Trijunction, Lipulekh and Limpiyadhura which is still remains issue between two nations, as the land border between two nations is based on 1816 Treaty of Sugauli signed between the British East India Company and the King of Nepal. The King of Nepal gave up his rights on lands laying to the west of the River Kali in accordance with Article 5 of the 1816 Treaty. The then Prime Minister of Nepal K.P. Sharma Oli on May 20, 2020, the Lower House of Nepal accepted a revised map of the country that included Kalapani, Lipulekh and Limpiyadhura in Uttarakhand and the area of Susta (West Champaran district, Bihar) as part of Nepal's territory as part of Nepal, on the Council of Ministers' advice. Recently, Prime Minister Balen Shah's claim that territorial encroachments along the India-Nepal border were not one-sided and that both countries have seized each other's land has become the most recent source of contention in the two nations' bilateral relations. Nepal wants China and the UK to mediate the dispute, but India is unwavering in its resolve to settle this matter bilaterally and does not require the third-party involvement in resolving the issue.

Article 2 is the solution of resolving serious friction or misunderstanding by informing each other so that no breach occur in the friendly relations and relations remain sustained between the two nations.

Article 3 talks of continued and regular diplomatic exchange between governments so that

relations remain firm and cordial.

Article 4 Appointment of formal diplomats in various rank and privileges, exemptions and immunities on reciprocal basis for timely dialogue and platform to raise matters of significant diplomatic importance.

Article 5 This article allows Nepal to use Indian territory to purchase weapons, ammunition, and warlike supplies and material for their security. Nepal being a landlocked buffer state and share large border with India. Nepal geographic location and India being a major power in south-east Asia and ally of Nepal understands Nepal needs and wants leading to harmony among nations.

Article 6 This article promotes friendly relationship between India and Nepal, each government grant national treatment to each other citizens in terms of participation in the industrial and economic development of that country as well as the granting of contracts and concessions related to such development. It helps trade grow and creates avenue of economic activities across the border freely and opening up for opportunities Nepalese people on par with Indian citizens and vice versa leading to development on both sides and better ties across the sectors.

Article 7 This article grants the same rights in terms of residence, property rights and ownership, trade, commerce participation, mobility and freedom of movement, and other comparable privileges to citizens of one nation residing in the territories of another on a reciprocal basis. It strengthens the ties and people to people exchange, new opportunities in each other territories as a national treatment.

Article 8 It mentions as mutually agreed while signing the treaty to cancel all previous Treaties, agreements and engagements done by British Government on behalf of India with Government of Nepal before India's independence. One interesting thing related to this article interpretation, if done by the heart and spirit is that it makes the 1816 Treaty of Sugauli cancelled which defines the border between two nations.

Article 9 The treaty came in force on 31st July 1950 and still standing as strong pillar while maintaining healthy relationships among the two-time trusted natural ally and neighbours.

Article 10 The treaty will remain in force until one of party want to terminate it with prior one year notice.

Findings -

India and Nepal have agreed to "review, adjust, and update" the Indo-Nepal friendship treaty of 1950 in August 2014 during Prime minister of India's official visit to Nepal. Both sides agreed that the amended treaty should better represent contemporary 21st century complex realities and global dynamics while aiming to strengthen and enhance the complex and deeply entrenched partnerships

evolving very rapidly. The present foreign policies stances of nations are changing as per the aspirations and need of hour and the volatile politics in Nepal especially impact time and again relations among the two nations. Nepal being another democratic country having multi-party presence with some pro-Indian while some Pro-Chinese and anti-Indian sometimes create tension and tense moments among the nations. Because of its advantageous location between China and India, Nepal's security and stability are of utmost importance. Even the slightest disturbance in Nepal will have an impact on these two emerging economies. Situated between two regional countries aspiring to be global powers, Nepal has the potential to seize opportunities and become a focal point of geopolitical conflict between China and India. Therefore, better Indo-Nepal relations are vital for India's regional aspirations as well as an emerging global power.

Conclusion -

Indo-Nepal relations are influenced by historical ties, cultural linkages, and geographic proximity. Despite Nepal's liberation from colonialism and India's colonial heritage, diplomatic relations were established in 1947 and reinforced by the 1950 Treaty of Peace and Friendship, which brought imbalances in trade and security while emphasising sovereignty. India's "Neighbourhood First" strategy makes it a crucial ally in the development and stability of Nepal. There have been 17 Head of State/Head of Government exchanges between India and Nepal since May 2014.

The recent Nepal's Prime Minister Balen Shah's claim in his speech in Nepalese Parliament that territorial encroachments along the India-Nepal border were not one-sided and that both nations have invaded each other's land has become the most recent source of contention in bilateral relations between the two nations. Later, Nepal's foreign ministry clarified Shah's comments, stating that there are issues with "cross-border occupation" and encroachment in some other areas and that the disputed territories of Kalapani, Lipulekh, and Limpiyadhura have not yet been delineated. It is followed by visit by Nepal's foreign Minister Shisir Khanal to India on 6th June 2026 and have dialogue with India's External Affairs Minister Dr. S. Jaishankar as well with India's National Security Adviser Ajit Doval. Prior to this, few days earlier Rabi Lamichhane, the chairman of the Rastriya Swatantra Party, met Prime Minister Narendra Modi, Home Minister Amit Shah, External Affairs Minister Dr. S. Jaishankar, and National Security Advisor Ajit Doval on a high-profile visit to India. These official meetings and political parties' engagement highlight the vibrancy of relations among the two nations. From the perspective of India's national security, Nepal has enormous strategic significance since it allows people to travel freely across the border, and terrorists frequently utilise Nepal to enter India. As a result, India cannot afford to ignore the need for stable and cordial relations with Nepal, thus both need to find a permanent solution over the disputed areas which had remain bone of contention

between the two. The treaty has laid the legal foundation stone for better bilateral relation with provisions of amicably resolving avenues with dialogues and deliberations. The treaty and mutual trust and mature politics on both sides is ever evolving and benefitting the both. Thus, if need being felt, with new issues and emergence of new challenges few provisions can be added or amended in the treaty for sustained flourishing relations among the two natural allies.

References :

- https://www.mea.gov.in/bilateral-documents?dtl/6295/Treaty+of+Peace+and+Friendship
- https://www.vifindia.org/article/2024/december/11/India-Nepal-Border-Disputes-and-the-Kalapani-Issue
- https://www.ipcs.org/issue_select.php?recNo=556
- https://www.indembkathmandu.gov.in/about-india-nepal-relations
- https://myrepublica.nagariknetwork.com/news/seizing-the-moment-balen-shah-and-the-future-of-nepal-india-relations-99-62.html

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 111-116

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जनकपुर में मुण्डाओं का रामायण कालीन संस्कृति का जीवंत केंद्र

लेखन प्रकाश मुण्डा

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग, रांची विश्वविद्यालय रांची।

प्राचीन सांस्कृतिक विरासत पर गौर करने से ज्ञात होता है कि सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही मानव जाति का भी सृजन हुआ होगा। अर्थात ईश्वर ने सबसे पहले सृष्टि की रचना की होगी। आकाश और धरती का निर्माण किए होंगे। जहां उन्होंने 84 लाख योनि जीव जंतु का सृजन किया होगा। शास्त्र के अनुसार योनि के 4 प्रकार बताए गए – अंडज, पिडंज, पंकज और स्थागज। इन सृष्टि उत्पत्ति की वृतांत अनुरूप मानव समूह में संस्कृत का उदय हुआ होगा।

आदिकाल के मानव अपनी आरंभिक जीवन जंगलों एवं गुफाओं में रहकर व्यतीत करते थे। जंगलों की कंदमूल तथा साग पात को भोजन के रूप में ग्रहण करते रहे। धीरे–धीरे गतिशील समय के साथ मानव समुदाय की ज्ञान पूंजी विकसित हुई। उसके बाद मानव ने कृषि करना शुरू किया। उसके बाद मानव समुदाय के बीच सांस्कृतिक विधि विधान, धार्मिक आस्था जैसे ईश्वर भक्ति संस्कृति, रीति रिवाज तथा जीवन शैली जैसे सामाजिक जीवन विकसित हुई। मानव समुदाय अब समूह में रहने लगे। धीरे–धीरे समय की नींव मजबूत होती रही। लोगों ने ईश्वर भक्ति को अपना एक मात्र जीवन का सफल मार्ग समझा। अर्थात प्राचीन काल के मानव समूह पूर्णतया ईश्वर में विश्वास रखते रहे। वे मानते रहे कि ईश्वर ने हमारे लिए सृष्टि का निर्माण किया। धरती, आकाश, अग्नि, जल तथा पवन आदि पांच तत्वों का निर्माण श्रृष्टि की गतिशील के लिए किया होगा। समय के साथ सृष्टि की गतिशीलता बढ़ती गई। मानव समूह में सामाजिक, सांस्कृतिक संरचना सम्मिलित होती गई। अब समृद्ध समाज फ़ैल कर विशाल भूभाग के क्षेत्र में फैल गई।

मानव समुदाय की वह जीवंत कहानी आज हमारे बीच प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के रूप में मौजूद है। जो युगों युगों पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है। प्राचीन सांस्कृतिक कालचक्र अनुसार चार युग का सांस्कृतिक विरासत कथाएं हैं। वर्णित कथाओं को युग के अनुसार धर्म ग्रंथो में बांटा गया है। ग्रंथों के अनुसार सृष्टि की रचना ईश्वर के अवतार के बारे में बताया गया है। जिन्हें आज हम सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलयुग के नाम से जानते है।

वैसे उस दौर के प्राचीन सांस्कृतिक सभ्यता का सामाजिक जीवन कर्म पर आधारित था। अर्थात प्राचीन मानव अपनी कर्मों में विश्वास करता था और वहां कर्म का पालन होता है। समाज का हर व्यक्ति सांस्कृतिक

रीति रिवाज, धार्मिक विधि विधान का अनुपालन, विश्वास आस्था के साथ करता था। मानो ईश्वर भक्ति में रुचि रखते थे। आत्मा को मानते था। अच्छे और बुरे कर्म का न्यायदाता ईश्वर को अधिक मानते थे। अच्छे और बुरे कर्म, धर्म और सत्य की कहानी आज प्राचीन लोक कथा, लोक गीतों के माध्यम से मिलता है।

जब सृष्टि में सत्य का लोप अर्थात धर्म का विनाश करके अधर्म बढ़ जाता है और धरती पर रहने वाले मनुष्य धर्म के राह में भटक जाता है। तब ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है कि मनुष्य धर्म का मार्ग छोड़कर अधर्म का मार्ग अपना लेता है। शास्त्रों में बताया गया है कि अधर्म का नाश करने के लिए ईश्वर स्वयं धरती पर अवतार लेकर पुनः धर्म का स्थापित करते हैं।

ईश्वर की लीलाओं का वर्णन हर युग में अलग–अलग बताया गया है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक सभ्यता आज अलग–अलग समुदाय में बंटे हुए हैं। अर्थात ईश्वर भक्ति के परंपरा अलग–अलग तरह से विद्वान है। जो सृष्टि में ईश्वर भक्ति से संबंधित कई लोक कथाओं एवं कई लोकगीतों में आज भी झलकता है। ऐसे लोक कथा या लोकगीत प्राचीन युग की सांस्कृतिक काल से जुड़ी घटना मानव समूह विशेष की भाषा और संस्कृति विरासत की झलक दर्शाता है। मुंडा समुदाय के प्राचीन भाषा का संस्कृति में कई ऐसे लोक कथाएं, लोकगीतों के वाक्य तथा गीतों में मुण्डा भाषा का शब्द मिलता है। जिनका संबंध हर युग के प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की कथाओं और गीतों में मिलता है। मुण्डा समुदाय कौन है? मुण्डाओं का भाषा क्या है तथा मुण्ड या मुण्डा समुदाय का भाषा का शब्द प्राचीन युग की सांस्कृतिक विरासत से संबंध कैसे हैं? पाठकों आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा होगा। तो पाठकों आइए हम मुण्डा समुदाय की सांस्कृतिक विरासत और उनके भाषा का संबंध समझते हैं और यह भी जानते हैं कि मुण्डाओं का प्राचीन संस्कृति युग युग का संबंध से क्या जानकारी प्राप्त होती है?

मुण्डा समुदाय का परिचय :

मुण्डा समुदाय प्राचीन भारत के अति प्राचीन निवासियों में से माना जाता है। मुण्डाओं की अपनी सांस्कृतिक परंपरा प्राचीन माना जाता है। अर्थात मुण्डा समुदाय आदिकाल से भारत में रहते आए हैं। समय के साथ उनका सांस्कृतिक जीवन आखेट था। फिर समय के साथ कृषि संस्कृति का विकास होता रहा। मुण्डा समुदाय के प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और उनके भाषा विशाल भूभाग में फैला हुआ था। यह समुदाय अपने आप में भाषा और संस्कृति का धनी माना जाता था। मुण्डा समुदाय पारंपरिक युग में स्वतंत्र रूप से घूमते थे। जगदीश त्रिगुणायत द्वारा संग्रहित लोककथा संग्रह पुस्तक 'मुण्डा लोक कथा' में 18वीं शताब्दी के विद्वान एडम स्मिथ ने मुण्डा समुदाय के भाषा को आग्नेय भाषा परिवार का समूह माना है। एडम स्मिथ के अनुसार मुण्डाओं का व्यक्तित्व सरल स्वभाव और स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने वाला माना गया है।

मुण्डाओं का आगमन सबसे प्राचीन माना जाता है। अन्य समुदाय के आगमन से मुण्डाओं का सरल जीवन की स्वतंत्रता धीरे–धीरे छिनभिन होती गई। उन्हें स्वतंत्र रहना पसंद था। मुण्डाओं की स्वतंत्रत जीवन पर आगंतुक समूह के द्वारा उनके व्यक्तित्व स्वतंत्रता छीन गई। वह भी लड़ाई से नहीं बल्कि अपनी स्वतंत्रता के सरल जीवन व्यतीत करने की चाहत से।

मुण्डा लोक कथा अनुसार मुण्डा समुदाय भारत की विशाल भूभाग क्षेत्र में या जंगल पहाड़ों पर रहकर जीवन व्यतीत करने लगे। भारत के उत्तर प्रदेश, आजमगढ़ के रास्ते छोटा नागपुर भूभाग में आए और सुतीयांबे

गढ़ नामक जगह पर रहने लगे। यह स्थान वर्तमान सुतीयांबे के नाम से जाना जाता है। यह भारत के मध्यवर्ती राज्य झारखंड रांची जिले में है। कहा गया है कि मुण्डा समुदाय ने छोटा नागपुर की धरती सुतीयांबे गढ़ को मूल निवास स्थान बताया था। और सुतीयांबे से उनका सामाजिक व्यवस्था संचालित होता था। आज भी मुण्डा संस्कृति परंपराओं में उस स्थान का वर्णन होता है। मुण्डाओं का सांस्कृतिक विस्तार का केंद्र सुतीयांबे गढ़ माना जाता है। वर्तमान परिपेक्ष में मुण्डाओं का भाषा का विस्तार राज्य के अलग–अलग भारत देश के दूसरे राज्यों में भी फैला हुआ है। जहां मुण्डा समुदाय निवास करती है। प्राचीन लोक कथाओं और लोकगीतों में वर्णित युगकालीन घटना कहानी या कथा के रूप में दर्शाता है। अर्थात मुण्डा समुदाय की सांस्कृतिक विरासत हर युग के साथ जुड़ा है। आइए इस लोकगीत के माध्यम से समझते हैं कि यह गीत सीता जनक और नाम का अर्थ पर आधारित मुण्डाओं द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत है।

सि तन रेबु नाम लिअ
सिता गेबु लूतुम मिअ
आहो जनक राजा – 2
असुललि में ओते एंगा होन तबु।

अबु तला रे हिजु जना
सुकु रसि काएः अऊ तदा
आहो जनक राजा – 2
असुललि में ओते एंगा होन तबु।

सोना रूपा दाः गमा
दारू चुपा जमा जमा
रसिका तेको लेओन लेओन तना – 2
ओते पिड़ि गुंजल गुंजल जना।
ओते एंगा तेतङ लेन रे
मानवा को बु बलाए लेन रे
हिजु जनाए बोंगा होन लेका
अउवद बुःलाए सुकु रसिका सला
दिसुम रटि मरेसला कना।

भावार्थ – यह लोकगीत मुण्डाओं का उस दौर रामायण कालीन युग का वृतांत कथा में गया जाने वाला गीत है। जब राजा जनक के दरबार में आए अकाल के दौरान राजा जनक हल चलाते है। हल चलाते वक्त उन्हें शिशु कन्या मिलती है। उनके साथ सुख और खुशियां साथ आई थी। चारों तरफ वर्षा, पेड़ पौधा आपस में गले मिल रहे होते हैं। पूरी धरती पर हरियाली छा जाती है। जब धरती मां प्यासी थी और मानव समुदाय संकट

में थे, तब देवी मां की तरह धरती पर वह शिशु कन्या आई और समस्त पृथ्वी में प्रकाश लाई।

तदनुसार शिशु कन्या का नामकरण होता है। नामकरण की प्रक्रिया मुण्डा समुदाय के सांस्कृतिक विधि विधान से होता है। यह विधि विधान संस्कार आज भी मुण्डा समुदाय में प्रचलित है। अंततः उस शिशु का नाम उनके मिलने की घटना के नाम पर रखा जाता है। अर्थात उनका नाम सीता रखा जाता है।

अब प्रश्न उठता है कि रामायण कालीन युग में सीता का जन्म कैसे हुआ? महाराज जनक और उनकी प्रजा ने धरती मां की पुत्री का नाम सीता ही क्यों रखा? आइए इन प्रश्नों का उत्तर रामायण काल की कथा को मुण्डा समुदाय के प्राचीन लोक कथा अनुसार जानते है – जनक राजा के राज मिथिला में बहुत अकाल पड़ा। कई वर्षों तक वर्षा न होने के कारण राज में भारी संकट आई। मिथिला वासी रोने बिलखने लगा। एक दिन मिथिला के सभी प्रजा राजा जनक के दरबार आए और राज की संकट से बचने का उपाय पर विचार विमर्श किया। उन्होंने राजा से कहा कि हमारे राज में भारी संकट आई है। इस संकट से बचने का उपाय किया जाना चाहिए। मिथिला के राजा संकट से उभरने के लिए एक ओझा अर्थात भविष्य की जानकारी की तलाश में निकलते हैं। कई मिल चलने के बाद उन्होंने एक अजनबी आदमी को रास्ते में देखा। वह कोई और नहीं बल्कि स्वयं सिंगबोंगा अर्थात ईश्वर था। अजनबी आदमी ने उन लोगों से पूछा कि आप कहां जा रहे हैं और कहां से आ रहे हो? इतना सवाल एक साथ सुनते ही रुक गए। तब उनमें से एक ने कहा – हम मिथिला से आ रहे हैं। हमारे राज में भारी संकट आन पड़ी है। इस संकट से बचने के लिए देंवड़ां या ओझा या भविष्य जानकार की तलाश में जा रहे हैं। तब एक दूसरे ने पूछा – क्या आप ऐसे किसी देंवड़ां या भविष्य जानकार को जानते हैं तो बताइए। तब अजनबी बने सिंगबोंगा या ईश्वर ने कहा। मैं ही कभी–कभी भविष्य देखता हूं। सब ने कहा। अच्छा तो हमारा भी देख लीजिए शायद हम सब का कष्ट का निदान हो।

तब अजनबी आदमी ने उन सब से कहा कि आइए इस पेड़ के छाया में बैठकर देखते हैं। मिथिला से आए सभी प्रजा को अजनबी बने ईश्वर ने उन्हें सखुआ के विशाल वृक्ष की छाया में बैठाया और साथ स्वयं भी बैठ गया। तब उनमें से एक बूढ़ा आदमी ने उनके सामने सखुआ पत्ता में अरवा चावल के दाने रखकर उस अजनबी आदमी के सामने रख दिया। अजनबी बने सिंगबोंगा या ईश्वर ने अरवा चावल को हाथ में उठाकर भविष्य देखना शुरू किया। उसने बताया आप लोगों के राज में अकाल पड़ा है। कई वर्षों से वर्षा भी नहीं हो रही है। आपका समस्त मिथिला वहां संकट में है।

तब यह सुनकर उसमें से एक ने दूसरे के साथ आपस में चुपके से कहा। यह गुरु (देंवड़ां) तो बहुत सत्य बता रहा है। फिर गुरु (देंवड़ां) ने सबसे पूछा। क्या यह सत्य है या नहीं? सब ने बताया कि जो आप बोल रहे हैं वह सब बातें सत्य हैं। परंतु अब आप यह बताइए कि इस संकट से मिथिला वासी को बचाने का उपाय क्या है? संकट का निदान बताइए। तब गुरु (देंवड़ां) ने सभी मिथिला के प्रजा को बताना शुरू किया। हां तो अब सभी ध्यान से सुनिए, इस संकट से निजात पाने के लिए यह उपाय करना होगा, जैसा हम देख पा रहे हैं। उसके अनुसार आप सबको बता रहा हूं। शुक्रवार के दिन मिथिला के राजा द्वारा मिथिला के धरती पर हल चलाया जाए। ध्यान रहे की हल सोने के धातु का बना होना चाहिए। हल, जुवांट (पाल) फार और बैलों को भी सोने का आभूषणों से सजा होना चाहिए। राजा द्वारा मिथिला के खेतों में हल चलाते ही वर्षा शुरू हो जाएगी। संकट का हल पाकर उस गुरु (देंवड़ां) से विदा लेकर सब लोग मिथिला की ओर चल पड़े।

मिथिला पहुंच कर सभी राज दरबार में गए और गुरु (देंवड़ां) को बताए उपाय को राजा को सुनाया। यह सुनकर राजा का दुखी मन को थोड़ी राहत मिली। फिर वह उस दिन के लिए तैयारी में जुट गया। निर्धारित दिन को महाराजा हल चलाने के लिए मिथिला के खेत पर जाते हैं। बैलों को सोने के आभूषण से सजाया संवारा जाता है। राजा अपने नौकर और सिपाहियों के साथ खेत पर पहुंचता है और खेतों में हल चलाना आरंभ करता है। तब ताता–नाना करते हुए राजा और उनके नौकर हाथ में सोने की छड़ी और दूसरे हाथ में (कड़बा) हल का चंदली पकड़े अपने–अपने बैलों को हांकते है। अचानक राजा जनक का हल खेत पर फंस गया। उनके दोनों बैल वहीं रुक गए। राजा और नौकर हल खींचने लगे। तब किसी ने भी हल नहीं निकाल सका।

राजा ने अपने बैलों को (अलाची) छड़ी से ऐंठ लगाकर हांका। तब बैलों ने जोर से खींचा। तब हल के साथ एक घड़ा निकल आई। सबने घड़े को देखा तो घड़े में एक सुंदर कन्या मिली। यह देख मिथिला के राजा और प्रजा को बहुत प्रसन्न हुई। बताया जाता है कि जैसे ही वह सुंदर कन्या रोई तो जोरदार वर्षा होने लगी। राजा और उनके सिपाही शिशु कन्या को अपने साथ महल ले गए। राजा जनक की कोई संतान नहीं थी इसलिए रानी भी खुश हुई।

राजा ने उस कन्या का नामकरण करने के लिए मिथिला के पुरोहित (हड़म) लोगों को बुलाकर दरबार में न्योता भेजा। सभी नामकरण संस्कार के लिए दरबार में जमा हुए। जब नाम की चर्चा शुरू हो रही थी कि उनमें एक बुजुर्ग पुरोहित तो पहुंचा ही नहीं था। तब राजा ने नौकरों को भेजा। फिर नौकरों ने उस पुरोहित को घोड़े पर बैठाकर लाया। एकत्र पुरोहितों ने शिशु कन्या का नाम अपने हिसाब से प्रस्ताव को राजा के दरबार में प्रस्तुत किया। तब सबसे बुजुर्ग जिन्हें घोड़े पर बैठाकर लाया गया था। उन्होंने भी अपना मत पेश किया।

मुण्डा समुदाय के लोक कथा, भाषा और लोकगीतों में सम्मिलित शब्दों के अर्थ यह संकेत करता है कि मुण्डा समुदाय के भाषा प्राचीन में उनकी बहुत समृद्धि थी। यहां कई लोक कथा और लोकगीतों की वर्णन मिलता है। रामायण कहानी में राम सीता की विवाह, राम रावण की लड़ाई तथा जनकपुर की कहानी संबंधित है। यह कहानी लोकगीत में इस प्रकार कहा गया है।

जदूर गीत –

अयोध्या नगर चि जनकपुर गुतु गलंग बा तेगे पेरेआकनः
रावण राजाः दिसुम लंका पुरे दुदुगर कोंवासी गे ओटंग तना
राम सीता ताकिन अड़ंदि तना गुतु गलंग बा तेगे पेरेआकनः
राम रावणकिन लड़ाई तन दुदुगर कोंवासी गे ओटंग तना।

भावार्थ – अयोध्या नगर और जनकपुर फूलों की रंग बिरंग लड़ियों से सजाया गया है और लंका का राजा रावण का देश धूल कुहासा से ढंका हुआ है। राम विवाह हो रहा है। दूसरी तरफ राम और रावण की लड़ाई। अंततः इस चार पंक्ति के लोकगीत में पूरी रामायण की कहानी का वर्णन है। अयोध्या और जनकपुर का संबंध, राम सीता की विवाह बंधन में अयोध्या और जनकपुर एक दूसरे के साथ बंधा है। यह बंधन दो राज का नहीं बल्कि अयोध्या और जनकपुर के समस्त प्रजा का बंधन है। अन्य पंक्ति में राम रावण के युद्ध के बारे में वर्णन है। लंका देश में राम और रावण अपने–अपने वीर योद्धाओं के साथ धर्म युद्ध में लंका की धरती के धूल को

उड़ाया है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त आरेख से ज्ञात होता है कि मुण्डा लोकगीत एवं जनकपुर से अयोध्या के संबंध और लंका युद्ध की कथाएं मुण्डा समुदाय का भाषा प्राचीनतम को दर्शाता है।

संदर्भ सूचि –

1. त्रिगुणायत, जगदीश, मुण्डारी लोककथा, अधीक्षक सचिवालय शाखा बिहार रांची, 1963
2. मुण्डारी लोकगीत, ऐसे गीत जो लिखित नहीं है लेकिन अखड़ा में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होते है।
3. मुण्ड़ा, डॉ. रामदयाल, झारखंड जनजातीय कल्याण शोध संसाधन आनायुम दुरांग रांची, 2010

lekhanprakashmunda@gmail.com

+919263336288

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 117-119

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध

डॉ. के. माधवी

एसोसिएट प्रोफेसर, मंच कला विभाग

वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

सारांश :

भारत और नेपाल के मध्य संबंध बहुआयामी एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों के बीच भौगोलिक निकटता के साथ–साथ सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर गहरा संबंध विद्यमान है। प्राचीन काल से ही दोनों राष्ट्रों के बीच जन–से–जन संपर्क, सांस्कृतिक आदान–प्रदान तथा धार्मिक सहभागिता निरंतर बनी रही है। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार नेपाल में विभिन्न कालखंडों में अनेक राजवंशों का शासन स्थापित हुआ। सोलहवीं शताब्दी के दौरान गोरखा राज्य के उदय के साथ नेपाल के राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। नेपाल के शासकों एवं भारतीय राजवंशों के मध्य भी घनिष्ठ संबंध विद्यमान रहे, जिनका उल्लेख विभिन्न ऐतिहासिक अभिलेखों तथा साहित्यिक स्रोतों में मिलता है।

भारत और नेपाल के संबंधों की जड़ें पौराणिक परंपराओं में भी निहित हैं। हिन्दू धर्मग्रंथों, विशेषकर रामायण के अनुसार, अयोध्या के राजा भगवान श्रीराम का विवाह मिथिला (जनकपुर) की राजकुमारी सीता से हुआ था। वर्तमान में जनकपुर नेपाल में स्थित है, जिसके कारण दोनों देशों के बीच धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को विशेष महत्व प्राप्त होता है। नेपाल लंबे समय तक विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र रहा। वर्ष 2008 में नेपाल को औपचारिक रूप से एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया। इसके बावजूद नेपाल और भारत के बीच धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत तथा पौराणिक परंपराओं पर आधारित संबंध आज भी सुदृढ़ रूप में विद्यमान हैं।

मुख्य शब्द : भारत–नेपाल संबंध, सैन्य सहयोग, द्विपक्षीय संबंध, नेपाली सेना, भारतीय सेना, रक्षा सहायता, सूर्य किरण अभ्यास, गोरखा रेजिमेंट, सामरिक सहयोग, सुरक्षा साझेदारी।

प्रस्तावना :

भौगोलिक एवं सामरिक परिप्रेक्ष्य :

नेपाल दक्षिण एशिया का एक स्थलरुद्ध (Landlocked) राष्ट्र है, जो भौगोलिक रूप से तीन ओर से भारत तथा उत्तर में चीन से घिरा हुआ है। भारत और नेपाल के मध्य लगभग 1,850 किलोमीटर लंबी खुली अंतरराष्ट्रीय सीमा विद्यमान है, जो भारतीय राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा सिक्किम से जुड़ी हुई है। उत्तर दिशा में नेपाल की सीमा चीन से मिलती है।

नेपाल की भौगोलिक स्थिति दोनों देशों के संबंधों को विशेष महत्व प्रदान करती है। हिमालयी क्षेत्र से

निकलने वाली अनेक नदियाँ नेपाल से होकर भारत में प्रवाहित होती हैं, जिससे जल संसाधनों, कृषि तथा ऊर्जा के क्षेत्र में परस्पर सहयोग की व्यापक संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं। इसके अतिरिक्त, नेपाल और भारत बौद्ध तथा हिंदू धार्मिक परंपराओं के महत्वपूर्ण केंद्र रहे हैं। भगवान बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में हुआ था, जबकि उनके उपदेशों और धर्म का व्यापक प्रसार भारत में हुआ। इस प्रकार दोनों देशों के मध्य ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत संबंध अत्यंत गहरे और प्राचीन हैं।

भारत के लिए नेपाल का महत्व :

यद्यपि नेपाल भौगोलिक दृष्टि से अपेक्षाकृत छोटा राष्ट्र है, तथापि भारत की विदेश नीति एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में उसका महत्व अत्यधिक है। नेपाल भारत और चीन के मध्य स्थित एक महत्वपूर्ण हिमालयी राष्ट्र है, जो भारत की उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामरिक दृष्टि से नेपाल भारत के लिए एक 'बफर स्टेट' (Buffer State) के रूप में कार्य करता है। भारत की सुरक्षा एवं क्षेत्रीय स्थिरता के लिए नेपाल के साथ सौहार्दपूर्ण और सहयोगात्मक संबंध बनाए रखना आवश्यक माना जाता है। इसके अतिरिक्त, नेपाल की राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक प्रगति तथा सुरक्षा व्यवस्था का प्रत्यक्ष प्रभाव भारत के हितों पर पड़ता है। इसलिए भारत अपनी पड़ोसी नीति के अंतर्गत नेपाल के साथ मैत्रीपूर्ण, संतुलित एवं दीर्घकालिक संबंधों को सुदृढ़ बनाए रखने का निरंतर प्रयास करता रहा है।

भारत–नेपाल संबंधों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक आयाम :

भारत और नेपाल के मध्य संबंध केवल भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दोनों देशों के बीच गहरे सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संबंध भी विद्यमान हैं। नेपाल, भारत के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ोसी राष्ट्र है। दोनों देशों के मध्य खुली सीमा व्यवस्था विद्यमान है, जिसके कारण लोगों का आवागमन सरल एवं निर्बाध रूप से होता है। यह व्यवस्था न केवल पारस्परिक संपर्क को सुदृढ़ करती है, बल्कि दोनों देशों के मध्य आर्थिक एवं सामाजिक संबंधों को भी प्रोत्साहित करती है।

नेपाली समाज में भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का व्यापक प्रभाव परिलक्षित होता है। धार्मिक, भाषाई एवं सांस्कृतिक समानताओं के कारण दोनों देशों के नागरिकों के मध्य घनिष्ठता एवं आत्मीयता का भाव विकसित हुआ है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा, व्यापार, पर्यटन तथा अन्य सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच सहयोग एवं सहभागिता निरंतर बढ़ रही है।

भारत और नेपाल के संबंधों को संस्थागत आधार प्रदान करने में भारत–नेपाल शांति एवं मैत्री संधि, 1950 का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस संधि के अंतर्गत दोनों देशों के नागरिकों को एक–दूसरे के देश में बिना पासपोर्ट एवं वीजा के प्रवेश करने, निवास करने तथा रोजगार प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की गई है। साथ ही, नेपाल के नागरिकों को भारत में संपत्ति अर्जित करने तथा भारतीय नागरिकों के समान आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर उपलब्ध हैं।

यह संधि दोनों देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों को सुदृढ़ बनाने तथा द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिणामस्वरूप, भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक आधारों पर निरंतर सशक्त एवं प्रगाढ़ बने हुए हैं।

सैन्य सहयोग : भारत-नेपाल संबंधों का एक महत्वपूर्ण आयाम :

भारत और नेपाल के मध्य सैन्य सहयोग द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण तथा सुदृढ़ आधार है। भारत नेपाली सेना को विभिन्न प्रकार की सैन्य सहायता प्रदान करता है, जिसमें प्रशिक्षण, आधुनिक सैन्य उपकरणों की आपूर्ति तथा क्षमता निर्माण शामिल हैं। भारतीय सेना समय–समय पर नेपाली सेना के अधिकारियों एवं जवानों को विशेष प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है, जिससे दोनों देशों की सैन्य दक्षता और सामरिक समन्वय में वृद्धि होती है।

वर्ष 1950 में संपन्न भारत–नेपाल शांति और मैत्री संधि के अंतर्गत नेपाल को भारत से सैन्य सामग्री एवं हथियार प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, दोनों देशों की सेनाएँ नियमित रूप से संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित करती हैं। विशेष रूप से सूर्य किरण सैन्य अभ्यास भारत और नेपाल के बीच आयोजित होने वाला प्रमुख द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास है, जिसका उद्देश्य आतंकवाद–रोधी अभियानों, आपदा प्रबंधन तथा सामरिक सहयोग को सुदृढ़ बनाना है। भारत और नेपाल के सैन्य संबंधों का एक विशिष्ट पहलू भारतीय सेना की गोरखा रेजिमेंट में नेपाली नागरिकों की भर्ती है। यह परंपरा दोनों देशों के मध्य ऐतिहासिक विश्वास, सांस्कृतिक निकटता तथा सैन्य सहयोग का प्रतीक मानी जाती है। इसके अतिरिक्त, भारत और नेपाल की सेनाओं के प्रमुखों को एक–दूसरे की सेना में मानद जनरल (Honorary General) की उपाधि प्रदान करने की परंपरा भी द्विपक्षीय सैन्य संबंधों की गहराई को दर्शाती है।

निष्कर्ष :

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक भारत और नेपाल के संबंध केवल भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं रहे हैं, बल्कि वे साझा सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक आस्थाओं, ऐतिहासिक परंपराओं तथा पौराणिक मान्यताओं पर आधारित रहे हैं। यही कारण है कि दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण एवं सहयोगात्मक संबंध आज भी निरंतर सुदृढ़ बने हुए हैं। भारत और नेपाल के संबंध केवल भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे साझा इतिहास, संस्कृति, धर्म, आर्थिक सहयोग तथा सामरिक हितों पर आधारित हैं। नेपाल की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और दोनों देशों के बीच विद्यमान ऐतिहासिक संबंध इसे भारत का एक महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय पड़ोसी राष्ट्र बनाते हैं। अतः दोनों देशों के मध्य सहयोग, विश्वास और पारस्परिक सम्मान पर आधारित संबंधों का निरंतर विकास क्षेत्रीय शांति एवं समृद्धि के लिए आवश्यक है। भारत–नेपाल सैन्य सहयोग केवल सुरक्षा संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दोनों देशों के मध्य पारस्परिक विश्वास, रणनीतिक साझेदारी तथा क्षेत्रीय स्थिरता को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रशिक्षण, संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा सहायता तथा गोरखा परंपरा जैसे आयाम इस सहयोग को और अधिक मजबूत बनाते हैं, जिससे दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण संबंध निरंतर प्रगाढ़ होते हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. भारत–नेपाल संबंध | PDF https://share.google/Xn1Y6ryr6dcbF7Qj0

madhavinatyam@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 120-123

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध विभिन्न पहलुओं

डॉ. बी. मल्लिका
एम.ए., पी.जी.डी.टी., पीएच.डी.,
अतिथि शिक्षिका, हिंदी विभाग,
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्व विद्यालय), गांधीग्राम, तमिलनाडु।

बीज शब्द :– ऐतिहासिक संबंध, धार्मिक महत्व, सांस्कृतिक प्रभाव, पर्यटन और तीर्थयात्रा, दार्शनिक और शैक्षिक संबंध।

प्रस्तावना :–

भारत वैश्विक स्तर पर कई चीजों में अग्रणी है, जिनमें बौद्ध धर्म और उससे संबंधित वे स्थान शामिल हैं जो भारत में फले–फूले हैं। भले ही आज बौद्ध धर्म का पालन करने वाले लोगों की संख्या कम हो, लेकिन इसकी महिमा कभी कम नहीं होगी। मेरे इस लेख के माध्यम से आप बौद्ध धर्म से संबंधित भारत और नेपाल के बीच विभिन्न संबंधों को देख सकते हैं। हालांकि भारत और नेपाल दोनों ही बौद्ध धर्म का पालन करते हैं, लेकिन इसके कई लाभ हैं, जिनमें ऐतिहासिक धर्म और संस्कृति, तीर्थयात्रा और शैक्षिक मामले जैसे विषय शामिल हैं। बौद्ध धर्म दोनों देशों के बीच साझा संबंध को सुदृढ़ करता है और बुद्ध की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाए रखता है। भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक, पर्यटन और तीर्थयात्रा कई पहलुओं में गहरा है, जिसका सबसे प्रमुख आधार भगवान गौतम बुद्ध हैं। भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध विभिन्न पहलुओं हैं। भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म का संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और पर्यटन' इन सभी पहलुओं से गहरा जुड़ा हुआ है। प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं :

1. **ऐतिहासिक संबंध :–**

प्राचीन संबंध : 249 ईसा पूर्व में सम्राट अशोक ने बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा की थी, जो प्राचीन सीमा–पार संबंधों को दर्शाता है। उन्होंने लुंबिनी में एक स्तंभ भी स्थापित किया था।

लुंबिनी नेपाल जन्म स्थान : यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, भगवान बुद्ध का जन्म यहीं हुआ था। यह स्थल भारत–नेपाल सभ्यतागत एकता का प्रतीक है। भारत में बौद्ध धर्म कई वर्षों से विद्यमान है। प्राचीन शिलालेखों के अनुसार, सम्राट अशोक ने अपने पुत्र और पुत्री को विश्वभर में बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए भेजा था। इतिहास में हमें सामराज अशोक द्वारा जनता और समाज के लिए किए गए अनेक लाभों के बारे में जानकारी मिलती है। विश्वभर से लोग इन स्थलों और शिलालेखों का दौरा करके इनके बारे में सीखते हैं।

बोधगया भारत (बिहार) ज्ञान स्थली : यहाँ पीपल के वृक्ष (बोधिवृक्ष) के नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति

हुई।

सारनाथ भारत (उत्तर प्रदेश) प्रथम उपदेश स्थल : बुद्ध ने अपना पहला उपदेश (धर्मचक्र प्रवर्तन) यहीं दिया था।

कुशीनगर भारत (उत्तर प्रदेश) महापरिनिर्वाण स्थल : यह वह स्थान है जहाँ बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था।

भारत और नेपाल के बीच बौद्ध धर्म से जुड़े संबंध अत्यंत प्राचीन, गहरे और बहुआयामी हैं। यह संबंध केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साझा सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और रणनीतिक साझेदारी का एक जीवंत उदाहरण है। **जन्मस्थली की कड़ी :** दोनों देशों को गौतम बुद्ध से जोड़ने वाली सबसे बड़ी कड़ी यह है कि नेपाल में लुंबिनी उनका जन्मस्थान है और भारत में बोधगया (बिहार) वह स्थान है जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई।

2. धार्मिक महत्व :–

नेपाल और भारत दोनों बौद्ध श्रद्धालुओं के लिए पवित्र भूमि हैं। बौद्ध धर्म दोनों देशों के बीच साझा संबंध को सुदृढ़ करता है और बुद्ध की शिक्षाओं को लोकप्रिय बनाए रखता है। नेपाल में लुंबिनी तथा भारत में बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर प्रमुख तीर्थस्थल हैं। दोनों देशों के बौद्ध समुदाय धार्मिक यात्राओं और उत्सवों के माध्यम से जुड़े रहते हैं।

भारत में मूर्तिकला एव स्थापत्य के विकास में बुद्ध धर्म का योगदान महत्वपूर्ण है। उनके चौत्यगृह, बिहार, स्तूप, मूर्तियाँ भव्य हैं एवं कलात्मकता से भरपूर पूर हैं। हैं। इनमें नई सर्जनाएँ प्रस्तुत प्रस्तुत की गई है। विशेषतः प्रारम्भिक बौद्ध कला देवप्रेरित नहीं वरन् सामान्य जनों की जीवन शैली एवं रूपों को प्रकट करती है। इसका लोकपक्ष प्रबल है। भरहुत की कला इस पक्ष की साक्षी है, जिसमें जनसामान्य वर्ग को भी अंकित किया गया है जैसे, श्रेष्ठी, धनिक, आखटक, रथकार, सारथी, अश्वारोही, रूपकार या मूर्तिकार, तीर बनाने वाले इषुकार, सुई बनाने वाला लोहार, आरामक आदि के साथ अमात्य, श्रमण, परिव्राजक, अंतेवासी आदि के अंकन तत्कालीन समाज की एक सम्पूर्ण छवि प्रस्तुत करते है। अंकन सांची, अमरावती तथा अजंता की कला पर्यन्त प्रचलित रहे कला का यह लोकपक्ष बौद्ध कला की अप्रतिम देन है। डॉ. अंबेडकर ने अस्पृश्यता को समाप्त करने के लिए लाखों लोगों को बोत्ताधरन में परिवर्तित किया। यद्यपि बौद्ध धर्म का विकास भारत में हुआ, लेकिन वैश्विक स्तर पर यह नेपाल और भारत के लिए एक महान धर्म है। बौद्ध धर्म दोनों देशों के लोगों के बीच एक सेतु का काम करता है, जिससे शांति और सद्भावना को बढ़ावा मिलता है। हिंदू भी बौद्ध धर्म को अपनाते हैं।

3. सांस्कृतिक प्रभाव :–

साझी सभ्यता : दोनों देशों की विरासत बौद्ध स्तूपों, मठों और कलाओं में देखी जा सकती है, जो संयुक्त रूप से विकसित हुई हैं। यह भावनात्मक और पारिवारिक जुड़ाव (रोटी–बेटी का रिश्ता) पर भी आधारित है। बौद्ध धर्म ने दोनों देशों की कला, वास्तुकला, साहित्य और दर्शन को प्रभावित किया है। नेपाल के स्तूप और विहार तथा भारत के प्राचीन बौद्ध स्मारक साझा सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। स्वयम्भूनाथ स्तूप और बौद्धनाथ स्तूप नेपाल की प्रसिद्ध बौद्ध धरोहरें हैं।[1] **सांस्कृतिक कूटनीति :** बौद्ध विरासत को बढ़ावा देना दोनों देशों के बीच एक मजबूत कूटनीतिक उपकरण है। इसी क्रम में लुंबिनी में 'भारत अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति और विरासत केंद्र' का

निर्माण किया जा रहा है।

4. पर्यटन और तीर्थयात्रा :–

बौद्ध संबंध इन तीर्थ स्थल में दुनिया भर में करोड़ लोगों के आध्यात्मिक पक्ष के रूप में जारी है। दोनों देश मिलकर 'सर्किट ऑफ फेथ' (आस्था का चक्र) बनाते हैं, जो बुद्ध के जीवन के चार प्रमुख स्थलों से जुड़ा है :

गौतम बुद्ध का जन्म लुंबिनी (वर्तमान नेपाल) में हुआ था। बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति बोधगया में हुई। पहला उपदेश सारनाथ में दिया गया। महापरिनिर्वाण कुशीनगर में हुआ। इस प्रकार बुद्ध के जीवन से जुड़े प्रमुख स्थल भारत और नेपाल दोनों में स्थित हैं। भारत और नेपाल मिलकर 'बौद्ध सर्किट' के महत्वपूर्ण भाग हैं। दुनिया भर से आने वाले बौद्ध तीर्थयात्री दोनों देशों के पवित्र स्थलों का भ्रमण करते हैं। इससे धार्मिक पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। दोनों देश बौद्ध विरासत के संरक्षण और प्रचार के लिए सहयोग करते हैं। बौद्ध स्थलों के विकास, शोध और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में संयुक्त प्रयास किए जाते हैं। **बौद्ध पर्यटन :** 'रेट्रेस बुद्धाज फुटस्टेप्स टूर' (बुद्ध के पदचिन्हों पर यात्रा) पर्यटकों को भारत और नेपाल में स्थित प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा कराता है। सरल यात्रा के लिए बौद्ध सर्किट विकसित करने और एकीकृत जांच चौकियों के निर्माण जैसे प्रयास भी किए जा रहे हैं। नेपाल अकेले ही दुनिया भर से बड़ी संख्या में लोगों को भारत में स्थित पवित्र स्थलों के दर्शन के लिए आकर्षित करता है। इससे देश की विदेशी मुद्रा में वृद्धि होती है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत विश्व में शांति का एक अनुकरणीय उदाहरण और स्थान है।

5. दार्शनिक और शैक्षिक संबंध :–

भारत बौद्ध दर्शन की उत्पत्ति–भूमि है, जबकि नेपाल बुद्ध की जन्मभूमि है। दोनों देशों के विश्वविद्यालय, मठ और शोध संस्थान बौद्ध अध्ययन को बढ़ावा देते हैं। अंतरराष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलनों और शोध कार्यक्रमों में दोनों देशों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। बौद्ध धर्म एवं बुद्ध प्रेरणा स्त्रोत के रूप में कालजयी है। इनके विचार एवं दर्शन का एक प्रशस्त इतिहास है। आज के बदलते हुए समाज में द्वन्द्व, ग्लोबलाइजेशन, परिवर्तशील स्वाभाविक संरचनाओं एवं नये मूल्यों की सार्थकता के द्वन्द्व में बुद्ध एवं उनके धर्म की अतीव सार्थकता है। मौर्य साम्राज्य के तीसरे बहुत संगीत में लिए गए निर्णयों के बाद बौद्ध भिक्षु तमिल क्षेत्र में आते–जाते रहे। कालभ्र (तीसरी – छठी शताब्दी ई.) और पल्लव (चौथी – नौवी शताब्दी ई.) काल में बहुत प्रभाव उत्तर में कांचीपुरम तक बन रहा। मणीमेखलै और शिलापतिकारम में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। अंतिम संगम संग्रह ग्रंथों में मिलता है। दुनिया भर के छात्रों नालंदा यूनिवर्सिटी और बहुत पढ़ाई–लिखाई के लिए भारत और नेपाल में जाते हैं। बौद्ध धर्म का पालन विश्वभर में कई लोग करते हैं, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो मठवासी जीवन जीना चाहते हैं और उनके जीवन की कहानी और शिक्षाओं का अनुसरण करना चाहते हैं। एक दूसरे से सीखने के लिए भारत से नेपाल और नेपाल से भारत के बीच लोगों का आदान–प्रदान जारी है।

निष्कर्ष :–

भारत और नेपाल बौद्ध धर्म के दो सबसे महत्वपूर्ण केंद्र हैं। नेपाल बुद्ध की जन्मभूमि है, जबकि भारत बुद्ध के ज्ञान, उपदेश और महापरिनिर्वाण से जुड़ी भूमि है। इसलिए दोनों देशों का बौद्ध धर्म से संबंध परस्पर पूरक और अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और

राजनीतिक कई पहलुओं में गहरा है, जिसका सबसे प्रमुख आधार भगवान गौतम बुद्ध हैं। भारत–नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंधित पहलू इतिहास, संस्कृति और आधुनिक राजनीति का एक सुंदर संगम हैं। लुंबिनी में भारत द्वारा बनाया जा रहा सांस्कृतिक केंद्र इस साझा धरोहर को संरक्षित और बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह संबंध दोनों देशों को करीब लाने का काम करता है और क्षेत्र में शांति एवं सद्भावना को बढ़ावा देता है। नदी अनेक स्थानों से बहती हुई समुद्र में विलीन हो जाती है, ठीक उसी प्रकार भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंधित पवित्र स्थल और शिक्षाएं लोगों के मन में विलीन हो जाती हैं। बौद्ध धर्म की बात करें तो, भारत के बिना नेपाल का कोई अस्तित्व नहीं है और नेपाल के बिना भारत का कोई अस्तित्व नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दोनों देशों के बीच एक सेतु का काम करता है, इसलिए हमें इसका सम्मान और संरक्षण करना चाहिए। दोनों देशों के बीच संबंध सर्वोत्तम रूप से कार्य करने चाहिए।

Reference Books :-

1. बुद्ध विचारधारा के विविध आयाम – डॉ. पुष्पा यादव – पूजा प्रेस – कानपुर।
2. बुद्ध विचारधारा की प्रासंगिकता – डॉ. ममता गंगवार – पूजा प्रेस – कानपुर।
3. बोद्ध दर्शन और हिन्दी नाटक – डॉ. भानुदास आगेड़कर – मधुर प्रिण्डर्स – कानपुर।
4. Times of India.
5. www.Hindi Samay.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 124-127

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत के संदर्भ में सार्क (SAARC) एवं बिम्सटेक (BIMSTEC) संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Manish Choudhary
ASSISTANT PROFESSOR (POLITICAL SCIENCE)
MATA JIJA BAI GOVT. GIRLS P.G. COLLEGE, INDORE (M.P.)

सारांश :

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की प्रक्रिया दो समानांतर संगठनों, दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (South Asian Association for Regional Cooperation) और बहु–क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation) के माध्यम से संचालित हो रही है। वर्ष 2014 के बाद सार्क की संस्थागत निष्क्रियता और बिम्सटेक के क्रमिक सुदृढ़ीकरण ने भारत और नेपाल की क्षेत्रीय कूटनीति को पुनर्परिभाषित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य सार्क संगठन के पुनरूद्धार में भारत और नेपाल की नीतिगत भूमिका, प्राथमिकताओं, योगदानों और सीमाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना तथा बिम्सटेक का सामान्य अध्ययन करना है। यह अध्ययन नव–क्षेत्रवाद और असिमित अंतर्निर्भरता के सैद्धांतिक ढाँचे पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों, आधिकारिक दस्तावेजों और संगठनात्मक रिपोर्टों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि नेपाल सार्क को 'संप्रभुसमानता' के मंच के रूप में देखता है, जबकि भारत बिम्सटेक को 'परिणाम–उन्मुख क्षेत्रवाद' के उपकरण के रूप में मानता है। शोध–पत्र भविष्य के लिए 'दोहरी–संगठन रणनीति' का सुझाव देता है, जिसमें सार्क को सामाजिक–सांस्कृतिक तथा बिम्सटेक को आर्थिक–रणनीतिक सहयोग के लिए प्रयुक्त किया जाए।

कुट शब्द : सार्क, बिम्सटेक, क्षेत्रीय एकीकरण, भारत–नेपाल संबंध, नेबरहुड फर्स्ट नीति, उप–क्षेत्रवाद, हिमालयी कूटनीति।

प्रस्तावना :

दक्षिण एशिया विश्व के सबसे कम एकीकृत क्षेत्रों में से एक है, जहाँ अंतर–क्षेत्रीय व्यापार कुल व्यापार का लगभग 5 प्रतिशत मात्र है। इस विखंडन को दूर करने के उद्देश्य से 1985 में सार्क की स्थापना की गई। सार्क का पूरा नाम दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन है, यह आठ दक्षिण एशियाई देशों का एक आर्थिक और राजनीतिक अंतर–सरकारी संगठन है, जिसकी स्थापना 8 दिसंबर, 1985 को ढाका, बांग्लादेश में हुई थी। सदस्य देश अफ़ग़ानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका है। आठ सदस्य

देशों वाले इस संगठन का सचिवालय काठमांडू में स्थित होने के कारण नेपाल को संस्थागत केंद्रीयता प्राप्त हुई तथापि, भारत–पाकिस्तान द्विपक्षीय तनाव के कारण 2014 के काठमांडू शिखर सम्मेलन के बाद सार्क की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गई। इसी पृष्ठभूमि में 1997 में स्थापित बिम्सटेक को भारत द्वारा 2016 के बाद सक्रिय रूप से पुनर्जीवित किया गया। बिम्सटेक में पाकिस्तान की अनुपस्थिति और दक्षिण–पूर्व एशिया से जुड़ाव ने इसे भारत की 'एक्ट ईस्ट' तथा 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति का प्रमुख वाहक बना दिया है। नेपाल बिम्सटेक में ऊर्जा, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन उप–क्षेत्र का अग्रणी देश है। इस प्रकार, भारत और नेपाल एक साथ दो भिन्न क्षेत्रीय तर्कों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सार्क का पुनरूद्धार :

सार्क को 'लो–पॉलिटिक्स' के मुद्दों तक सीमित किया जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति और गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्र जहाँ सर्वसम्मति संभव है सार्क के अधीन रखे जाना चाहिए। व्यापार, निवेश, ऊर्जा, कनेक्टिविटी, आतंकवाद–निरोध तथा सुरक्षा जैसे 'हाई–पॉलिटिक्स' के मुद्दों को बिम्सटेक के माध्यम से आगे बढ़ाया जाना चाहिए। भारत को बिम्सटेक में नेपाल को 'प्रथम पंक्ति के साझेदार' के रूप में स्थापित करना चाहिए। ऊर्जा और पर्यावरण समूह की स्थायी अध्यक्षता नेपाल को देने से उसकी संप्रभुता संबंधी चिंताएँ कम होंगी और भारत को एक विश्वसनीय साझेदार प्राप्त होगा। ब्योर्नहेट ने और फ्रेड्रिक सॉडरबाम के अनुसार, शीत युद्धोत्तर क्षेत्रवाद बहु–स्तरीय, बहु–हितधारक और स्वैच्छिक होता है। सार्क 'पुराने क्षेत्रवाद' का उदाहरण है, जो राज्य–केंद्रित, औपचारिक और सर्व सम्मति पर आधारित है। इस के विपरीत, बिम्सटेक 'नए क्षेत्रवाद' का प्रतिनिधित्व करता है, जो कार्यात्मक, लचीला और उप–क्षेत्रीय सहयोग पर बल देता है। रॉबर्ट कीओहेन और जोसेफनाई का सिद्धांत बताता है कि असमान आकार वाले देशों के बीच संस्थाएँ छोटे देशों के लिए 'संप्रभुताढाल' का कार्य करती हैं। नेपाल के लिए सार्क ऐसा ही एक मंच है, जहाँ वह भारत के साथ औपचारिक समानता के आधार पर संवाद कर सकता है।

भारत और नेपाल की सार्क में उपलब्धियाँ एवं गतिरोध :

सार्क सचिवालय की मेजबानी नेपाल की कूटनीतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाती है, जबकि भारत सार्क विकास कोष का सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA) समझौते पर 2004 में हस्ताक्षर हुए। भारत ने नेपाल को LDCds रूप में विशेष रियायतें प्रदान की है। सार्क विश्वविद्यालय, सार्क खाद्य बैंक और सार्क आपदा प्रबंधन केंद्र की स्थापना क्षेत्रीय सहयोग के उदाहरण हैं। भारत–पाकिस्तान संघर्ष के कारण 2016 का इस्लामाबाद शिखर सम्मेलन रद्द हो गया, जिसके बाद कोई शिखर सम्मेलन आयोजित नहीं हुआ। सर्वसम्मति का नियम किसी भी सदस्य को वीटो शक्ति प्रदान करता है, जिससे निर्णय–प्रक्रिया धीमी हो जाती है। सार्क मोटर वाहन समझौता और सार्क रेल समझौता आज तक लागू नहीं हो सके हैं। नेपाल ने अध्यक्ष के रूप में सार्क को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, परंतु भू–राजनीतिक बाधाओं के कारण उसे सीमित सफलता ही मिल सकी।

भारत-नेपाल का उभरता हुआ विकल्प बिम्सटेक :

बहु–क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक), (Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation) सात देशों का संगठन है, जिसमें बाग्लादेश, भूटान, भारत, म्यानमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलेंड शामिल है। वर्ष 2016 के गोवा बिम्सटेक

आउटरीच शिखर सम्मेलन के बाद भारत ने इस संगठन को स्पष्ट प्राथमिकता दी। 2022 में बिम्सटेक चार्टर को अपनाया गया, जिसने इसे औपचारिक अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व प्रदान किया। भारत कनेक्टिविटी, सुरक्षा और आपदा प्रबंधन उप–क्षेत्रों का नेतृत्व करता है। नेपाल ने 2018 में चौथे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। काठमांडू घोषणा–पत्र में ऊर्जा ग्रिड कनेक्टिविटी को प्राथमिकता दी गई। नेपाल को ऊर्जा, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन उप–क्षेत्र का अग्रणी देश बनाया गया है। यह 'लैंड–लॉक्ड से लैंड–लिंक्ड' बनने की उसकी राष्ट्रीय आकांक्षा के अनुरूप है। बिम्सटेक मास्टर प्लान फॉर ट्रांसपोर्ट कनेक्टिविटी (2018) में 267 परियोजनाओं की पहचान की गई है। बिम्सटेक ऊर्जा ग्रिड ने भारत–नेपाल–बांग्लादेश त्रिपक्षीय बिजली व्यापार का मार्ग प्रशस्त किया है। BBIN मोटर वाहन समझौता भूटान के बाहर रहने के बावजूद भारत, नेपाल और बांग्लादेश द्वारा द्विपक्षीय प्रोटोकॉल के माध्यम से लागू किया गया है।

तुलनात्मक अध्ययन :

सार्क और बिम्सटेक के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों संगठन भिन्न क्षेत्रीय तर्कों और रणनीतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सार्क, जहाँ एक ओर, औपचारिक संस्थागत ढाँचे और 'संप्रभुसमानता' के सिद्धांत पर आधारित है, वहीं बिम्सटेक कार्यात्मक सहयोग, लचीलापन और परिणाम–उन्मुख दृष्टिकोण को प्राथमिकता देता है। भारत के लिए सार्क एक सीमित उपयोगिता वाला मंच बन गया है, क्योंकि भारत–पाकिस्तान संबंधों के कारण इसकी प्रभावशीलता बाधित होती है। इसके विपरीत, बिम्सटेक भारत की क्षेत्रीय और वैश्विकरण नीतियों विशेषकर 'एक्ट ईस्ट' और 'नेबरहुड फर्स्ट' के साथ अधिक सामंजस्य रखता है। दूसरी ओर, नेपाल की रणनीति अधिक संतुलित और बहु–आयामी है। वह सार्क के माध्यम से अपनी कूटनीतिक स्वायत्तता और समानता को बनाए रखना चाहता है, जबकि बिम्सटेक के माध्यम से आर्थिक अवसरों और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाना चाहता है। सार्क संगठन भारत–पाकिस्तान द्वंद्व से प्रभावित है, जबकि बिम्सटेक में चीन और पाकिस्तान की अनुपस्थिति है। सार्क सर्वसम्मति पर आधारित है। बिम्सटेक कार्यात्मक सहयोग पर आधारित है। सार्क संप्रभु, समानता और सभी पड़ोसी देशों से संवाद का अवसर प्रदान करता है। बिम्सटेक व्यावहारिक कनेक्टिविटी और ऊर्जा व्यापार पर बल देता है। भारत के लिए सार्क दक्षिण एशियाई पहचान है। बिम्सटेक बंगाल की खाड़ी से जुड़ाव और 'एक्ट ईस्ट' नीति पर आधारित है। वर्तमान स्थिति में सार्क निष्क्रिय, परंतु औपचारिक रूप से जीवित है। जबकि बिम्सटेक सक्रिय, संस्थागत सुदृढ़ीकरण के साथ कार्यशील है।

उपसंहार :

सार्क और बिम्सटेक में भारत–नेपाल संबंध दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की जटिलता को दर्शाते हैं। सार्क नेपाल के लिए गरिमा का प्रश्न है, जबकि बिम्सटेक विकास का अवसर प्रस्तुत करता है। भारत के लिए सार्क अतीत की बाधाओं से जुड़ा हुआ है, जबकि बिम्सटेक भविष्य की क्षेत्रीय रणनीति का मार्ग प्रशस्त करता है। इन दोनों वास्तविकताओं को स्वीकार करके ही 'हिमालयी संगम' को संस्थागत स्थिरता प्रदान की जा सकती है। जब काठमांडू स्थित सार्क सचिवालय और बिम्सटेक की ऊर्जा ग्रिड एक साथ कार्य करेंगे, तभी क्षेत्रीय एकीकरण का सपना साकार हो सकेगा। विश्लेषण से स्पष्ट है, कि दोनों संगठनों की उपयोगिता भिन्न–भिन्न है। सार्क 'आदर्शवादी क्षेत्रवाद' का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बिम्सटेक 'व्यावहारिक उप–क्षेत्रवाद' का प्रतिनिधित्व करता है। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है, कि भारत और नेपाल को 'या तो सार्क या बिम्सटेक'

जैसे द्विभाजन से बचना चाहिए। इसके स्थान पर एक पूरक 'दोहरी–संगठन रणनीति' अपनाई जानी चाहिए।

संदर्भ सूची :

1. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार वार्षिक रिपोर्ट 2022–23 नई दिल्ली।
2. BIMSTEC Secretariat. (2022) BIMSTEC Charter ढाका।
3. SAARC Secretariat. (2020) SAARC Charterand Its Protocols काठमांडू।
4. Soderbaum F. (2016). Rethinking Regionalism. Palgrave Macmillan.
5. Keohane, R., & Nye, J. (2011). Power and Interdependence. Longman.
6. EPG on Nepal–India Relations. (2018). Final Report काठमांडू।
7. Murari R. (2021) – India's Neighbourhood First Policy the BIMSTEC Gambit. ORF Occasional Paper.
8. Adhikari, P. (2020). Nepal in SAARC and BIMSTEC : A Quest for Balance- Journal of International Affairs Vol. 3, No. 1.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 128-131

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

चक्रीय अर्थव्यवस्था

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप
प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)
शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जॉजगीर।

सारांश :

चक्रीय अर्थव्यवस्था वह आर्थिक प्रणाली है जो पुनः उपयोग, मरम्मत, साझा–करण, नवीनीकरण पुनःनिर्माण और पुनचर्क्रण पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसका उद्देश्य कचरे को कम करना और पुनः उपयोग को प्रोत्साहन देना है। यह प्रणाली प्रदूषण, अपशिष्ट और कार्बन उत्सर्जन को भी कम करती है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था का उद्देश्य तीन मूलभूत सिद्धांतो – कम करना, पुनः उपयोग करना, पुनचर्क्रण करना को लागू करके उपलब्ध, भौतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है। उत्पादों के जीवन चक्र में वषद्धि की जाती है समय के साथ अधिक कुशल और टिकाऊ उत्पादन मॉडल स्थापित होता है।

आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाकर भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखता है। एक ऐसा टिकाऊ ढांचा प्रदान करना है जहॉ उत्पाद का जीवनकाल समाप्त होने के बाद भी उसका मूल्य बना रहता है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं का पुनः उपयोग, पुनः निर्माण और पुनःचर्क्रण कर कच्चे माल के रूप में परिवर्तित किया जाता है, वस्तु को यथासंभव लम्बी अवधि तक उपयोग में लाना, अंतिम लक्ष्य अपशिष्ट उत्पादन को कम करके सामग्रियों या वस्तुओं को उनके उच्चतम मूल्य पर रखकर पर्यावरणीय और सामाजिक आर्थिक प्रभावों को कम करना हैं।

6R – चक्रीय अर्थव्यवस्था के संसाधनों का न्यूनतम उपयोग (Reduce), पुनः उपयोग (Re-use), पुनचर्क्रण (Recycle), नवीनीकरण (Refurbishment), पुनर्प्राप्ति (Recover), मरम्मत (Repairing)

सतत् संधारणीय जीवनशैली अपनाना महत्वपूर्ण है। हरित रोजगार और आर्थिक अवसर से आर्थिक विकास में वृद्धि होगी।

चक्रीय अर्थव्यवस्था में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने की क्षमता है। एक अध्ययन के अनुसार एक चक्रीय अर्थव्यवस्था विकास पथ वर्तमान स्तरों के सापेक्ष वर्ष 2030 तक कार्बन डाई ऑक्साईड उत्सर्जन को आधा कर सकता है।

मुख्य शब्द – चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत, लाभ, चुनौतियॉ, चक्रीय अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए प्रयास, चक्रीय अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता।

अध्ययन का उद्देश्य – 1. चक्रीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन करना।
2. भारत के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि – **द्वितीयक समंको पर आधारित।**

प्रस्तावना –

चक्रीय अर्थव्यवस्था में एक ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था की अवधारणा पर काम किया जाता है जो टिकाउ हो और उसमें नवीन संसाधनों का प्रयोग न्यूनतम हो। द्वितीयक संसाधन अर्थात अनुपयोगी सामग्री का प्रयोग वस्तुओं के उत्पादन में किया जाता है। चक्रीय अर्थव्यवस्था में संसाधनों का इष्टतम प्रयोग किया जाता है।

इसके अंतर्गत उत्पादों के जीवन चक्र में तीन चरण सम्मिलित किए जाते है – निर्माण, उपयोग, निपटान (पुनः उपयोग) ऐसी अर्थव्यवस्था में कपड़े, स्क्रैप धातु और अप्रचलित इलेक्ट्रानिक्स जैसे सभी प्रकार के कचरे को अर्थव्यवस्था में वापस या अधिक कुशलता से उपयोग किया जाता है।

औद्योगिक प्रदूषण के बढ़ते प्रभाव के कारण चक्रीय अर्थव्यवस्था का महत्व बढ़ा है। चक्रीय अर्थव्यवस्था उत्पादन और उपभोग का वह मॉडल है जिसमें विद्यमान सामग्रियों और उत्पादों को यथासंभव लम्बे समय तक साझा करना, पट्टे पर देना, पुनः उपयोग करना, मरम्मत करना, नवीनीकरण करना अैर पुनचर्क्रण करना सम्मिलित है। प्रकृति से प्राप्त किसी संसाधन को लम्बे समय तक उपयोग में बनाए रखकर पर्यावरण पर पड़ने वाले दबाव को कम करना ही चक्रीय अर्थव्यवस्था का लक्ष्य है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत –

- **योजनाबद्ध ढंग से अपशिष्ट को बाहर करना** – उत्पाद पृथक करने तथा पुनः उपयोग के चक्र के लिए डिजाइन और अनुकूलित किए जाते है।
- **नकारात्मक बाध्यताओं को कम करना** – भूमि निम्नीकरण, जल प्रदूषण, CHC उत्सर्जन आदि के जोखिम और संभावित आर्थिक प्रभाव को रेखांकित करेगी और प्रणाली की दक्षता पर ध्यान केन्द्रित करेगी।
- **नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करना** – संसाधन निर्भरता को कम करने और प्रणाली के लचीलेपन में वृद्धि के लिए नवीकरणीय ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
- **उपभोग और टिकाऊ घटकों के मध्य अंतर करना** – टिकाऊ उत्पादों की उपयोग अवधि को अधिक करने और अधिक से अधिक जैव निम्नीकरण अवयवों को स्थानांतरित करने के माध्यम से अर्थव्यवस्था में अपशिष्ट निर्माण की मात्रा को कम करने का प्रयास किया जाता है।
- **उपभोक्ता को उपयोगकर्ता से प्रतिस्थापित करना** – वर्तमान खरीद और उपभोग अर्थव्यवस्था के बजाय टिकाऊ उत्पाद पट्टे पर दिए जाते है, किराए पर या साझा किया जाते है। यदि उनका विक्रय किया जाता है तो उनकी वापसी सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहन और समझौते भी विद्यमान होते है। तत्पश्चात् उत्पाद का पुनः उपयोग होता है।

चक्रीय अर्थव्यवस्था के लाभ –

कचरे को पुनर्चक्रित और पुनः उपयोग करके प्लास्टिक प्रदूषण को कम करता है। सीमित प्राकषतिक संसाधनों (खनिज, पानी, लकड़ी) के खनन की आवश्यकता कम हो जाती है क्योंकि उपलब्ध सामग्रियों का ही

पुनः उपयोग होता है। कच्ची सामग्री के निष्कर्षण और उत्पादन प्रक्रिया में कमी आने से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है। व्यवसायों को कच्चा माल खरीदनें पर कम खर्च करना पड़ता है। अर्थव्यवस्था में नवाचार के कारण नए उद्योगों और व्यवसायों का विकास होता है। संसाधनों की कमी और मूल्य अस्थिरता का जोखित कम होता है। स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते है।

चुनौतियाँ –

संसाधनों की मानवीय मॉग पृथ्वी की आपूर्ति क्षमता से अधिक हो जाएगी, जिससे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता हानि जैसी समस्याओं में वृद्धि हो जाएगी, फैशन इण्डस्ट्री को चक्रीय अर्थव्यवस्था को अपनाने हेतु बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। फैशन में वृद्धि होने से कपड़ों का जीवनकाल छोटा हो गया है। जिससे बड़े पैमाने पर कचरा और पर्यावरण को नुकसान हुआ है।

कपड़ा प्लास्टिक और निर्माण जैसे उच्च प्रभाव वाले क्षेत्र बाधाएं उत्पन्न करते है। अंतिम लक्ष्य के प्रति स्पष्ट दृष्टिकोण की कमी तथा नीतियों के वास्तविक क्रियान्वयन में अंतर है। जानकारी की कमी के कारण उद्योग चक्रीय अर्थव्यवस्था मॉडल को अपनाना नहीं चाहते।

चक्रीय अर्थव्यवस्था प्राप्त करने के लिए प्रयास –

राष्ट्रीय संसाधन दक्षता नीति (2019), स्टील स्क्रैप रीसाइकलिंग नीति, वाहन स्क्रैपिंग नीति मिशन लाईफ (2022) – जिम्मेदार मांग के प्रति व्यवहार को प्रोत्साहन, बदलती आवश्यकताओं के लिए बाजार की प्रतिक्रियाओं को सक्षम बनाना, सरकारी और औद्योगिक नीतियों को प्रभावित करना। प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2022, चक्रीय अर्थव्यवस्था पर वैश्विक गठबंधन (GACERE) अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2022 स्वच्छ भारत मिशन (शहरी और ग्रामीण), ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम 2026, एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध, स्वच्छता सर्वेक्षण।

सुझाव :

चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर होने के लिए नीतियों, बुनियादी ढांचों, निम्न कार्बन विकल्पों और प्रौद्योगिकियों मे व्यापक निवेश की आवश्यकता है। कार्यान्वयन रणनीतियों के साथ कानूनों का समन्वय आवश्यक है। सरकार को अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी संवर्द्धन में जनता की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन देने के लिए स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर अपशिष्ट पुनचर्क्रण के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए। जैविक कचरे के पुनःउपयोग के लिए शहरों में कम्पोस्ट केन्द्र स्थापित किया जाना चाहिए जिससे मृदा कार्बन की मात्रा में वृद्धि होगी तथा रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता समाप्त हो जायेगी।

भारत के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता –

विकास के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था पथ भारत के वर्तमान विकास पथ की तुलना में वर्ष 2050 में 624 बिलियन अमेरिकी डॉलर का वार्षिक लाभ प्रदान कर सकता है। यह लाभ भारत के वर्तमान GDP के 30% के बराबर होगा। चक्रीय अर्थव्यवस्था प्राकृतिक संसाधन उपयोग से आर्थिक विकास को पृथक करती है, यह भारत के लिए अच्छा संकेत है जो मूलभूत उपयोगिताओं में विभिन्न संसाधन बाधाओं का सामना कर रहा है। कम सामग्री के उपयोग से कच्चे माल की कीमतों से संबंधित अस्थिरता में भी कमी आएगी।

भारत के अगले एक दशक में सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश के रूप में चीन से आगे निकलने की राह पर होने के कारण इसका अपशिष्ट सृजन भी बढ़ जाएगा। इस प्रकार चक्रीय अर्थव्यवस्था बढ़े हुए अपशिष्ट के

नियंत्रण मे सहायता करेगी।

चक्रीय अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को लागू करने से व्यवसाय के नए विचार उत्पन्न कर सकते है और कार्य करने के नए तरीकों की खोज कर सकते है।

पुनचर्क्रण और बॉयोमीथेनाईजेशन जैसी चक्रीय गतिविधियॉ 1 करोड़ से अधिक मानव दिवस रोजगार उत्पन्न कर सकती है।

निष्कर्ष –

नीति आयोग की रिपोर्ट सामूहिक रूप से इस बात पर बल देती है कि भारत का अपशिष्ट संकट अब केवल स्वच्छता से संबंधित विषय नहीं रह गया है। यह संसाधन प्रबंधन, जलवायु, शहरी शासन तथा आर्थिक चुनौती का रूप भी ले चुका है। चक्रीय अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण को अपनाकर शेष अपशिष्ट को पर्यावरणीय दायित्व से रूपांतरित कर सतत् विकास, हरित रोजगार तथा जलवायु सहनशीलता का प्रेरक तत्व बनाया जा सकता है जिससे भारत का विकास पथ उसके सतत् विकास लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धताओं के अनुरूप संरेखित होता है।

संदर्भ :

From Internet -

- चक्रीय अर्थव्यवस्था – एक अनुकरणीय विचार।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था का तात्पर्य क्या है?
- चक्रीय अर्थव्यवस्था और पर्यावरण।
- स्थायी विकास प्रणाली के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था की अवधारणा।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था – विकिपीडिया।
- भारत का चक्रीय अर्थव्यवस्था में नेतृत्व – 3R सिद्धांत पर जोर।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था में हो रहे परिवर्तन।
- चक्रीय अर्थव्यवस्था प्रौद्योगिकियॉ।
- विश्व चक्रीय अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

Mob.No. – 9584895167

Email – kashyapmanju6@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 132-135

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल और भारत में मनाए जाने वाले साझा त्योहार : एक सांस्कृतिक अध्ययन

प्रो. मनोहर सिंह मेवाडा
सहायक प्राध्यापक (विधि)
शासकीय विधि महाविद्यालय, शाजापुर, म. प्र.।

शोध सार :

भारत और नेपाल भौगोलिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत निकट संबंध रखने वाले राष्ट्र हैं। दोनों देशों की खुली सीमा, सामाजिक परंपराएँ तथा धार्मिक आस्थाएँ इनके सांस्कृतिक जीवन को एक–दूसरे से जोड़ती हैं। भारत और नेपाल में अनेक ऐसे त्योहार मनाए जाते हैं जो दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक हैं। दशहरा, दीपावली, तीज, होली, बुद्ध पूर्णिमा, छठ तथा मकर संक्रांति जैसे पर्व दोनों देशों में समान श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से धार्मिक आस्था, सामाजिक समरसता, पारिवारिक संबंध और सांस्कृतिक एकता का विकास होता है। प्रस्तुत शोध आलेख में भारत और नेपाल में मनाए जाने वाले प्रमुख साझा त्योहारों का सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि ये पर्व भारत–नेपाल संबंधों को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कुंजी शब्द – भारत, नेपाल, साझा संस्कृति, त्योहार, तीज, दशहरा, दीपावली, सांस्कृतिक संबंध, धार्मिक परंपरा, सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना –

भारत और नेपाल के संबंध केवल राजनीतिक या भौगोलिक नहीं हैं, बल्कि दोनों देशों की सांस्कृतिक आत्मा भी एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई है। हिमालय की गोद में बसे नेपाल और भारत के बीच सदियों से धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आदान–प्रदान होता रहा है। दोनों देशों के लोगों की भाषा, वेशभूषा, खान–पान, रीति–रिवाज और त्योहारों में व्यापक समानता दिखाई देती है।त्योहार किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान होते हैं। वे समाज को जोड़ने, परंपराओं को संरक्षित करने और सामूहिक चेतना को मजबूत करने का कार्य करते हैं। भारत और नेपाल में अनेक त्योहार समान रूप से मनाए जाते हैं, जो दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं।

भारत और नेपाल की सांस्कृतिक समानता –

भारत और नेपाल दोनों ही मुख्यतः हिंदू एवं बौद्ध संस्कृति से प्रभावित देश हैं। नेपाल विश्व का एकमात्र

हिंदू राष्ट्र रहा है और वहाँ की धार्मिक परंपराएँ भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित हैं। भगवान पशुपतिनाथ, जनकपुर, लुंबिनी तथा काशी जैसे धार्मिक केंद्र दोनों देशों की सांस्कृतिक एकता को दर्शाते हैं। नेपाल में नेपाली और मैथिली भाषाओं का व्यापक प्रयोग होता है, जबकि भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड तथा सिक्किम में भी नेपाली समुदाय निवास करता है। यही कारण है कि दोनों देशों के त्योहारों में अत्यधिक समानता दिखाई देती है।

प्रमुख साझा त्योहार –

1. दशहरा (दशैं)

नेपाल में दशहरा को "दशैं" कहा जाता है। यह नेपाल का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। भारत में भी दशहरा भगवान राम की रावण पर विजय के रूप में मनाया जाता है। नेपाल में देवी दुर्गा की पूजा विशेष रूप से की जाती है तथा परिवार के बड़े सदस्य छोटे सदस्यों को टीका और जमरा लगाकर आशीर्वाद देते हैं।

भारत और नेपाल दोनों में यह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। इस अवसर पर लोग नए वस्त्र पहनते हैं, घरों की सफाई करते हैं और सामाजिक मेल–मिलाप बढ़ता है।

2. दीपावली (तिहार)

भारत में दीपावली प्रकाश पर्व के रूप में मनाई जाती है, जबकि नेपाल में इसे "तिहार" कहा जाता है। नेपाल का तिहार पाँच दिनों तक मनाया जाता है, जिसमें कौवे, कुत्ते, गाय और लक्ष्मी की पूजा की जाती है। भाई–बहन के प्रेम का प्रतीक "भाई टीका" भी तिहार का महत्वपूर्ण भाग है।

भारत में दीपावली भगवान राम के अयोध्या आगमन की स्मृति में मनाई जाती है। दोनों देशों में दीप जलाना, घर सजाना और लक्ष्मी पूजा करना प्रमुख परंपराएँ हैं।

3. तीज –

तीज भारत और नेपाल दोनों देशों में महिलाओं का प्रमुख पर्व है। नेपाल में यह पर्व विशेष रूप से विवाहित महिलाओं द्वारा पति की लंबी आयु और सुख–समृद्धि के लिए मनाया जाता है। भारत के राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा मध्यप्रदेश में भी तीज का विशेष महत्व है।

इस पर्व में महिलाएँ व्रत रखती हैं, पारंपरिक गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं। तीज सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ करने का माध्यम भी है।

4. होली –

होली भारत और नेपाल दोनों में अत्यंत लोकप्रिय त्योहार है। यह रंगों और उल्लास का पर्व है। नेपाल के काठमांडू, पोखरा तथा तराई क्षेत्रों में होली बड़े उत्साह से मनाई जाती है। भारत में यह विशेष रूप से उत्तर भारत में प्रसिद्ध है। होली सामाजिक भेदभाव मिटाकर प्रेम और भाईचारे का संदेश देती है।

5. बुद्ध पूर्णिमा –

भगवान बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी में हुआ था। इसलिए बुद्ध पूर्णिमा नेपाल और भारत दोनों के लिए विशेष महत्व रखती है। भारत में बौद्ध धर्म से जुड़े स्थलों जैसे बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर में यह पर्व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।यह त्योहार शांति, अहिंसा और मानवता का संदेश देता है।

6. मकर संक्रांति और फसल पर्व –

भारत और नेपाल दोनों कृषि प्रधान देश हैं। इसलिए फसल से जुड़े त्योहारों का विशेष महत्व है। भारत में मकर संक्रांति, बिहू, पोंगल और बैसाखी जैसे पर्व मनाए जाते हैं, जबकि नेपाल में माघे संक्रांति मनाई जाती है। ये पर्व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और कृषि संस्कृति के महत्व को दर्शाते हैं।

7. महाशिवरात्रि –

महाशिवरात्रि भारत और नेपाल दोनों देशों में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाने वाला प्रमुख हिंदू पर्व है। यह त्योहार भगवान शिव की आराधना को समर्पित है। नेपाल में स्थित पशुपतिनाथ मंदिर महाशिवरात्रि का विश्व प्रसिद्ध केंद्र माना जाता है, जहाँ भारत सहित अनेक देशों से श्रद्धालु दर्शन हेतु पहुँचते हैं। इस अवसर पर मंदिरों में विशेष पूजा–अर्चना, रुद्राभिषेक, भजन–कीर्तन तथा रात्रि जागरण का आयोजन किया जाता है। भारत में काशी विश्वनाथ मंदिर, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग तथा अन्य शिवालयों में भक्तों की विशाल भीड़ उमड़ती है। दोनों देशों में यह पर्व आध्यात्मिक शुद्धि, संयम और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। महाशिवरात्रि भारत और नेपाल की साझा शैव परंपरा तथा सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ करती है।

त्योहारों का सामाजिक महत्व –

भारत और नेपाल के साझा त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक एकता के प्रतीक भी हैं। इन पर्वों के माध्यम से :–

- पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं।
- सामाजिक समरसता बढ़ती है।
- सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण होता है।
- दोनों देशों के बीच जनसंपर्क और सद्भाव बढ़ता है।
- नई पीढ़ी को सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा मिलती है।
- त्योहार लोगों को जाति, भाषा और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठाकर एकता का संदेश देते हैं।

भारत–नेपाल संबंधों में त्योहारों की भूमिका –

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा होने के कारण दोनों देशों के नागरिक एक–दूसरे के त्योहारों में सक्रिय भाग लेते हैं। जनकपुर, अयोध्या, पशुपतिनाथ और वाराणसी जैसे धार्मिक केंद्र सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत बनाते हैं।

तीज, तिहार और दशैं जैसे पर्व दोनों देशों के सांस्कृतिक कूटनीति के महत्वपूर्ण माध्यम बन चुके हैं। सांस्कृतिक आदान–प्रदान से दोनों देशों के संबंध अधिक घनिष्ठ होते हैं।

उपसंहार :

भारत और नेपाल के साझा त्योहार दोनों देशों की प्राचीन सांस्कृतिक एकता के जीवंत प्रतीक हैं। ये पर्व धार्मिक आस्था के साथ–साथ सामाजिक सद्भाव, पारिवारिक एकता और सांस्कृतिक संरक्षण का संदेश देते हैं। आधुनिक समय में वैश्वीकरण और पाश्चात्य प्रभावों के बावजूद भारत और नेपाल के लोग अपनी पारंपरिक संस्कृति और त्योहारों को संरक्षित किए हुए हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि साझा त्योहार भारत और नेपाल के बीच सांस्कृतिक पुल का कार्य करते हैं तथा दोनों देशों की मित्रता और भाईचारे को सुदृढ़ बनाते हैं।

संदर्भ सूची :-

1. Majupuria, Trilok Chandra and Gupta, S. P. — Nepal : The Land of Festivals – Religious, Cultural, Social and Historical Festivals. New Delhi : S. Chand Publication, 1981.
2. Jha, Hemant K. — Hindu-Buddhist Festivals of Nepal. New Delhi : Nirala Publications, 2019
3. drishtiias.com – "भारत वर्ष में नये साल के त्योहार।"
4. jagran.com – "भारत–नेपाल की साझी संस्कृति का प्रतीक तीज पर्व"।
5. chronicleindia.in – "पूर्वोत्तर भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख त्योहार"।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 136-137

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का साझा विकास – भारत और नेपाल के संदर्भ में

नवीन कुमार मिश्र
शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा,
नागपुरी विभाग (राँची विश्वविद्यालय), झारखण्ड, भारत।

प्रस्तावना –

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन चिकित्सा प्रणालियां है जिनका उद्देश्य केवल रोगों का उपचार नहीं बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य और जीवनशैली का विकास है। भारत और नेपाल सांस्कृतिक धार्मिक तथा भौगलिक रूप से घनिष्ट संबंध रखते है। दोनों देशो में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा की समृद्ध परम्परा रही है जिनसे जनस्वास्थ्य और पारंपरिक ज्ञान के सरंक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुख्य बिंदु – आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, भारत–नेपाल सम्बध, हिमालयी औषधीय वनस्पतियां, योग स्वास्थ्य पर्यटन, पारंपरिक ज्ञान, अनुसंधान एवं सहयोग, औषधीय पौधों का संरक्षण, समग्र स्वास्थ्य।

भारत और नेपाल में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का साझा विकास दोनों देशो के बीच सांस्कृतिक धार्मिक और भौगोलिक समानताओं के कारण आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का विकास साझा रूप से हुआ है। दोनों देशो के बीच आयुर्वेद का लंबे समय से उपयोग होता रहा है। पारंपरिक ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है। हिमालयी क्षेत्र में पाई जाने वाली अनेक औषधीय वनस्पतियो का उपयोग दोनों देशो में किया जाता है। दोनों देशो के बीच आयुर्वेदिक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों और प्रशिक्षण संस्थनों की स्थापना करना। छात्रों और शोधकर्त्ताओं के बीच ज्ञान का आदान प्रदान भारत नेपाल के बीच आयुर्वेदिक औषधियों और उपचार पद्धतियों पर संयुक्त रूप से शोध करना पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने के प्रयास योग, ध्यान और प्राकृतिक आहार को बढ़ावा।

दोनों देशो के सरकारों द्वारा आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के साझा विकास में योगदान –

भारत सरकार द्वारा आयुष मंत्रालय की स्थापना जिससे आयुर्वेद योग प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी होम्योपैथी के विकास को बढ़ावा मिल रहा है, राष्ट्रीय आयुष मिशन (एन.ए.एम) द्वारा आयुष सेवाओं और औषधीय पौधों के विकास को प्रोत्साहन मिल रहा है। भारत सरकार द्वारा अंतराष्ट्रीय योग दिवस तथा योग आधारित स्वास्थ्य कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। राष्ट्रीय औषधीय पादक बोर्ड के माध्यम से औषधीय पोधों की खेती और सरंक्षण को बढ़ावा मिल रहा है।

नेपाल सरकार द्वारा आयुर्वेदिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। आयुर्वेदिक अध्ययन और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन एवं हिमालयी औषधीय वनस्पतियों के संरक्षण और सतत उपयोग पर बल दिया जा रहा है सरकार द्वारा स्थानीय चिकित्सा पद्धतियों और पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण के प्रयास को बढ़ावा दिया जा रहा है।

भारत और नेपाल में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के साझा विकास में समस्याएं भी है इनमें वैज्ञानिक अनुसंधान की कमी जिससे संयुक्त शोध परियोजनाओं की साझा सीमित है। जड़ी बूटियों की बढ़ती मांग के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है कई दुर्लभ प्रजातियाँ विलुप्ति के खतरे में है। दोनों देशों में उत्पादन और परीक्षण के मानकों में अंतर हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के योग्य चिकित्सको की उपलब्धता सीमित है। वित्तीय संसाधनों की कमी प्रशासनिक और कानूनी प्रक्रियाएँ सहयोग मे कमी। स्थानीय समुदायों का पारंपरिक ज्ञान का धीरे–धीरे लुप्त होना। दस्तावेजीकरण और संरक्षण के प्रयास में पर्याप्त नही होना।

भारत और नेपाल में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के साझा विकास में समस्याओं का निदान में वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा देना, औषधीय पौधों का संरक्षण के साथ–साथ दुर्लभ जड़ी–बूटियों के संरक्षण के विशेष कार्यक्रम के साथ–साथ स्थानीय समुदायों को संरक्षण कार्यक्रम में शामिल करना। गुणवत्ता प्रमाणन प्रणाली को मजबूत बताना। आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के लाभो के बारे में जागरूकता अभियान चलाना/विद्यालय महाविद्यालयों समुदायों गांवो, पंचायतों में स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करना। दोनों सरकारों द्वारा पर्याप्त वजट के साथ–साथ निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी की बढ़ावा देना।

निष्कर्ष –

भारत और नेपाल में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का साझा विकास शिक्षा, अनुसंधान जड़ी–बुटियों के संरक्षण योग, स्वास्थ्य पर्यटन और सरकारी सहयोग के माध्यम से हो रहा है। यह सहयोग दोनों देशों के पारम्परिक चिकित्सा विरासत को सशक्त बनाने और जनस्वास्थ्य में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संदर्भ सूची –

1. चरक संहिता – आर्चाय चरक।
2. ayush.gov.in
3. World Health Organization की पारंपरिक चिकित्सा संबंधी रिपोर्ट।
4. Ancient Science of Life.
5. औषधीय पौधों और पारंपरिक चिकित्सा पर प्रकाशित शोध पत्र।

मो० – 9939653537

ई–मेल – nm50153@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 138-142

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

स्थल–रुद्ध नेपाल और समुद्री पहुँच : चीन के रणनीतिक विस्तार के परिप्रेक्ष्य में भारत की पारगमन कूटनीति

नेहा नाज

शोधार्थी, मुंगेर विश्वविद्यालय।

जर्नल श्रेणी : अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन शोध पत्र –दक्षिण एशियाई भू–राजनीति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।

शोध सार :

नेपाल की भौगोलिक स्थिति उसकी सबसे बड़ी विडम्बना है। हिमालय और गंगा के मैदानों के बीच बसा यह देश एक ऐसी भूमि–आबद्ध राष्ट्रीय इकाई है जिसकी किसी भी समुद्री तट तक सीधी पहुँच नहीं है। इतिहास ने इसे भारत पर पारगमन–निर्भरता की एक ऐसी स्थिति में रखा है जो कभी विकल्पहीन थी। किन्तु 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक से चीन ने बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से नेपाल में एक नई कूटनीतिक उपस्थिति दर्ज कराई है। इस उपस्थिति ने नेपाल को एक वैकल्पिक पारगमन मार्ग का प्रलोभन दिया है जो भले ही भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से अव्यावहारिक हो किन्तु रणनीतिक रूप से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह शोध पत्र इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि इस बदले हुए परिदृश्य में भारत की पारगमन कूटनीति को किस प्रकार पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। शोध में 1950 की शान्ति एवं मैत्री सन्धि से लेकर आज की एकीकृत सीमा चौकियों तक के विकास का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी परखा गया है कि हिमालयी भू–भाग की कठोर यथार्थता चीन के ट्रांस–हिमालयन ट्रांजिट के स्वप्न को किस प्रकार सीमित करती है। इस शोध का केन्द्रीय तर्क यह है कि भारत की भौगोलिक अनिवार्यता और आधुनिक पारगमन नीति का समन्वय ही नेपाल के लिए सबसे व्यावहारिक और दीर्घकालिक समाधान है।

मुख्य शब्द : स्थल–रुद्ध राष्ट्र, पारगमन कूटनीति, बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव, भारत–नेपाल सम्बन्ध, बफर स्टेट, भू–आर्थिक रणनीति, हिमालयी कनेक्टिविटी।

1. प्रस्तावना –

किसी राष्ट्र की विदेश नीति को उसकी भूगोल से अधिक कोई और तत्त्व नहीं गढ़ता। नेपाल इस सत्य का सबसे स्पष्ट उदाहरण है। यह एक ऐसा देश है जो उत्तर में हिमालय की अभेद्य पर्वत–श्रृंखलाओं और दक्षिण में भारत के विस्तृत मैदानों के बीच स्थित है। संयुक्त राष्ट्र के वर्गीकरण के अनुसार नेपाल एक भूमि–आबद्ध विकासशील देश है जिसका अर्थ है कि उसे अपने सभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए पड़ोसी देशों की धरती और बन्दरगाहों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता केवल आर्थिक नहीं बल्कि गहरे राजनीतिक और रणनीतिक

अर्थों से भरी हुई है।

भू–राजनीतिक दृष्टि से नेपाल की स्थिति एक बफर स्टेट की है। यह दो एशियाई महाशक्तियों के बीच एक ऐसी सन्धि–रेखा पर खड़ा है जहाँ भारत और चीन दोनों की रणनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ आकर मिलती हैं। जब तक नेपाल के साथ भारत का आर्थिक और पारगमन सम्बन्ध प्रबल था तब तक यह सन्धि–रेखा भारत के पक्ष में झुकी रही। किन्तु जब से चीन ने बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से नेपाल में प्रवेश किया है तब से इस सन्तुलन में एक नई जटिलता आ गई है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य इस जटिलता को तीन स्तरों पर समझना है। पहला यह कि भारत–नेपाल पारगमन सम्बन्धों का ऐतिहासिक ढाँचा क्या रहा है। दूसरा यह कि चीन का हिमालयी पारगमन प्रस्ताव कहाँ तक व्यावहारिक है और कहाँ से वह एक भू–राजनीतिक चाल मात्र बन जाता है। तीसरा यह कि भारत को अपनी पारगमन कूटनीति को किस दिशा में विकसित करना चाहिए ताकि वह न केवल नेपाल के लिए उपयोगी रहे बल्कि अपनी क्षेत्रीय रणनीतिक स्थिति को भी सुदृढ़ करे।

2. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत-नेपाल पारगमन सन्धियाँ –

भारत और नेपाल के सम्बन्धों की नींव 1950 में 'शान्ति एवं मैत्री की सन्धि' से पड़ी। यह सन्धि अपने समय की परिस्थितियों की देन थी जब एक ओर चीन तिब्बत में अपनी सत्ता स्थापित कर रहा था और दूसरी ओर नेपाल को एक विश्वसनीय रणनीतिक साझेदार की आवश्यकता थी। इस सन्धि की धारा 6 नेपाल को भारतीय बन्दरगाहों और सीमा–शुल्क क्षेत्रों तक निर्बाध पहुँच का अधिकार देती है। यह प्रावधान अपने मूल स्वरूप में नेपाल के लिए एक जीवन–रेखा था।

इस मूल ढाँचे के आधार पर समय–समय पर पारगमन एवं व्यापार सन्धियाँ होती रहीं। 1991 में दोनों देशों ने एक अलग 'पारगमन सन्धि' पर हस्ताक्षर किये जो हर 7 वर्ष में नवीनीकृत होती है। इस सन्धि के अन्तर्गत नेपाल को कोलकाता और हल्दिया बन्दरगाहों तक पहुँच दी गई। बाद में विशाखापत्तनम को भी इस सूची में जोड़ा गया। यह विस्तार नेपाल के लिए व्यापारिक विकल्पों का एक स्वागत–योग्य विस्तार था।

किन्तु इन सन्धियों की एक आलोचनात्मक परीक्षा आवश्यक है। नेपाल ने बार–बार यह शिकायत की है कि भारतीय सीमा–चौकियों पर कस्टम निकासी की प्रक्रिया अत्यन्त धीमी और कागजी खानापूरी से भरी हुई है। बीरगंज और रक्सौल जैसी सीमा–चौकियों पर ट्रकों की लम्बी कतारें और भ्रष्टाचार की शिकायतें दशकों से चली आ रही हैं। 2015 के भूकम्प के बाद और उससे उत्पन्न मानवीय संकट के दौरान जब माल की आपूर्ति में विलम्ब हुआ तो नेपाल में यह भावना और प्रबल हो गई कि भारत पर अत्यधिक निर्भरता एक जोखिम है। इसी भावनात्मक धरातल पर चीन के प्रस्तावों को नेपाल में जो स्वीकृति मिली वह केवल आर्थिक गणना का परिणाम नहीं थी। वह एक राष्ट्रीय मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति थी।

3. चीन का रणनीतिक विस्तार : हिमालयी पारगमन का भ्रम और यथार्थ –

2016 में नेपाल और चीन के बीच एक 'पारगमन एवं परिवहन समझौते' पर हस्ताक्षर हुए जो इस अर्थ में ऐतिहासिक था कि इसने पहली बार नेपाल को चीनी बन्दरगाहों तक पहुँच का कानूनी आधार दिया। तियान्जिन और शेन्जेन जैसे बन्दरगाहों का नाम इस समझौते में था। चीन ने बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव के अन्तर्गत नेपाल में रेलवे और सड़क परियोजनाओं का भी प्रस्ताव दिया। काठमाण्डू से लेकर रसुवागढ़ी तक

रेल–सम्पर्क और केरुंग–काठमाण्डू रेलमार्ग की परिकल्पना एक भव्य दृश्य प्रस्तुत करती है। किन्तु इस भव्य चित्र को भूगोल की कठोर वास्तविकता से परखने पर यह काफी हद तक एक सुन्दर भ्रम सिद्ध होता है। तिब्बती पठार की औसत ऊँचाई 4000 मीटर से अधिक है। काठमाण्डू से तियान्जिन बन्दरगाह की दूरी लगभग 3000 किलोमीटर है जबकि काठमाण्डू से कोलकाता की दूरी 1000 किलोमीटर से भी कम है। इस दूरी का अन्तर ही लागत का अन्तर है और व्यापार में लागत ही निर्णायक होती है।

इसके अतिरिक्त हिमालयी मार्ग की परिचालन लागत अत्यधिक है। वर्ष के कई महीने यह मार्ग हिमपात के कारण बाधित रहता है। सुरंगों और पर्वतीय पुलों के निर्माण में जो पूँजी चाहिए वह नेपाल जैसे छोटे अर्थव्यवस्था के लिए ऋण के जाल में फँसने की भूमिका बन सकती है। डेट–ट्रैप डिप्लोमेसी की जो आलोचना चीन की इन परियोजनाओं के सन्दर्भ में श्रीलंका और पाकिस्तान के मामलों में की जाती है वह नेपाल के लिए भी एक वैध चेतावनी है।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि चीन की नेपाल नीति का मूल उद्देश्य व्यापार–सुविधा नहीं है। उसका उद्देश्य नेपाल को भारत की कक्षा से बाहर खींचना और हिमालय के इस पार एक स्थायी रणनीतिक उपस्थिति स्थापित करना है। इस दृष्टि से बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव की नेपाल–शाखा एक व्यावसायिक प्रकल्प कम और एक भू–राजनीतिक निवेश अधिक है। भारत को इस अन्तर को गहराई से समझना होगा।

4. भारत की जवाबी कूटनीति : अवसंरचना और आधुनिकीकरण –

यदि चीन का आकर्षण मुख्यतः नेपाल की उस असन्तुष्टि से उत्पन्न हुआ है जो भारतीय पारगमन व्यवस्था की अकुशलता से जन्मी है तो भारत का सबसे प्रभावशाली जवाब इस अकुशलता को दूर करना है। इस दिशा में भारत ने कुछ महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं किन्तु अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

एकीकृत सीमा चौकियों का विकास : रक्सौल–बीरगंज एकीकृत सीमा चौकी का निर्माण एक सकारात्मक पहल है। यहाँ भारत और नेपाल के सीमा–शुल्क अधिकारी एक ही परिसर में कार्य करते हैं जिससे माल की निकासी में लगने वाला समय उल्लेखनीय रूप से कम हुआ है। इसी प्रकार की एकीकृत सीमा चौकियाँ सुनौली–भैरहवा और जोगबनी–बिराटनगर में भी स्थापित की गई हैं। इन चौकियों पर इलेक्ट्रॉनिक कार्गो ट्रैकिंग प्रणाली का कार्यान्वयन एक और महत्त्वपूर्ण कदम है जो पारदर्शिता और गति दोनों को बढ़ाता है।

रेल सम्पर्क का विस्तार : भारत ने नेपाल को चौड़ी पटरी के रेल–सम्पर्क से जोड़ने की योजना बनाई है। रक्सौल से काठमाण्डू तक प्रस्तावित ब्रॉड–गेज रेलवे लाइन यदि समय पर पूरी होती है तो यह नेपाल के लिए परिवर्तनकारी साबित होगी। इस रेलमार्ग से नेपाल की राजधानी सीधे कोलकाता बन्दरगाह से जुड़ जायेगी और भारी माल की ढुलाई में लागत एवं समय दोनों में भारी कमी आयेगी।

राष्ट्रीय जलमार्ग की सम्भावना : इस सन्दर्भ में एक ऐसे विकल्प की चर्चा करना आवश्यक है जिस पर अभी तक पर्याप्त नीतिगत ध्यान नहीं दिया गया है। गंगा नदी पर स्थित राष्ट्रीय जलमार्ग–1 जो इलाहाबाद से हल्दिया तक विस्तृत है, नेपाल के लिए समुद्री पहुँच का एक वैकल्पिक और अत्यन्त किफायती माध्यम बन सकता है। यदि नेपाल की सीमा से सटे गंडक और कोसी जैसी नदियों को गंगा जलमार्ग से जोड़ने की योजना बनाई जाये तो माल को सड़क मार्ग की तुलना में बहुत कम लागत पर हल्दिया बन्दरगाह तक पहुँचाया जा सकता है। अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण ने इस दिशा में कुछ प्रारम्भिक अध्ययन किये हैं किन्तु इस परिकल्पना

को नीतिगत प्राथमिकता अभी नहीं मिली है।

5. भू–आर्थिक और रणनीतिक निहितार्थ –

भारत की पारगमन कूटनीति को केवल आर्थिक सेवा के रूप में देखना एक सीमित दृष्टिकोण होगा। यह एक रणनीतिक उपकरण है जिसकी धार तब और पैनी हो जाती है जब इसे सॉफ्ट पावर की अवधारणा से जोड़कर देखा जाये।

जब भारत नेपाल को एक कुशल, पारदर्शी और लागत–प्रभावी पारगमन सुविधा देता है तो वह केवल एक पड़ोसी देश की व्यावसायिक आवश्यकता पूरी नहीं करता। वह यह सन्देश भी देता है कि भारत एक विश्वसनीय साझेदार है जो नेपाल की सम्प्रभुता का सम्मान करते हुए उसके विकास में योगदान देता है। इसके विपरीत जब भारतीय सीमा–चौकियों पर माल रोका जाता है या पारगमन प्रक्रिया में जानबूझकर विलम्ब होता है तो यह नेपाल की जनता में एक गहरी नाराजगी उत्पन्न करता है। 2015–16 की नाकाबन्दी का जो मनोवैज्ञानिक प्रभाव नेपाल पर पड़ा वह आज भी काठमाण्डू की राजनीतिक चेतना में जीवित है।

रणनीतिक दृष्टि से भारत के लिए नेपाल की पारगमन निर्भरता बनाये रखना इस अर्थ में भी आवश्यक है कि यह निर्भरता चीन को एक सीमा के परे नेपाल में प्रवेश करने से रोकती है। यदि नेपाल आर्थिक रूप से भारत के साथ गहरे जुड़ा है तो वह चीन के साथ किसी भी ऐसे समझौते से बचेगा जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरनाक हो। इस तर्क के आधार पर पारगमन कूटनीति में किया गया प्रत्येक रुपये का निवेश राष्ट्रीय सुरक्षा का ही निवेश है।

यहाँ यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि नेपाल की जनता भारत–विरोधी नहीं है। वह उस नीति के प्रति असन्तुष्ट है जो उसे कभी–कभी उपेक्षित और कभी–कभी दबाव में महसूस कराती है। यदि भारत एक ऐसे साझेदार के रूप में सामने आये जो नेपाल को बराबरी का सम्मान दे और साथ ही व्यावहारिक सहयोग भी प्रदान करे तो चीन के लिए नेपाल में अपनी जड़ें गहरी करना बहुत कठिन हो जायेगा।

6. निष्कर्ष –

नेपाल की भौगोलिक स्थिति एक ऐसी यथार्थता है जिसे न कोई सन्धि बदल सकती है और न कोई अवसंरचनात्मक परियोजना। हिमालय उत्तर में है और भारत के मैदान दक्षिण में। इस भूगोल ने नेपाल के लिए समुद्र तक का जो स्वाभाविक मार्ग निर्धारित किया है वह भारत के रास्ते से होकर ही जाता है। चीन इस मार्ग का एक विकल्प प्रस्तुत करता है किन्तु वह विकल्प अपनी लागत, जोखिम और भू–राजनीतिक दासता के कारण एक दीर्घकालिक समाधान नहीं है।

भारत के सामने अवसर यह है कि वह अपनी इस प्राकृतिक भौगोलिक श्रेष्ठता को कूटनीतिक परिपक्वता के साथ प्रस्तुत करे। पारगमन सुविधाओं का आधुनिकीकरण, सीमा–शुल्क प्रक्रियाओं का सरलीकरण, रेल–सम्पर्क का विस्तार और जलमार्गों की सम्भावना का दोहन ये सभी ऐसे कदम हैं जो एक साथ आर्थिक और रणनीतिक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

अन्ततः यह स्मरण रखना होगा कि किसी भी पड़ोसी देश के साथ टिकाऊ सम्बन्ध भय या निर्भरता के आधार पर नहीं बनते। वे विश्वास और पारस्परिक लाभ के आधार पर बनते हैं। यदि भारत नेपाल को एक ऐसे सम्बन्ध का अनुभव करा सके जिसमें वह स्वयं को न केवल लाभान्वित बल्कि सम्मानित भी महसूस करे तो बेल्ट

एण्ड रोड इनिशिएटिव की चमक काठमाण्डू में धीमी पड़ने लगेगी। पारगमन कूटनीति का यही वह गहरा आयाम है जिसे भारत को समझना और आत्मसात करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. राजन, पी. के. (2019). स्थल–रुद्ध राष्ट्रों की समुद्री पहुँच : दक्षिण एशियाई परिप्रेक्ष्य. रणनीतिक विश्लेषण, 43 (4), पृष्ठ 312–328. रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली.
2. पाण्डेय, बिमल. (2020). नेपाल–चीन सम्बन्ध और बेल्ट एण्ड रोड इनिशिएटिव : एक समालोचनात्मक मूल्यांकन. दक्षिण एशिया शोध पत्रिका, 15 (2), पृष्ठ 45–67. काठमाण्डू विश्वविद्यालय.
3. अग्रवाल, अनुपमा. (2018). भारत की पारगमन कूटनीति और नेपाल की समुद्री पहुँच. प्रेक्षक फाउण्डेशन शोध श्रृंखला. प्रेक्षक फाउण्डेशन, नई दिल्ली.
4. भारत सरकार. (2021). एकीकृत सीमा चौकी : विकास और प्रगति प्रतिवेदन. भूमि बन्दरगाह प्राधिकरण, नई दिल्ली.
5. ओली, के. पी. शर्मा. (2016). नेपाल–चीन पारगमन एवं परिवहन समझौता : पाठ एवं प्रभाव. विदेश मन्त्रालय, काठमाण्डू.
6. सिंह, श्रीनाथ. (2017). बफर स्टेट की भू–राजनीति : नेपाल और दक्षिण एशियाई सुरक्षा संरचना. अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन त्रैमासिक, 54 (1), पृष्ठ 89–110.
7. भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण. (2022). राष्ट्रीय जलमार्ग–1 : विस्तार एवं सम्भावना प्रतिवेदन. जहाजरानी मन्त्रालय, नई दिल्ली.
8. ब्रह्म चेलानी. (2019). एशियाई जल राजनीति : कैसे दक्षिण एशिया में चीन का जल–आक्रमण नये संघर्षों को जन्म दे रहा है. हार्पर कॉलिन्स इण्डिया, नई दिल्ली.
9. रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान. (2021). भारत–नेपाल सम्बन्ध : परिवर्तनशील परिदृश्य में रणनीतिक पुनरावलोकन. रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली.
10. संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन. (2022). भूमि–आबद्ध विकासशील देश : पारगमन व्यवस्था और व्यापार सुविधा प्रतिवेदन. संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन, जिनेवा.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 143-146

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सीमापार लोकतंत्र की यात्रा : भारत के चुनाव आयोग और नेपाल के मध्य सहयोग का तुलनात्मक विश्लेषण

लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान,
माता जीजाबाई शासकीय स्वशासी स्नाकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
मोती तबेला, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश :

"सीमापार लोकतंत्र की यात्रा" विषयक यह शोध–पत्र भारत और नेपाल के निर्वाचन आयोगों के बीच चुनाव प्रबंधन सहयोग का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत का निर्वाचन आयोग स्वतंत्र संवैधानिक संस्था है, जिसने ईवीएम, वीवीपैट, मतदाता सूची डिजिटलीकरण और चुनावी साक्षरता अभियानों जैसे नवाचारों के माध्यम से चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी और विश्वसनीय बनाया है। दूसरी ओर, नेपाल का निर्वाचन आयोग राजनीतिक संक्रमण और अस्थिरता के बीच भी लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का प्रयास करता रहा है।

इस अध्ययन में दोनों देशों के संवैधानिक ढाँचे, चुनावी संस्थागत संरचना, तकनीकी सहयोग, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और मतदाता शिक्षा अभियानों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। भारत ने नेपाल को चुनावी तकनीक और प्रबंधन में प्रशिक्षण देकर लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ करने में सहयोग किया है। दोनों देशों ने युवाओं और महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए संयुक्त अभियान चलाए हैं, जिससे लोकतंत्र की जड़ें और गहरी हुई हैं। इस प्रकार, भारत और नेपाल के बीच चुनाव प्रबंधन सहयोग न केवल द्विपक्षीयसंबंधों को सुदृढ़ करता है, बल्कि पूरे क्षेत्र में लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता और स्थायित्व को भी बढ़ाता है।

प्रमुख शब्द :

भारत निर्वाचन आयोग, नेपाल निर्वाचन आयोग, चुनावी सहयोग, सीमापार लोकतंत्र, चुनावी प्रबंधन।

परिचय :

लोकतंत्र की सफलता का मूल आधार स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव है। चुनाव केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का साधन नहीं होते, बल्कि वे नागरिकों की भागीदारी, संस्थागत मजबूती और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का माध्यम भी हैं। दक्षिण एशिया में भारत और नेपाल दो ऐसे राष्ट्र हैं, जहाँ चुनाव आयोग लोकतांत्रिक व्यवस्था की रीढ़ के रूप में कार्य करते हैं। भारत का निर्वाचन आयोग अनुच्छेद 324 के तहत स्थापित एक स्वतंत्र

संवैधानिक संस्था है, जिसने ईवीएम, वीवीपैट, मतदाता सूची डिजिटलीकरण और चुनावी साक्षरता अभियानों जैसे नवाचारों के माध्यम से चुनावी प्रक्रिया को विश्वसनीय और पारदर्शी बनाया है। दूसरी ओर, नेपाल का निर्वाचन आयोग 2015 के संविधान में स्थापित है, जिसने राजनीतिक संक्रमण और अस्थिरता के बीच भी लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने का प्रयास किया है।

इस शोध–पत्र का उद्देश्य भारत और नेपाल के निर्वाचन आयोगों के बीच सहयोग का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इसमें संवैधानिक ढाँचे, तकनीकी सहयोग, मतदाता शिक्षा अभियानों और क्षेत्रीय लोकतांत्रिक नेटवर्क की संभावनाओं का अध्ययन किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा :

अजय कुमार (2019) की पुस्तक "दक्षिण एशिया में चुनावी संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन" में भारत के निर्वाचन आयोग को तकनीकी नवाचारों का अग्रदूत बताया गया है।

रमेश शर्मा (2021) के शोध "चुनावी लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी : भारत और नेपाल" में युवाओं और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को लोकतंत्र की मजबूती का आधार बताया गया है।

भारतीय निर्वाचन आयोग की भूमिका :

संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत स्थापित यह आयोग लोकसभा, राज्यसभा, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति चुनावों के संचालन का दायित्व निभाता है।

आयोग की प्रमुख भूमिका मतदाता सूची तैयार करना और उसका अद्यतन करना, राजनीतिक दलों का पंजीकरण और चुनावी प्रतीकों का आवंटन भी आयोग की जिम्मेदारी है।

तकनीकी नवाचारों जैसे ईवीएम और वीवीपैट का प्रयोग आयोग की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाता है। इसके अतिरिक्त, cVIGIL ऐप और मतदाता हेल्पलाइन 1950 जैसी डिजिटल सेवाएँ नागरिकों को चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर देती हैं।

नेपाल निर्वाचन आयोग की भूमिका :

नेपाल निर्वाचन आयोग (Election Commission of Nepal) लोकतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा और चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता सुनिश्चित करने वाली प्रमुख संस्था है। 2015 के संविधान के तहत स्थापित यह आयोग संघीय, प्रांतीय और स्थानीय निकाय चुनावों का संचालन करता है। आयोग की प्रमुख जिम्मेदारियों में मतदाता सूची का अद्यतन, राजनीतिक दलों का पंजीकरण, चुनावी प्रतीकों का आवंटन और चुनावी आचार संहिता का पालन सुनिश्चित करना शामिल है।

हाल के स्थानीय निकाय चुनाव 2022 में आयोग ने पारदर्शिता और समावेशिता पर विशेष ध्यान, महिलाओं और युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए विशेष अभियान चलाए जिससे लोकतंत्र की गहराई और व्यापकता बढ़ी। आयोग ने तकनीकी सहयोग के लिए भारत से प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त किया, जिससे मतदाता सूची डिजिटलीकरण और चुनावी प्रबंधन में सुधार हुआ। यह संस्था न केवल नेपाल के लोकतंत्र को स्थिर करती है, बल्कि क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक आदर्शों को भी सुदृढ़ करती है।

भारत–नेपाल सहयोग :

भारत और नेपाल के बीच चुनावी सहयोग लोकतंत्र की मजबूती का एक जीवंत उदाहरण है। भारत का निर्वाचन आयोग, जो विश्व का सबसे बड़ा चुनाव प्रबंधन निकाय है, ने नेपाल को तकनीकी और संस्थागत सहयोग प्रदान किया है। उदाहरणस्वरूप, ईवीएम और वीवीपैट जैसी तकनीकों का परिचय नेपाल के चुनावी ढाँचे में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बढ़ाने में सहायक रहा। हाल ही में नेपाल के स्थानीय चुनावों में भारत द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यशालाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया, जहाँ मतदाता सूची प्रबंधन और चुनावी आचार संहिता के पालन पर विशेष बल दिया गया।

2024 में आयोजित "इंडिया–नेपाल इलेक्शन मैनेजमेंट एक्सचेंज प्रोग्राम" में नेपाल के अधिकारियों ने दिल्ली और पटना में चुनावी प्रक्रियाओं का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। इससे उन्हें अपने देश में चुनावी पारदर्शिता और मतदाता जागरूकता अभियान को और सशक्त बनाने की प्रेरणा मिली।

भारत–नेपाल सहयोग यह दर्शाता है कि सीमापार लोकतंत्र नागरिकों की सक्रिय भागीदारी, संस्थागत मजबूती और क्षेत्रीय शांति का आधार है। इस प्रकार, दोनों देशों का सहयोग दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक नेटवर्क के निर्माण की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम है।

सुझाव और भविष्य की संभावनाएँ :

भारत–नेपाल चुनावी सहयोग को और प्रभावी बनाने के लिए कुछ ठोस सुझाव सामने आते हैं। सबसे पहले, दोनों देशों को संयुक्त चुनावी प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करना चाहिए, जहाँ अधिकारियों और युवाओं को आधुनिक तकनीक, पारदर्शिता और नैतिक मानकों पर प्रशिक्षित किया जा सके। इससे चुनावी प्रबंधन में दीर्घकालिक स्थिरता आएगी।

दूसरा, डिजिटल सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप, भारत के "SVEEP" कार्यक्रम की तर्ज पर नेपाल में भी व्यापक मतदाता साक्षरता अभियान चलाया जा सकता है।

तीसरा, युवाओं और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए संयुक्त लोकतांत्रिक संवाद मंच बनाया जाए। हाल ही में आयोजित "युवा लोकतंत्र संवाद" जैसे कार्यक्रमों को नियमित रूप से आयोजित करना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी लोकतांत्रिक मूल्यों को साझा कर सके।

निष्कर्ष :

भारत और नेपाल के बीच चुनावी सहयोग का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि लोकतंत्र की स्थिरता और पारदर्शिता केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि साझा अनुभव और तकनीकी सहयोग से भी सुदृढ़ होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत–नेपाल सहयोग केवल प्रशासनिक या तकनीकी स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक मूल्यों की साझा विरासत और क्षेत्रीय शांति का आधार भी है। यह सहयोग दक्षिण एशिया में लोकतांत्रिक नेटवर्क के निर्माण की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम है, जो भविष्य में दोनों देशों के लोकतांत्रिक संबंधों को और अधिक स्थिरता और गहराई प्रदान करेगा।

संदर्भ सूची :

1. भारत निर्वाचन आयोग. (2024). वार्षिक रिपोर्ट 2024. नई दिल्ली : भारत निर्वाचन आयोग प्रकाशन।
2. नेपाल निर्वाचन आयोग. (2025). स्थानीय चुनाव रिपोर्ट 2025. काठमांडू : नेपाल निर्वाचन आयोग।
3. शर्मा, पी. (2023). नेपाल में लोकतांत्रिक संक्रमण और भारत की भूमिका. लोक प्रशासन अध्ययन, 12(1), 33–48।
4. जोशी, एम. (2025). भारत–नेपाल संबंधों में लोकतांत्रिक आयाम. राजनीति विज्ञान हिंदी शोध पत्रिका, 18(3), 77–92।

9009267538, 9907475079

pramilaomkurethiya@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 147-149

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत और नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत में नाथ सम्प्रदाय और गुरू गोरखनाथ का प्रभाव : एक मूल्यांकन

डॉ. प्रतिभा राय

सहा. प्राध्यापक, माता जीजाबाई शास. कन्या महाविद्यालय, इन्दौर, म.प्र.।

यद्यपि भारत और नेपाल सदैव से ही ऋषि–मुनियों और योगियों के आदि परम्पराओं वाले देश के रूप में जाना जाता है। हिमालय की तपोभूमि दोनों देशों में समान रूप से मौजूद है। प्राचीन काल से ही नेपाल और भारत के ऋषि–मुनियों और साधकों के बीच योग, मंत्र ओर ध्यान परम्पराए साझा रही है। योगियों और ऋषि मुनियों ने इन दोनों देशों पर अमिट छाप छोड़ी हैं। इन्हीं योगियों में से गुरू गोरखनाथ और नाथ सम्प्रदाय के योगियों का योगदान भारत और नेपाल की सांझा सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखने को मिलती हैं। नाथ सम्प्रदाय अपनी विशेष योग साधना, ध्यान और भक्ति के माध्यम से दोनों देखों के बीच एक सेतु की भूमिका का निर्वहन करता है। दोनों देशों की आम जनता की श्रद्धा इस सम्प्रदाय परे सदैव रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारत और नेपाल की सांझा सांस्कृतिक विरासत में नाथ सम्प्रदाय और गुरू गोरखनाथ के योगदान का अध्ययन करना हैं।

नाथ सम्प्रदाय का परिचय :–

नाथ सम्प्रदाय ''बोद्ध धम्म'' का ही एक अवैदिक परिवर्ती शाखा हैं। मध्ययुग में उत्पन्न इस सम्प्रदाय में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखाई देता है। नाथ योगियों ने हठयोग की साधना पद्धति की नीवं रखी और इसका प्रचार–प्रसार भारत और नेपाल में किया। हठयोग के मूल नियम आत्म अनुशासन कठोर दिनचार्या और सांसरिक मोह माया से मुक्ति पर केन्द्रित है, जिसका पालन प्रत्येक साधक को करना होता है। नाथ सम्प्रदाय ने जाति, धर्म, वर्ग और लिंग भेद को नकारते हुये समानता का संदेश दिया है। गुरू गोरखनाथ जो इस सम्प्रदाय में सर्वेश्रेष्ठ स्थान रखते है। उनके अनुसार सभी मनुष्य एक समान है और आत्मज्ञान हर व्यक्ति का अधिकार है। महिलाओं और अपेक्षित वर्ग को भी साधना और भक्ति में भाग लेने का अधिकार है। नाथ सम्प्रदाय की शिक्षाएं लोक जीवन में इतनी गहराई से समाहित हो गई कि ये लोकगीत, भजन और नृत्य के रूप में भारत और नेपाल की संस्कृति में भी दिखाई देती है। नाथ सम्प्रदाय के शिक्षा मूलतः आध्यामिकता और योग साधना पर आधारित थी।

नाथ पंथियों का मुख्य सम्प्रदाय गोरखनाथी योगियों का हैं। इन्हें साधारणतय कनफटा और दर्शनी साधु कहा जाता है कनफटा नाम का कारण यह है कि ये योगी कान फाडकर एक प्रकार की मुद्रा धारण करते

हैं। इस मुद्रा के नाम पर इन्हें ''दर्शनी'' साधु भी कहते हैं।

गोरखपंथी साधु सारे भारत वर्ष और नेपाल में पाये जाते है। पंजाब, हिमालय, के पाद देश बंगाल और महाराष्ट्र में इन्हें नाथ नाम से पुकारा जाता है। भारतीय नाथ परम्परा में नौ नाथों और बारह पंथी नाथ परम्परा का उल्लेख मिलता है। नाथपंथ के अनुयायी शिव की आराधना करते है। आत्म साक्षात्कार और समाज कल्याण नाथ पंथियों का मुख्य ध्येय रहा है। नाथ पंथ उतना ही प्राचीन है जितने शिव प्राचीन है। आदिनाथ शिव नाथ सम्पदाय के प्रथम गुरू माने जाते है। इससे ही नाथ सम्प्रदाय की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि नाथ सम्प्रदाय बहुत ही अनादि काल से विद्यमान हैं। आदि शिव के द्वारा मत्स्येन्द्रनाथ उत्पन्न हुये। मत्स्येन्द्रनाथ सिद्धयोगी हुये और गुरू गोरखनाथ को अपना शिष्य बनाया। भारतीय नौ नाथों का नाम इस प्रकार से हैं।

(1) आदिनाथ (2) मत्स्येन्द्रनाथ (3) सारदनंद
(4) भैरवनाथ (5) चौरगीनाथ (6) मीननाथ
(7) गौरखनाथ (8) विरूपायनाथ (9) भर्तृहरिनाथ

इससे अलग नेपाल में नाथ परम्परा में नौ नाथों के भिन्न नाम है। जैसे –

(1) एकनाथ (2) आदिनाथ (3) मत्स्येन्द्रनाथ (4) उदयनाथ (5) दण्डनाथ (6) सत्यनाथ (7) संतोषनाथ (8) कूर्मनाथ (9) जालंधर नाथ।

8वीं सदी में 84 सिद्वों के साथ बौद्व धर्म की ब्रजयान शाखा की परम्परा का प्रचलन हुआ। यह 84 सिद्व सभी नाथ सम्प्रदाय से ही थे। व्रजयान में व्रज का अर्थ कटोरतम (सत्य) और अविनाशी ज्ञान से है। यह मुख्य रूप से तंत्र, मंत्र योग और अनुष्ठानों पर आधारित है। इसमें अनुयायी सिद्व कहलाते थे। सिद्व अनिश्वरवादी थे जबकि नाथ ईश्वर वादी थे। गुरू महिमा, पिण्ड, ब्राम्हांडवाद तथा हठयोग नाथ साहित्य का वैशिष्ट्य है। नाथों ने निरीश्वर वादी शन्यू को ईश्वादी शून्य ने प्रतिष्ठत किया।

नाथ सम्प्रदाय का नेपाल पर सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव :

नेपाल के इतिहास, धर्म और संस्कृति को आकार देने में नाथ सम्प्रदाय का अत्यंत गहरा, ऐतिहासिक और अध्यात्मिक योगदान रहा है। इस सम्प्रदाय ने नेपाल के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक एकीकरण मे मुख्य कढी के रूप में भूमिका निभाई है। नेपाल और भारत के बीच नाथ सम्प्रदाय साझा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का प्रमुख स्तम्भ है। नेपाल में वर्तमान समय में कई ऐतिहासिक और पूज्यनीय स्थल मौजूद है जो नाथ योगियों की देन है।

1. गौरखनाथ मंदिर –

पशुपति नाथ मंदिर और गृहाश्वरी के बीच मृगस्थली के शांत जंगल में यह अत्यंत महत्वपूर्ण नाथ पीठ है, यह वह स्थान है जहां गुरू गौरखनाथ ने धोर तपस्या की थी। यहां उनका मंदिर आश्रम और अखंड धूना मौजूद है।

2. मत्स्येन्द्र नाथ मंदिर (पाटन/काठमांडू)

यह मंदिर हिन्दू और बौद्व दोनों धर्मो के अनुयायियों के लिए गहरी आस्था का केन्द्र है। बौद्व इन्हें अवलोकमितेश्वर के रूप में पूजते है। यहां की रथ वाला नेपाल का एक बहुत बड़ा सांस्कृतिक उत्सव है।

3. रत्नाथ मंदिर –

इसे गुरू गौरवनाथ में नाम से भी जाना जाता है। यह क्षेत्र 1300 वर्षो से अधिक वर्षो से नाथ योगियों के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है।

4. गौरखनाथ गुफा (गौरखा दरबार)

गौरवनाथ जिले में स्थित यह वह पवित्र स्थल है, जहां गुरू गौरवनाथ ने तपस्या की थी।

गुरू गौरखनाथ नेपाल के एकीकरण के आधार स्तम्भ :–

इतिहास के अनुसार 18वीं शताब्दी में गौरखा राजा पृथ्वी नारायण शाह को गुरू गौरखनाथ ने आर्शीवाद दिया था। इसी आर्शीवाद और मार्गदर्शन के बल पर इन्होने इन्होने अलग प्रातों में बटे नेपाल का एकीकरण किया और आधुनिक नेपाल की नींव रखी। ऐसी मान्यता है कि नेपाल में शाह वंश की स्थापना गौरखनाथ के आर्शीवाद से हुयी थी। नेपाल के सभी शाह वंश के राजाओं ने गौरखनाथ का अपना ईष्ट देव स्वीकार किया है।

नेपाल का गौरखा राज्य एवं गौरखा जाति महायोगी गौरखनाथ से अपना सम्बन्ध जोड़ती है। नेपाल की सेनाए युद्व भूमि में ''जय गौरखा'' राजघोष करते हुए युद्व के लिए प्रस्थान करती है। ब्रिटिश युग में द्वितीय विश्व युद्व के दौरान सेना की गोरजा रेजीमेन्ट की बहादुरी से प्रभावित होकर अंग्रेजी ने गौरखनाथ मंदिर आकर वहां के महन्त को सम्मानित किया गया।

निष्कर्ष :–

नेपाल और भारत के सांस्कृतिक विरासत के रूप में नाथ सम्प्रदाय और गुरू गौरखनाथ जी की आज भी वह प्रतिष्ठा और समभाव प्राप्त है जो पूर्व में थी। दोनों देशों के बीच की भौगोलिक सीमाओं में परे यह आध्यात्मिक परम्परा सदियों से दोनों राष्ट्रो को धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़ती आ रही है। भारत और नेपाल के ''रोटी और बेटी'' में सम्बन्ध के साथ–साथ आध्यात्मिक सम्बन्धों को मजबूत करने में नाथ सम्प्रदाय को महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. नाथ सम्प्रदाय सिद्वान्त एवं साधना, डॉ. श्यामाकांत द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 1989
2. नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, 1950
3. नाथ पंथ, – डॉ. प्रदीप कुमार राव, महायोगी गुरू गोरवनाथ शोध पीठ गौरखपुर, 2019
4. सिद्व साहित्य, डॉ धर्मवीर भारतीय, भारतीय ज्ञानपीठ, 1955

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 150-153

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Media Representation of Janakpur as a Living Center of Ramayana-Era Culture: Implications for India-Nepal Cultural Relations

Pratyush Kumar
Student, Delhi School of Journalism.

Abstract :

Janakpur, or Janakpurdham, occupies a meaningful place in South Asian cultural imagination because of its association with Goddess Sita, King Janak, and the ancient Mithila region described in the Ramayana tradition. This paper studies how Janakpur is represented in media as a living center of Ramayana-era culture and what this representation means for India-Nepal cultural relations. The study treats Janakpur not simply as a mythological location or a tourist destination, but as a city where sacred memory continues through worship, festivals, pilgrimage, Maithili language, Mithila art, oral traditions, and everyday cultural practices. Tourism media, news reports, digital platforms, and diplomatic narratives often describe Janakpur as the birthplace of Sita, a major Hindu pilgrimage center, a symbol of Mithila identity, and a cultural link between Janakpur and Ayodhya. Such portrayals help promote religious tourism and strengthen people-to-people contact between Nepal and India. At the same time, the paper argues that media narratives should avoid presenting Janakpur only through a narrow religious or political lens. The city's local Maithil identity, women's cultural traditions connected with Sita, heritage concerns, and the lived experiences of residents must also be recognized.

The Ramayana Circuit and Janakpur-Ayodhya connectivity show how sacred geography can support cultural diplomacy, but this process must be guided by sensitivity and sustainability. The paper concludes that Janakpur can deepen India-Nepal cultural relations when it is represented as a shared yet locally rooted heritage space, shaped by faith, memory, art, and mutual respect. By focusing on media, pilgrimage, and cultural diplomacy together, this research highlights Janakpur as a place where religious belief, local identity, and cross-border relations meet in everyday cultural life.

Keywords : Janakpur, Ramayana, Mithila, media representation, India-Nepal relations.

Introduction :

Janakpur, widely known as Janakpurdham, is one of Nepal's most important religious and cultural cities. Located in Madhesh Province, it is closely associated with the Ramayana tradition as the birthplace of Goddess Sita, also called Janaki, and as the ancient capital of Mithila under King Janak. For devotees in Nepal and India, Janakpur is not only a place on a map; it is a sacred memory where the story of Sita and Ram is worshipped, narrated, and celebrated.

This paper examines how Janakpur is represented in media as a living center of Ramayana-era culture. The phrase living center is important because Janakpur's identity is not limited to ancient stories. Its temples, festivals, Maithili language, Mithila paintings, pilgrimage practices, songs, and rituals continue to keep Ramayana memory active in public life. Media narratives about Janakpur therefore shape tourism, cultural identity, and India-Nepal relations.

Janakpur as a Living Cultural Space :

Janakpur's sacred value is rooted in its association with Sita and King Janak. The Janaki Mandir, Vivah Mandap, Ram Mandir, and sacred ponds form a religious landscape through which pilgrims connect with the Ramayana tradition. During festivals such as Vivah Panchami and Ram Navami, processions, music, rituals, and collective worship turn the epic into a lived experience.

Janakpur is also a center of Mithila culture. Maithili language, folk songs, marriage customs, and Mithila painting give the city a distinct local identity. Sita is revered not only as a goddess but also as Janaki, the daughter of Mithila. This local emotional connection gives Nepal an important place within the wider Ramayana cultural geography.

Media Representation of Janakpur :

Media generally represents Janakpur through three connected images. First, it is shown as a sacred pilgrimage destination centered on Janaki Mandir and Ramayana-related rituals. Second, it is presented as a center of Mithila heritage through Maithili language and Mithila art. Third, it is described as a bridge between Nepal and India because of the symbolic connection between Janakpur and Ayodhya. These representations increase awareness of Janakpur, support religious tourism, and preserve the city's cultural image. However, media portrayals can become incomplete when they show Janakpur only as a temple town or tourist attraction. A fuller representation should include local communities, women's traditions, Maithil identity, heritage concerns, and the everyday life of residents.

Digital media has made Janakpur more visible through photographs of Janaki Mandir, videos of Vivah Panchami, travel reels, and devotional posts. This visibility can encourage tourism and pride, but it can also simplify the city into a few repeated images. Responsible media should present Janakpur as a layered cultural space, not merely as a background for religious spectacle.

Ramayana Circuit and India-Nepal Relations :

The Ramayana Circuit and the Janakpur-Ayodhya connection show how sacred geography can become a tool of cultural diplomacy. Ayodhya is associated with Lord Ram, while Janakpur is associated with Sita. Linking these two places through pilgrimage routes and transport services suggests that the Ramayana tradition belongs to a shared South Asian cultural world rather than to one country alone. For India and Nepal, this shared heritage strengthens people-to-people relations. Pilgrims, families, artists, scholars, and local communities experience the relationship between the two countries through festivals, travel, worship, and cultural exchange. Such bonds remain meaningful even when formal political relations face tension.

Implications and Challenges :

Janakpur's media image promotes religious tourism, supports local economic activity, and strengthens the cultural confidence of the Mithila region. It also allows Nepal to participate actively in Ramayana-based cultural diplomacy because Sita's birthplace gives Janakpur a central symbolic position. The city can become a shared heritage space for cooperation in tourism, art, festivals, and academic research.

There are also risks. Religious heritage can become politically sensitive if one side appears to claim ownership over a shared tradition. Commercialization may weaken the local meaning of festivals and put pressure on temples, ponds, roads, and waste management. Janakpur's representation should therefore emphasize respect, sustainability, and local participation.

A balanced representation should also include women-centered meanings of Janakpur. Since the city is associated with Sita, its representation should include dignity, sacrifice, strength, and women's cultural creativity. Mithila painting, often preserved by women, gives visual form to these ideas and makes the media image richer.

Conclusion :

Janakpur is represented in media as a sacred city, a center of Mithila culture, and a bridge between India and Nepal. Its association with Sita, King Janak, and the Ramayana gives it deep religious meaning, while its festivals, rituals, art, language, and pilgrimage practices make it a living cultural center.

For India-Nepal cultural relations, Janakpur has great value. It strengthens religious tourism, cross-border cultural exchange, and shared civilizational identity. Yet its representation must remain balanced. If represented with sensitivity to Maithil identity, women's traditions, and heritage preservation, Janakpur can become a powerful symbol of mutual respect and cultural friendship.

References :

1. Adhikari, S. (2018). Impacts of religious tourism in Janakpur. Research Nepal Journal of Development Studies.
2. Nepal Tourism Board. (n.d.). Janakpur tourist destination information.
3. Press Information Bureau, Government of India. (2018). India-Nepal joint statement during state visit of Prime Minister of India to Nepal.
4. Press Information Bureau, Government of India. (2022). Bharat Gaurav tourist train operating on the Ramayana Circuit.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 154-158

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

India's Neighbourhood First Policy and Nepal : Advancing Regional Integration and Sustainable Partnership in South Asia

Pravesh Bhalse

Research Scholar, Department of Political Science,
Mata Jijabai Govt. Girls PG College, Indore (M.P) India

Abstract :

The Neighbourhood First Policy has emerged as a cornerstone of India's foreign policy, reflecting its commitment to strengthening relations with neighbouring countries through cooperation in connectivity, trade, infrastructure development, energy security, and people-to-people exchanges. Within this framework, Nepal occupies a position of exceptional strategic significance owing to its geographical proximity, historical ties, cultural affinity, and economic interdependence with India. This paper examines the role of Nepal in India's Neighbourhood First Policy and evaluates its contribution to regional integration and sustainable partnership in South Asia. Drawing upon the theoretical perspectives of Regionalism and Complex Interdependence, the study analyses major areas of bilateral cooperation, including connectivity, trade, hydropower, development assistance, and cultural diplomacy. It further explores challenges such as border disputes, geopolitical competition, climate vulnerabilities, and trust deficits. The study argues that a strong and mutually beneficial India–Nepal partnership is essential for advancing regional stability, economic integration, and sustainable development in South Asia.

Keywords : Neighbourhood First Policy, Nepal, Regional Integration, Sustainable Partnership, South Asia, Connectivity, India–Nepal Relations, Regional Cooperation.

1. Introduction :

In an increasingly interconnected world, regional cooperation has become a critical component of foreign policy. Nations are recognizing that economic prosperity, security, and sustainable development are often linked to the stability and progress of their neighbouring regions. South Asia, despite its vast economic potential and cultural interconnectedness, has historically experienced

limited regional integration due to political disputes, security concerns, and developmental disparities.

Against this backdrop, India introduced the Neighbourhood First Policy as a strategic initiative aimed at strengthening relations with its immediate neighbours. The policy seeks to enhance cooperation in infrastructure, trade, connectivity, security, and development while fostering goodwill and mutual trust.

Nepal occupies a unique position within this policy framework. Sharing an open border, deep cultural and religious ties, and extensive economic interactions, India and Nepal enjoy one of the closest bilateral relationships in South Asia. However, the relationship is also shaped by evolving geopolitical realities and emerging regional challenges.

This paper seeks to examine how Nepal contributes to India's regional vision and how bilateral cooperation can facilitate regional integration and sustainable partnership in South Asia.

2. Review of Literature :

Several scholars have examined India's neighbourhood policy and India–Nepal relations from different perspectives.

Muni (2016) highlights the historical evolution of India–Nepal relations and emphasizes the importance of mutual trust and political understanding.

Pant (2019) argues that India's Neighbourhood First Policy reflects a broader effort to consolidate regional influence through development partnerships and connectivity initiatives.

Mohan (2015) observes that India's regional diplomacy increasingly focuses on economic integration and strategic engagement with neighbouring countries.

Keohane and Nye (2012) provide the theoretical basis for understanding India–Nepal relations through the concept of complex interdependence, emphasizing multiple channels of interaction beyond traditional security concerns.

Although existing literature extensively discusses bilateral relations and regional politics, limited attention has been given to Nepal's role in advancing regional integration under India's Neighbourhood First Policy.

3. Objectives of the Study :

The study aims to :

- Examine the evolution and objectives of India's Neighbourhood First Policy.
- Analyse Nepal's strategic significance in India's regional diplomacy.
- Evaluate the contribution of connectivity and economic cooperation to regional integration.
- Identify major challenges affecting India–Nepal relations.
- Assess prospects for sustainable partnership and regional development.

4. Research Methodology :

The study employs a qualitative and analytical methodology based on secondary sources. Data has been collected from government reports, policy documents, books, academic journals, and publications of regional and international organizations.

The analysis is interpretative in nature and seeks to understand the changing dynamics of India–Nepal relations within the broader context of South Asian regional cooperation.

5. Theoretical Framework :

5.1 Regionalism :

Regionalism refers to the process through which neighbouring states cooperate to achieve common political, economic, and developmental objectives. It emphasizes collective growth, institutional cooperation, and regional connectivity.

India's Neighbourhood First Policy can be understood as an attempt to strengthen regionalism by promoting cooperation and interdependence among South Asian countries.

5.2 Complex Interdependence :

The theory of Complex Interdependence developed by Robert Keohane and Joseph Nye argues that states interact through multiple channels, including economic, social, political, and cultural networks.

India and Nepal exemplify this concept through extensive cross-border trade, migration, cultural exchanges, tourism, and developmental cooperation.

6. Nepal in India's Neighbourhood First Policy :

6.1 Strategic Importance :

Nepal's geographical location between India and China gives it immense strategic significance. Stability and cooperation in Nepal directly affect India's security environment and regional interests.

6.2 Cultural and Civilizational Linkages :

India and Nepal share centuries-old cultural, religious, and historical ties. Hindu and Buddhist traditions, pilgrimage routes, linguistic similarities, and family networks have created a strong foundation for bilateral relations.

6.3 Economic Interdependence :

India is Nepal's largest trading partner and one of its principal sources of investment. Bilateral economic relations have expanded through trade agreements, infrastructure projects, and development partnerships.

7. Regional Integration through Connectivity :

Connectivity forms the core of India's regional integration strategy.

Physical Connectivity :

Infrastructure projects including highways, railways, integrated check posts, and border facilities have improved cross-border mobility and trade.

Energy Connectivity :

Nepal's hydropower potential and India's energy requirements create opportunities for mutually beneficial cooperation. Cross-border electricity trade has emerged as a key area of partnership.

Digital Connectivity :

Technological cooperation and digital infrastructure development are creating new opportunities for regional integration and economic modernization.

8. Sustainable Partnership and Development Cooperation :

India's developmental assistance to Nepal includes cooperation in :

- Education
- Health
- Infrastructure
- Disaster Management
- Community Development
- Capacity Building

Such initiatives contribute to sustainable development while strengthening bilateral trust and goodwill.

9. Challenges in India–Nepal Relations :

Despite strong bilateral ties, several challenges persist :

- **Political Sensitivities :**

Domestic political developments often influence bilateral perceptions and policy choices.

- **Geopolitical Competition :**

China's growing presence in Nepal has introduced new strategic dimensions into regional politics.

- **Trust Deficit :**

Occasional misunderstandings and differing expectations continue to affect bilateral relations. Addressing these challenges requires continuous dialogue and institutional cooperation.

10. Findings and Discussion :

The study reveals that :

- Nepal remains a key partner in India's Neighbourhood First Policy.
- Historical and cultural ties continue to strengthen bilateral cooperation.

- Connectivity initiatives are crucial for regional integration.
- Energy cooperation offers significant opportunities for sustainable development.
- Regional stability depends upon strong India–Nepal relations.
- Sustainable partnership requires mutual trust, policy coordination, and respect for sovereignty.

11. Conclusion :

India's Neighbourhood First Policy represents a strategic effort to promote regional cooperation, economic integration, and sustainable development in South Asia. Within this framework, Nepal occupies a central position owing to its strategic location, cultural affinity, and economic significance.

The India–Nepal relationship has evolved into a multidimensional partnership encompassing connectivity, trade, energy cooperation, development assistance, and people-to-people engagement. Although challenges remain, the prospects for cooperation continue to outweigh areas of disagreement. The future of South Asian regional integration depends significantly on strengthening India–Nepal relations. By expanding connectivity, promoting sustainable development, enhancing energy cooperation, and fostering mutual trust, both countries can contribute to a more peaceful, prosperous, and integrated South Asian region.

References :

- Bajpai, K. (2017). *Indian Foreign Policy and Regional Cooperation*. Routledge.
- Keohane, R. O., & Nye, J. S. (2012). *Power and Interdependence* (4th ed.). Pearson.
- Mohan, C. Raja. (2015). *Modi's World: Expanding India's Sphere of Influence*. HarperCollins.
- Muni, S. D. (2016). *India and Nepal: A Changing Relationship*. Konark Publishers.
- Pant, H. V. (2019). *Indian Foreign Policy: An Overview*. Manchester University Press.
- Government of India, Ministry of External Affairs. *Neighbourhood First Policy Documents*.
- Government of Nepal, Ministry of Foreign Affairs Reports.
- Asian Development Bank. *Regional Cooperation and Connectivity Reports*.
- World Bank. *South Asia Regional Integration Reports*.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 159-164

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान

प्रिन्स कुमार

यूजीसी–नेट–जेआरएफ, इतिहास,
वरिष्ठ शोध अध्येता, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर।



सारांश :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेपाल और नेपाली मूल के सेनानियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भारत और नेपाल के बीच प्राचीन सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संबंधों के कारण दोनों देशों के स्वतंत्रता संघर्ष एक–दूसरे से प्रभावित थे। अनेक नेपाली क्रांतिकारियों, सैनिकों और बुद्धिजीवियों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा तथा सांस्कृतिक निकटता के कारण नेपाली लोग भारत के राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े रहे। अंग्रेजों ने नेपाल के गोरखा सैनिकों को अपनी सेना में भर्ती किया, लेकिन कई नेपाली सैनिकों और नेताओं ने अंग्रेजों के अत्याचारों का विरोध किया। नेपाल के कई बुद्धिजीवी भारत में रहकर स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े और भारत के क्रांतिकारियों को सहयोग दिया। भक्त बहादुर, धर्मनाथ प्रसाद, बी.पी. कोइराला, मातृका प्रसाद कोइराला आदि ऐसे वीर योद्धा थे जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अनेक गुप्त क्रांतिकारी संगठनों का गठन हुआ, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण नाम था "आजाद दस्ता"। यह संगठन विशेष रूप से भारत–नेपाल सीमा क्षेत्र में सक्रिय था और इसका उद्देश्य अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र एवं गुप्त आंदोलन चलाना था। "आजाद दस्ता" एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन था, जिसका गठन भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले युवाओं और क्रांतिकारियों ने किया था। यह संगठन विशेष रूप से 1942 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन के समय सक्रिय हुआ। जब अंग्रेजों ने कांग्रेस नेताओं को गिरफ्तार कर लिया, तब कई क्रांतिकारी भूमिगत हो गए। इन भूमिगत सेनानियों ने गुप्त संगठनों का निर्माण किया, जिनमें "आजाद दस्ता" प्रमुख था।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता आंदोलन, नेपाली मूल, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक।

परिचर्चा :

18वीं सदी के अंत तक अंग्रेजों ने संसार के कई भागों को जीत लिया, और वे वहीं बसने भी लगे। वे अपने विकास के लिए वहां के मूल निवासियों को दबाते और खदेड़ते गए। अंग्रेजों के भारत–प्रवेश के समय यहां मुगल–शासन अपने पूरे यौवन पर था, अतः अनुकूल वातावरण पाकर अंग्रेजी व्यापार खूब समृद्ध हुआ तथा अंग्रेजी

बस्तियों का व्यवस्थित रूप से उदय हुआ। 1707 ई. में अंतिम महान मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु हो गई और देश में चारों ओर उपद्रवों एवं अराजकता का वातावरण पैदा हो गया। इससे अंग्रेजों ने लाभ उठाने की सोची और इस अराजकता के समय अपनी स्थिति को अधिक वैधानिक बनाने की दिशा में प्रयत्न किए। व्यापार की ओट में साम्राज्यवादी भावना बलवती होने लगी। ईस्ट इंडिया कंपनी को स्थानीय शक्तियों के अलावा कई यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों से भी टक्कर लेनी पड़ी। अन्य यूरोपीय कंपनियों, जैसे आस्टेंड, पुर्तगाली और डच को शीघ्र ही व्यापार व साम्राज्य–विस्तार की दौड़ में परास्त कर अंग्रेजों को फ्रांसीसी कंपनी के साथ काफी समय के लिए उलझना पड़ा।

बंगाल, बिहार और अवध के उत्तरी सीमांत के साथ लगे नेपाल राज्य की लंबाई सतलज से सिक्किम तक सात सौ मील और हिमालय के हिमाच्छित ढलानों तक उसकी औसत चौड़ाई 130 मील है। हिमालय के पार तिब्बत व चीन राज्य हैं। चौदहवीं शताब्दी में हिंदू राजपूतों ने इसके मूल निवासी मंगोलों को पराजित करके हिंदू शासन की स्थापना की थी। यक्ष मल्ल पचास वर्ष राज्य कर मृत्यु से पूर्व नेपाल को अपने पुत्रों में विभाजित कर गया। 1488 ई. से 1769 ई. तक नेपाल चार छोटे–छोटे राज्यों में बॅटा रहा। ये चार राज्य थे काठमांडू, पट्टन, भटगंग और गोरखा। 1742 ई. में पृथ्वी नारायण गोरखा शासक बना। वह बहुत ही महत्वाकांक्षी शासक था, अतः वह अपने राज्य का विस्तार करने लगा। शीघ्र ही उसने नेपाल के छोटे–छोटे राज्यों को हराकर, भारत के कुछ प्रदेश भी (तराई, कुमायूं, गढ़वाल, शिमला तथा सिक्किम के प्रदेश) अपने प्रभुत्व में ले लिए। काठमांडू के शासक ने पृथ्वी नारायण के खिलाफ भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी से सहायता की याचना की तथा 1767 ई. में उसकी सहायता के लिए कैप्टन किनलोच को कुछ सेना सहित भेजा भी गया था, किंतु उसे विशेष सफलता नहीं मिली। 1769 ई. तक पृथ्वी नारायण ने केंद्रीय प्रशासन की स्थापना कर नेपाल को एकता के सूत्र में बॉध दिया। असद हुसैन के अनुसार पृथ्वी नारायण को आधुनिक नेपाल का संस्थापक व निर्माता समझना चाहिए।

भारत में 'राष्ट्रवाद' की अवधारणा 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित हुई। यद्यपि भारत में ब्रिटिश शासन के प्रति लगभग आरंभ से ही देशी शासकों और विभिन्न जन समूहों द्वारा नाराजगी और विरोध जताया जा रहा था, तथापि न तो वह एक संगठित विरोध था, और न ही वह राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित था। यहां तक कि जब ब्रिटिश द्वारा किए जाने वाले शोषण के विरुद्ध आबादी के विभिन्न वर्ग एकजुट हुए, तब भी उसमें संपूर्ण देश और उसके सभी लोगों के साथ तादात्मयता या एकरूपता का कोई बोध नहीं था। भारत के लोगों के बीच व्याप्त सभी पारस्परिक मतभेदों के बावजूद, ऐसी कोई भावना नहीं थी जो सामूहिक उपादानों के सूत्र के रूप में उन्हें एकजुट कर सके। भारतीय राष्ट्रवाद का उदय इस बोध के साथ हुआ कि भारत के लोगों की एक समान राष्ट्रीयता थी, और ब्रिटिश शासन का विरोध करने में उनका 'सामूहिक' हित था। राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने का विचार और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक संयुक्तध्सम्मिलित विरोध का प्रस्ताव आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद का मूल सिद्धांत था। निश्चित रूप से, यह एक क्रमिक प्रक्रिया थी।

विद्वतजन प्रायः भारत में राष्ट्रवाद का उदय और विकास भारत में उपनिवेशी शासन के कारण उत्पन्न हुई नवीन संस्थाओं की स्थापना, रोजगार के नये अवसरों का सृजन, संसाधनों का अधिकाधिक दोहन इत्यादि कारकों को मानते हैं, अर्थात् भारत में, राष्ट्रवाद का उदय कुछ उपनिवेशी नीतियों द्वारा एवं कुछ उपनिवेशी नीतियों के विरुद्ध प्रतिक्रियास्वरूप हुआ।

हालांकि, इसमें कुछ संदेह है कि भारत में राष्ट्रवाद की भावना मुख्यतः देश में ब्रिटिश शासन के कारण विकसित हुई, क्योंकि यह भावना आंशिक रूप से अंग्रेजों द्वारा भारत में आधुनिकीकरण की नींव रखने और अंशतरू भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों की तीव्र प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुई थी। परंतु, इसका कारण 1776 ई. में अमेरिकी (यूएसए) का डैक्लरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस, 1789 ई. की फ्रांस की क्रांति, और उसके बाद 1870 ई. में इटली तथा जर्मनी के एकीकरण जैसी विश्व के विभिन्न भागों में घटित होने वाली घटनाओं से प्रबुद्ध भारतीयों का प्रभावित होना था। राष्ट्रवाद की भावना को बल मिला और आत्मनिर्णय का विचार संभव हो सका, यद्यपि इसमें ब्रिटिश सत्ता (पराक्रम) की शक्ति का विरोध करना शामिल था।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल भारतवासियों का संघर्ष नहीं था, बल्कि यह दक्षिण एशिया के अनेक देशों और समुदायों के लोगों की साझा लड़ाई भी थी। भारत और नेपाल के बीच प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंध रहे हैं। दोनों देशों की खुली सीमा, पारिवारिक रिश्ते तथा ऐतिहासिक निकटता के कारण नेपाल के अनेक नागरिक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित हुए और उसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। नेपाली सेनानियों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए विभिन्न स्तरों पर योगदान दिया। कुछ ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया, कुछ ने सत्याग्रह और असहयोग आंदोलनों का समर्थन किया, जबकि कई लोगों ने स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय, संसाधन और सहयोग प्रदान किया।

भारत और नेपाल के संबंध हजारों वर्ष पुराने हैं। दोनों देशों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आदान–प्रदान निरंतर होता रहा है। नेपाल कभी भी औपचारिक रूप से ब्रिटिश उपनिवेश नहीं बना, लेकिन 1816 ई. की सुगौली संधि के बाद ब्रिटिश प्रभाव नेपाल की राजनीति और प्रशासन में बढ़ गया। ब्रिटिश शासन के दौरान नेपाल के अनेक युवाओं की भर्ती गोरखा रेजीमेंट में की जाती थी। दूसरी ओर, नेपाल में ब्रिटिश नीतियों के प्रति असंतोष रखने वाले कई लोग भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरित हुए। भारत में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रभाव नेपाल के बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं पर भी पड़ा।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक नेपाली मूल के व्यक्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनमें से कुछ ने प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में भाग लिया जबकि कुछ ने अप्रत्यक्ष सहयोग दिया।

1. गोरखा सैनिकों का योगदान :

ब्रिटिश भारतीय सेना में बड़ी संख्या में नेपाली गोरखा सैनिक भर्ती थे। यद्यपि वे ब्रिटिश सेना का हिस्सा थे, फिर भी कई गोरखा सैनिकों ने स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति सहानुभूति दिखाई। कुछ सैनिकों ने ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध किया और स्वतंत्रता सेनानियों को गुप्त जानकारी उपलब्ध कराई। गोरखा सैनिकों की वीरता और साहस भारतीय जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। कई स्थानों पर गोरखा समुदाय के लोगों ने राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने में सहायता की।

2. क्रांतिकारी संगठनों को सहयोग :

भारतीय क्रांतिकारी संगठन जैसे अनुशीलन समिति तथा हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन को नेपाल के कुछ क्षेत्रों से सहयोग प्राप्त हुआ। नेपाल की भौगोलिक स्थिति के कारण क्रांतिकारियों को कभी–कभी सुरक्षित आश्रय और आवाजाही के अवसर मिलते थे। सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नेपाली नागरिकों ने कई बार क्रांतिकारियों को शरण, भोजन और आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे ब्रिटिश पुलिस के लिए

क्रांतिकारियों को पकड़ना कठिन हो जाता था।

3. असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों में सहभागिता :

महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन (1920 ई.) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930 ई.) का प्रभाव नेपाल के लोगों पर भी पड़ा। भारत में रहने वाले नेपाली समुदाय के अनेक लोगों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थन और जनसभाओं में भागीदारी के माध्यम से आंदोलन को मजबूत किया। इन आन्दोलनों में भाग लेने वाले नेपाली कार्यकताओं ने अहिंसा, सत्य और स्वराज के गांधीवादी सिद्धांतों को अपनाया और उन्हें नेपाल में भी प्रचारित किया।

नेपाली नेताओं और बुद्धिजीवियों की भूमिका :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने नेपाल के राजनीतिक नेताओं और बुद्धिजीवियों को भी प्रभावित किया।

1. बी. पी. कोइराला :

बी. पी. कोइराला नेपाल के प्रमुख लोकतांत्रिक नेताओं में से थे। उन्होंने भारत में शिक्षा प्राप्त की और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से गहराई से प्रभावित हुए। भारत में रहते हुए उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े नेताओं के साथ संपर्क स्थापित किया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के समर्थन के साथ–साथ नेपाल में लोकतंत्र स्थापित करने के लिए भी संघर्ष किये। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से प्राप्त अनुभवों का उपयोग उन्होंने नेपाल के लोकतांत्रिक आंदोलन में किया।

2. मातृका प्रसाद कोइराला :

मातृका प्रसाद कोइराला ने भी भारत में राजनीतिक गतिविधियों में भाग लिया। वे भारतीय राष्ट्रीय नेताओं के संपर्क में रहे और स्वतंत्रता, लोकतंत्र तथा जनाधिकारों के विचारों का समर्थन करते थे।

3. गिरिजा प्रसाद कोइराला :

हालांकि उनकी सक्रिय राजनीतिक भूमिका बाद के काल में अधिक दिखाई देती है, लेकिन कोइराला परिवार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित था। इस परिवार ने भारत–नेपाल लोकतांत्रिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत में बसे नेपाली समुदाय का योगदान :

भारत के विभिन्न राज्यों में बड़ी संख्या में नेपाली समुदाय निवास करता था। विशेष रूप से दार्जिलिंग, देहरादून, असम, उत्तर प्रदेश और बिहार में रहने वाले नेपाली मूल के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

इन लोगों ने :–

- जनसभाओं में भाग लिया,
- सत्याग्रह आंदोलनों का समर्थन किया,
- राष्ट्रीय कोष में आर्थिक योगदान दिया,
- स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय प्रदान किया,
- ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में सहयोग किया।

कई नेपाली युवाओं को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार भी किया और उन्हें जेल की सजा भुगतनी पड़ी।

आजाद हिंद फौज और नेपाली सेनानी :

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया। इस सेना में विभिन्न समुदायों के लोगों के साथ नेपाली मूल के सैनिकों ने भी भाग लिया। आजाद हिंद फौज में नेपाली सैनिकों ने भारत की स्वतंत्रता के लिए सैन्य संघर्ष में योगदान दिया। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन का अंत पूरे दक्षिण एशिया के लिए लाभकारी होगा। इन सैनिकों ने कठिन परिस्थितियों में युद्ध किया और स्वतंत्रता की भावना को मजबूत बनाया। यद्यपि आजाद हिंद फौज सैन्य रूप से सफल नहीं हो सकी, लेकिन उसने भारतीय जनता में राष्ट्रवाद की भावना को अत्यंत प्रबल किया।

नेपाली महिलाओं का योगदान :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेपाली महिलाओं ने भी अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आंदोलनकारियों को भोजन, आश्रय और आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए। कुछ महिलाओं ने राजनीतिक बैठकों में भाग लिया तथा स्वतंत्रता और लोकतंत्र के विचारों के प्रचार में सहयोग किया। महिलाओं का यह योगदान अक्सर इतिहास में कम उल्लेखित है, लेकिन स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता में उनका महत्वपूर्ण स्थान था।

निष्कर्ष :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेपाली सेनानियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रही है। उन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में भारत की स्वतंत्रता के लिए योगदान दिया। गोरखा सैनिकों की वीरता, क्रांतिकारियों को सहायता, गांधीवादी आंदोलनों में भागीदारी, आजाद हिंद फौज में योगदान तथा लोकतांत्रिक विचारों के प्रसार जैसे अनेक कार्यों ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूत बनाया। नेपाली नेताओं, बुद्धिजीवियों और आम नागरिकों ने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता और न्याय की लड़ाई किसी एक देश की सीमा में सीमित नहीं होती। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भागीदारी भारत और नेपाल के ऐतिहासिक संबंधों की गहराई को दर्शाती है। यह योगदान दोनों देशों के साझा इतिहास की अमूल्य धरोहर है और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

इस प्रकार, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नेपाली सेनानियों का योगदान केवल भारत की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि उसने दक्षिण एशिया में लोकतंत्र, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की चेतना को भी मजबूत किया।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामलखनय आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 1987.
2. अहीर, राजीवय आधुनिक भारत का इतिहास, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 1999.
3. चंद्र, बिपिन एवं अन्यय भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष 1990.
4. कुमार, अमितय स्वतंत्रता आंदोलन के विस्मृत सेनानी, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण वर्ष

2023.
5. राय, अमित कुमारय भारतीय स्वतंत्रता का क्रांतिकारी आन्दोलन, निशा साइंटीफिक, दिल्ली, वर्ष 2020.
6. गुप्त, मन्मथनाथय भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, वर्ष 2019.
7. गुप्त, मन्मथनाथय क्रांतिकारी आंदोलन एक दस्तावेज, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2021.
8. अहमद, इमत्याजय भारत का स्वतंत्रता संघर्ष और बिहार, नेशनल पब्लिकेशन, पटना, वर्ष 2023.
9. भास्कर, अरविन्दय भारत का स्वतंत्रता संग्राम, कलाम पब्लिकेशन, सीकर (राजस्थान), तृतीय संस्करण वर्ष 2024.

ईमेल – princekumarboby@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 165-170

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Varanasi : A Historical Hub for Nepali Scholars and Education

Dr. Priya Singh

Assistant Professor, Department of Commerce and Management Studies

Mahatma Gandhi Kashi Vidhyapith University, Varanasi.

Abstract :

For centuries, Varanasi, sometimes referred to as Kashi, has been South Asia's leading hub for Sanskrit study. This essay looks at the city's function as a transnational center of learning for Nepali academics between the 18th and the middle of the 20th centuries. It makes the case that Varanasi served as a dense guru-shishya network that selectively brought textual knowledge, pedagogical techniques, and social legitimacy to the Kathmandu Valley, rather than just a site of study, using archival sources, biographical narratives, and manuscript evidence. The results show how, prior to the development of formal education in Nepal, this cross-border academic movement influenced the country's early modern intellectual elite and administrative practices.

Keywords : Sanskrit education, knowledge transfer, guru-shishya, Varanasi, Nepal, and the Kathmandu Valley.

Introduction :

Since the Middle Ages, Varanasi has been referred to as the "intellectual capital of India." Kashi was seen by Nepali scholars, especially Brahmins and Newars from the Kathmandu Valley, as the pinnacle of Sanskrit knowledge, religious authority, and manuscript access. While Nepal had indigenous centers of learning, Varanasi offered scale, diversity of gurus, and connection to wider Indic scholarly debates.

For more than two millennia, Varanasi, sometimes referred to as Kashi or Banaras, has played a pivotal role in South Asia's intellectual and religious environment. Known as the "eternal city" and the "seat of learning" in Sanskrit texts, Varanasi became home to a large number of pathshalas, monasteries, and individual pandits who were experts in a variety of fields, including Jyotisha (astronomy/astrology), Nyaya (logic), Dharmashastra (law), and Vyakarana (grammar) (Bhattacharya,

2002). During the Mughal and British eras of the 18th century, the city developed into a pan-Indian center where scholars from all over the subcontinent came to receive sophisticated Sanskrit instruction and ceremonial validity.

Nepalese academics, especially those from Varanasi's Kathmandu Valley, had a special standing. No suggestions During the Malla and early Rana eras, Nepal's own educational institutions were mostly temple-based, court-affiliated institutions that mainly relied on foreign instructors and books. Although there was a strong indigenous heritage of Newar and Brahmanical learning in the Kathmandu Valley, Varanasi was the most esteemed location for advanced study due to its large number of institutions, variety of gurus, and availability of manuscript libraries. From the 18th until the early 20th century, travelogues and memoirs frequently mention Nepali aristocrats sending their sons to Kashi for schooling before they became administrators, astrologers, and court pandits. The actual trip, which frequently took weeks on foot, highlighted the importance of studying in Kashi from a cultural and intellectual standpoint.

Two interconnected factors—religious capital and academic infrastructure—help to explain Varanasi's significance for Nepali education. First, learning at Kashi, one of Hinduism's seven sacred towns, gave one ritual authority when they returned. In Nepal's religious and administrative institutions, a scholar who was confirmed by a Varanasi guru was given the social title of "Kashi-pandit" (Burghart, 1993). This was especially important in a society where the Malla monarchs and Rana prime ministers relied heavily on astrology, legal interpretation, and ritual performance.

By analyzing Varanasi's role as an educational center for Nepali academics between 1700 and 1950, this research fills that gap. The main study topic is: How was knowledge transported from Kashi to the Kathmandu Valley, and how did Varanasi function as a center for Nepali education. This study contends that Varanasi functioned more as a dense guru-shishya network than as an institutional "university" for Nepalis, drawing on manuscript colophons, biographical sources, and archival documents. Three main strategies were used to impart knowledge: social legitimation through guru certification, pedagogical transfer of pathshala teaching methods, and textual transmission through manuscript copying.

About Varanasi :

One of the oldest continually inhabited cities in the world is Varanasi. It was among the first significant cities in the middle Ganges valley. By the second millennium BCE, Varanasi was a commercial and industrial hub known for its ivory works, fragrances, muslin and silk fabrics, and sculpture. It was also a home of Vedic religion and philosophy. During the time of the Buddha (6th century bce), it served as the capital of the kingdom of Kashi. The Buddha delivered his first sermon

in the nearby city of Sarnath. After then, Varanasi suffered throughout the three centuries that the Muslims occupied it, starting in 1194. During the time of Muslim domination, many of the city's Hindu temples were demolished, and learned academics migrated to other areas of the nation. The city's religious and cultural activities were somewhat alleviated in the sixteenth century by the Mughal ruler Akbar. Another setback occurred in the late 17th century during the reign of Aurangzeb, the Mughal emperor, but a new renaissance was later supported by the Marathas. After gaining independence in the 18th century, Varanasi continued to be an economic and religious hub during British control.

The city was formerly known as Kashi before being renamed Varanasi. "Kashi" is derived from "Kasha," which literally means "brightness," and meaning "the luminous one" or "city of the light." Another derivative is the name Varanasi. The city was given the name Varanasi because it is situated on the banks of the Varuna and Asi tributaries of the Ganges. The city is renowned for its legacy in music, art, culture, religion, and literature in addition to being one of the most significant pilgrimage sites. Although the origins of the city are still unknown, it was said to be the residence of Lord Shiva and Goddess Parvati.

Educational :

In addition to gaining academic knowledge, people become interested in and enthusiastic about learning about cultural characteristics, religious beliefs, standards, norms, values, and traditions. These elements are ingrained in people through their families, educational institutions, and training facilities. The Banaras Hindu University teaches Hindu religious beliefs, Sanskrit literature, art, languages, science, architecture, technology, mathematics, science, and music. Pandit Madan Mohan Malviya, a great patriot, educationist, social activist, and independence fighter, founded the institution in 1916. He understood the importance of education. He believed that as the educational system developed, the society and the nation would also grow and develop.

People in the city are pursuing careers as doctors, lawyers, professors, engineers, and other professions. The people are learning about cultural characteristics and religious principles in addition to academic subjects. They are becoming more interested in dancing and music. The reason for this is that they believe that developing their creative skills will help them achieve their professional objectives and improve their living circumstances. In the modern era, education has played a major role in both improving people's quality of life and starting the city's advancement and growth.

Essential Aspects of Ancient Education :

From the time of Rigveda onward, our traditional training system developed over time, focusing on the whole development of the individual by addressing both the internal and external selves.

The framework focused on the positive, tangible, ethereal, and intellectual aspects of existence. It emphasized traits like humility, integrity, self-control, independence, and respect for all expressions. Students were taught to appreciate the balance between people and the natural world. In order to fulfill responsibilities to oneself, one's family, and society, teaching and learning adhered to the principles of the Vedas and Upanishads, including all facets of life. The educational framework focused on both learning and the real course of events. Overall, a strong body and sound mind were emphasized. It goes without saying that training in India has a history of being practical, sober-minded, and life-giving.

Varanasi and education :

Varanasi is a melting pot where modern science and traditional wisdom coexist and thrive in harmony. It is a center for education that draws students from all over the world who want to learn from its esteemed instructors and academics in a variety of subjects. Since its founding, Varanasi has served as the capital of Sarvavidya, the knowledge of all sciences, which is at the core of its legacy. The foundation of India's legacy is Sanatan Dharma, its culture, and the Sanskrit language, all of which are fostered here in Varanasi, according to the Vedas, the oldest and most revered books of Hinduism in the world. Thanks to Dr. Sampurnanand's imaginative efforts, this institution eventually transformed into the Sampurnanand Sanskrit University in 1974. The Central Hindu Boys' School in Varanasi was established by Annie Besant in 1898 and subsequently changed its name to Central Hindu College. Banaras Hindu institution was founded in 1916 as a result of Pandit Madan Mohan Malviya's appeal; it today occupies 1365 acres and is the largest residential institution in Asia. With 140 departments, 14 faculties, and six institutes, the university serves students from 40–45 different countries.

Institutions like Uday Pratap Mahavidyalaya, founded in 1909 by Naresh Uday Pratap Singh Judeo ji of Bahraich district, demonstrate Varanasi's dedication to education. With the Dalai Lama's approval, the Indian government established the Central Institute for Higher Tibetan Studies in Sarnath in 1967 for the purpose of educating Tibetans. Shiv Prasad Gupta and Bhaagwan Das founded Kashi Vidyapeeth during the liberation fight, and Mahatma Gandhi lay the foundation stone. Later on, this establishment would be titled Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth.

There are numerous institutions and schools in Varanasi that offer education in a wide range of subjects, including modern science, art, music, medicine, and old wisdom. It continues to be a top educational destination, providing the chance to absorb India's rich and varied culture while learning from the best. Come explore this city of enlightenment and wisdom, where the past and present coexist together to provide an unparalleled educational experience.

Nepal and Varanasi: An International Religious and Educational Hub :

For more than two millennia, Nepal, a Himalayan country that shares a 1,770-kilometer open border with India, and Varanasi, which is located on the banks of the Ganga in Uttar Pradesh, India, have maintained close historical, religious, and cultural relations. Geographically, Varanasi is the most accessible significant Indian center of study and pilgrimage for Nepali communities, situated around 320 kilometers south of the Kathmandu Valley (Whelpton, 2005). From the medieval era until the middle of the 20th century, Varanasi was an external but crucial institution in Nepal's social and educational development due to its close vicinity, shared Hindu cosmology, and Sanskrit intellectual traditions. In terms of religion, Varanasi—known as Kashi in Sanskrit texts—has been recognized as one of Hinduism's seven holiest towns and as Lord Shiva's residence, Kashi Vishwanath . Kashi is second only to Pashupatinath in Kathmandu in the eyes of Nepali Hindus.

Despite this long-standing relationship, research on Nepal-India ties has mostly focused on post-1950 diplomatic and economic aspects, with little attention paid to the pre-modern educational and religious connection centered on Varanasi. In order to explain how Nepal formed its intellectual elite and ceremonial institutions prior to the emergence of local colleges, this study contends that an understanding of Varanasi's significance is crucial. For Nepal, Varanasi served as a "transnational guru-shishya hub" that supplied social networks, education, and religious capital that the Kathmandu Valley was unable to produce on its own until the middle of the 20th century.

In conclusion :

The significance of Varanasi for Nepali intellectuals from 1700 to 1950 shows how education in South Asia was traditionally network-driven and international. Beyond knowledge, the city offered access to the wider Indic intellectual world, legitimacy, and ancestry. The development of Nepal's early modern administrative and religious elite was largely dependent on this Varanasi relationship. To more accurately map these networks, future studies should digitize manuscript colophons.

There are restrictions on this study. Quantifying the extent of Nepali student movement is hampered by incomplete student registrations from Varanasi pathshalas and undigitized manuscripts in the National Archives of Nepal. In order to overcome this, future study might digitize manuscript colophons to build a database of Nepali scribes and gurus in Kashi. Additionally, oral history interviews with the families of scholars who lived before 1950 could be used to recover narratives that are missing from archives.

For more than 250 years, Varanasi was an external but crucial institution for Nepal's intellectual development. The city supplied aristocratic networks, education, and religious capital that the Kathmandu Valley was unable to provide on its own until the middle of the 20th century. Therefore,

understanding this Varanasi-Nepal relationship is essential to understanding the relational character of education in South Asia as well as the historical foundations of Nepal's academic legacy.

References :

- Bhattacharya, S. (2002). Education and the dying culture: Crisis of the humanities in India. Delhi: Oxford University Press.
- Burghart, R. (1993). The conditions of listening: Essays on religion, history and politics in South Asia. Delhi: Oxford University Press.
- Dalmia, V. (1997). The nationalization of Hindu traditions: Bharatendu Harishchandra and nineteenth-century Banaras. Delhi: Oxford University Press.
- Khanal, D. (2016). Historical development of education in Nepal. Journal of Education and Practice, 7(15), 47–52.
- Lannoy, R. (1999). The speaking tree: A study of Indian culture and society. Delhi: Oxford University Press.
- Onta, P. (1996). The creation of an 'academic field' and its early development in Nepal. Studies in Nepali History and Society, 1(2), 303–353.
- Pinch, W. R. (2006). Who's a Hindu? Religious boundaries among South Asian communities. Bloomington: Indiana University Press.
- Stiller, L. F. (1993). Nepal: Growth of a nation. Kathmandu: Human Resources Development Research Center.
- Tiwari, S. R. (2001). The brick and the bull: An account of historical architecture of the Kathmandu Valley. Kathmandu: Himal Books.
- Whelpton, J. (2005). A history of Nepal. Cambridge: Cambridge University Press.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 171-176

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Climate Change and the Cryosphere: Melting Glaciers and Challenges in Hindu Kush Himalayan

Dr. Ragini

Assistant Professor, Dept. of Sociology,

Arya Kanya Degree College, AoU, Prayagraj.

Abstract -

The Hindu Kush Himalayan (HKH) region, widely recognized as the Earth's "Third Pole," holds the largest reserve of glacial ice outside the polar regions. Climate change is driving an unprecedented and accelerated retreat of these glaciers, primarily due to elevation-dependent warming (EDW). This paper examines the cascading socio-hydrological and economic challenges faced by India and Nepal as a consequence of this cryosphere decline. Focusing on hydrological alterations, the escalating threat of Glacial Lake Outburst Floods (GLOFs), impacts on transboundary hydropower infrastructure, and climate-induced migration, the paper synthesizes recent scientific literature to map out regional vulnerabilities. The findings underscore the critical need for transboundary water governance, advanced early-warning infrastructure, and global recognition of "Loss and Damage" within international climate frameworks.

Introduction -

The Hindu Kush Himalayan (HKH) region is the freshwater tower of South Asia. it has the highest concentration of snow and glaciers outside the polar region, and thus has been called the Third Pole. The snow and glacier meltwater plays a pivotal role in the water supply for those river basin that are arid downstream, in particular where there are large irrigation system that depend on upstream water resources. Change in the glaciers may have a significant impact on the quantity and timing of water availability. A comprehensive understanding of the extent and nature of change in glaciers will support downstream hydrological planning and water resource management.

The Himalayan region, home to some of the world's largest glacial systems outside of the polar regions, provides crucial freshwater to South Asia's densely populated basins, including the Indus, Ganges, and Brahmaputra rivers (Immerzeel et al., 2010; Bajracharya et al., 2014). Himalayan

glaciers govern seasonal water flows, support agricultural economies, generate electricity, and supply drinking water to millions of people (Molden et al., 2014; Sharma and Choudhury, 2021). However, anthropogenic climate change is causing significant alterations to these glaciers, with far-reaching implications for hydrology, ecology, and human systems (Nie et al., 2021; Molden et al., 2022). Increasing temperatures, altered precipitation patterns, and the intensification of extreme weather events have accelerated glacier retreat, causing a cascade of hydrological and geomorphological changes that endangers both natural ecosystems and human societies (Bolch et al., 2012; Kraaijenbrink et al., 2017; Mankotia et al., 2025). Glaciers in the Himalayas have been retreating at alarming rates since the mid-twentieth century, with major mass loss documented in the 1990s, coinciding with rising global temperatures (Maurer et al., 2019; Bolch et al., 2012; Baldacchino et al., 2025). Several interacting factors are driving this retreat, including less snowfall, increased melting rates due to warmer air temperatures, and a shift from snow to rain in several locations (Shea et al., 2015; Fujita et al., 2011; Ahmed et al., 2021, 2022; Rawat et al., 2023a). In addition, decreasing albedo due to decreased snow cover and prolonged melt seasons accelerate ice loss (Immerzeel et al., 2013).

Projections indicate that meltwater contributions to river flows will increase temporarily until mid-century but subsequently decline, posing severe risks to water availability in downstream regions, particularly during dry seasons (Huss and Hock, 2018; Lutz et al., 2014). The hydrological implications of glacier retreat include altered flow patterns, increased sediment loads, and increased risks from glacial hazards (Shugar et al., 2021a,b; Taylor et al., 2023; Sattar et al., 2025). The catastrophic landslide in Uttarakhand, India, in February 2021, resulted from a massive rock and ice avalanche that triggered deadly debris flows, damaging two hydropower plants and leaving over 200 people dead or missing. This disaster highlights the increasing risks in the Himalayas, driven by rising temperatures and rapid development (Shugar et al., 2021a,b).

The Himalayan cryosphere is the structural baseline for Asia's water security, acting as the "Water Tower" that feeds ten major transboundary river systems. Among these, the Indus, Ganges, and Brahmaputra basins directly sustain the lives and livelihoods of nearly two billion people across mountain communities and downstream plains. However, the region is highly susceptible to anthropogenic climate change. Warming over the Himalayas is occurring at rates higher than the global atmospheric average, with higher elevations experiencing accelerated temperature spikes—a mechanism known as elevation-dependent warming (EDW). The resulting glacier degradation is transforming the socio-ecological landscape of India and Nepal, turning a steady natural resource into an unpredictable variable capable of driving sudden disasters and chronic long-term resource stress.

Recent glaciological research confirms that ice loss in the HKH has accelerated drastically since the turn of the century. The landmark *Water, Ice, Society, and Ecosystems in the Hindu Kush Himalaya (HI-WISE)* report published by the International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD) found that Himalayan glaciers disappeared **65% faster in the 2010s** compared to the preceding decade. On current global emissions pathways, these glaciers are projected to lose up to **80% of their current volume by the year 2100**. Remote sensing data analyzed by Maharjan & Sherpa (2026) highlights that while larger glaciers hold the bulk of water reserves, the region's smallest glaciers are shrinking most rapidly. These smaller formations make up nearly three-quarters of the region's glaciers, leaving local high-mountain communities highly vulnerable to localized water shock. The timeline of Himalayan river hydrology is undergoing a structural shift. The standard scientific consensus indicates that accelerated melting causes a temporary inflation in river discharge. However, this phase precedes the arrival of **"Peak Water"**—the point at which a glacier's meltwater contribution reaches its maximum volume before permanently declining due to shrinking ice mass. For the majority of the river basins supplying India and Nepal, peak water is projected to occur around the **mid-century**. Post-peak, river basins will face a sharp reduction in glacial meltwater contributions, moving from a melt-dominated regime to one heavily reliant on erratic, monsoon-driven precipitation. This transition poses severe risks to agricultural predictability in the Indo-Gangetic plains and the Terai region of Nepal.

Key Challenges :

- **Geomorphic Hazards : Glacial Lake Outburst Floods (GLOFs)** As glaciers retreat up mountain valleys, they leave behind depressions filled with meltwater, blocked only by unstable loose rock and ice formations called moraine dams. These proglacial lakes are growing in both number and surface area. When a moraine dam undergoes structural failure—often triggered by ice avalanches, heavy cloudbursts, or seismic activity—it unleashes a GLOF. These fast-moving, high-volume floods sweep massive loads of sediment and debris downstream. In Nepal, lakes like *Imja Tsho* and *Tsho Rolpa* have long been monitored as high-risk hazards. In India, the vulnerability of these systems was made clear by the 2023 South Lhonak Lake GLOF in Sikkim, which breached its banks and destroyed downstream civil infrastructure, highlighting the immediate hazard profile of these high-altitude water bodies.
- **Hydropower Vulnerability and Infrastructure Damage :** Both India and Nepal rely on the steep topography of the Himalayas to scale up their renewable energy capacity via hydropower. However, this infrastructure is physically exposed to the changing cryosphere: **Structural Destruction:** Hydropower plants built along Himalayan river channels sit directly in the path of

potential GLOFs and associated landslides. **Sedimentation:** Accelerated glacial erosion increases the sediment load carried by rivers. High siltation wears down turbine blades rapidly, reducing the operational lifespan and economic viability of power stations. **Flow Unpredictability:** Severe seasonal variation—surges during intense melt periods and dry spells during winter—complicates power grid management and compromises steady energy generation.

- **Climate-Induced Migration and Social Inequality :** The impacts of melting glaciers are not confined to physical geography; they alter the social fabric of mountain societies. In the high-altitude villages of Nepal and the Indian Himalayan Region (IHR), agriculture is heavily dependent on predictable spring snowmelt and glacial runoff. As local water sources dry up or become unstable, crop failures and livestock deaths rise. This dynamic acts as a primary driver of **climate-induced out-migration**. Research shows that younger demographics are increasingly forced to migrate to urban centres or foreign markets for work, leaving behind aging populations to manage increasingly fragile, disaster-rone rural ecosystems.

Policy Recommendations and the Path Forward :

- **Transitioning to Transboundary Data Sharing :** Because glaciers and the river basins they feed cross international borders, separate national monitoring efforts are insufficient. India and Nepal must co-develop standardized, real-time data-sharing protocols for high-altitude weather telemetry and lake level monitoring to build effective, cross-border early warning systems.
- **Climate-Resilient Infrastructure Planning :** Infrastructure investments, particularly hydropower and highways, must incorporate future cryosphere hazard mapping into their design phases. Engineering parameters must plan for higher baseline flood levels and increased sediment loads rather than relying strictly on historical hydrological data.
- **Institutionalizing Loss and Damage :** International climate policy must acknowledge that a portion of Himalayan ice loss is now irreversible. Developing nations like Nepal and India require sustained access to global financial mechanisms—such as the UNFCCC Loss and Damage Fund—to compensate mountain communities experiencing displacement and the loss of cultural heritage due to climate impacts.

There is a need to :

- **Establish an integrated national cryosphere information system** as a long-term mechanism, linked with global cryosphere monitoring systems to develop standardized approaches for tracking changes. Advancing research in cryosphere monitoring is critical.
- **Institutionalize regular reporting** on glacier and snow changes at scales relevant to local, national, regional, and global needs. Assessments of short-, medium-, and long-term water availability

under current and future de-glaciated conditions should be prioritized.

- **Integrate glacier preservation** into climate strategies, water management policies, and disaster risk-reduction plans. Partnerships with international organizations, the private sector, academia, and NGOs are essential to leverage expertise, resources, and funding.
- **Raise awareness** at all levels about the impacts of glacier change on downstream communities, and ecosystems. Urgent adoption of adaptation strategies is needed.
- **Ensure hydropower projects** conduct comprehensive climate vulnerability assessments. Integrated river basin management must be implemented to rejuvenate and sustain water resources.

Conclusion :

The Hindu Kush Himalayan (HKH) region, often referred to as the "Third Pole," is not merely a geographic landmark; it is a vital life-support system for nearly two billion people. The rapid melting of glaciers due to climate change represents an existential crisis that threatens the region's ecological integrity and the socio-economic stability of South Asia. While the immediate consequences manifest as devastating floods, GLOFs (Glacial Lake Outburst Floods), and landslides, the long-term reality is even more concerning: the potential collapse of major river systems that underpin the water and food security of the entire continent. In conclusion, addressing the climate crisis in the HKH region requires a shift from passive observation to urgent, multi-dimensional action. This must be built upon three foundational pillars: 1. Global Climate Mitigation, 2. Transboundary Cooperation 3. Local Resilience and Adaptation. The melting glaciers of the Hindu Kush Himalayas are an early warning signal for the planet. The stability of this region is non-negotiable for human survival in Asia. It is a moral responsibility to ensure that the "water towers of the world" continue to sustain life for generations to come.

References :

- Bajracharya, S. R., Maharjan, S. B., Shrestha, F., Guo, W., Liu, S., Immerzeel, W., & Shrestha, B. (2015). The glaciers of the Hindu Kush Himalayas: current status and observed changes from the 1980s to 2010. *International Journal of Water Resources Development*, *31*(2), 161–173. https://doi.org/10.1080/07900627.2015.1005731
- ICIMOD. (2023). *Water, ice, society, and ecosystems in the Hindu Kush Himalaya: An outlook*. (Wester, P., Chaudhary, S., Chettri, N., Jackson, M., Maharjan, A., Nepal, S., & Steiner, J. F. [Eds.]). International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD). https://doi.org/10.53055/ICIMOD.1028
- Maharjan, S. B., & Sherpa, T. C. (2026). *Changing dynamics of glaciers in the Hindu Kush*

Himalayan region from 1990 to 2020. International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD). https://doi.org/10.53055/ICIMOD.1122

- Matta, G., Kumar, A., Singh Tomar, D., & Kumar, R. (2025). Climate change in the Himalayan region: susceptible impacts on environment and human settlements. *Frontiers in Environmental Science*, *13*. https://doi.org/10.3389/fenvs.2025.1550843
- Molden, D. J., Shrestha, A. B., Immerzeel, W. W., Maharjan, A., Rasul, G., Wester, P., Wagle, N., Pradhananga, S., & Nepal, S. (2021). The Great Glacier and Snow-Dependent Rivers of Asia and Climate Change: Heading for Troubled Waters. In *Water Resources Development and Management* (pp. 223-250). Springer Singapore. https://doi.org/10.1007/978-981-16-5493-0_12
- Pasa, R. B. (2026). "Leaving No One Behind" or "forced to leave?": a qualitative study of climate change impacts on rural communities along the Lower Great Himalayan Trail, Nepal. *Climate and Development*. https://doi.org/10.1080/17565529.2026.2666877
- Tiwari, P. C. (2015). *Climate Change and Rural Out-migration in Himalaya*. Academic Press/ ResearchGate. https://doi.org/10.13140/RG.2.1.3323.1128
- Chettri, N., Shakya, B., Thapa, R., & Sharma, E. (2008). Status of protected area system in the Hindu Kush-Himalayas: an analysis of PA coverage. International Journal of Biodiversity Science and Management, 4, pp.164-178.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 177-179

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Use of Nepali Handicrafts in Indian Temples

Rajan Kar, Researcher,
Dr. Sephali Pradhan, Supervisor,
Shivmani Home, Near Trauma Center, Talheti, Aburoad, Raj, 307510

Abstract :

Both Nepal and India share thousands of years of interactions in terms of culture, religion, and art. One such important interaction includes the utilization of handicrafts from Nepal in Indian temples. Nepali artists are well known for their mastery in woodcarving, metal sculpting, stonework, and other traditional decorative arts. Such handicrafts have found great utility in several Indian temples, adding more beauty and sacredness to them. In this regard, this research paper will analyze the historical background, different types of Nepali handicrafts found in Indian temples, the cultural importance of such crafts, and how they have helped to enhance the cultural ties between both nations.

Keywords : Nepali handicrafts, Indian temples, cultural heritage, Indo-Nepal relations, temple art, traditional craftsmanship.

Introduction :

For many years, India and Nepal have had strong relations and associations, culturally, religiously, and historically. There is much that the two countries share when it comes to traditions. They both have similar traditions, which originate from Hinduism and Buddhism. Art and architecture have been significant in reflecting these traditions. Of all the various ways through which culture was expressed, the Nepalese handicrafts have stood out because of their artistic and spiritual values.

There is a wide range of handicrafts in Nepal, and some of the popular handicrafts include those made of metals, wood carvings, stone sculptures, and those that are associated with religion. These handicrafts are held in high esteem in the Indian temples owing to their intricacy, durability, and sacredness.

Historical background :

The interaction of arts among Indian and Nepalese cultures can be traced back to time immemorial. The trading routes which linked the Himalayas made it possible for craftspeople, scholars,

and tradesmen to migrate. At various eras, temples needed craftspeople from Nepal for building and decorating temples.

Newars from Kathmandu valley gained repute for being expert temple architects and metal casters. Artistic contributions of Newars were felt in many parts of South Asia where religions thrived. With growing popularity of Hinduism and Buddhism in both countries, art was developed further.

Nepali Handicrafts Employed in Indian Temples :

1. Metal Idols :

Artisans in Nepal are famous for making idols made from metal like bronze, brass, and copper of various gods and goddesses worshipped in Hinduism like Shiva, Vishnu, Durga, Ganesh, and Lakshmi. Many temples in India house idols made in Nepal because of their excellent craftsmanship and religious significance.

2. Wooden Craftsmanship :

Wood carving, especially traditional Nepalese woodwork is popular with Indian temple architects who employ carved wooden doors, windows, pillars, and other elements that are part of the temple decoration.

3. Bells and Temple Objects :

The craftsmen in Nepal make various items that are required for worship ceremonies such as temple bells, lamps, incense holders, etc.

4. Stone Carvings :

Idols, images, and sculptures made in Nepal are highly esteemed for religious practices, and thus Nepali craftsmen have produced several stone carvings in their workshops.

5. Religious Decorations :

Other artifacts such as prayer wheels, ceremony ornaments, and plaques also find use in temples and pilgrimages in India.

Significance from Cultural and Spiritual Perspective :

The role of Nepali handicrafts in contributing to the spiritual atmosphere within the Indian temples cannot be overlooked. Art pieces that are used for religious purposes are more than just mere decorations as they serve as tools for devotion and meditation. This art form encourages devotion and helps in connecting with the culture and spirituality.

Using such handicraft pieces in the temples is a way of acknowledging the common religious tradition between the two countries. Here, art forms become the meeting point of both art and devotion that have been nurtured over the years.

Moreover, having these pieces in the temples is an example of respect and cultural interaction.

Economic and Social Effect :

Nepali craft products have economic benefits in India since the country needs to meet its demand. Traditional crafts are preserved, and young people can learn to pass on their skills to future generations.

Furthermore, the craft industry helps in tourism and interaction between people. Devotees who visit temples tend to appreciate the artwork done in them, thus promoting cultural awareness and interdependence.

Moreover, joint ventures among artists, cultural organizations, and religions enhance knowledge and preservation of the traditional arts.

Challenges and Conservation :

Although handicrafts have a lot of cultural significance, they still have some problems that need addressing :

- Competition from machinery-produced goods.
- Loss of interest from the younger generation of craftsmen.
- Financial difficulties faced by traditional craft businesses.
- Potential loss of traditional skills and patterns.

Conclusion :

The importance of the inclusion of Nepali handicrafts in the Indian temples lies in the fact that these handicrafts serve to enhance the temples by virtue of their artistry, religious connotations, and cultural importance. This is further evidence of the long history of relations between the two countries and the common traditions of religion that they have developed. Through such a union in culture, both countries will be able to develop a partnership that will guarantee the continuity of these unique traditions.

References :

- UNESCO reports on traditional crafts and cultural heritage.
- Books on South Asian temple architecture and art history.
- Studies on Indo-Nepal cultural relations.
- Research articles on Newar craftsmanship and Himalayan art traditions.
- Publications on traditional handicrafts and heritage preservation.

Mob- 7976164739

Email id: rajankar67@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 180-183

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

JANAKPUR : A LIVING CENTER OF RAMAYANA-ERA CULTURE

Ram Ashish Yadav
Research Scholar,
Singhania University, Pachheribari, Jhunjhunu, Rajasthan

ABSTRACT :

Janakpur, located in the Madhesh Province of Nepal, is one of the most revered religious and cultural centers in South Asia. Traditionally recognized as the birthplace of Goddess Sita and the capital of the ancient Kingdom of Mithila, the city occupies a central place in the narrative of the Ramayana. Unlike many historical sites that exist only in memory or archaeological remains, Janakpur continues to preserve and practice traditions associated with the Ramayana era. Its temples, festivals, rituals, folklore, art forms, and social customs collectively represent a living heritage that has survived through centuries. The city's cultural identity is deeply linked to the values and ideals embodied by Sita and King Janaka, whose stories continue to inspire devotion and moral conduct among millions of people. Janakpur is also an important center of Mithila civilization, known for its rich artistic traditions, especially Mithila painting, folk music, and ceremonial practices. Festivals such as Vivah Panchami and Ram Navami attract thousands of pilgrims from Nepal and India, strengthening cultural and religious ties between the two countries. In recent years, Janakpur has emerged as an important destination for religious tourism and cultural diplomacy, contributing to local economic development and regional cooperation. This paper examines the historical significance of Janakpur, its association with the Ramayana tradition, its role in preserving Mithila culture, and its contemporary relevance as a center of pilgrimage and cultural heritage. The study argues that Janakpur remains a vibrant symbol of cultural continuity where ancient traditions coexist with modern society, making it one of the most significant living centers of Ramayana-era culture in South Asia.

Keywords : Janakpur, Ramayana Tradition, Mithila Civilization, Cultural Heritage.

INTRODUCTION :

The Ramayana is one of the most influential epics in human civilization and continues to

shape the religious, cultural, and moral values of millions of people across South Asia. The epic narrates the life and ideals of Lord Rama, Goddess Sita, and other revered figures whose stories have become deeply embedded in social traditions and cultural practices. Among the many places associated with the Ramayana, Janakpur occupies a unique and sacred position. It is traditionally recognized as the birthplace of Goddess Sita and the capital of ancient Mithila, ruled by the philosopher-king Janaka. Janakpur is not merely a historical or mythological location. It is a living cultural center where traditions linked to the Ramayana continue to flourish. Pilgrims, scholars, and tourists visit the city throughout the year to experience its spiritual atmosphere and cultural richness. The preservation of Ramayana-related customs, festivals, and artistic expressions has transformed Janakpur into an important center of cultural heritage in Nepal and South Asia.

HISTORICAL SIGNIFICANCE OF JANAKPUR :

The historical and religious importance of Janakpur is rooted in ancient Hindu literature, particularly the Ramayana. According to tradition, King Janaka ruled the prosperous kingdom of Mithila from this region. He was widely respected for his wisdom, justice, and philosophical insight. The Ramayana describes Mithila as a center of learning, spirituality, and ethical governance.

The most significant event associated with Janakpur is the birth of Goddess Sita. According to the epic, King Janaka discovered an infant girl while ploughing a field during a sacred ritual. He adopted the child and named her Sita. As she grew, Sita became renowned for her virtue, devotion, and strength of character.

Janakpur also became the setting for the famous swayamvara of Sita, where princes from various kingdoms attempted to lift and string the divine bow of Lord Shiva. Lord Rama successfully completed the challenge and married Sita, establishing a sacred bond between Ayodhya and Mithila that continues to be celebrated today.

JANAKI MANDIR AND SACRED GEOGRAPHY :

The Janaki Mandir is the most prominent symbol of Janakpur's religious heritage. Dedicated to Goddess Sita, the temple is one of the largest and most beautiful religious monuments in Nepal. Its architectural style reflects a blend of Rajput, Mughal, and local artistic traditions, making it a significant cultural landmark.

In addition to Janaki Mandir, the city contains several sacred sites connected with the Ramayana tradition. These include Vivah Mandap, Ram Mandir, Dhanush Sagar, and Ganga Sagar. Together, these locations form a sacred landscape that attracts pilgrims from across Nepal and India.

The religious geography of Janakpur plays a crucial role in preserving cultural memory. Pilgrims visiting these sites participate in rituals and ceremonies that reinforce the continuing relevance of

Ramayana traditions in contemporary life.

MITHILA CULTURE AND RAMAYANA HERITAGE :

Janakpur serves as the cultural heart of Mithila civilization. The traditions of Mithila preserve many values associated with the Ramayana, including devotion, respect for family, social harmony, and moral responsibility. These values continue to shape local customs and community life.

One of the most celebrated cultural expressions of Mithila is Mithila painting, often known as Madhubani art. These paintings depict scenes from the Ramayana, religious symbols, and aspects of everyday life. Through artistic representation, important episodes such as the marriage of Rama and Sita have been preserved for generations.Folk songs and oral traditions also contribute to the preservation of Ramayana culture. Wedding ceremonies frequently include songs that celebrate the divine marriage of Rama and Sita, while local storytelling traditions continue to transmit cultural knowledge and religious values.

FESTIVALS AND LIVING TRADITIONS :

The cultural vitality of Janakpur is best reflected in its festivals. Among these, Vivah Panchami is the most important. Celebrated annually, the festival commemorates the marriage of Lord Rama and Goddess Sita through elaborate processions, religious rituals, and cultural performances. Thousands of pilgrims participate in the celebrations, transforming the city into a vibrant center of devotion and cultural expression.

Ram Navami, which marks the birth of Lord Rama, is another significant festival observed with great enthusiasm. Devotees gather in temples for prayers, recitations of sacred texts, and devotional singing.

RELIGIOUS TOURISM AND CULTURAL DIPLOMACY :

Religious tourism has become an important aspect of Janakpur's contemporary development. Thousands of visitors travel to the city every year, generating employment opportunities and supporting local businesses. Hotels, transportation services, handicraft industries, and cultural programs benefit significantly from pilgrimage-related activities.

Janakpur also plays an important role in cultural diplomacy between Nepal and India. The shared reverence for Lord Rama and Goddess Sita has fostered strong people-to-people connections. The development of the Ramayana Circuit has further enhanced cultural exchanges and tourism cooperation between the two countries.

CHALLENGES AND PRESERVATION EFFORTS :

Despite its cultural importance, Janakpur faces several challenges. Urban expansion, environmental concerns, and increasing tourist pressure threaten some aspects of its heritage. Sacred

ponds require conservation, while historical monuments need regular maintenance and protection.

CONCLUSION :

Janakpur stands as one of the most important living centers of Ramayana-era culture in South Asia. As the birthplace of Goddess Sita and the ancient capital of Mithila, it embodies the spiritual, cultural, and ethical values celebrated in the Ramayana. Its temples, festivals, artistic traditions, and social customs demonstrate the continuing relevance of ancient cultural heritage in the modern world. The city serves not only as a destination for pilgrimage but also as a vibrant center of cultural continuity and civilizational memory. Through the preservation of its rich traditions and heritage, Janakpur continues to inspire devotion, strengthen cultural identity, and promote understanding among diverse communities. Protecting and promoting this heritage will ensure that future generations remain connected to the enduring legacy of the Ramayana and Mithila civilization.

REFERENCES :

- Jha, H. (2018). *Mithila culture and society*. Kathmandu, Nepal: Heritage Publications.
- Mishra, V. (2020). Janakpur and the Ramayana tradition. *Journal of South Asian Cultural Studies, 12*(3), 45–60.
- Sharma, R. (2022). *Religious tourism and cultural heritage in Nepal*. Kathmandu, Nepal: Academic Press.
- Tulsidas. (2016). *Ramcharitmanas* (G. N. Das, Trans.). New Delhi, India: Gita Press. (Original work published ca. 1574).
- Valmiki. (2017). *The Ramayana* (B. K. Chaturvedi, Trans.). New Delhi, India: Diamond Books.
- Government of Nepal, Ministry of Culture, Tourism and Civil Aviation. (2023). *Cultural heritage and tourism development report*. Kathmandu, Nepal: Government of Nepal.

Contact No.: +977 9842872808, email: aashish.roshni 420 @gmail.com.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 184-189

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान

डॉ. रामकली शर्मा

विभागाध्यक्षा, सुराणा कॉलेज पीन्या, बैंगलोर, कर्नाटक।

1. प्रस्तावना :

भारत का स्वतंत्रता संग्राम विश्व के महान जनांदोलनों में से एक था। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का संघर्ष नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना का आंदोलन भी था। इस संघर्ष में भारत के विभिन्न वर्गों तथा पड़ोसी देशों के लोगों ने भी योगदान दिया। नेपाल, जो भारत का निकटतम सांस्कृतिक और भौगोलिक पड़ोसी है, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से गहराई से प्रभावित हुआ। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, सांस्कृतिक समानता और सामाजिक संबंधों ने इस जुड़ाव को और मजबूत बनाया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों और गोरखा सैनिकों का योगदान महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय है।

नेपाली सिपाहियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –

भारत और नेपाल के संबंध अत्यंत प्राचीन हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से दोनों देशों में गहरा संबंध रहा है। जनकपुर और अयोध्या के संबंध राम–सीता परंपरा से जुड़े हैं, जबकि काशी और पशुपतिनाथ धार्मिक चेतना के केंद्र रहे द्यगोरखा सैनिक अपनी बहादुरी के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हुए। कई नेपाली सैनिकों और नागरिकों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन किया।

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और नेपाली सैनिक –

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी चेतना के प्रसार के साथ अनेक नेपाली मूल के व्यक्तियों ने स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करना प्रारंभ किया। जिसका वर्णन इस प्रकार हैं –

असहयोग आंदोलन और नेपाली समुदाय –

महात्मा गांधी द्वारा 1920 में प्रारंभ किए गए असहयोग आंदोलन में दार्जिलिंग, कालिम्पोंग तथा उत्तर–पूर्व भारत के नेपाली समुदाय ने सक्रिय भाग लिया। अनेक युवाओं ने सरकारी नौकरियों का बहिष्कार किया तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार में योगदान दिया। सुगौली संधि के परिणामस्वरूप नेपाल ने अपने कुछ भू–भाग को ब्रिटिश भारत को सौंप दिया, किंतु अपनी राजनीतिक संप्रभुता बनाए रखी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में गोरखा एवं नेपाली मूल के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान अपेक्षाकृत कम दर्ज हुआ है। लेकिन दार्जिलिंग, देहरादून, असम, उत्तर–पूर्व भारत तथा गोरखा समुदाय के अनेक व्यक्तियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की थी।

- **दल बहादुर गिरी का योगदान :**

दल बहादुर गिरी को 'पहाड़ी गांधी' कहा जाता था। उन्होंने दार्जिलिंग क्षेत्र में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को मजबूत किया। गिरी दार्जिलिंग कांग्रेस कमेटी के प्रथम अध्यक्ष थे। 1918 में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने के बाद वे गांधीजी के विचारों से प्रभावित हुए। उन्होंने दार्जिलिंग में कांग्रेस संगठन स्थापित करने, असहयोग आंदोलन के प्रचार और जनता को अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संगठित किया द्य 1921 में उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन्हें गोरखा समुदाय के प्रथम गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानियों में गिना गया।

"Even if I have to sacrifice my life, I will not leave my birth land-" — दल बहादुर गिरी द्वारा ब्रिटिश प्रशासन को दिया गया उत्तर।

महिला स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान :

- **हेलन लेप्चा (सविन्त्री देवी) –**

हेलन लेप्चा का जन्म 1902 में दक्षिण सिक्किम में हुआ। उन्होंने खादी आंदोलन, असहयोग आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। बिहार बाढ़ राहत कार्य के दौरान उनकी सेवा से प्रभावित होकर गांधीजी ने उन्हें 'सविन्त्री देवी' नाम दिया। उन्होंने कुरसियांग क्षेत्र में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का अभियान चलाया, जिसके कारण उन्हें कारावास भी हुआ। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के गुप्त संदेशों के आदान–प्रदान में भी उनकी भूमिका का उल्लेख मिलता है। स्वतंत्रता के बाद उन्हें 1972 में ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया।

- **निर्मल चन्द्र छेत्री –**

निर्मल चन्द्र छेत्री ने गोरखा समाज में राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने युवाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने का कार्य किया तथा सामाजिक संगठनों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। उनके प्रयासों ने गोरखा समाज को भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के निकट लाने में सहायता की।

- **निर्मल चन्द्र छेत्री का योगदान :**

निर्मल चन्द्र छेत्री गोरखा समाज में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार से जुड़े प्रमुख कार्यकर्ताओं में माने जाते हैं। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में जब भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन गति पकड़ रहा था, तब दार्जिलिंग और आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले नेपाली मूल के लोगों के बीच भी राष्ट्रवादी विचारों का प्रसार होने उन्होंने विभिन्न सार्वजनिक सभाओं, सामाजिक संगठनों और जनसंपर्क अभियानों के माध्यम से गोरखा समुदाय को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया। उस समय गोरखा समुदाय का एक बड़ा वर्ग ब्रिटिश सेना से जुड़ा हुआ था, इसलिए उनमें राष्ट्रवादी चेतना का विकास करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। निर्मल चन्द्र छेत्री ने इस चुनौती का सामना करते हुए यह संदेश दिया कि गोरखा समुदाय केवल सैनिक वीरता के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए भी समर्पित है।

- **पुष्प कुमार घीसिंग :**

पुष्प कुमार घीसिंग ने 1946 के नौसेना विद्रोह में भाग लिया और इसे भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के अंतिम चरण की महत्वपूर्ण घटनाओं में गिना जाता है। यह विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भारतीय सैनिकों के असंतोष का प्रतीक था। इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह संकेत दिया कि भारतीय सेना अब औपनिवेशिक शासन का समर्थन करने के लिए तैयार नहीं है। इस विद्रोह में हजारों नौसैनिक शामिल हुए। उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों

के भेदभावपूर्ण व्यवहार, खराब भोजन व्यवस्था तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। यह आंदोलन शीघ्र ही देश के अनेक नौसैनिक अड्डों तक फैल गया। पुष्प कुमार घीसिंग भी उन सैनिकों में शामिल थे जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध व्यक्त किया। घीसिंग का योगदान स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण माना जाता है।1946 के नौसेना विद्रोह में नौसैनिकों द्वारा ब्रिटिश झंडे को हटाकर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराना औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय असंतोष का प्रतीक था।

- **मेजर दुर्गा मल्ला :**

मेजर दुर्गा मल्ला भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानियों में से एक थे, जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका जन्म 1 जुलाई 1913 को देहरादून के डोईवाला क्षेत्र में हुआ था। बचपन से ही उनमें देशभक्ति की भावना प्रबल थी। 1931 में वे गोरखा राइफल्स में भर्ती हुए, किंतु ब्रिटिश सेना में रहते हुए भी उनके मन में भारत की स्वतंत्रता की आकांक्षा बनी रही। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व और राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित होकर वे 1942 में आजाद हिंद फौज (INA) में शामिल हो गए। उनकी योग्यता और नेतृत्व क्षमता को देखते हुए उन्हें मेजर का पद प्रदान किया गया। वे आजाद हिंद फौज की खुफिया शाखा में कार्यरत थे तथा ब्रिटिश सेना की गतिविधियों की सूचनाएँ एकत्र कर नेताजी तक पहुँचाते थे। 1944 में कोहिमा क्षेत्र में एक गुप्त अभियान के दौरान वे ब्रिटिश सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और अंततः 25 अगस्त 1944 को दिल्ली जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई। उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

फाँसी से पहले उन्होंने अपनी पत्नी से कहा :

'देश के लिए बलिदान देना सबसे बड़ा गौरव है।'

स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने उनके योगदान को प्रत्येक वर्ष 25 अगस्त को गोरखा समुदाय 'बलिदान दिवस' के रूप में उनकी पुण्यतिथि मनाता है।

गोरखा सैनिकों की भूमिका –

गोरखा सैनिक भारतीय उपमहाद्वीप के सैन्य इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे अपनी वीरता, अनुशासन और निष्ठा के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। भारतीय समाज और संस्कृति से उनका गहरा संबंध था। भारतीय समाज और संस्कृति से उनका गहरा संबंध था। यही कारण है कि कई सैनिक भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सहानुभूति रखते थे। यही कारण है कि कई सैनिक भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सहानुभूति रखते थे। कई सैनिक भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति सहानुभूति रखते थे।

ब्रिटिश सेना ने उन्हें विभिन्न युद्धों में अग्रिम मोर्चे पर तैनात किया।

बी.पी. कोइराला –

विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला नेपाल के प्रमुख लोकतांत्रिक नेता थे। वे वाराणसी में रहे और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से गहराई से प्रभावित हुए। उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के विचारों का अध ययन किया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी सक्रियता उल्लेखनीय रही। बाद में उन्होंने नेपाल में नेपाली कांग्रेस की स्थापना कर लोकतांत्रिक आंदोलन का नेतृत्व किया।

- **आजाद हिंद फौज और नेपाली योगदान :**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में आजाद हिंद फौज (INA) का विशेष महत्व है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने दक्षिण–पूर्व एशिया में भारतीय युद्धबंदियों और प्रवासी भारतीयों को संगठित कर इस सेना का गठन किया था। आजाद हिंद फौज का उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराना था। इस अभियान में नेपाली मूल के सैनिकों और गोरखा समुदाय के लोगों ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया। दक्षिण–पूर्व एशिया के मलाया, सिंगापुर, बर्मा और थाईलैंड में रहने वाले नेपाली मूल के लोगों ने नेताजी के राष्ट्रवादी विचारों का समर्थन किया। उन्होंने न केवल सैनिक के रूप में बल्कि धन–संग्रह, जनसंपर्क और संगठनात्मक कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभाई। नेपाली सैनिकों की वीरता और अनुशासन ने आजाद हिंद फौज की सैन्य शक्ति को मजबूत बनाया। उनके योगदान से यह सिद्ध होता है कि भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष केवल भारत की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि यह पूरे दक्षिण एशियाई समुदाय की साझा आकांक्षा बन चुका था।

दक्षिण-पूर्व एशिया में नेपाली सैनिकों की भागीदारी :

दक्षिण–पूर्व एशिया में बसे नेपाली मूल के अनेक व्यक्तियों ने आजाद हिंद फौज में भर्ती होकर स्वतंत्रता आंदोलन में प्रत्यक्ष योगदान दिया। उस समय सिंगापुर, मलाया और बर्मा में बड़ी संख्या में गोरखा और नेपाली समुदाय के लोग निवास करते थे। नेताजी के आह्वान पर इन लोगों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में भाग लेने का निर्णय लिया। कई सैनिक पहले ब्रिटिश सेना में कार्यरत थे, लेकिन बाद में उन्होंने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर आजाद हिंद फौज का साथ दिया। नेपाली समुदाय के व्यापारियों और सामाजिक संगठनों ने आर्थिक सहायता प्रदान की तथा सैनिकों के लिए आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था की। इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वतंत्रता के संदेश को व्यापक रूप से प्रचारित किया। इस प्रकार नेपाली समुदाय ने सैन्य, आर्थिक और सामाजिक तीनों स्तरों पर आजाद हिंद फौज को सशक्त बनाने में योगदान दिया।

नेपाल एक आश्रय स्थल के रूप में :

ब्रिटिश शासन के दौरान अनेक भारतीय क्रांतिकारी सरकारी दमन और गिरफ्तारी से बचने के लिए नेपाल का रुख करते थे। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा तथा ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों के कारण नेपाल क्रांतिकारियों के लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित स्थान बन गया था। नेपाल की भौगोलिक स्थिति और पर्वतीय क्षेत्र ब्रिटिश प्रशासन की पहुँच से दूर थे, जिसके कारण क्रांतिकारी वहाँ शरण लेकर अपनी गतिविधियों को संचालित कर सकते थे। कई राष्ट्रवादी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने नेपाल में अस्थायी रूप से निवास किया तथा वहीं से स्वतंत्रता आंदोलन की योजनाएँ बनाईं। नेपाल में रहने वाले स्थानीय लोगों ने भी इन क्रांतिकारियों को सहयोग प्रदान किया। इस प्रकार नेपाल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रत्यक्ष लेकिन महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में उभरकर सामने आया।

सीमावर्ती क्षेत्रों का महत्व :

भारत–नेपाल सीमा क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड से लगे सीमावर्ती इलाकों में अनेक क्रांतिकारी ब्रिटिश पुलिस से बचकर नेपाल पहुँच जाते थे। इन क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय लोगों ने उन्हें भोजन, आवास और सुरक्षा प्रदान की। कई बार स्वतंत्रता सेनानी सीमा पार कर गुप्त बैठकों का आयोजन करते थे तथा आंदोलन की रणनीतियों पर विचार–विमर्श करते थे। खुली सीमा होने के कारण ब्रिटिश प्रशासन के लिए इन गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करना कठिन था।

परिणामस्वरूप सीमावर्ती क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण संपर्क केंद्र और सुरक्षित आश्रय स्थल के रूप में विकसित हुए।

गुप्त गतिविधियाँ :

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गुप्त संचार व्यवस्था का विशेष महत्व था। नेपाल और भारत के बीच रहने वाले अनेक नेपाली कार्यकर्ताओं ने संदेशवाहक के रूप में कार्य किया। वे महत्वपूर्ण दस्तावेज, पत्र, सूचनाएँ और योजनाएँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे। क्रांतिकारियों के लिए यह कार्य अत्यंत जोखिमपूर्ण था क्योंकि पकड़े जाने पर कठोर दंड का सामना करना पड़ सकता था। कई नेपाली युवाओं ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना स्वतंत्रता आंदोलन की सहायता की। उनकी इस भूमिका ने विभिन्न क्रांतिकारी संगठनों के बीच संपर्क बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गुप्त गतिविधियों के माध्यम से नेपाली कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन को संगठित और प्रभावी बनाने में सहायता प्रदान की।

सांस्कृतिक और वैचारिक योगदान :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय चेतना का भी आंदोलन था। नेपाली साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों, शिक्षकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रवाद के विचारों का प्रचार–प्रसार किया। साहित्य, कविता, गीत और नाटकों के माध्यम से लोगों में देशभक्ति की भावना जागृत की गई। दार्जिलिंग, सिक्किम और उत्तर–पूर्व भारत के नेपाली भाषी समाज में राष्ट्रीय चेतना फैलाने में स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं और साहित्यिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अनेक लेखकों ने ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना की और जनता को स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार सांस्कृतिक और वैचारिक स्तर पर नेपाली समुदाय ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जन–आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रीय एकता के जो मूल्य इस काल में विकसित हुए, वे आज भी भारत और नेपाल के ऐतिहासिक संबंधों की आधारशिला बने हुए है।

निष्कर्ष –

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों और नेपाली समुदाय का योगदान केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि भारत–नेपाल की साझा सांस्कृतिक, राजनीतिक और मानवीय विरासत का सशक्त प्रमाण है। गोरखा सैनिकों की अदम्य वीरता, दुर्गा मल्ल जैसे अमर सेनानियों का सर्वोच्च बलिदान यह दर्शाती है कि स्वतंत्रता, न्याय और मानव गरिमा के लिए संघर्ष किसी एक राष्ट्र या समुदाय तक सीमित नहीं होता। यह उन सार्वभौमिक मूल्यों की अभिव्यक्ति है जो सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में बाँधते हैं।

नेपाली सेनानियों का योगदान भारत की राष्ट्रीय चेतना, लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वतंत्रता की भावना को सुदृढ़ करने वाला एक गौरवपूर्ण अध्याय है। वर्तमान समय में, जब विश्व अनेक सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब इन सेनानियों के त्याग, साहस और राष्ट्रनिष्ठा से प्रेरणा लेने की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी है और राष्ट्र निर्माण केवल सरकारों का कार्य नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सहभागिता से संभव होता है।

अतः आवश्यक है नेपाली सेनानियों के योगदान को उचित स्थान दिया जाए। साथ ही, भारत और नेपाल की नई पीढ़ी को इस साझा विरासत से परिचित कराकर दोनों देशों के बीच मैत्री, सहयोग और लोकतांत्रिक मूल्यों को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाए। यही उन महान सेनानियों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी तथा एक ऐसे भविष्य की आधारशिला भी, जो शांति, समानता, सहयोग और मानवीय मूल्यों पर आधारित हो। यह निष्कर्ष अतीत के योगदान, वर्तमान की सीख और भविष्य की संभावनाओंकृतीनों को जोड़ता है तथा शोध–पत्र को अधिक परिपक्व, विनम्र और अकादमिक स्वर प्रदान करता है।

संदर्भ सूची :

1. बिपिन चंद्र – भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. आर.सी. मजूमदार – History of the Freedom Movement in India, Firma KLM, Calcutta.
3. सुमित सरकार – Modern India, Macmillan Publishers.
4. Tara Chand – History of the Freedom Movement in India, Publication Division, Government of India.
5. Leo E. Rose – Nepal: Strategy for Survival, University of California Press.
6. D. R. Regmi – Modern Nepal, Firma KLM Publications.
7. B. P. Koirala – Atmabrittanta.
8. Subhas Chandra Bose – The Indian Struggle.
9. Hugh Tinker – The Indian National Army.
10. Percival Spear – India : A Modern History.

फोन 8310706739

Email ID : ramkalima@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 190-196

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिमालयी संगम का भविष्य : भारत–नेपाल संबंध एवं भारत के आंतरिक सुरक्षा परिदृश्यों में मधेशी समुदाय की भूमिका

Raushan Kumar
Research Scholar, Department of Political Science
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi- 221002

सारांश :

भारत–नेपाल संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और रणनीतिक दृष्टि से गहरे जुड़ाव वाले हैं। इस संबंध की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कड़ी मधेशी समुदाय है, जो नेपाल के तराई क्षेत्र में निवास करता है और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों से भाषाई, पारिवारिक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ा हुआ है। मधेशी समुदाय केवल सामाजिक सेतु नहीं है, बल्कि सीमा–आधारित सुरक्षा, आर्थिक संपर्क, आवाजाही, और राजनीतिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है। नेपाल में मधेशी असंतोष, प्रतिनिधित्व की कमी और पहचान–संबंधी प्रश्न समय–समय पर भारत–नेपाल संबंधों को प्रभावित करते रहे हैं।

भारत के आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य में यह समुदाय इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि खुली सीमा, सीमा–पार व्यापार, अवैध तस्करी, मानव–आवागमन, और सामाजिक नेटवर्क से जुड़े मुद्दे इसी क्षेत्र से गुजरते हैं। इसलिए मधेशी समुदाय को केवल सुरक्षा–जोखिम के रूप में देखना संकीर्ण दृष्टि होगी, उन्हें सहभागी विकास, भरोसे और सीमाई स्थिरता के अवसर के रूप में समझना अधिक उपयोगी है। इस पृष्ठभूमि में चीन की नेपाल, विशेषकर मधेस क्षेत्र में बढ़ती सक्रियता भारत के लिए नई भू–राजनीतिक चुनौती प्रस्तुत करती है।

यह शोध–पत्र तर्क देता है कि मधेशी समुदाय भारत–नेपाल संबंधों की स्थिरता का आधार है और यदि इस समुदाय को राजनीतिक समावेशन, आर्थिक अवसर तथा सम्मानजनक सहभागिता मिले, तो यह भारत की आंतरिक सुरक्षा को भी अधिक संतुलित और सुदृढ़ बना सकता है। इसे सीमा क्षेत्र में शांति, पारस्परिक भरोसा और क्षेत्रीय स्थिरता बढ़ेगी, जो हिमालयी संगम का वास्तविक आधार है।

मुख्य शब्द : मधेशी समुदाय, भारत–नेपाल संबंध, आंतरिक सुरक्षा, खुली सीमा, भू–राजनीतिक, राजनीतिक समावेशन, सहभागिता।

प्रस्तावना :

भारत–नेपाल संबंधों की नींव 1950 की 'शांति एवं मैत्री संधि' में निहित है, जिसने दोनों देशों के नागरिकों को बिना पासपोर्ट और वीजा के आने–जाने का अधिकार दिया। यह व्यवस्था रामायण काल से चली आ रही सांस्कृतिक एकता, खुली व्यापारिक सीमाओं और विवाह संबंधों पर टिकी थी। भारत और नेपाल के संबंध केवल

दो पड़ोसी देशों के संबंध नहीं हैं, बल्कि वे सभ्यतागत, भौगोलिक और सामाजिक अंतर्संबंधों का एक जीवंत उदाहरण हैं। दोनों देशों के बीच खुली सीमा, धार्मिक–सांस्कृतिक समानताएँ, विवाह संबंध, व्यापारिक आवाजाही और सामुदायिक निकटता ने इन्हें एक–दूसरे से अनूठे रूप में जोड़ा है। दोनों देशों के बीच 1,751 किलोमीटर लंबी खुली सीमा है। यह सीमा न केवल दोनों देशों के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक संबंधों का प्रतीक है, बल्कि भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक नाजुक चुनौती भी प्रस्तुत करती है। इस पूरे परिदृश्य में मधेशी समुदाय एक केंद्रीय सामाजिक–राजनीतिक इकाई है, जो नेपाल के तराई क्षेत्र में रहते हुए भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश और अन्य सीमावर्ती हिस्सों से गहरे रूप में जुड़ा है। भारत–नेपाल संबंधों में मधेशी समुदाय की स्थिति बहुत संवेदनशील और महत्वपूर्ण रही है। जब भी मधेशियों के अधिकारों पर संकट आया है, तब भारत–नेपाल संबंधों पर भी उसका प्रभाव पड़ा है। भारत में रहने वाले लोगों के नेपाल के मधेशी समुदाय से पारिवारिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। इस कारण मधेशी मुद्दा केवल नेपाल का आंतरिक प्रश्न नहीं रह जाता, बल्कि यह दोनों देशों के आपसी संबंधों से भी जुड़ जाता है।

मधेशी समुदाय की महत्ता केवल सांस्कृतिक समानताओं तक सीमित नहीं है। यह समुदाय नेपाल की आंतरिक राजनीति, प्रतिनिधित्व की संरचना, संघीय व्यवस्था, और सामाजिक न्याय से जुड़े मुद्दों में सक्रिय रहा है। नेपाल के संविधान निर्माण और उसके बाद उत्पन्न मधेशी आंदोलनों ने यह स्पष्ट किया कि जब तक सीमा से जुड़े समुदायों की आकांक्षाओं को संवैधानिक और राजनीतिक मान्यता नहीं दी जाती, तब तक स्थायी स्थिरता कठिन रहती है। भारत ने भी कई अवसरों पर मधेशी प्रश्न को मानवीय, राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टि से देखा है, क्योंकि इसका असर सीधे भारत–नेपाल संबंधों पर पड़ता है।

मधेशी समुदाय नेपाल की जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह समुदाय मैथिली, भोजपुरी, अवधी, थारू और हिंदी जैसी भाषाओं का प्रयोग करता है। इनके सामाजिक जीवन में भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में विवाह, व्यापार, शिक्षा और धार्मिक परंपराओं के कारण मधेशी समाज दोनों देशों को जोड़ने का काम करता है। हालाँकि, मधेशी समुदाय को लंबे समय तक नेपाल की मुख्यधारा की राजनीति में अपेक्षित सम्मान और प्रतिनिधित्व नहीं मिला। उन्हें कई बार भेदभाव, उपेक्षा और नागरिकता से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। नेपाल के कई मधेशी लोगों ने यह महसूस किया कि शासन व्यवस्था में उनकी भागीदारी कम है और उनके अधिकारों को पर्याप्त सुरक्षा नहीं मिलती। इसी कारण समय–समय पर मधेशी आंदोलन भी हुए, जिनका उद्देश्य समान अधिकार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय प्राप्त करना रहा है।

आधुनिक सुरक्षा अध्ययन में आंतरिक सुरक्षा का अर्थ केवल आतंकवाद या हिंसक उग्रवाद नहीं रह गया है। इसमें सीमा प्रबंधन, अवैध आवागमन, संगठित अपराध, तस्करी, फेक करेंसी, मानव तस्करी, और बाहरी प्रभाव–प्रसार भी शामिल हैं। भारत–नेपाल सीमा की खुली प्रकृति एक ओर लोगों के लिए सहजता प्रदान करती है, तो दूसरी ओर यह सुरक्षा एजेंसियों के लिए चुनौती भी बनती है। ऐसे में मधेशी समुदाय की भूमिका दोहरी है: एक तरफ वह सामाजिक संपर्कों का वाहक है, दूसरी तरफ वह सुरक्षा, सहयोग और विश्वास–निर्माण का क्षेत्र भी है।

भारत के दृष्टिकोण से मधेशी समुदाय को केवल "समस्या" मानना गलत होगा। यदि इस समुदाय के

साथ विकास, संवाद और भागीदारी आधारित नीति अपनाई जाए, तो यह सीमाई स्थिरता, सांस्कृतिक कूटनीति और क्षेत्रीय सहयोग का प्रभावी साधन बन सकता है। इसी कारण यह शोध–पत्र मधेशी समुदाय को भारत–नेपाल संबंधों और भारत की आंतरिक सुरक्षा के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में विश्लेषित करता है। यदि नेपाल में मधेशी समुदाय को उचित अधिकार, सम्मान और प्रतिनिधित्व मिले, तो इससे न केवल नेपाल की आंतरिक एकता मजबूत होगी, बल्कि भारत–नेपाल संबंध भी और अधिक मधुर तथा स्थिर बनेंगे।

हिमालयी संगम का भविष्य भारत–नेपाल संबंधों की गहराई, सीमा–सुरक्षा और सामाजिक समरसता पर निर्भर करेगा। मधेशी समुदाय इस रिश्ते का सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यह भारत की सीमा से जुड़े तराई क्षेत्र में रहता है और दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक पुल का काम करता है। भविष्य में भारत–नेपाल संबंध तभी अधिक स्थिर और सहयोगपूर्ण बनेंगे जब मधेशी समुदाय को समान अधिकार, सम्मान और विकास के अवसर मिलेंगे। इससे सीमा क्षेत्र में शांति, पारस्परिक भरोसा और क्षेत्रीय स्थिरता बढ़ेगी, जो हिमालयी संगम का वास्तविक आधार है।

इस शोध का मुख्य प्रश्न यह है कि क्या मधेशी समुदाय सुरक्षा के लिए खतरा है, या द्विपक्षीय सहयोग का एक सेतु? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए यह अध्ययन मिश्रित पद्धति (गुणात्मक एवं मात्रात्मक) पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों–सरकारी रिपोर्टें, शैक्षणिक जर्नल, समाचार पुरालेख–और प्राथमिक स्रोतों के रूप में 2025–26 के SSB रिपोर्ट एवं नेपाल सरकार के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। सैद्धांतिक दृष्टि से, इस अध्ययन में तीन सिद्धांतों का उपयोग किया गया है :– सीमा अध्ययन सिद्धांत, अंतर–सीमा समुदाय सिद्धांत, और आंतरिक सुरक्षा सिद्धांत।

मधेशी समुदाय एवं आंतरिक सुरक्षा चुनौतियां :

भारत की आंतरिक सुरक्षा का परिदृश्य केवल आतंकवाद या सीमित सैन्य खतरों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सीमा प्रबंधन, तस्करी, दस्तावेजी जालसाजी, अवैध प्रवासन, मानव–तस्करी और बाहरी प्रभाव–प्रसार जैसे मुद्दे भी सम्मिलित हैं। भारत–नेपाल की खुली सीमा इस दृष्टि से विशेष रूप से संवेदनशील है, क्योंकि इससे लोगों की सहज आवाजाही तो संभव होती है, पर साथ ही निगरानी और नियमन की जटिलताएँ भी बढ़ती हैं। मधेशी समुदाय, जो सीमा से सटे तराई क्षेत्रों में निवास करता है, इन सभी प्रक्रियाओं के केंद्र में मौजूद है।

मधेशी समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक निकटता भारत के सीमावर्ती राज्यों से इतनी अधिक है कि कई बार पहचान की सीमा धुंधली हो जाती है। इसी कारण सुरक्षा एजेंसियाँ इस क्षेत्र को "संवेदनशील Corridor" के रूप में देखती हैं। परन्तु यह संवेदनशीलता अपने आप में खतरे का प्रमाण नहीं हैय यह संकेत है कि यहाँ स्थानीय सहयोग, समुदाय–आधारित निगरानी और भरोसेमंद प्रशासन की आवश्यकता अधिक है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब मधेशी असंतोष, प्रतिनिधित्व की कमी या विकास–हीनता को उपेक्षित किया जाता है। 2015 के मधेश आंदोलन ने यह स्पष्ट किया कि यदि राजनीतिक शिकायतों को समय रहते न सुलझाया जाए, तो वह सीमा–पार अस्थिरता में बदल सकती हैं। इस तरह के असंतोष का असर भारत की सुरक्षा पर इसलिए पड़ता है क्योंकि अव्यवस्था, तस्करी, अवैध पारगमन और सामाजिक ध्रुवीकरण के लिए अनुकूल वातावरण बन सकता है।

मधेशी समुदाय : अवसर की दृष्टि :

मधेशी समुदाय को सुरक्षा–खतरे के बजाय अवसर के रूप में समझना अधिक दीर्घकालिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण है। यह समुदाय भारत और नेपाल के बीच सांस्कृतिक, पारिवारिक और भाषाई पुल की भूमिका निभाता है। जब दोनों देशों के बीच कूटनीतिक तनाव उत्पन्न होता है, तब मधेशी समुदाय विश्वास और संवाद की एक अनौपचारिक कड़ी के रूप में काम कर सकता है। यह समुदाय सीमा–पार व्यापार, स्थानीय बाजारों, शिक्षा–संपर्कों और श्रम–गतिशीलता को भी समर्थन देता है। यदि सरकारें तराई–मधेश क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और बुनियादी ढाँचे पर निवेश करें, तो यह क्षेत्र सुरक्षा–संकट का स्रोत नहीं, बल्कि स्थिरता और सहयोग का आधार बन सकता है। सुरक्षा की आधुनिक समझ भी यही कहती है कि जब समुदायों को विकास, प्रतिनिधित्व और सम्मान मिलता है, तो वे स्वाभाविक रूप से राज्य–व्यवस्था के साझेदार बनते हैं।

भारत के लिए यह एक रणनीतिक अवसर है कि वह मधेशी मुद्दे को केवल बाह्य नीति या सीमा–संबंधी चिंता तक सीमित न रखे, बल्कि जन–स्तरीय कूटनीति का हिस्सा बनाए। इससे न केवल सीमा प्रबंधन सुधरेगा, बल्कि भारत–विरोधी भावनाओं को कम करने में भी मदद मिलेगी। इस प्रकार मधेशी समुदाय "स्थिर पड़ोस" की नीति में योगदान दे सकता है। मधेशी समुदाय संघर्षों में अनौपचारिक मध्यस्थता का काम करता है। सीमा पर कभी–कभी तनावपूर्ण स्थितियाँ (जैसे कालापानी विवाद, मधेश आंदोलन के दौरान नाकाबंदी) पैदा हो जाती हैं, जिनमें दोनों देशों के संबंध बिगड़ते हैं। ऐसे समय में मधेशी समुदाय के प्रभावशाली लोग (व्यापारी नेता, धार्मिक गुरु, समाजसेवी) अक्सर अनौपचारिक मध्यस्थ का काम करते हैं। उनकी दोनों पक्षों तक पहुँच होती है और वे छोटे–मोटे विवादों को बिगड़ने से रोकने में सहायक होते हैं।

मधेशी समुदाय के पास सीमा के दोनों ओर की भाषाओं, रीति–रिवाजों और स्थानीय परिस्थितियों की गहरी समझ है। इस समझ का उपयोग सीमा पुलिस बलों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किया जा सकता है। साथ ही, मधेशी युवाओं को सुरक्षा बलों में भर्ती करके सीमा क्षेत्रों में स्थानीय उपस्थिति को मजबूत किया जा सकता है। इस प्रकार, मधेशी समुदाय को यदि 'संदिग्ध' की बजाय 'भागीदार' के रूप में देखा जाए, तो यह भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक बड़ा अवसर बन सकता है।

भू–राजनीतिक आयाम : चीन की बढ़ती उपस्थिति और मधेशी समुदाय :

नेपाल में चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक चुनौती है। हाल के वर्षों में चीन ने नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों, विशेषकर मधेश में, विकास सहायता, शिक्षा कार्यक्रम, स्वास्थ्य सहयोग और सामुदायिक परियोजनाओं के माध्यम से उपस्थिति बढ़ाई है। 2024 में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, चीन ने मधेश प्रांत में स्कूलों, समुदायों और पुनर्निर्माण परियोजनाओं के लिए सहायता बढ़ाई, जिसे स्थानीय स्तर पर सकारात्मक रूप से देखा गया। यह उपस्थिति केवल मानवीय सहायता तक सीमित नहीं मानी जा सकती, क्योंकि विकास सहायता अक्सर प्रभाव–निर्माण का साधन भी होती है। यदि कोई बाहरी शक्ति सीमावर्ती समुदायों में सामाजिक पूँजी अर्जित कर लेती है, तो वह दीर्घकाल में राजनीतिक प्रभाव भी हासिल कर सकती है। मधेश क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और भारत से निकटता इसे चीन के लिए अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण बनाती है, क्योंकि यहाँ से भारत के प्रभाव–क्षेत्र को संतुलित करने की संभावना बनती है।

चीन की सक्रियता यह भी दर्शाती है कि नेपाल के सीमाई और आंतरिक मुद्दे अब केवल द्विपक्षीय नहीं

रहे। वे व्यापक एशियाई प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन चुके हैं। इसलिए भारत को मधेशी समुदाय के साथ संवेदनशील, समावेशी और दीर्घकालिक नीति अपनानी चाहिए, ताकि वह क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा में सामाजिक भरोसे को अपनी सबसे बड़ी ताकत बना सके। साथ ही, भारत को मधेश प्रदेश में विकास परियोजनाओं के माध्यम से 'सॉफ्ट पावर' का उपयोग करना चाहिए ताकि मधेशी समुदाय का विश्वास बना रहे।

वर्ष 2025 में नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने दो बार चीन का दौरा किया, जिससे भारत में चिंता बढ़ गई। चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल (BRI) के तहत नेपाल में सड़क, रेल और जलविद्युत परियोजनाएँ चल रही हैं। ये परियोजनाएँ न केवल आर्थिक हैं, बल्कि रणनीतिक भी हैं – इनका विस्तार सिलीगुड़ी कॉरिडोर (चिकन नेक) के निकट हो रहा है, जो भारत के पूर्वोत्तर राज्यों का एकमात्र संपर्क मार्ग है। चीन का उद्देश्य नेपाल के माध्यम से भारत पर दबाव बनाने के लिए एक वैकल्पिक आपूर्ति मार्ग विकसित करना है। चीन की बढ़ती उपस्थिति मधेशी समुदाय के लिए एक नई दुविधा पैदा करती है। ऐतिहासिक रूप से, मधेशी समुदाय भारत के साथ गहरे सांस्कृतिक और भाषाई संबंधों के कारण 'प्रो–इंडिया' प्रवृत्ति का रहा है। उनका व्यापार, उनके परिवार, उनकी भाषा–सब भारत से जुड़ा है। लेकिन हाल के वर्षों में, नेपाल सरकार (विशेषकर मधेशियों के प्रति उपेक्षा के लिए आलोचित) और काठमांडू के पहाड़ी अभिजात्य वर्ग से तंग आकर, कुछ मधेशी नेताओं ने भारत से दूरी बनानी शुरू कर दी है।

भारत की चिंता यह है कि यदि मधेशी समुदाय को भारत से अपेक्षित राजनीतिक, भावनात्मक और विकासात्मक समर्थन नहीं मिलता, तो चीन जैसे खिलाड़ी उसका विकल्प बन सकते हैं। नेपाल के लिए यह बहुविकल्पीय कूटनीति का हिस्सा है, पर भारत के लिए यह अपनी पारंपरिक निकटता को पुर्नस्थापित करने की चुनौती है। मधेशी समुदाय इस संतुलन में निर्णायक तत्व बन सकता है, क्योंकि उसके सामाजिक नेटवर्क और जन–भावना भारत के पक्ष में या विरुद्ध, दोनों तरह के प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

निष्कर्ष :

अध्ययन का मूल निष्कर्ष यह है कि मधेशी समुदाय भारत–नेपाल संबंधों का केवल एक सामाजिक समूह नहीं, बल्कि एक रणनीतिक सेतु है। यह समुदाय सीमा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति और सुरक्षा के बीच स्थित ऐसा क्षेत्र है जो दोनों देशों के संबंधों को स्थिर भी कर सकता है और तनावपूर्ण भी। इसलिए इसकी भूमिका को सीमित नजरिए से नहीं, बल्कि बहुआयामी परिप्रेक्ष्य से देखना चाहिए। भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए मधेशी समुदाय को एक संवेदनशील भागीदार के रूप में देखना आवश्यक है। खुली सीमा, सीमापार नेटवर्क और अवैध गतिविधियों के खतरे के बीच स्थानीय समुदायों की भागीदारी ही वास्तविक सुरक्षा–ढाँचा बनाती है। यदि राज्य विकास, प्रतिनिधित्व और संवाद पर आधारित नीति अपनाते हैं, तो सुरक्षा–जोखिम कम होंगे और विश्वास का वातावरण बनेगा।

भू–राजनीतिक स्तर पर चीन की बढ़ती उपस्थिति भारत के लिए एक चेतावनी है कि वह नेपाल के सीमाई समाजों के साथ अपने संबंधों को फिर से सशक्त करे। मधेशी समुदाय इस संदर्भ में भारत के लिए "सॉफ्ट–सेक्योरिटी" का माध्यम बन सकता है, जहाँ सांस्कृतिक निकटता, सामाजिक न्याय और विकास एक साथ सुरक्षा को मजबूती दें।

अंततः, हिमालयी संगम का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि भारत और नेपाल अपने सीमाई

समुदायों, विशेषकर मधेशियों, को कितनी गंभीरता से समझते और शामिल करते हैं। यदि मधेशी समुदाय को अवसर, सम्मान और भागीदारी मिले, तो वह संकट नहीं बल्कि स्थिरता, सहयोग और क्षेत्रीय संतुलन का आधार बन सकता है। अर्थात जब तक दिल्ली 'सीमा बंद करने के तर्क' से हटकर 'पार–सीमा शासन के तर्क' की ओर नहीं बढ़ती, तब तक यह सीमा भारत की आंतरिक सुरक्षा की 'सबसे कमजोर कड़ी' बनी रहेगी। यही इस शोध–पत्र का केंद्रीय निष्कर्ष है।

Reference :-

- Yadav, D. K. (2025). An epistemological crisis in the hilly elite people culminating in persistent hatred against Madheshis of Nepal. International Journal of English Literature and Social Sciences, 10(6), 234-241. (https://www.ijel.com)
- Thapa, S. B. (2025, August 14). Nepal as a transit corridor for Pakistan-based terror networks, Kathmandu Regional Peace and Security Seminar. (https://publication.iom.int)
- Kumar, K. (2023). Madheshi question and India-Nepal relation. International Journal of Science and Research, 12(6), 1504-1507. (https://www.ijsr.net)
- Kumar, S. (2020). Madhesis and India's foreign policy with Nepal. ResearchGate. (https://www.researchgate.net)
- Madane, S. R., & Bharat, B. V. (2025). Political and cultural relation between India and Nepal. Indian Journal of Applied Research, 15(8), 50-51. (https://doi.org)
- Novinskii, E. E. (2025). Cross-border ethnic linkages and the making of foreign policy: The Madhesi question in India–Nepal relations. International Journal of Novel Research and Development, 10(5), 362-368. (https://ijnrd.org)
- Sharma, J. K. (2025). Power, people, and pacts: A 21st century perspective on India-Nepal relations. International Journal of Social Sciences and Management, 5(4), 200-210. (https://www.nepjoi.info)
- Patel, R. (2017). Nepal-India relations (2015–2020): A study of cooperation, conflict, and change. International Journal of Humanities and Social Science Invention, 9(11), 78-80. (https://www.ijhssi.org)
- Jha, Ratnakar and Basnet, chudamani. (2019). Crossing the caste and ethnic boundaries: Love and intermarriage between Madhesi men and Pahadi women in southern Nepal. South Asia Multidisciplinary Academic Journal, 21. (https://journals.openedition.org)
- Singh, S. (2024). Developments in Nepal and its impact on India-Nepal relations. India Foundation. (https://indiafoundation.in)
- Thapa, S. (2018). India-Nepal relation and its challenges. Journal of Political Science, 7(7), 312-320. (https://www.journalofpoliticalscience.com)
- Tripathi, D. (2019). Influence of borders on bilateral ties in South Asia: A study of contemporary India–Nepal relations. International Studies, 56(2-3), 186-201. (https://www.nepalviews.com)

- Muni, S. D. (2020). India and Nepal: A changing relationship. Konark Publishers. (https://books.google.com)
- Kantha, P. K., Jha, P. K., & Mishra, R. K. (2017). Significance of Madhesi movement in Nepal and its implications on India's national interests. International Journal of Humanities and Social Science Invention, 6(12), 61-68. (https://www.ijhssi.org)
- Sashastra Seema Bal (2026). SSB annual report 2025-2026. Government of India, Ministry of Home Affairs. (https://ssb.gov.in)
- Caravan Magazine. (2015, December 31). Where the Madhes crisis leaves Nepal-India relations. (https://www.caravanmagazine.in)
- Nepal Times. (2025, October 14). Unfinished federalism in Madhes province. Nepal Times. (https://nepalitimes.com)
- Kathmandu Post. (2025, November 12). India steps up border surveillance after recent explosions. (https://www.kathmandupost.com)
- Nepal Press. (2024, December 2). Nepal and China sign various bilateral agreements. (https://www.nepalpress.com)
- Indian Express. (2015, December 21). Nepal's steps to resolve Madhesi crisis: India's positive response helps. (https://www.indianexpress.com)
- The Print. (2017, August 31). Upset Madhesis say India no longer backs their agenda. (https://www.theprint.in)
- The Annapurna Express. (2024, May 26). China gaining ground in Madhes. (https://www.thannapurnaexpress.com)
- NIA (2025). Annual report on FICN (Fake Indian Currency Notes) 2024-25. Government of India. (https://nia.gov.in)
- PTI (2026, February 3). SSB, guarding Nepal, Bhutan borders, equipped with state-of-the-art surveillance equipment. ThePrint. (https://www.ptinews.com)
- India Today. (2025, July 25). Special investigation: Illegal madrasas along India-Nepal border exposed. India Today. (https://www.indiatoday.in)
- Chaulagain, M. (2026, February 15). के नेपालले चीनका चारवटै वैश्विक पहलहरूमा सहमति जनाएको छ? (https://www.nepalview.com)
- Baral, L. R. (2018). The Politics of Balanced Neutrality: Nepal"s Relations with India and China. New Delhi, Adroit Publishers. (https://www.adroitprintandmediapublisher.com)

Email id :- raushankr0003@gmail.com

Mobile no. - +91 8541074008

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 197-199

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ग्रामीण कृषक जीवन में ई–गवर्नेंस का प्रभाव : भारत और नेपाल का एक तुलनात्मक अध्ययन

रविन्द्र सोलंकी
पीएचडी शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

1. सारांश (Abstract)

समसामयिक वैश्विक परिदृश्य में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का समावेशन लोक प्रशासन और ग्रामीण विकास का मुख्य आधार बन चुका है। भारत और नेपाल दोनों ही देश दक्षिण एशिया के ऐसे पड़ोसी राष्ट्र हैं जिनकी सांस्कृतिक धरोहर समान है और जहाँ की अधिकांश आबादी आजीविका के लिए प्राथमिक क्षेत्र यानी कृषि पर निर्भर है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दोनों देशों के ग्रामीण कृषक जीवन पर ई–गवर्नेंस (E-Governance) के नीतिगत और व्यावहारिक प्रभावों का एक तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धति और द्वितीयक आंकड़ों (Secondary Data) पर आधारित है, जिसे विभिन्न प्रामाणिक सरकारी रिपोर्टों के वैचारिक दृष्टिकोण के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि जहाँ भारत ने डिजिटल बुनियादी ढांचे और प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) में तीव्र प्रगति की है, वहीं नेपाल अपने 'डिजिटल नेपाल फ्रेमवर्क' के माध्यम से पर्वतीय और तराई क्षेत्रों के कृषकों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ रहा है। निष्कर्षतः, दोनों देशों के कृषक समाज की उन्नति के लिए तकनीकी मानकों का साझा क्रियान्वयन 'संपर्क से समृद्धि' के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्य शब्द : ई–गवर्नेंस, कृषक समाज, डिजिटल नेपाल फ्रेमवर्क, डिजिटल इंडिया, तुलनात्मक लोक प्रशासन।

2. प्रस्तावना (Introduction)

राजनीति विज्ञान और लोक प्रशासन के समकालीन सिद्धांतों में 'सुशासन' (Good Governance) का तात्पर्य प्रशासनिक सेवाओं को पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक–अनुकूल बनाना है। इस विमर्श को धरातल पर उतारने का सबसे बड़ा श्रेय इलेक्ट्रॉनिक गवर्नेंस (E-Governance) को जाता है। भारत और नेपाल के भू–राजनीतिक संबंधों में ग्रामीण और कृषक समाज हमेशा से केंद्रीय भूमिका में रहा है। ऐतिहासिक रूप से, दोनों देशों के ग्रामीण किसान संसाधनों के अभाव, भौगोलिक विषमताओं और सूचनाओं की कमी के कारण मंडियों में बिचौलियों के आर्थिक शोषण का शिकार होते रहे हैं। वर्तमान समय में डिजिटल साक्षरता ने इस 'डिजिटल डिवाइड' को कम करके कृषक समाज को सीधे प्रशासनिक तंत्र और राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय बाजारों से संबद्ध करने

का काम किया है। यह आलेख दोनों देशों की कृषि–तकनीकी नीतियों की समानताओं और अंतरों का एक तुलनात्मक ढांचा प्रस्तुत करता है।

3. भारत और नेपाल में कृषि ई-गवर्नेंस के प्रमुख उपकरण :

दोनों देशों की सरकारों ने अपने ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि व्यवस्था को डिजिटल बनाने के लिए अलग–अलग लेकिन समान उद्देश्यों वाले उपकरणों को विकसित किया है : **भारतीय कृषि-तकनीकी मॉडल :** भारत में 'डिजिटल इंडिया' अभियान के अंतर्गत कृषि क्षेत्र का व्यापक डिजिटलीकरण हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर 'ई–नाम' (e-NAM – राष्ट्रीय कृषि बाजार), 'एम–किसान पोर्टल' और 'पीएम–किसान सम्मान निधि' जैसी महत्वाकांक्षी योजनाएं कार्यरत हैं। राज्यों के स्तर पर भी भू–अभिलेखों (जैसे मध्य प्रदेश में 'एमपी भूलेख' पोर्टल) का पूरी तरह कंप्यूटरीकरण किया जा चुका है, जिसने पारंपरिक राजस्व प्रणाली को पूरी तरह पारदर्शी बना दिया है। **नेपाली कृषि-तकनीकी मॉडल :** नेपाल सरकार ने वर्ष 2019 में 'डिजिटल नेपाल फ्रेमवर्क' को अंगीकार किया, जिसमें कृषि को आर्थिक विकास के मुख्य इंजन के रूप में स्वीकार किया गया है। नेपाल के ग्रामीण अंचलों में 'कृषि गुरु' (Krishi Guru) और 'जियोकृषि' (GeoKrishi) जैसी डिजिटल पहलों व मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से किसानों तक मिट्टी के स्वास्थ्य, फसलों की बीमारियों और मौसम का रीयल–टाइम डेटा पहुँचाया जा रहा है।

4. कृषक जीवन पर प्रभाव : एक तुलनात्मक विश्लेषण :

कृषि और ई–गवर्नेंस के अंतर्संबंध ने दोनों देशों के ग्रामीण कृषकों के सामाजिक–आर्थिक जीवन को निम्नलिखित रूपों में प्रभावित किया है : **बाजार भाव की पारदर्शिता और मध्यस्थों की समाप्ति :** आधिकारिक शोध साक्ष्यों के अनुसार, जब ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता का प्रसार होता है, तो कृषक वर्ग फसलों के वर्तमान मूल्य (Market Prices), मौसम का पूर्वानुमान और कृषि तकनीकों की जानकारी सीधे अपने स्मार्टफोन पर प्राप्त करने लगता है। इसके परिणामस्वरूप, दोनों देशों के सीमावर्ती और तराई क्षेत्रों में पारंपरिक बिचौलियों (Middlemen) के शोषण का चक्र टूटा है और किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य मिल रहा है। **वित्तीय समावेशन और डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (DBT) :** भारत सरकार द्वारा अपनाई गई प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) प्रणाली ने वित्तीय भ्रष्टाचार पर कड़ा प्रहार किया है। नेपाल में भी हाल के वर्षों में मोबाइल बैंकिंग और भारत–नेपाल संयुक्त वित्तीय कूटनीति के तहत यूपीआई (UPI) आधारित डिजिटल भुगतान प्रणालियों का विस्तार हुआ है। इसने सीमा पार कृषि व्यापार करने वाले सीमांत और महिला कृषकों के लेनदेन को अत्यधिक सुरक्षित, पारदर्शी और त्वरित बना दिया है।

5. दोनों देशों के समक्ष विद्यमान साझा चुनौतियाँ :

तुलनात्मक अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट होता है कि दोनों देशों की प्रशासनिक और भौगोलिक परिस्थितियां भिन्न होने के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में चुनौतियां काफी हद तक समान हैं : लैंगिक डिजिटल अंतराल (Gender Digital Divide) : ग्रामीण समाजों की पारंपरिक संरचना के कारण आज भी महिला कृषकों के पास व्यक्तिगत स्मार्टफोन और इंटरनेट के स्वतंत्र उपयोग की दर पुरुषों की अपेक्षा बेहद कम है। **बुनियादी ढांचे की कमी :** नेपाल के सुदूर उच्च पहाड़ी क्षेत्रों और भारत के पिछड़े ग्रामीण अंचलों में निरंतर बिजली कटौती और कमजोर इंटरनेट नेटवर्क (लो बैंडविड्थ) ई–सेवाओं के त्वरित लाभ में सबसे बड़ा अवरोध हैं। **भाषाई और**

तकनीकी अवरोध : तकनीकी एप्लिकेशन्स में उपयोग की जाने वाली जटिल भाषा के कारण कम पढ़े–लिखे या निरक्षर किसानों को इन उपकरणों को स्वयं संचालित करने में कठिनाई होती है, जिससे वे अन्य सेवा केंद्रों (कियोस्क) पर निर्भर हो जाते हैं।

6. सुझाव एवं निष्कर्ष :

भारत और नेपाल के मध्य 'संपर्क से समृद्धि' (Connectivity to Prosperity) के संकल्प को यदि वास्तविक रूप देना है, तो कृषि क्षेत्र में ई–गवर्नेंस का एक संयुक्त और एकीकृत ढांचा तैयार करना होगा। इसके लिए निम्नलिखित नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं : दोनों देशों को मिलकर एक 'साझा डिजिटल कृषि कॉरिडोर' (Shared Digital Agriculture Corridor) विकसित करना चाहिए, जिससे सीमा पार कृषि–तकनीक और वैज्ञानिक शोधों का आदान–प्रदान सुगम हो सके। कृषि संबंधी सभी मोबाइल पोर्टल्स को अधिक से अधिक सचित्र, वॉयस–बेस्ड (आवाज पर आधारित) और स्थानीय लोक–भाषाओं (जैसे नेपाली, मैथिली, भोजपुरी और सरल हिंदी) में परिवर्तित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :

संक्षेप में, ई–गवर्नेंस और डिजिटल साक्षरता का यह तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि सूचना प्रौद्योगिकी ने दक्षिण एशिया के कृषक समाज के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। भारत की तकनीकी विशेषज्ञता और नेपाल की कृषि प्राथमिकताओं का यह सामंजस्य न केवल दोनों राष्ट्रों के ग्रामीण जीवन स्तर को उन्नत करेगा, बल्कि भविष्य के बहुआयामी क्षेत्रीय सहयोग के नए क्षितिज भी स्थापित करेगा।

संदर्भ (References)

1. नेपाल सरकार (2019). डिजिटल नेपाल फ्रेमवर्क–2019. संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, काठमांडू।
2. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (2021). डिजिटल इंडिया मिशन और ग्रामीण सुशासन रिपोर्ट. भारत सरकार, नई दिल्ली।
3. ओझा, पी. के. (2023). ई–गवर्नेंस और ग्रामीण विकास : दक्षिण एशियाई चुनौतियां और संभावनाएं. नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
4. श्रेष्ठ, आर. (2024). नेपाल के तराई क्षेत्र में डिजिटल बैंकिंग और ग्रामीण कृषि उद्यमिता. काठमांडू : हिमालयन रिसर्च जर्नल।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 200-204

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी का समाज पर प्रभाव एवं चुनौतियों का एक अध्ययन

(भारत और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों का एक अध्ययन)

समीक्षा झा, शोधार्थी

प्रो. चंद्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग, महात्मा गाँधी कशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

सारांश :

भारत–नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाती है, किन्तु वर्तमान समय में यही सीमा मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी जैसी गंभीर समस्याओं का माध्यम भी बनती जा रही है। सीमावर्ती क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, कमजोर प्रशासनिक व्यवस्था तथा सीमित विकास तस्करी को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारण हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत–नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी की स्थिति, उसके सामाजिक, आर्थिक एवं सुरक्षा संबंधी प्रभावों तथा उससे उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में पाया गया कि तस्करी का सबसे अधिक प्रभाव युवाओं और सीमावर्ती समाज पर पड़ता है। नशाखोरी, अपराध, हिंसा, सामाजिक असुरक्षा तथा पारिवारिक विघटन जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। वहीं अवैध हथियारों की उपलब्धता हत्या, लूट, अपहरण और संगठित अपराधों को बढ़ावा देती है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा भी प्रभावित होती है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि अंतरराष्ट्रीय अपराध नेटवर्क खुली सीमा का उपयोग ट्रांजिट मार्ग के रूप में करते हैं।भारत और नेपाल द्वारा सीमा सुरक्षा, संयुक्त गश्त, खुफिया सूचनाओं के आदान–प्रदान तथा जागरूकता अभियानों जैसे कई प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन समस्या की जटिलता अभी भी बनी हुई है।

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि प्रभावी सीमा प्रबंधन, आधुनिक तकनीकी निगरानी, द्विपक्षीय सहयोग, रोजगार सृजन तथा सामाजिक जागरूकता के माध्यम से इस समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। यह अध्ययन सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा एवं सामाजिक स्थिरता के लिए प्रभावी नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द : भारत–नेपाल सीमा, मादक पदार्थ तस्करी, अवैध हथियार, सीमावर्ती क्षेत्र, सामाजिक प्रभाव, राष्ट्रीय सुरक्षा, अपराध, नशाखोरी, सीमा प्रबंधन, द्विपक्षीय सहयोग।

1. प्रस्तावना :

भारत और नेपाल के संबंध केवल दो पड़ोसी देशों के रिश्ते नहीं हैं, बल्कि ये संबंध वर्षों पुरानी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक निकटता पर आधारित हैं। दोनों देशों के लोगों के बीच पारिवारिक, व्यापारिक और सामाजिक संपर्क हमेशा से बने रहे हैं। लगभग 1,751 किलोमीटर लंबी खुली सीमा के कारण लोग बिना वीजा और पासपोर्ट के आसानी से एक–दूसरे के देश में आ–जा सकते हैं। हालांकि यह व्यवस्था दोनों देशों की मित्रता को मजबूत बनाती है, लेकिन वर्तमान समय में यही खुली सीमा मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी जैसी गंभीर समस्याओं को भी बढ़ावा दे रही है। सीमावर्ती क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और विकास की कमी के कारण कई लोग मजबूरी में तस्करी जैसे अवैध कार्यों से जुड़ जाते हैं। तस्कर गिरोह स्थानीय युवाओं को पैसों का लालच देकर अपने नेटवर्क में शामिल कर लेते हैं। इसका सबसे बुरा असर युवाओं और समाज पर पड़ता है। नशे की बढ़ती लत से अपराध, हिंसा, घरेलू कलह और सामाजिक असुरक्षा बढ़ रही है। वहीं अवैध हथियारों की तस्करी हत्या, लूट और अन्य हिंसक घटनाओं को बढ़ावा देती है, जिससे लोगों में भय और असुरक्षा की भावना पैदा होती है। यह समस्या केवल अपराध तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव समाज, अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी पड़ता है। कई बार तस्करी का संबंध आतंकवाद, मानव तस्करी और नकली मुद्रा जैसे अंतरराष्ट्रीय अपराधों से भी जुड़ जाता है। भारत और नेपाल की सरकारें सीमा सुरक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इस समस्या को रोकने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन खुली सीमा और संगठित अपराध नेटवर्क के कारण यह चुनौती लगातार बनी हुई है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य :

भारत–नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी के कारणों, इसके सामाजिक प्रभावों तथा रोकथाम के उपायों का अध्ययन करना है, ताकि समाज और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए प्रभावी समाधान खोजे जा सकें।

2. अध्ययन के उद्देश्य :

2.1 भारत–नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी की स्थिति का अध्ययन करना।

2.2 तस्करी के सामाजिक, आर्थिक और सुरक्षा संबंधी प्रभावों का विश्लेषण करना।

2.3 सीमावर्ती क्षेत्रों में उत्पन्न चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

2.4 तस्करी रोकने हेतु भारत और नेपाल द्वारा उठाए गए कदमों का अध्ययन करना।

2.5 समस्या के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

3. परिकल्पना :

3.1 खुली सीमा व्यवस्था तस्करी को बढ़ावा देती है।

3.2 बेरोजगारी और गरीबी सीमावर्ती क्षेत्रों में तस्करी के प्रमुख कारण हैं।

3.3 प्रभावी सीमा प्रबंधन और द्विपक्षीय सहयोग से तस्करी पर नियंत्रण संभव है।

4. साहित्यिक समीक्षा :

4.1 **संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी, 2023)** के अनुसार भारत–नेपाल की

खुली सीमा मादक पदार्थों की तस्करी के लिए संवेदनशील मानी जाती है। रिपोर्ट में बताया गया है कि नशीले पदार्थों की तस्करी युवाओं में नशे की लत, अपराध, पारिवारिक विघटन तथा सामाजिक असुरक्षा जैसी समस्याओं को बढ़ावा देती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि संगठित अपराधी समूह मादक पदार्थों की तस्करी के माध्यम से आर्थिक लाभ अर्जित करते हैं, जिससे सामाजिक एवं कानूनी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

4.2 **वैश्विक संगठित अपराध सूचकांक (2023)** के अध्ययन में बताया गया है कि भारत–नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों में अवैध हथियारों की तस्करी आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। अध्ययन के अनुसार अवैध हथियारों की उपलब्धता से हत्या, लूट, हिंसा तथा अन्य आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, हथियारों और मादक पदार्थों की तस्करी एक–दूसरे से जुड़ी हुई है, जिससे सीमावर्ती समाज में असुरक्षा और सामाजिक अस्थिरता बढ़ती है।

4.3 **अंतरराष्ट्रीय नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड (2023)** की रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया में मादक पदार्थों का अवैध व्यापार लगातार बढ़ रहा है। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा तस्करों के लिए एक सुविधाजनक मार्ग के रूप में कार्य करती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि मादक पदार्थों की तस्करी का संबंध आतंकवाद के वित्तपोषण, संगठित अपराध तथा सामाजिक अस्थिरता से भी जुड़ा हुआ है।

4.4 **वैश्विक संगठित अपराध सूचकांक (2023)** के अनुसार भारत–नेपाल की छिद्रयुक्त सीमा अवैध हथियारों की तस्करी को बढ़ावा देती है। अध्ययन में बताया गया है कि अवैध हथियार हत्या, लूट, रंगदारी और अन्य संगठित अपराधों में वृद्धि के प्रमुख कारणों में से हैं। हथियारों की तस्करी से सीमावर्ती क्षेत्रों में भय और असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न होता है।

उपलब्ध अध्ययनों में मादक पदार्थों एवं अवैध हथियारों की तस्करी पर चर्चा की गई है, किंतु भारत–नेपाल सीमावर्ती क्षेत्रों के समाज, युवाओं और स्थानीय समुदायों पर इनके संयुक्त प्रभावों का विस्तृत समाजशास्त्रीय अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। यही वर्तमान शोध का प्रमुख अध्ययन क्षेत्र होगा।

5. भारत–नेपाल सीमा पर तस्करी की स्थिति :

भारत–नेपाल की खुली सीमा का दुरुपयोग कर तस्कर मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी करते हैं। तस्करी की घटनाएँ विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों– सोनौली, रक्सौल, जोगबनी, रूपईडीहा और बनबसा में अधिक पाई जाती हैं। प्रमुख मादक पदार्थों में हेरोइन, चरस, गांजा, ब्राउन शुगर और सिंथेटिक ड्रग्स शामिल हैं। अवैध हथियारों में पिस्तौल, रिवॉल्वर, देशी कट्टा, कारतूस और विस्फोटक सामग्री प्रमुख हैं।

5.1 समाज पर प्रभाव :

5.1.1 युवाओं में नशाखोरी और मानसिक तनाव बढ़ता है।

5.1.2 अवैध हथियारों से हत्या, लूट और हिंसक अपराध बढ़ते हैं।

5.1.3 नशाखोरी से पारिवारिक आर्थिक संकट और सामाजिक तनाव उत्पन्न होता है।

5.1.4 सीमावर्ती क्षेत्रों में भय और असुरक्षा की भावना बढ़ती है।

5.1.5 आसान धन की चाह युवाओं को अपराध और तस्करी की ओर आकर्षित करती है।

5.2 आर्थिक प्रभाव :

5.2.1 वैध व्यापार को नुकसान।

5.2.2 काले धन में वृद्धि।

5.2.3 सरकारी राजस्व में कमी।

5.2.4 स्थानीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव।

5.3 सुरक्षा एवं राजनीतिक प्रभाव :

5.3.1 आतंकवाद और उग्रवाद को बढ़ावा मिलता है।

5.3.2 सीमा सुरक्षा और प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

5.3.3 प्रशासनिक भ्रष्टाचार बढ़ सकता है।

5.3.4 पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है।

5.4 सीमावर्ती क्षेत्रों की प्रमुख चुनौतियाँ :

5.4.1 खुली सीमा के कारण निगरानी कठिन होती है।

5.4.2 गरीबी और बेरोजगारी लोगों को तस्करों से जोड़ती है।

5.4.3 आधुनिक तकनीकी निगरानी की कमी है।

5.4.4 अंतरराष्ट्रीय अपराध गिरोह सीमा का उपयोग ट्रांजिट मार्ग के रूप में करते हैं।

5.4.5 तस्करी और नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता कम है।

5.5 भारत और नेपाल द्वारा उठाए गए कदम :

5.5.1 भारत द्वारा :

5.5.1.1 सशस्त्र सीमा बल (SSB) की तैनाती।

5.5.1.2 सीमा चौकियों की संख्या में वृद्धि।

5.5.1.3 नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) की सक्रियता।

5.5.1.4 संयुक्त सीमा गश्त।

5.5.2 नेपाल द्वारा :

5.5.2.1 Armed Police Force की निगरानी।

5.5.2.2 सीमा जांच चौकियों का विस्तार।

5.5.2.3 मादक पदार्थ विरोधी अभियान।

5.5.3 संयुक्त प्रयास :

5.5.3.1 खुफिया सूचनाओं का आदान–प्रदान।

5.5.3.2 संयुक्त सुरक्षा बैठकें।

5.5.3.3 सीमा अपराध रोकने हेतु सहयोग समझौते।

5.5.4 समाधान एवं सुझाव :

5.5.4.1 सीमा क्षेत्रों में आधुनिक तकनीक आधारित निगरानी प्रणाली विकसित की जाए।

5.5.4.2 भारत और नेपाल के बीच खुफिया सहयोग को और मजबूत किया जाए।

5.5.4.3 सीमावर्ती क्षेत्रों में रोजगार और शिक्षा के अवसर बढ़ाए जाएँ।

5.5.4.4 युवाओं के लिए नशा मुक्ति और जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

5.5.4.5 भ्रष्टाचार पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया जाए।

5.5.4.6 स्थानीय समुदायों को सीमा सुरक्षा में भागीदार बनाया जाए।

5.5.4.7 तस्करी से जुड़े मामलों में कठोर दंड व्यवस्था लागू की जाए।

6. निष्कर्ष (Conclusion) :

भारत और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी एक गंभीर सामाजिक और सुरक्षा संबंधी समस्या बन चुकी है। यह समस्या केवल अपराध तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा को भी प्रभावित करती है। सीमावर्ती क्षेत्रों में गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा तथा कमजोर प्रशासनिक व्यवस्था तस्करी को बढ़ावा देती है। यदि दोनों देश संयुक्त रूप से प्रभावी सीमा प्रबंधन, तकनीकी निगरानी, सामाजिक जागरूकता तथा आर्थिक विकास पर ध्यान दें, तो इस समस्या पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। अतः भारत और नेपाल के सहयोगात्मक प्रयास ही सीमावर्ती क्षेत्रों को सुरक्षित, शांतिपूर्ण और अपराधमुक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ सूची :

1. अंतरराष्ट्रीय नारकोटिक्स नियंत्रण बोर्ड (आईएनसीबी). (2023). वार्षिक प्रतिवेदन 2023। न्यूयॉर्क : संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
2. आर. कुमार. (2021). दक्षिण एशिया में सीमा पार अपराध : चुनौतियाँ एवं सुरक्षा चिंताएँ. नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशंस।
3. ए. सिंह. (2020). भारत–नेपाल सीमा पर मादक पदार्थ एवं हथियार तस्करी. जर्नल ऑफ बॉर्डर सिक्योरिटी स्टडीज, 12(3), 45–60।
4. गृह मंत्रालय. (2021). सीमा सुरक्षा एवं अपराध नियंत्रण प्रतिवेदन. काठमांडू : नेपाल सरकार।
5. संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय. (2023). विश्व मादक पदार्थ प्रतिवेदन 2023. वियना : संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
6. साउथ एशिया टेररिज्म पोर्टल. (2022). दक्षिण एशिया आतंकवाद मूल्यांकन प्रतिवेदन. नई दिल्ली : इंस्टीट्यूट फॉर कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट।
7. वैश्विक संगठित अपराध सूचकांक. (2023). नेपाल देश प्रोफाइल रिपोर्ट 2023। जिनेवा : ग्लोबल इनिशिएटिव अगेंस्ट ट्रांसनेशनल ऑर्गेनाइज्ड क्राइम।
8. गृह मंत्रालय. (2023). वार्षिक प्रतिवेदन 2022–23. नई दिल्ली : भारत सरकार।
9. नेपाल पुलिस. (2022). नेपाल पुलिस वार्षिक प्रतिवेदन 2021–22. काठमांडू : नेपाल सरकार।
10. पी. शर्मा. (2019). अवैध हथियार व्यापार एवं सीमा सुरक्षा. काठमांडू : हिमालयन रिसर्च पब्लिकेशंस।
11. वैश्विक संगठित अपराध सूचकांक. (2023). ग्लोबल ऑर्गेनाइज्ड क्राइम इंडेक्स 2023। जिनेवा : ग्लोबल इनिशिएटिव अगेंस्ट ट्रांसनेशनल ऑर्गेनाइज्ड क्राइम।
12. संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी). (2023). दक्षिण एशिया में मादक पदार्थ एवं अपराध संबंधी प्रतिवेदन। नई दिल्ली : संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ अपराध कार्यालय।

मोबाईल न. 91– 9889680132, ईमेल–आईडी : sameeksha-jha05@gmail.com)

मोबाईल न. 91– 9450787800, ईमेल–आईडी : drcss09@gmail.com)

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 205-210

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Climate Change : Melting Glaciers and the Challenge

Dr. Sanjay Kumar Sinha

Assistant Professor, P.G Department of Geology.

S.N.S.R.K.S. College, Saharsa.

B.N. Mandal University, Madhapura (Bihar).

Abstract :

Climate change is one of the most serious global environmental problems today. Glaciers are rapidly shrinking. 70% of the Earth's surface is covered by glaciers. The Earth's rising average temperature directly impacts the world's freshwater reserves and ecosystems in some way or the other. These glaciers affect the Earth's inhabitants' agriculture. Due to excessive heat, glaciers are melting at a rapid pace, causing sea level rise, loss of water resources, biodiversity, and natural disasters, causing humans to suffer from various problems.

Key words : Global Warming, Climate Change, Glacier.

Introduction :

The Earth's climate is affected by industrialization, deforestation, long-term climate change, excessive use of fossil fuels, and the release of greenhouse gases have created an imbalance in the atmosphere, resulting in global warming and a continued slowing down of glaciers .Glaciers are important factors in the Earth's climate system, water resources, and ecological balances. They are not just ice cubes. The effects of glacial melting affect diverse regions, from local to global scales. (Dense snow or ice caps. It is a huge natural mass of ice and debris. Due to its heavy weight and the pressure of gravitational force, it slides or slides very slowly down the mountain slopes or valleys. Due to extreme pressure, it is very dense and gaseous. Due to pressure, this frozen ice takes the form of a dense ice mass of a certain size (about 01 square kilometre). When it becomes larger than this, it can hold its own weight of fresh water without melting due to the pressure of its own weight. It is the largest natural reservoir of fresh water. By melting slowly, it becomes the main source of fresh water through rivers - it helps in maintaining the balance of the ecosystem.

Literature Review :

- Wuebbles and Jaim (2001), Hansen et al 2011 accepted that despite natural causes, the authropoge generally nicely enhanced greenhouse effect has caused strong possive radiative forcing.
- Wester et al. (2019), predicated that the impact of climate change would be severe in the future if the climate change scenario continues without any mitigation and adaptation measures.
- Jackson et al. (2023), change in climate impacts grew glaciers and glacial Lakes and their potential often inter linkages. Ten studied together due to their
- Lutz et al. (2016), Summarized the change in glaciers and glacial lakes in response to climate Change: mostly including studies
- Thakuri et al. (2014) claimed that Shrinkage was less Himalayas' glacier in the as compared to other part of and Tibetan plateau since the Everest region are located at higher elevations of the world where the likely impact of warming are, relatively low.
- Yamada and Sharma, (1993), glacier lakes with Subsequent expand expansion of area and lake volume increase in the alpine environment indirectly indicates the Consequences of climate change.

Objectives :-

- To understand the concept of climate change and glaciers.
- To recognise relationship between climate change and glaciers.
- To analyses the factors for melting glaciers and its effects.
- To know the conservation Impacts and Policies for

Climate Change : Concept and Nature :-

Climate change refers to long-term changes in temperature, rainfall, wind, and other climatic factors. These changes are currently occurring primarily due to human activities. Toxic gases such as carbon oxide, methane, and nitrous oxide are playing a major role in increasing the Earth's temperature.

Current status of Himalayan glaciers :-

The Himalayas are called the 'Third Pole' because they have the largest amount of snow or ice after the climatic regions of the world. On the basis of various scientific studies, it can be said that the Himalayan glaciers have also accelerated in the last 76 years, in which the problem of shrinkage has started occurring continuously in the last 76 years. In most of the countries of the Asian continent, glaciers like Gangotri, Simachin, Pindari and Milan are continuously getting water sources .They are retreating.

The relationship between climate change and glacier retreat : Natural imbalances affect

global temperatures. The rate of glacier loss is gradually decreasing, the rate of melting is increasing, and the rate of glaciations is becoming more and more negative. The World Meteorological Organization (WMO) has stated that the latest report on glacier loss has shown this trend to be continuously increasing. Record levels have been reached.

The main reasons for the melting of glaciers are as follows :

- **Natural causes :** Temperature fluctuations due to natural causes like melting of glaciers, climate events like El Nino and changes in rainfall and snowfall patterns are the challenges faced by humans today from nature.
- **Man-made causes :** The development of human civilization has exploited natural resources to such an extent that today many problems are arising before humans due to the burning of fossil fuels and industrialization, Deforestation, urbanization, black carbon pollution, etc. have caused excessive glaciations. The gusts of hot wind are rapidly eroding the vast desires of many.
- **The entire environmental :** Global warming has contributed to the melting of glaciers, which is causing sea level rise, which in turn has caused flooding in coastal areas, land masses, and human and other organisms. The threat of animal displacement is increasing day by day. Due to which the mountain ecosystem is becoming unstable. Affecting biodiversity

Effect on water resources :

Glacier melting increases water impacts, as glaciers are the source of many rivers. However, long-term water availability is always at risk if the ice is weakened or reduced. This could disrupt drinking water, sewage, irrigation water for agriculture, and hydroelectric power generation.

Impact on agriculture and farm security :

The scarcity and uncertainty of river flows in time span will affect the future of irrigation, an essential element of rice production, which will lead to food shortages if agricultural productivity is stagnant. There will be an adverse impact on security.

Impact on biodiversity and ecosystem :

Currently, due to the retreat of glaciers, habitats of specific species are being destroyed, affecting the mountain ecological balance and ecosystems. For example, the habitats of bears and penguins are being destroyed.

Impact on local communities and livelihoods :

People living in the mountainous areas around the glacier, water, Agriculture and animal husbandry are dependent on them. Glaciations can affect their livelihoods and socio-economic status, making their lives difficult.

Flood risks :- When glaciers melt quickly, large lakes can be formed

Change in the river flow :-

When glaciers melt, river water levels change. Some rivers may have too much water at first, but less water later, affecting plants, animals, and people.

Dialogue on bridges, dams and hydroelectric power plants :-

Due to the melting of glaciers, there is a flow of huge amount of water, due to which the risk of bridges, dams, hydroelectric power plants built with old technology getting washed away or destroyed has increased significantly, which apart from causing loss of life and property, also affects the national income and development.

Effect of level erosion :- Rising sea levels due to the melting of glaciers cause seawater to rush against the shores, making storm surges and severe cyclones more destructive.

Accelerating the cycle of climate change :-

Snow, being white, reflects the Sun's heat and light back into space. Melting snow or darker ground or oceans absorb it, causing the Earth to warm faster as it absorbs all the Sun's heat.

Importance of glaciers :

The following are the importance of glaciers :-

1. Main source of fresh water.
2. Regulation of the flow of rivers.
3. Hydroelectric power generation.
4. Maintaining climate balance.
5. Supporting biodiversity.

Major Challenges :-

- Rising global temperature.
- Limited scientific monitoring.
- Balance between development and conservation.
- Difficulties in policy implementation.
- Lack of public awareness.
- Shortage of water resources.
- Natural calamities (floods, landslides, etc.)
- Lack of implementation of schemes in the current context.
- Impact on biodiversity.
- Threat to human life and agriculture.
- Rise in sea level.

Conservation Impacts and Policies :

Many efforts were made to reduce the intensity of glacier melting and to find solutions to various future concerns, in which the participation of the following organizations was commendable:

- **Paris Agreement :** To tackle climate change 22 December 2015.An agreement was reached with the consent of 195 countries to stop global warming and protect the Earth from catastrophic changes. This agreement is known as the Mother Agreement. Financial support is used to provide assistance during natural disasters.
- **National Action Plan on Climate Change (NAPCC) :** The Government of India launched the National Action Plan on Climate Change (NAPCC) Mission in 2008, and sustainable agriculture, under which the National Solar Mission, National Water Mission, and Harti Bharat Mission were established. National Mission for Agriculture etc. was implemented.
- **Programmes promoting renewable energy :** To promote renewable energy, the Government of India has launched PM Surya (free electricity meals), PM Kusum (solar pumps for farmers), Rashtriya Harit Hydrogen Mission.
- **Himalayan Ecosystem Conservation Programme :** A project by the Government of India, the United Nations (UNDP) and various non-governmental organizations (NGOs) to protect the fragile environment, rare wildlife and livelihoods of local communities in the Himalayan region from climate change.
- **International Cooperation Programme :** Climate change is a global crisis that requires the participation of all countries to address it. International cooperation is crucial to reducing greenhouse gas emissions, developing clean energy technologies, and addressing climate disasters.
- COP 29: Investing in a livable planet for all was a key plank of COP 29, which aimed to reduce emissions to combat climate change and provide necessary financial support to developing countries.

Suggestions and measures to prevent climate change and melting of glaciers :

1. Greenhouse gas emissions must be reduced.
2. Arrangements will have to be made for the widespread use of renewable energy.
3. Emphasis on a forestation and reforestation.
4. Emphasis on exploring new dimensions to strengthen the glacier monitoring system.
5. To emphasize on respecting nature among the local people.
6. Emphasis on adopting sustainable development policies.
7. Emphasize the need for the government to implement stricter rules

Conclusion :-

Glaciers are one of the most sensitive and impactful indicators of climate change. Natural and

anthropogenic factors contribute to their melting. Their rapid melting poses a serious challenge to the environment, the country's economy, and human life and society. If humans fail to successfully control global warming, the future could present numerous problems, including water scarcity, raising sea levels, and an increase in the frequency of natural disasters. Therefore, human society needs to be alerted in a timely manner. Human-to-human global cooperation, scientific research, and effective policy interventions should be considered to address this problem as quickly as possible.

Reference :-

- Marzeion, B, Cogley, J.G. Richter, K. f Parkes, D. (2014): Attribution of global glacier mass loss to anthropogenic and natural, Causes. Science, 345 (6199), 919-921.
- Zemp-M, Huss, M. Thibert, E, et al (2019). Globel glacier mass change changes and their contributions to sea-level rise from 1961 to 2018.
- Nie, Y, Pritchard, H. D, Liu, 9, et al (2021) Global change and hydrological implications in the Himalaya and Karakoram. Nature Reviews Earth and Environment, 2. 91-106.
- Singh, P., Arora, M., & Goel, N.K. (2006) Effect of climate change on runoff of a glacierized Himalayan basin.
- National Research Council (2012). Himalayan Glaciers: Climate Change, water Research and water security. Washington, DC The National Academies Press.
- Bolch, T.et al. (201). Climate change and melting glaciers In: Impacts of climate change (pp 53-84). Elsevier.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 211-217

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

डॉ. सरोज बाला श्याग बिश्नोई

सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान,

शास. विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़, जिला–एम.सी.बी. (छ. ग.)

सारांश (Abstract) :

भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक एकता के सबसे सशक्त उदाहरणों में से एक हैं। दोनों देशों के मध्य संबंध केवल राजनीतिक और भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि साझा इतिहास, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक परंपराओं, भाषायी निकटता तथा पारिवारिक संबंधों से गहराई से जुड़े हुए हैं। "रोटी–बेटी का रिश्ता" भारत–नेपाल संबंधों की आत्मीयता का प्रतीक है, जिसने सदियों से दोनों देशों के सामाजिक ताने–बाने को सुदृढ़ बनाए रखा है।

यह शोध आलेख भारत और नेपाल के युगीन संबंधों का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें नेपाल के प्रमुख त्योहारों 'दशईं और तिहार' तथा उनके भारतीय स्वरूपों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। साथ ही दोनों देशों में मनाए जाने वाले साझा त्योहारों, सांस्कृतिक समानताओं, धार्मिक परंपराओं और सामाजिक समरसता का विवेचन किया गया है।

शोध में "रसोई कूटनीति" को सांस्कृतिक कूटनीति के प्रभावी माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। दाल–भात, सेल रोटी, मोमो, अचार तथा अन्य हिमालयी व्यंजनों के माध्यम से दोनों देशों के पारंपरिक संबंधों और पर्यटन संभावनाओं का अध्ययन किया गया है।

इसके अतिरिक्त आलेख में हिमालयी क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक रेशों 'बिछुआ और भांग' के टिकाऊ फैशन उद्योग में उपयोग तथा वैश्विक संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। वर्तमान समय में जब विश्व पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है, तब हिमालयी जैविक संसाधन सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारत और नेपाल का सहयोग केवल क्षेत्रीय विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्व शांति, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक सह–अस्तित्व और मानव कल्याण के लिए वैश्विक मॉडल बन सकता है। "हिमालयी संगम" की अवधारणा मानवता, सहयोग, सहिष्णुता और सतत विकास का संदेश देती है।

मुख्य शब्द (Keywords) : भारत–नेपाल संबंध, हिमालयी संगम, रोटी–बेटी संबंध, सांस्कृतिक कूटनीति, साझा त्योहार, टिकाऊ फैशन, हिमालयी फाइबर, विश्व शांति।

प्रस्तावना :

भारत और नेपाल के संबंध विश्व इतिहास में दो ऐसे पड़ोसी देशों के संबंध हैं, जिनकी जड़ें केवल राजनीतिक व्यवस्था में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक आत्मीयता में निहित हैं। हिमालय की विशाल पर्वतमालाएँ दोनों देशों को भौगोलिक रूप से जोड़ने के साथ–साथ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी एक सूत्र में बांधती हैं।

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा, धार्मिक तीर्थस्थल, साझा भाषा, समान रीति–रिवाज और वैवाहिक संबंध इस बात का प्रमाण हैं कि दोनों देशों के नागरिक स्वयं को एक विस्तृत सांस्कृतिक परिवार का हिस्सा मानते हैं। नेपाल में पशुपतिनाथ, जनकपुर और लुंबिनी जैसे तीर्थस्थल भारतीय श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, वहीं भारत में काशी, अयोध्या, बोधगया और प्रयागराज नेपाली नागरिकों की धार्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं। वैश्वीकरण और आधुनिकता के इस दौर में भारत और नेपाल के संबंधों का महत्व और अधिक बढ़ गया है। आर्थिक सहयोग, शिक्षा, पर्यटन, जल संसाधन, ऊर्जा उत्पादन, पर्यावरण संरक्षण तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान दोनों देशों के विकास के महत्वपूर्ण आयाम बन चुके हैं।

"हिमालयी संगम" की अवधारणा इस बात को रेखांकित करती है कि भारत और नेपाल मिलकर न केवल दक्षिण एशिया की स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि विश्व को सह–अस्तित्व और शांति का नया मार्ग भी दिखा सकते हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

- भारत और नेपाल के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का अध्ययन करना।
- नेपाल के प्रमुख त्योहारों और उनके भारतीय स्वरूपों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- "रोटी–बेटी" संबंधों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।
- दोनों देशों की साझा भोजन संस्कृति और रसोई कूटनीति की भूमिका को समझना।
- हिमालयी प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ फैशन उद्योग में उपयोग की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
- भारत–नेपाल संबंधों को विश्व शांति एवं स्थिरता के मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) एवं वर्णनात्मक (Descriptive) प्रविधि पर आधारित है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसमें विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, सांस्कृतिक अध्ययनों, समाचार पत्रों तथा ऑनलाइन स्रोतों से सामग्री संकलित की गई है।

अध्ययन में तुलनात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत भारत और नेपाल की सांस्कृतिक परंपराओं, त्योहारों, खान–पान, सामाजिक संबंधों तथा आर्थिक संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

सांस्कृतिक अध्ययन के साथ–साथ पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखा गया है, ताकि भारत–नेपाल संबंधों की समग्र तस्वीर प्रस्तुत की जा सके।

1. नेपाल के प्रमुख त्योहार और भारतीय स्वरूप

(क) दशई और दशहरा :

नेपाल का "दशईं" पर्व भारत के दशहरा पर्व का ही विस्तृत सांस्कृतिक स्वरूप है। यह पर्व शक्ति, धर्म और विजय का प्रतीक माना जाता है। नेपाल में इसे अत्यंत भव्यता के साथ मनाया जाता है। लोग देवी दुर्गा की आराधना करते हैं तथा परिवार के वरिष्ठ सदस्य छोटे सदस्यों को टीका और जमरा लगाकर आशीर्वाद देते हैं।

भारत में दशहरा भगवान राम की रावण पर विजय के रूप में मनाया जाता है। दोनों देशों में यह पर्व अच्छाई की बुराई पर विजय का संदेश देता है।

(ख) तिहार और दीपावली :

नेपाल का "तिहार" भारत की दीपावली का समानांतर पर्व है। इसमें पशु–पक्षियों और प्रकृति के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है। भाई–टीका इस पर्व का महत्वपूर्ण अंग है।

भारत में दीपावली लक्ष्मी पूजा और दीपोत्सव के रूप में प्रसिद्ध है। दोनों देशों में यह पर्व समृद्धि, प्रेम और पारिवारिक एकता का प्रतीक है।

2. रोटी–बेटी का रिश्ता : ऐतिहासिक और सामाजिक आधार :

भारत और नेपाल के संबंधों को "रोटी–बेटी का रिश्ता" कहा जाता है। यह संबंध सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मीयता का प्रतीक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक विरासत :

मिथिला संस्कृति दोनों देशों के संबंधों की सबसे बड़ी आधारशिला है। माता सीता का जन्म जनकपुर (नेपाल) में हुआ तथा उनका विवाह अयोध्या (भारत) के भगवान राम से हुआ। यह संबंध सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना जाता है।

भारत और नेपाल की सांस्कृतिक विरासत एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई है। प्राचीन काल में नेपाल भारतीय सभ्यता और संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा। काठमांडू घाटी में भारतीय मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। पशुपतिनाथ मंदिर में दक्षिण भारतीय भट्ट पुजारियों की परंपरा आज भी दोनों देशों की धार्मिक एकता का प्रमाण है।

मिथिला पेंटिंग बिहार और नेपाल के तराई क्षेत्र की साझा सांस्कृतिक धरोहर है। इसी प्रकार नेपाली लोक संगीत, गंधर्व परंपरा और भारतीय लोक वाद्यों में गहरा साम्य दिखाई देता है।

नेपाल में संस्कृत अध्ययन की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। वाराणसी लंबे समय तक नेपाली विद्वानों का प्रमुख शिक्षा केंद्र रहा। पालि और प्राकृत भाषाओं के संरक्षण में नेपाल का योगदान उल्लेखनीय है।

सामाजिक महत्व :

- सीमावर्ती क्षेत्रों में वैवाहिक संबंध अत्यंत सामान्य हैं।
- दोनों देशों के नागरिक बिना वीजा के आवागमन करते हैं।
- नेपाली समुदाय भारतीय सेना और विभिन्न संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- भारतीय धार्मिक परंपराओं का प्रभाव नेपाल में स्पष्ट दिखाई देता है।
- यह रिश्ता दोनों देशों की सामाजिक स्थिरता और पारस्परिक विश्वास को मजबूत करता है।

3. साझा त्योहार और सांस्कृतिक एकता :

- भारत और नेपाल में अनेक पर्व समान श्रद्धा और उत्साह से मनाए जाते हैं।

- प्रमुख साझा पर्व, रामनवमी, महाशिवरात्रि, होली, बुद्ध पूर्णिमा, छठ पूजा, जन्माष्टमी, नवरात्रि, इन पर्वों के माध्यम से धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा मिलता है। पशुपतिनाथ, जनकपुर, काशी और बोधगया जैसे तीर्थस्थल दोनों देशों को आध्यात्मिक रूप से जोड़ते हैं।

4. रसोई कूटनीति : सांस्कृतिक समरसता का माध्यम :

- भोजन किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण भाग होता है। भारत और नेपाल की भोजन परंपराओं में गहरी समानता दिखाई देती है।
- साझा व्यंजन, दाल–भात, सेल रोटी, मोमो, गुन्द्रुक, अचार, ढिंडो, खीर और पूड़ी।

रसोई कूटनीति का महत्व :

आज विश्व स्तर पर "फूड डिप्लोमेसी" को सांस्कृतिक संबंधों के प्रभावी माध्यम के रूप में देखा जा रहा है। भारत और नेपाल संयुक्त भोजन उत्सव, जैविक खाद्य मेले और पारंपरिक व्यंजन प्रदर्शनी आयोजित कर सकते हैं।

यह न केवल पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देगा, बल्कि स्थानीय किसानों और महिला स्व–सहायता समूहों के लिए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न करेगा।

5. प्रसिद्ध व्यक्तित्वों की जीवनी और सांस्कृतिक प्रेरणा :

भारत और नेपाल के अनेक महापुरुषों ने विश्व को शांति, करुणा और मानवता का संदेश दिया।

- **नेपाल के प्रमुख व्यक्तित्व :** भगवान बुद्ध, भानुभक्त आचार्य, बी.पी. कोइराला, पासंग ल्हामू शेर्पा।
- **भारत के प्रमुख व्यक्तित्व :** महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, इन महान व्यक्तित्वों की जीवनी, साहित्य और विचारों का संयुक्त प्रचार दोनों देशों की युवा पीढ़ी को प्रेरित कर सकता है।

6. टिकाऊ फैशन और हिमालयी फाइबर :

वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण वैश्विक चिंता का विषय बन चुका है। ऐसे में हिमालयी प्राकृतिक रेशे 'बिछुआ और भांग' सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण विकल्प हैं।

- **बिछुआ फाइबर :** नेपाल और हिमालयी क्षेत्रों में बिछुआ पौधे से मजबूत और पर्यावरण–अनुकूल वस्त्र तैयार किए जाते हैं।
- **भांग फाइबर :** भांग से बने वस्त्र टिकाऊ, हल्के और जैविक होते हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

संभावनाएँ :

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती, महिलाओं के रोजगार में वृद्धि, पर्यावरण संरक्षण, वैश्विक निर्यात में वृद्धि, भारत और नेपाल संयुक्त रूप से "हिमालयी इको–फैशन" ब्रांड विकसित कर सकते हैं।

7. हिमालयी संगम : विश्व शांति और स्थिरता का मॉडल :

हिमालय केवल प्राकृतिक संपदा नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है। भारत और नेपाल का साझा दर्शन "वसुधैव कुटुम्बकम्" विश्व शांति का आधार बन सकता है।

- **प्रमुख आयाम :** जलवायु परिवर्तन से मुकाबला, हिमालयी जैव विविधता संरक्षण, सांस्कृतिक पर्यटन का

विकास, शिक्षा और युवा आदान–प्रदान, सीमा पार सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता।

यदि दोनों देश सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाते हैं, तो यह वैश्विक शांति और सह–अस्तित्व का आदर्श मॉडल बन सकता है।

8. ऊर्जा एवं जल संसाधन सहयोग :

- नेपाल जल संसाधनों और पनबिजली क्षमता से समृद्ध देश है। भारत और नेपाल के बीच जल संसाधन सहयोग भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- **अरूण-III**, पंचेश्वर और ऊपरी करनाली जैसी परियोजनाएँ दोनों देशों के ऊर्जा संबंधों को नई दिशा दे रही हैं। नेपाल से भारत को बिजली निर्यात दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय ऊर्जा बाजार की संभावनाओं को मजबूत करता है।
- बाढ़ प्रबंधन, नदियों के कटाव नियंत्रण और वर्षा आधारित डेटा साझाकरण दोनों देशों के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। कोशी और गंडक नहर प्रणालियों के आधुनिकीकरण से कृषि क्षेत्र को लाभ मिल सकता है।
- जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालयी ग्लेशियरों के पिघलने और ग्लेशियर झीलों के फटने (GLOF) का खतरा बढ़ रहा है। इसलिए साझा आपदा प्रबंधन और पर्यावरणीय निगरानी तंत्र की आवश्यकता है।

9. कनेक्टिविटी एवं आधारभूत संरचना :

भारत और नेपाल के बीच संपर्क व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अनेक परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं। जयनगर–कुर्था रेलवे, रक्सौल–काठमांडू रेल परियोजना और सीमा पार सड़क नेटवर्क दोनों देशों को आर्थिक रूप से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

डिजिटल इंडिया और डिजिटल नेपाल के समन्वय से फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क, हाई–स्पीड इंटरनेट और ई–गवर्नेंस सेवाओं का विस्तार संभव हुआ है।

सीमावर्ती क्षेत्रों में आधुनिक बस सेवाएँ, ड्राई पोर्ट्स, कंटेनर ट्रेनों और लॉजिस्टिक नेटवर्क के विकास से व्यापार लागत कम हो सकती है।

10. सुरक्षा एवं सामरिक सहयोग :

भारत और नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करती है। मानव तस्करी, मादक पदार्थों की तस्करी, नकली मुद्रा और आतंकवाद जैसी समस्याओं से निपटने के लिए संयुक्त रणनीति आवश्यक है।

सार्क (SAARC), बिम्सटेक (BIMSTEC) तथा बीबीआईएन (BBIN) जैसे क्षेत्रीय मंचों पर दोनों देशों की सक्रिय भागीदारी दक्षिण एशियाई सहयोग को मजबूत करती है।

"सूर्य किरण" सैन्य अभ्यास दोनों देशों की रक्षा साझेदारी का प्रमुख उदाहरण है। गोरखा सैनिकों की वीरता भारतीय सेना की ऐतिहासिक पहचान रही है।

साइबर सुरक्षा, ड्रोन निगरानी, खुफिया जानकारी साझाकरण और आपदा प्रबंधन भविष्य की सुरक्षा रणनीतियों के महत्वपूर्ण आयाम हैं।

नेपाल की सामरिक स्थिति भारत और चीन के बीच संतुलन का महत्वपूर्ण पहलू है। वर्तमान समय में

नेपाल "बफर स्टेट" से आगे बढ़कर "ब्रिज स्टेट" की भूमिका निभा सकता है।

11. पर्यावरण एवं सतत विकास :

हिमालय विश्व की सबसे संवेदनशील पारिस्थितिक प्रणालियों में से एक है। जलवायु परिवर्तन, ग्लेशियरों के पिघलने और जैव विविधता के संकट ने भारत और नेपाल को संयुक्त रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया है।

बाघ, गैंडा और हिम तेंदुआ जैसी लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण दोनों देशों की साझा जिम्मेदारी है। प्लास्टिक मुक्त हिमालय, जैविक खेती और हरित ऊर्जा की दिशा में संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं।

हिमालयी जड़ी–बूटियाँ और प्राकृतिक संसाधन आयुर्वेद तथा पारंपरिक चिकित्सा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके सतत उपयोग से स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी बढ़ावा मिल सकता है।

"स्वच्छ हिमालय, हरित हिमालय" अभियान दोनों देशों के पर्यावरणीय सहयोग का प्रभावी मॉडल बन सकता है।

12. भविष्य के नए क्षितिज :

21वीं सदी में भारत और नेपाल के संबंध पारंपरिक सहयोग से आगे बढ़कर तकनीकी और वैश्विक साझेदारी की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

हरित हाइड्रोजन, एआई आधारित आपदा प्रबंधन, स्मार्ट शहर, डिजिटल मुद्रा, 6ळ तकनीक और ब्लॉकचेन आधारित प्रशासन भविष्य के सहयोग के प्रमुख क्षेत्र हैं।

जलवायु न्याय, डिजिटल लोकतंत्र, अंतरिक्ष अनुसंधान और जैव सुरक्षा के क्षेत्रों में दोनों देश साझा नेतृत्व स्थापित कर सकते हैं।

भारत 2047 और नेपाल 2094 (वि.सं.) तक आर्थिक समृद्धि और सतत विकास के साझा लक्ष्य निर्धारित कर दक्षिण एशिया को नई दिशा दे सकते हैं।

13. शिक्षा, स्वास्थ्य एवं नवाचार :

भारत लंबे समय से नेपाली छात्रों के लिए शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा है। भारतीय विश्वविद्यालयों में नेपाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ और तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है।

टेलीमेडिसिन, संयुक्त अस्पताल, आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग की व्यापक संभावनाएँ हैं।

डिजिटल लाइब्रेरी, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्टार्टअप इनक्यूबेशन केंद्र भविष्य की साझेदारी के नए क्षेत्र हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में संक्रामक रोग नियंत्रण, टीकाकरण अभियान और मातृ–शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम दोनों देशों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष :

भारत और नेपाल के संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आत्मीयता पर आधारित हैं। दशईं और तिहार जैसे त्योहार, साझा भोजन संस्कृति, धार्मिक आस्था और "रोटी–बेटी" का संबंध दोनों देशों को एक–दूसरे के अत्यंत निकट लाते हैं।

वर्तमान समय में संधि के पुनरीक्षण और समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप नई नीतियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। "नेबरहुड फर्स्ट" नीति के अंतर्गत भारत नेपाल को विशेष महत्व देता है।

वर्तमान समय में दोनों देशों के सामने पर्यावरणीय संकट, आर्थिक चुनौतियाँ और वैश्विक प्रतिस्पर्धा जैसी समस्याएँ हैं। ऐसे में सांस्कृतिक कूटनीति, टिकाऊ विकास, पर्यटन, शिक्षा और जैविक संसाधनों के संयुक्त उपयोग के माध्यम से भारत और नेपाल नई संभावनाओं का निर्माण कर सकते हैं।

"हिमालयी संगम" केवल दो देशों का सहयोग नहीं, बल्कि मानवता, सह–अस्तित्व और विश्व शांति का संदेश है। यदि दोनों राष्ट्र अपनी साझा सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करें, तो वे विश्व समुदाय के लिए स्थिरता और सतत विकास का प्रेरणादायी उदाहरण बन सकते हैं।

संदर्भ सूची (References) :

1. भारत–नेपाल सांस्कृतिक संबंध – डॉ. रामशरण शर्मा।
2. South Asian Cultural Studies — Oxford Publications.
3. नेपाल पर्यटन बोर्ड रिपोर्ट।
4. भारतीय संस्कृति एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध – डॉ. एस.सी. सिंघल।
5. UNESCO Reports on Himalayan Heritage and Sustainability.
6. Sustainable Himalayan Fiber Studies — International Journal of Textile Research.
7. भारत और नेपाल के धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध – भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद।
8. Himalayan Ecology and Sustainable Development Reports.
9. नेपाल के लोक पर्व और परंपराएँ – त्रिभुवन विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. भारत–नेपाल मैत्री एवं सांस्कृतिक संवाद – नई दिल्ली शोध संस्थान।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 218-221

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Sultanpur National Park as a Wintering Ground: Linking the Indo-Gangetic Plains with Himalayan Avian Migration Routes

Seema Kumari

Department of Zoology, Dronacharya Government College, Gurugram 122001, India

Umesh Kumar

Department of Zoology, MNS Government College, Bhiwani 127021, India.

Abstract :

Sultanpur National Park is an important wetland ecosystem in the Indo-Gangetic plains that supports diverse resident and migratory bird species. This study examines its role as a wintering and stopover habitat for birds associated with Himalayan and trans-Himalayan migration routes, particularly along the Central Asian Flyway. Field observations, literature review, and secondary data were used to assess avian diversity, migration linkages, ecological importance, and conservation threats. The park supports migratory species belonging to major orders such as Anseriformes, Charadriiformes, Passeriformes, Ciconiiformes, Pelecaniformes, Apodiformes, and Podicipediformes. However, habitat degradation, water scarcity, pollution, tourism pressure, and urban expansion threaten its ecological integrity. Strengthened monitoring, habitat management, and India–Nepal cooperation are needed to conserve migratory birds and their interconnected wetland habitats.

Keywords : Sultanpur National Park; migratory birds; Central Asian Flyway; wetland conservation; Himalayan migration; anthropogenic pressure.

1. Introduction :

Bird migration enables species to use seasonal resources across distant geographic regions. Wetlands are especially important in this process because they provide feeding, resting, breeding, and wintering habitats for resident and migratory birds. The Himalayan region of northern India and Nepal functions as an important breeding and transit zone for several migratory species. Many of these birds move along the Central Asian Flyway, connecting high-altitude breeding areas with lowland

wintering habitats.

Sultanpur National Park, located in Haryana within the Indo-Gangetic plains, is a significant wetland known for its avian diversity. During winter, it attracts migratory birds such as the bar-headed goose (*Anser indicus*), northern pintail (*Anas acuta*), common teal (*Anas crecca*), and several waders and wetland-associated birds. This study highlights the role of Sultanpur National Park as a wintering site and explores its relevance in Himalayan-linked migration and regional conservation planning.

2. Materials and Methods :

2.1 Study Area :

Sultanpur National Park is located at approximately 28°28? N latitude and 76°53? E longitude in Haryana, India **(Fig.1).** The park contains a core wetland area of about 143 ha, mainly consisting of low-lying marshes. Sultanpur Lake is seasonal, with water levels highest during the monsoon and winter and lowest during summer. These hydrological fluctuations strongly influence habitat availability and bird diversity.

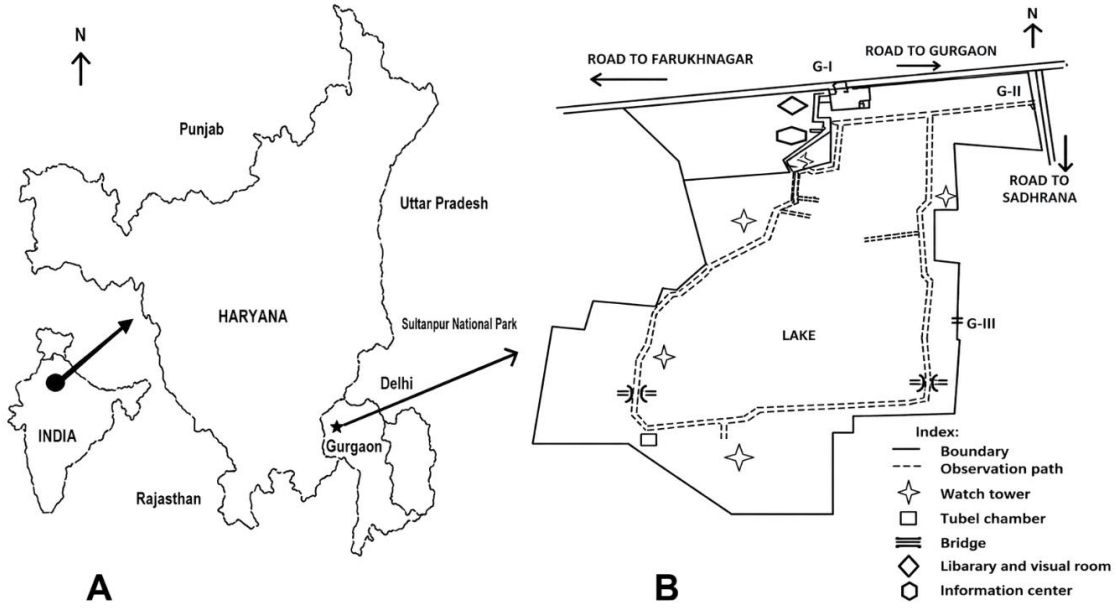


Figure 1. (a) Map showing the location of the study site in Haryana, India. (b) Diagrammatic representation of Sultanpur National Park.

2.2 Data Collection and Sampling :

Field observations were conducted during the winter months from November to February, with fortnightly surveys wherever possible. Birds were identified using standard field guides and published literature. Secondary information was obtained from research articles, forest department records, and biodiversity databases.

Avian diversity was assessed using point count and transect walk methods. Species richness,

diversity, and migratory status were evaluated, and observations were compared with known Himalayan and Central Asian Flyway migration patterns.

3. Results and Discussion :

3.1 Avian Diversity :

Sultanpur National Park supports diverse avian groups, including waterfowl, waders, raptors, and wetland-associated passerines. Common winter visitors include bar-headed geese, northern shovelers, gadwalls, common teals, pintails, black-winged stilts, sandpipers, marsh harriers, and kingfishers. Migratory birds from the orders Anseriformes, Charadriiformes, Passeriformes, Ciconiiformes, Pelecaniformes, Apodiformes, and Podicipediformes form an important component of the park's wetland bird diversity.

3.2 Migration Linkages :

Many bird species recorded in Sultanpur are associated with Himalayan and trans-Himalayan breeding regions. Their movement to lowland wetlands during winter reflects ecological connectivity between the Himalayas, Nepal, northern India, and the Indo-Gangetic plains. Sultanpur therefore functions as an important stopover and wintering habitat within the Central Asian Flyway.

3.3 Ecological Importance :

The park provides essential resources such as aquatic vegetation, insects, molluscs, fish, amphibians, roosting sites, and shelter from predators. These resources support both resident and migratory birds during winter. Thus, Sultanpur contributes not only to local biodiversity but also to the larger migratory network linking Himalayan ecosystems with lowland wetlands.

3.4 Threats and Conservation Concerns :

Despite its ecological value, Sultanpur National Park faces increasing pressure from urbanization, water scarcity, pollution, tourism, and habitat degradation. Seasonal drying of the lake may reduce feeding and roosting habitats, while pollution and human disturbance can affect wetland productivity and bird survival.

3.5 Scope for India–Nepal Cooperation :

Because several migratory birds connect Himalayan and lowland habitats across political boundaries, coordinated conservation between India and Nepal is important. Joint monitoring, migration tracking, data sharing, habitat management, and policy coordination can strengthen conservation of migratory birds and wetland ecosystems.

4. Conclusion :

Sultanpur National Park is an important wintering and stopover habitat for migratory birds linked to Himalayan and trans-Himalayan ecosystems. Its location within the Central Asian Flyway

makes it significant for regional and global bird migration. However, anthropogenic pressures threaten its ecological stability. Conservation actions should focus on habitat protection, water management, pollution control, regulated tourism, and transboundary cooperation between India and Nepal.

References :

References — APA Style :

- Bassi, N., Kumar, M. D., Sharma, A., & Pardhasaradhi, P. (2014). Status of wetlands in India: A review of extent, ecosystem benefits, threats and management strategies. *Journal of Hydrology: Regional Studies, 2*, 1–19.
- BirdLife International. (2023). *Central Asian Flyway factsheet*.
- Chopra, G., Tyor, A. K., Kumari, S., & Rai, D. (2012). Status and conservation of avian fauna of Sultanpur National Park, Gurgaon, Haryana, India. *Journal of Applied and Natural Science, 4*(2), 207–213.
- Chopra, G., Tyor, A. K., & Kumari, S. (2013). A study on wetland avian species of Sultanpur National Park, Gurugram, Gurgaon, Haryana, India. *Journal of Research in Biology, 3*(5), 1032–1040.
- Grimmett, R., Inskipp, C., & Inskipp, T. (2011). *Birds of the Indian subcontinent*. Oxford University Press.
- Jamwal, P. S., Chandan, P., Rattan, R., Anand, A., Kannan, P. M., & Parsons, M. H. (2017). Survey of avifauna of the Gharana Wetland Reserve: Implications for conservation in a semi-arid agricultural setting on the Indo-Pakistan border. *BMC Zoology, 2*, 7. https://doi.org/10.1186/40850-017-0016-z
- Jha, K. K., & McKinley, C. R. (2015). Composition and dynamics of migratory and resident avian populations in wintering wetlands from northern India. *Notulae Scientia Biologicae, 7*(1), 1–15.
- Kumar, A., Sati, J. P., Tak, P. C., & Alfred, J. R. B. (2005). *Handbook on Indian wetland birds and their conservation*. Zoological Survey of India.
- Kumar, P., & Gupta, S. K. (2013). Status of wetland birds of Chhilchhila Wildlife Sanctuary, Haryana, India. *Journal of Threatened Taxa, 5*(5), 3969–3976.

Corresponding author: sk.suthwal@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 222-226

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पारंपरिक लोक संगीत–गंधर्व और भारतीय लोक वाद्ययंत्र (नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्र के संदर्भ में)

डॉ. सेवन्ती डावर

सहायक प्राध्यापक–हिन्दी

शासकीय कन्या महाविद्यालय, जिला– खरगोन, मध्यप्रदेश (भारत)

शोध सारांश :

संगीत मानव सभ्यता की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विभिन्न देशों ओर समाजो की सांस्कृतिक पहचान उनके संगीत ओर वाद्ययंत्रो में परिलक्षित होती है। भारत ओर नेपाल दक्षिण एशिया के दो ऐसे देश है जिनकी सांस्कृतिक विरासत अत्यंत प्राचीन ओर समृद्व रही है। दोनों देशों में संगीत की परम्परा हजारो वर्षो से विकसित होती रही हैं। नेपाली एवं भारतीय वाद्ययंत्र न केवल मनोरंजन के साधन है अपितु धार्मिक सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में जीवन के अभिन्न अंग है। प्रस्तुत शोध पत्र में नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्रों का परिचय वर्गीकरण, सांस्कृतिक महत्व तथा उनके बीच की समानताओ और असमानताओं का अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी –

वाद्ययंत्र, सांस्कृतिक महत्व, संगीत, विविध परम्परायें, लोक संस्कृति, धार्मिक दार्शनिक मान्यताऐं।

प्रस्तावना –

भारतीय संगीत की समृद्ध और जीवंत परम्परा में गधर्व वह प्राचीन शास्त्रीय और दिव्य संगीत है जो वेदो के उदगम के साथ प्रारम्भ हुआ है। भारतीय लोक संगीत आमजन, स्थानीय जीवन, पर्व, त्यौहारो से जुडा हुआ है जिसे एक पीढी से दूसरी पीढी तक मौखिक वाचिक परम्परागत हस्तांतरित करते आये है। शास्त्रीय संगीत में सात स्वरो (सा,रे,गा,मा,पा,धा,नि) का व्यवस्थित और कठोरता से पालन किया जाता है। यह पूरे भाव से प्रेरित ईश्वरीय भक्ति स्तुति के समतुल्य है, भरत मुनि के नाट्य शास्त्र में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। वर्तमान में हिदुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत इसी गंधर्व परम्परा का विकसित रूप है।

नेपाल और भारत भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एक दूसरे से गहराई से जुडे हुऐ है दोनो देशो में लोक संस्कृति, धार्मिक मान्यताए और संगीत परम्पराऐ कई स्तरों पर समान दिखाई देती है। संगीत के क्षेत्र में वाद्ययंत्रो का विशेष महत्व रहा है। वाद्ययंत्र ही संगीत परम्परा को जीवंत अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। भारतीय संगीत में जहॉ शास्त्रीय लोक और आधुनिक संगीत की विविध परम्पराऐं हैं। वही नेपाल में लोक संगीत,

धार्मिक संगीत तथा आधुनिक संगीत का व्यापक विस्तार है। वाद्ययंत्र किसी समाज की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। नेपाल और भारत के अनेक वाद्ययत्रों में समानताऐ देखने को मिलती है। दोनो देशो के बीच सदियों से सांस्कृतिक आदान प्रदान होता रहा है।

लोक संगीत और वाद्ययंत्र की अवधारणा –

लोक संगीत किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक, परम्पराओं और जनजीवन का जीवंत प्रतिबिम्ब होता है। इसमें वाद्ययंत्रों का विशेष महत्व होता है। लोक धुनों को मधुरता, लय व भावनात्मक गहराई पदान करते है। लोक संगीत में प्रयुक्त वाद्ययंत्र सामान्यत, स्थानीय संसाधनों से बनाये जाते है, और उस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते है। भारत के विभिन्न राज्यों अनेक प्रकार के वाद्ययंत्र प्रचलित है। जैसे राजस्थान में रावणहट्टा, खडताल पंजाब में ढोल, बंगाल में एकतारा, उत्तर प्रदेश में नगाडा और मंजीरा प्रमुख है ये वाद्ययंत्र लोक गीतों, लोक नृत्य और सामाजिक उत्सव मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

लोक वाद्ययंत्र केवल मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु लोक जीवन की भावनाओं, संघर्षो, खुशियों, रीति रिवाजों, परम्पराओं को अभिव्यक्ति प्रदान करते है। कलाकार अपनी कला और कौशल से वाद्ययंत्र को जीवंत बनाते है तथा जनमानस को अपनी संस्कृति से जोडने का कार्य करते है। लोक संगीत में वाद्ययंत्र की अवधारणा केवल संगीत तक सीमित नहीं है, अपितु लोक संस्कृति, सामाजिक एकता और सांस्कषतिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार है।

वाद्ययंत्रों का वर्गीगरण –

भारतीय संगीत शास्त्र में वाद्ययंत्र को चार भागों में विभाजित किया गया है।

- **तत वाद्य**– तारो से ध्वनि उत्पन्न करने वाले वाद्य।
- **सुशिर वाद्य** – फूक मारकर बजाए जाने वाले वाद्य।
- **अवनद्व वाद्य** – चमडे या झिल्ली पर आघात से बजाए जाने वाले वाद्य।
- **घन वाद्य** – ठोस पदार्थो से निर्मित वाद्य जिस पर आघात से ध्वनि उत्पन्न होती है।

नेपाल के वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण छह भागों में किया गया है। नेपाली वाद्ययंत्र की संगीत परम्परा अत्यंत समद्ध है। यहॉ के वाद्ययंत्र धार्मिक अनुष्ठान, विवाह समारोह, लोक नृत्यों और पर्व, त्यौहारों में विशेष रूप से प्रयुक्त किये जाते है।

- **मांदल :**

मांदल नेपाल का सबसे लोकप्रिय वाद्ययंत्र माना जाता है, यह दो मुखी ढोल के समान होता है और दोनो हाथो से बजाया जाता है। नेपाली लोक गीतों और नृत्यों में मांदल का विशेष महत्व होता है इसे नेपाल की सांस्कृतिक पहचान भी माना जाता है।

- **बांसुरी :**

नेपाल के ग्रामीण क्षेत्रों मे बासुरी अत्यंत लोकप्रिय है, यह बॉस से निर्मित की जाती है। इसे लोकधुनो के लिए प्रयुक्त की जाती है। भारतीय बांसुरी की तरह नेपाली बांसुरी मधुर स्वर उत्पन्न करती है।

- **पञ्चेबाजा :**

पञ्चेबाजा वास्तव में पॉच प्रमुख वाद्ययंत्रों का समुह होता है, जिसका उपयोग विवाह समारोह में किया

जाता है। इसमें नरसिंहा, दमाह, सनई, त्याम्कों और इयाली वाद्ययंत्र का समुह है।

- **सारंगी :**

सारंगी नेपाल का एक प्रसिद्व तार वाद्ययंत्र है, इसे विषेश रूप से गंधर्व समुदाय द्वारा बजाया जाता है। यह धनुष की सहायता से बजाया जाता है। इसकी ध्वनि अत्यंत मधुर होती है। नेपाल के ग्रामीण लोक संगीत में सारंगी का महत्वपूर्ण स्थान है।

- **दम्फू :**

दम्फू नेपाल के तामांग समुदाय का पारम्परिक वाद्ययंत्र है, यह गोलाकार ढोल जैसा होता है। तामांग समुदाय नृत्य के साथ इसका प्रयोग करते है।

- **नरसिंहा :**

यह एक लम्बे धातु से बना वायु वाद्ययंत्र है, जिसका प्रयोग धार्मिक तथा सांस्कृतिक समारोह में किया जाता है। इसकी ध्वनि मधुर एवं दूर तक सुनाई देती है।

भारतीय वाद्ययंत्र :

भारत की संगीत परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्व परम्परा में से एक है, शास्त्रीय और लोक संगीत में अनेक प्रकार के वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

- **सितार –**

सितार भारतीय शास्त्रीय संगीत का अत्यंत प्रसिद्व तार वाद्ययंत्र है, यह तार से बना होता है। और इसे मिजराब की सहायता से बजाया जाता है, सितार की ध्वनि गम्भीर और मधुर होती है।

- **तबला :**

तबला भारतीय संगीत का प्रमुख ताल वाद्ययंत्र है। यह दो अलग–अलग आकार के गोलाकार अण्डानुमा बनावट होती है। हिदुस्तानी शात्रीय संगीत में तबले का विशेष महत्व है।

- **बासुंरी :**

भारतीय बासुंरी एक लोकप्रिय सुशिर वाद्ययंत्र है, भगवान कृष्ण की कथाओं में इसका विशेष उल्लेख किया जाता है। शास्त्रीय, लोक एवं फिल्म संगीत में इसका व्यापक उपयोग किया जाता है।

- **शहनाई :**

शहनाई भारतीय विवाह और धार्मिक समारोह का प्रमुख वाद्ययंत्र है, इसकी मधुर ध्वनि शुभ अवसरों का प्रतीक मानी जाती है।

- **मृदंगम :**

मृदंगम दक्षिण भारतीय संगीत का प्रमुख वाद्ययंत्र है, कर्नाटक संगीत में इसका विशेष महत्व है।

- **वीणा :**

भारतीय परम्परा में वीणा को देवी सरस्वती से जोड़ा जाता है। वीणा भारतीय संगीत का अत्यंत प्राचीन वाद्ययंत्र है। दक्षिण भारतीय कर्नाटक संगीत में इसका व्यापक उपयोग किया जाता है। भारतीय लोक संगीत में ढोल, मांदल, फेफारया, थाली, ढाक आदि वाद्ययंत्रों का उपयोग किया जाता है।

नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्रो की समानताएँ :

- **सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व :**

दोनो देशों में वाद्ययंत्र केवल मनोरंजन के साधन नहीं है, अपितु सांस्कृतिक समारोह, धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक आयोजनों में वाद्ययंत्रों का विशेष महत्व होता है।

- **प्राकृतिक सामग्री का उपयोग :**

अधिकांश पारम्परिक वाद्ययंत्र लकडी, बांस, धातु और पशु चर्म जैसे प्राकृतिक सामग्री से बनाये जाते है।

- **प्राचीन परम्परा :**

दोनो देशों का वाद्ययंत्रों का इतिहास अनेकों वर्षो प्राचीन है, यह परम्परा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है।

- **लोक संगीत में स्थान :**

नेपाल और भारत दोनों देशों में लोक संगीत की समृद्व परम्परा रही है, लोक संगीत में स्थानिय वाद्ययंत्रों का विशेष महत्व होता है।

नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्रो में भिन्नताएं :

भारत में हिदुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की अत्यंत विकसित परम्परा है, नेपाल में लोक संगीत और पारम्परिक संगीत का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक है। भारत का भौगोलिक क्षेत्र बहुत विषाल है, जिसके कारण वाद्ययंत्रों की संख्या बहुत अधिक विविधताएँ लिए है। नेपाल अपेक्षकृत छोटा देश है, इसलिए वाद्ययंत्रों में क्षेत्रीय विविधता सीमित है। नेपाल के अनेक वाद्ययंत्र स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं और परम्पराओं के अनुसार विकसित किये जाते है। जबकि भारत में वाद्ययंत्र अत्यंत जटिल संरचना वाले और तकनीकी दृष्टि से विकसित किये जाते है। भारतीय वाद्ययंत्र राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय मंचों पर व्यापक रूप से प्रयोग किये जाते है जबकी नेपाली वाद्ययंत्र स्थानीय और क्षेत्रीय आयोजन में प्रयुक्त किये जाते है।

सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता :

आधुनिक और तकनीकि विकास के कारण पारम्परिक वाद्ययंत्रों का उपयोग वर्तमान में बहुत कम किया जा रहा है। इलेक्ट्रोनिक संगीत बढते प्रभाव ने पारम्परिक संगीत को चुनौती दी है। नेपाल और भारत दोनो देशों में प्राचीन परम्परा के संरक्षण और संवर्धन के लिए वाद्ययंत्रों को बचाना महती आवश्यकता है। विद्यालय, विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक संस्थाओं में पारम्परिक संगीत शिक्षा को बढ़ावा देना अति आवश्यक है। डिजिटल माध्यमों के द्वारा पारम्परिक वाद्ययंत्रों का दस्तावेजीकरण और प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। लोक कलाकारो ओर वाद्ययंत्र निर्माताओं को आर्थिक, सामाजिक समर्थन प्रदान करना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष :-

भारतीय और नेपाली वाद्ययंत्र दोनों देशों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। मांदल, सारंगी, दम्फू जैसे नेपाली वाद्ययंत्र नेपाल की लोक संस्कृति को अभिव्यक्त करते है। वही सितार, तबला, वीणा, शहनाई, ढोल, मांदल भारतीय संगीत की गौरवशाली परम्परा का प्रतिनिधित्व करते है। दोनों देशो के वाद्ययंत्रों में अनेक समानताएँ होने के बावजूद अपनी विशिष्ट पहचान रखते है। सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए इन पारम्परिक वाद्ययंत्रों का प्रचार प्रसार, अध्ययन अति आवश्यक है। मानव जीवन में संगीत संजीवनी बुटी की तरह

जीवनदायनी होती है। वाद्ययंत्रों के माध्यम से नेपाल और भारत की सांस्कृतिक मित्रता और भी गहरी और सुदृढ हो सकती है। भारतीय लोक संगीत भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत विभिन क्षेत्रों की बोलियॉ और जीवनशैली का एक अनुठा दर्पण है, लोक संगीत मौखिक परम्परा के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी लोक जीवन के विभिन्न कार्यो कृषि, पर्व, त्यौहार, उत्सव आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मानवीय सभ्यता व संस्कृति को बचाने के लिए संगीत का बचा होना अतिआवश्यक है। संगीत के संरक्षण व प्रचार से हमारी समृद्व परम्पराओं को सुरक्षित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :–

- नेपाली लोक संगीत और अध्ययन।
- भारतीय संगीत का इतिहास – ओमप्रकाश चौरसिया।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत पर विभिन्न शोध पत्र।
- नेपाल और भारत की लोक सांस्कृतिक परम्पराओं से सम्बधित प्रकाशित सामग्री।
- लोकसंगीत और संस्कृति – डॉ. शरदचंद्र श्रीधर।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 227-231

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाली साहित्य में भारतीय कवियों का प्रभाव

डॉ. शबनम खान

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मोती तबेला, इंदौर (म.प्र.), भारत।

सारांश :

भारत और नेपाल के मध्य सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषिक तथा साहित्यिक संबंध प्राचीन काल से विद्यमान रहे हैं। दोनों देशों की सांस्कृतिक परंपराएँ एक–दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। नेपाली साहित्य के विकास में भारतीय साहित्य, विशेषतः संस्कृत एवं हिंदी साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय कवियों की काव्य–चेतना, भक्ति भावना, राष्ट्रवादी दृष्टि, प्रकृति–प्रेम तथा मानवतावादी विचारों ने नेपाली साहित्य को समृद्ध बनाया है। तुलसीदास, कबीर, सूरदास, मीरा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा जैसे कवियों के साहित्यिक प्रभाव नेपाली काव्यधारा में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में नेपाली साहित्य पर भारतीय कवियों के प्रभाव का ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : नेपाली साहित्य, भारतीय कवि, संस्कृत साहित्य, हिंदी साहित्य, भक्ति आंदोलन, छायावाद, सांस्कृतिक समन्वय।

भूमिका :

भारत और नेपाल केवल दो पड़ोसी राष्ट्र नहीं हैं, बल्कि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है। हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं से जुड़े इन दोनों देशों ने सदियों से समान धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक मूल्यों और भाषाई परंपराओं को साझा किया है। नेपाल की सांस्कृतिक संरचना पर भारतीय सभ्यता का गहरा प्रभाव रहा है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ के साहित्य पर भी दिखाई देता है।

नेपाली साहित्य का विकास संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की साहित्यिक परंपराओं से प्रभावित होकर हुआ। नेपाल में संस्कृत शिक्षा और धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। फलस्वरूप भारतीय साहित्यिक चिंतन और काव्य परंपरा ने नेपाली साहित्य को निरंतर प्रेरणा प्रदान की। विशेष रूप से भारतीय कवियों की रचनाओं ने नेपाली साहित्य को नई विषयवस्तु, नवीन अभिव्यक्ति और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया।

भारतीय कवियों के प्रभाव से नेपाली साहित्य में भक्ति, आध्यात्मिकता, प्रकृति–चित्रण, राष्ट्रीय चेतना, मानवतावाद तथा सामाजिक सरोकारों का विकास हुआ। यह प्रभाव केवल साहित्यिक शैली तक सीमित नहीं रहा,

बल्कि नेपाली समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी प्रभावित करता रहा है।

शोध-पत्र के उद्देश्य :

1. नेपाली साहित्य पर भारतीय कवियों के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. भारतीय और नेपाली साहित्यिक संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
3. नेपाली साहित्य में संस्कृत और हिंदी साहित्य की भूमिका को स्पष्ट करना।
4. भारतीय साहित्यिक आंदोलनों के नेपाली साहित्य पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. भारतीय और नेपाली साहित्य के सांस्कृतिक समन्वय को रेखांकित करना।

भारतीय और नेपाली साहित्यिक संबंध : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

भारत और नेपाल के साहित्यिक संबंधों की जड़ें प्राचीन काल में मिलती हैं। नेपाल में संस्कृत भाषा का व्यापक प्रभाव रहा है। धार्मिक संस्थानों, मठों तथा राजदरबारों में संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन होता था। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृत साहित्य की महान कृतियाँ नेपाल में लोकप्रिय हुईं।

वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण और महाभारत जैसे भारतीय ग्रंथों ने नेपाली साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेपाल के अनेक साहित्यकारों ने भारतीय ग्रंथों से प्रेरणा लेकर स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों में नई साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत कीं। मध्यकाल में जब भारत में भक्ति आंदोलन अपने उत्कर्ष पर था, तब उसकी प्रभावधारा नेपाल तक पहुँची और वहाँ के साहित्यिक वातावरण को भी प्रभावित किया।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य के विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों 'विशेषकर छायावाद, प्रगतिवाद और नई कविता' का प्रभाव नेपाली साहित्य पर पड़ा। इस प्रकार भारतीय और नेपाली साहित्य का संबंध निरंतर विकासशील और पारस्परिक रहा है।

संस्कृत साहित्य और नेपाली साहित्य :

नेपाली साहित्य पर भारतीय संस्कृत कवियों का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। संस्कृत साहित्य ने नेपाली काव्य की भाषा, शैली, अलंकार और विषय–वस्तु को गहराई से प्रभावित किया। संस्कृत के महान कवि कालिदास का प्रभाव नेपाली साहित्य में विशेष रूप से दिखाई देता है।

कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का अत्यंत सुंदर और संवेदनशील चित्रण किया है। उनकी काव्य–शैली, उपमाएँ और सौंदर्यबोध नेपाली कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। नेपाल की प्राकृतिक सुंदरता 'हिमालय, नदियाँ, वन, झरने और ऋतुओं का चित्रण' संस्कृत साहित्य की परंपरा से प्रभावित दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त भवभूति, भास और माघ जैसे संस्कृत कवियों की कृतियों ने नेपाली साहित्य में धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक मूल्यों के विकास में योगदान दिया। संस्कृत साहित्य की काव्य परंपरा ने नेपाली साहित्य को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया।

भक्ति आंदोलन और भारतीय संत कवियों का प्रभाव :

भारतीय भक्ति आंदोलन का प्रभाव नेपाली साहित्य के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भक्ति आंदोलन ने साहित्य को जनसामान्य से जोड़ने का कार्य किया। इसके प्रभाव से नेपाली साहित्य में भी धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ।

तुलसीदास का प्रभाव :

गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस नेपाल में अत्यंत लोकप्रिय रही है। नेपाल में रामकथा की परंपरा को विकसित करने में तुलसीदास की महत्वपूर्ण भूमिका रही। नेपाली कवियों ने राम और सीता के आदर्शों को अपने साहित्य में स्थान दिया। रामायण आधारित अनेक नेपाली काव्य और नाट्य कृतियाँ तुलसीदास के प्रभाव की साक्षी हैं।

कबीर का प्रभाव :

कबीर ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखंड और जातिगत भेदभाव का विरोध किया। उनकी निर्गुण भक्ति और सामाजिक चेतना ने नेपाली साहित्य को भी प्रभावित किया। नेपाली कवियों ने कबीर की तरह सामाजिक समानता, मानवता और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया।

सूरदास और मीरा का प्रभाव :

सूरदास की कृष्ण–भक्ति तथा मीरा की आध्यात्मिक प्रेम भावना ने नेपाली भक्ति साहित्य को नई दिशा प्रदान की। कृष्ण और राधा के प्रेम, भक्ति और समर्पण की भावनाएँ नेपाली कविताओं में भी दिखाई देती हैं। नेपाली कवियों ने भक्ति को केवल धार्मिक साधना नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया।

नेपाली साहित्य पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव :

रवीन्द्रनाथ भारतीय साहित्य के ऐसे कवि हैं जिनका प्रभाव विश्व साहित्य के साथ–साथ नेपाली साहित्य पर भी पड़ा। उनकी रचनाओं में प्रकृति, मानवता, आध्यात्मिकता और विश्वबंधुत्व की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य ने नेपाली कवियों को व्यापक मानवीय दृष्टिकोण प्रदान किया। उनकी काव्य–शैली में संगीतात्मकता और भावात्मक गहराई है, जिसका प्रभाव नेपाली गीतिकाव्य पर स्पष्ट दिखाई देता है। नेपाली साहित्य में प्रकृति और मानव जीवन के संबंधों की जो संवेदनशील अभिव्यक्ति मिलती है, उसमें ठाकुर के प्रभाव को सहज रूप से पहचाना जा सकता है।

छायावादी कवियों का प्रभाव :

हिंदी साहित्य के छायावाद ने नेपाली साहित्य को नई कलात्मकता और संवेदनशीलता प्रदान की। छायावादी कवियों की काव्य–दृष्टि ने नेपाली कविता को आधुनिक स्वरूप देने में सहायता की।

सुमित्रानंदन पंत :

पंत प्रकृति के कवि माने जाते हैं। उनकी प्रकृति–संवेदना और सौंदर्यबोध का प्रभाव नेपाली कवियों पर पड़ा। नेपाल की प्राकृतिक छटा को व्यक्त करने में नेपाली कवियों ने पंत की काव्य–परंपरा से प्रेरणा प्राप्त की।

जयशंकर प्रसाद :

प्रसाद की दार्शनिक दृष्टि, ऐतिहासिक चेतना और मानवीय संवेदना ने नेपाली साहित्य को प्रभावित किया। नेपाली कवियों ने भी जीवन, इतिहास और संस्कृति को गहन चिंतन के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' :

निराला की विद्रोही चेतना और सामाजिक सरोकारों ने नेपाली साहित्य को आधुनिक दृष्टिकोण प्रदान किया। उन्होंने साहित्य को समाज की समस्याओं से जोड़ा, जिसका प्रभाव नेपाली कवियों पर भी पड़ा।

महादेवी वर्मा :

महादेवी वर्मा की करुणा, संवेदनशीलता और आत्मानुभूति ने नेपाली काव्यधारा को प्रभावित किया। नेपाली कवियों की रचनाओं में मानवीय पीड़ा और भावात्मक गहराई का जो स्वर दिखाई देता है, उसमें महादेवी की काव्य–दृष्टि की छाप देखी जा सकती है।

राष्ट्रवादी चेतना और भारतीय कवियों का प्रभाव :

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारतीय साहित्य में राष्ट्रवादी चेतना का विकास हुआ। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लिखी गई कविताओं ने नेपाल के साहित्यकारों को भी प्रेरित किया।

मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' और माखनलाल चतुर्वेदी जैसे कवियों की रचनाओं में राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक गौरव की भावना प्रमुख रूप से व्यक्त हुई है। इन कवियों की रचनाओं का प्रभाव नेपाली साहित्य पर भी पड़ा।

नेपाली कवियों ने राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक जागरूकता को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रवादी साहित्य ने नेपाली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आधुनिक नेपाली साहित्य और भारतीय साहित्यिक प्रवृत्तियाँ :

आधुनिक नेपाली साहित्य ने भारतीय साहित्य की अनेक धाराओं से प्रेरणा प्राप्त की। प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता जैसे साहित्यिक आंदोलनों ने नेपाली साहित्य को आधुनिक विचारधारा से जोड़ा।

भारतीय साहित्य में सामाजिक यथार्थ, वर्ग संघर्ष, स्त्री चेतना और लोकतांत्रिक मूल्यों की जो अभिव्यक्ति दिखाई देती है, उसका प्रभाव नेपाली साहित्य में भी परिलक्षित होता है। नेपाली कवियों ने सामाजिक असमानता, गरीबी, शोषण, बेरोजगारी तथा स्त्री–संबंधी समस्याओं को अपनी रचनाओं में स्थान दिया।

आज भी हिंदी और नेपाली साहित्य के बीच अनुवाद, साहित्यिक सम्मेलन, संगोष्ठियाँ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से निरंतर संवाद बना हुआ है। यह साहित्यिक आदान–प्रदान दोनों देशों के साहित्य को समृद्ध बना रहा है।

भारतीय और नेपाली साहित्य का सांस्कृतिक समन्वय :

भारतीय और नेपाली साहित्य का संबंध केवल प्रभाव और अनुकरण का संबंध नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक सहअस्तित्व और रचनात्मक संवाद का उदाहरण है। दोनों देशों के साहित्यकारों ने एक–दूसरे की साहित्यिक परंपराओं से प्रेरणा ग्रहण करते हुए अपनी मौलिक पहचान को विकसित किया है।

भारतीय साहित्य ने नेपाली साहित्य को विषय–वस्तु, शैली और वैचारिक आधार प्रदान किया, वहीं नेपाली साहित्य ने अपनी स्थानीय संस्कृति, लोकजीवन और हिमालयी परिवेश के माध्यम से साहित्यिक अभिव्यक्ति को नया आयाम दिया। यह साहित्यिक संबंध दक्षिण एशिया की साझा सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग है।

निष्कर्ष :

नेपाली साहित्य पर भारतीय कवियों का प्रभाव व्यापक, गहरा और बहुआयामी रहा है। संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक भारतीय काव्यधारा ने नेपाली साहित्य को निरंतर प्रेरणा प्रदान की है। कालिदास, तुलसीदास, कबीर, सूरदास, मीरा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला तथा महादेवी वर्मा जैसे कवियों की साहित्यिक चेतना नेपाली साहित्य में विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई है।

भक्ति आंदोलन ने नेपाली साहित्य को आध्यात्मिक आधार प्रदान किया, जबकि छायावाद ने उसे भावात्मक और कलात्मक संवेदनशीलता दी। राष्ट्रवादी और प्रगतिशील साहित्यिक धाराओं ने नेपाली साहित्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का विकास किया। भारतीय साहित्यिक परंपराओं को आत्मसात करते हुए नेपाली साहित्य ने अपनी स्वतंत्र और समृद्ध पहचान स्थापित की है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत और नेपाल के साहित्यिक संबंधों का महत्व और अधिक बढ़ गया है। साहित्यिक संवाद, अनुवाद तथा सांस्कृतिक सहयोग के माध्यम से दोनों देशों के साहित्य को और अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है। यह संबंध भविष्य में भी दक्षिण एशियाई सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

संदर्भ सूची :

1. आचार्य, रामचंद्र – हिंदी साहित्य का इतिहास।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद – कबीर।
3. पंत, सुमित्रानंदन – पल्लव।
4. प्रसाद, जयशंकर – कामायनी।
5. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी – परिमल।
6. ठाकुर, रवीन्द्रनाथ – गीतांजलि।
7. वर्मा, महादेवी – यामा।
8. गुप्त, मैथिलीशरण – भारत–भारती।
9. दिनकर, रामधारी सिंह – संस्कृति के चार अध्याय।
10. उपाध्याय, बालकृष्ण – नेपाली साहित्य का इतिहास।
11. मिश्र, विद्यानिवास – भारतीय संस्कृति और नेपाल।
12. शर्मा, विश्वनाथ – भारतीय एवं नेपाली साहित्यिक संबंध।
13. गौतम, तुलसीराम – नेपाल और भारतीय संस्कृति।
14. नेपाली साहित्य परिषद् – नेपाली काव्यधारा और भारतीय प्रभाव।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 232-235

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जनकपुर : रामायण कालीन संस्कृति का जीवन केंद्र तथा भारत नेपाल के संबंध

डॉ. शर्मिला चौहान

सहायक प्राध्यापक – हिंदी,

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, मोती तबेला इंदौर (म.प्र.), भारत

शोध सारांश :

प्रस्तुत शोध–पत्र रामायणकालीन सभ्यता और संस्कृति के आलोक में प्राचीन मिथिलांचल की राजधानी 'जनकपुर' के ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक एवं सामरिक अवदान का एक गहन अनुशीलन प्रस्तुत करता है। त्रेतायुग में विदेह राजवंश की राजधानी रहा यह गौरवशाली नगर मात्र एक राजनीतिक सत्ता का केंद्र नहीं था, अपितु वह संपूर्ण आर्यावर्त की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक चेतना का सर्वोच्च अधिष्ठान था। इस शोध के अंतर्गत महर्षि वाल्मीकि रचित 'रामायण' (विशेषकर बालकांड), विभिन्न उपनिषदों जैसे बृहदारण्यक उपनिषद के साक्ष्यों तथा आधुनिक ऐतिहासिक एवं कूटनीतिक संदर्भों के आधार पर जनकपुर की दार्शनिक ज्ञान–परंपरा, स्त्री–समानता, सामाजिक मर्यादा और लोक–कला (मधुबनी चित्रकला) की निरंतरता का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह पत्र यह प्रतिपादित करता है कि जनकपुर आज भी भारत और नेपाल की साझी सांस्कृतिक धरोहर तथा श्रोटी–बेटीश के ऐतिहासिक संबंधों का एक जीवंत और प्रवहमान केंद्र है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और दार्शनिक विमर्श के इतिहास में मिथिलांचल और उसकी प्राचीन राजधानी जनकपुर का स्थान सर्वोपरि है।

विस्तृत शोध आलेख :

रामायणकालीन भूगोल और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का जब भी अनुशीलन किया जाता है, तब जनकपुर एक ऐसे आदर्श नगर के रूप में उभरता है जहाँ भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक पराकाष्ठा का अनुपम समन्वय था। राजा सीरध्वज जनक के शासनकाल में यह क्षेत्र ज्ञान, नीति, कला और सामाजिक मर्यादा का मुख्य केंद्र बना। महर्षि वाल्मीकि रचित 'रामायण' से लेकर उत्तरवर्ती समस्त राम–काव्य परंपराओं तक, जनकपुर को एक आदर्श नगरी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। माता सीता की जन्मस्थली होने के कारण यह भूभाग केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह भारतीय और नेपाली समाज को जोड़ने वाली सांस्कृतिक चेतना का मूलाधार है। समकालीन युग में भी मिथिला की लोक–परंपराएँ, विवाह–संस्कार और कलाएँ इस रामायणकालीन विरासत को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं, जो इसके 'जीवन केंद्र' होने की संपुष्टि करते हैं। रामायणकालीन ऐतिहासिक,

भौगोलिक और दार्शनिक संदर्भों में जनकपुर के वैश्विक महत्व को रेखांकित करना तथा तत्कालीन विदेह (मिथिला) समाज में स्त्री–शिक्षा, बौद्धिक स्वतंत्रता और विदुषी परंपरा (गार्गी–मैत्रेयी) का प्रामाणिक मूल्यांकन करना इस शोध का प्राथमिक ध्येय है।

रामायणकालीन सामाजिक संस्कारों की आधुनिक लोक–जीवन (विवाह पंचमी, लोकगीत) में निरंतरता को सिद्ध करना तथा भारत–नेपाल के सांस्कृतिक सेतु के रूप में जनकपुर के समकालीन और कूटनीतिक महत्व का विश्लेषण करना इस शोध की रूपरेखा को पूर्ण करता है। यह शोध–पत्र ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में 'वाल्मीकि रामायण' (विशेषकर बालकांड) और उपनिषदों (जैसे– बृहदारण्यक उपनिषद) का सहारा लिया गया है। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत प्रतिष्ठित इतिहासकारों के शोध–लेखों, सांस्कृतिक पत्रिकाओं और मिथिलांचल की जीवित लोक–परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

रामायणकालीन संस्कृति और मिथिला के वैभव पर अकादमिक क्षेत्र में व्यापक विमर्श हुआ है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, 'मिथिला की संस्कृति ज्ञान और तर्क पर आधारित थी, जिसने तत्कालीन समाज को रूढ़िवादिता से मुक्त रखा।' डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने सांस्कृतिक लेखों में स्पष्ट किया है कि जनकपुर का राम–सीता विवाह भारतीय समाज के लिए पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा का सर्वोच्च प्रतिमान है। समकालीन सांस्कृतिक विचारकों ने जनकपुर को भारत–नेपाल संबंधों की सबसे सुदृढ़ भावनात्मक रीढ़ माना है। विदेह राजवंश, राजा जनक और दार्शनिक चेतना प्राचीन काल में मिथिला राज्य विदेह जनपद का हिस्सा था, जिसकी राजधानी जनकपुर थी। विदेह के शासकों को 'जनक' की उपाधि प्राप्त थी, जिनमें राजा सीरध्वज जनक सबसे न्यायप्रिय और दार्शनिक राजा माने गए। वे राजा होते हुए भी संन्यासी का जीवन जीते थे, जिसके कारण उन्हें श्राजर्षिश कहा गया। श्रीमद्भगवद्गीता में भी उनके श्कर्मयोगश को आदर्श माना गया है। जनकपुर उस समय केवल राजनीतिक राजधानी नहीं था, बल्कि बौद्धिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र था। राजा जनक विद्वानों और ऋषियों के महान संरक्षक थे। उनके दरबार में महर्षि याज्वल्क्य जैसे दार्शनिक उपस्थित रहते थे।

यहाँ वेद, उपनिषद तथा धर्मशास्त्रों पर जो चर्चाएँ होती थीं, वे केवल अंधविश्वास पर नहीं बल्कि तर्क और ज्ञान पर आधारित थीं। यह स्थान वैदिक सभ्यता के सबसे उन्नत रूप का प्रतिनिधित्व करता था। नारी सम्मान, विदुषी परंपरा और स्त्री– अधिकार रामायण काल में जनकपुर की संस्कृति ने संपूर्ण आर्यावर्त को स्त्री–सम्मान का संदेश दिया। तत्कालीन समाज में महिलाओं को अत्यंत आदरणीय और स्वतंत्र स्थान प्राप्त था। गार्गी और मैत्रेयी का साक्ष्य इस तथ्य की पुष्टि करता है। राजा जनक की राजसभा में जब ब्रह्मज्ञान पर विमर्श चल रहा था, तब विदुषी गार्गी वचकनवी ने महर्षि याज्वल्क्य को शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। एक स्त्री द्वारा पुरुषों के समानांतर इतने बड़े दार्शनिक मंच पर तार्किक हस्तक्षेप करना यह सिद्ध करता है कि मिथिला समाज में स्त्रियों को शिक्षा एवं विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी।

माता सीता का व्यक्तित्व स्वयं में त्याग, धैर्य, साहस और स्वाभिमान का प्रतीक है। बचपन में ही उनके द्वारा शिव–धनुष को सहजता से उठा लेना उनकी अलौकिक शारीरिक और मानसिक क्षमता को दर्शाता है। सामाजिक संस्कार के रूप में विवाह पंचमी और लोक–परंपरा की निरंतरता के अंतर्गत जनकपुर का राम–सीता विवाह भारतीय और नेपाली संस्कृति का आदर्श सामाजिक अनुबंध माना जाता है। मार्गशीर्ष मास की शुक्ल पक्ष

की पंचमी तिथि को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला 'विवाह पंचमी' का पर्व आज भी त्रेतायुग के उस वैभव और आत्मीयता को जीवित रखता है। आज भी अयोध्या से प्रतीकात्मक रूप से बारात जनकपुर (नेपाल) आती है। मिथिला के लोक–जीवन में आज भी विवाह के समय गाए जाने वाले पारंपरिक गीत और रीति–रिवाज रामायण कालीन संस्कृति की निरंतरता को दर्शाते हैं। यहाँ प्रत्येक दामाद में 'राम' और प्रत्येक बेटी में 'सीता' की छवि देखी जाती है।

कला और लोक–अभिव्यक्ति के क्षेत्र में मिथिला क्षेत्र अपनी विशिष्ट लोककला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, राजा जनक ने सीता–राम के विवाह के उत्सव पर संपूर्ण नगर की दीवारों को चित्रों से सुसज्जित करने का आदेश दिया था। यही परंपरा समय के साथ 'मधुबनी चित्रकला' के रूप में विकसित हुई। इन चित्रों में आज भी रामायण की प्रमुख घटनाओं– जैसे सीता स्वयंवर, राम–लक्ष्मण का फुलवारी गमन और कोहबर के दृश्यों को प्राकृतिक रंगों के माध्यम से उकेरा जाता है। इसके अतिरिक्त लोकगीत, सामा–चकेवा, झिझिया नृत्य और समृद्ध मैथिली साहित्य जनकपुर की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर हैं।

भौगोलिक और राजनीतिक सीमाओं से परे, जनकपुर भारत और नेपाल के बीच अपरिवर्तनीय सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंधों का मुख्य सेतु है। रामायण काल से ही अयोध्या और मिथिला के बीच जो संबंध स्थापित हुआ, उसे आज भी दोनों देशों के समाज में 'रोटी–बेटी का संबंध' कहा जाता है। वर्तमान में यह नगर धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक अध्ययन का एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बन चुका है। 'रामायण सर्किट' के माध्यम से दोनों देशों की सरकारें इस प्राचीन ऐतिहासिक कड़ी को और अधिक सुदृढ़ कर रही हैं। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ने अपने जनकपुर संबोधन में कहा था कि 'जनकपुर और अयोध्या के संबंध आदिकाल से रहे हैं' और यह संबंध दोनों देशों की साझा विरासत को मजबूत करता है।

इसी प्रकार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी जनकपुर में अपने संबोधन में भारत–नेपाल संबंधों को 'रोटी और बेटी का रिश्ता' बताया। उन्होंने कहा कि राजा जनक और राजा दशरथ के माध्यम से स्थापित संबंध आज भी दोनों देशों को भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं। अयोध्या और जनकपुर के बीच धार्मिक पर्यटन तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान दोनों देशों के संबंधों को अत्यंत मजबूत बनाते हैं। वर्तमान में शुरू की गई 'जनकपुर–अयोध्या बस सेवा' और 'रामायण सर्किट' जैसी ऐतिहासिक योजनाएँ इस प्राचीन सांस्कृतिक जुड़ाव को एक आधुनिक रूप प्रदान करती हैं। आज भी दोनों देशों के लोग राम–सीता विवाह को आपसी सांस्कृतिक एकता का परम प्रतीक मानते हैं। विवाह पंचमी के पावन अवसर पर भारत से हजारों श्रद्धालु और तीर्थयात्री जनकपुर पहुँचते हैं और नेपाल से लोग अयोध्या जाते हैं। इससे दोनों देशों के बीच धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक निकटता बढ़ती है। इसके साथ ही, यह क्षेत्र संस्कृत एवं मैथिली भाषा की समृद्ध परंपराओं को सहेजने का भी एक बहुत बड़ा माध्यम बना हुआ है।

उपर्युक्त विस्तृत विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जनकपुर केवल नेपाल का एक शहर नहीं, बल्कि भारत–नेपाल की साझा सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रमाण है। रामायण काल की संस्कृति यहाँ मंदिरों, त्योहारों, भाषा और कला में सांस ले रही है। यह स्थल दोनों देशों के बीच सदियों पुराने आध्यात्मिक और भावनात्मक संबंधों को मजबूत करता है। राम और सीता का संबंध केवल दो व्यक्तियों का विवाह नहीं, बल्कि दो राष्ट्रों की सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता का साक्षात प्रतीक है।

जनकपुर केवल अतीत की गाथा नहीं है, बल्कि ज्ञान, धर्म, कला, नारी सम्मान और सामाजिक मर्यादा का शाश्वत स्रोत है। मिथिला की इस सांस्कृतिक चेतना ने संपूर्ण मानवता को आदर्श जीवन, नैतिकता और पारिवारिक मूल्यों का अमर संदेश दिया है। आज अकादमिक और सामाजिक स्तर पर इस सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण और प्रचार–प्रसार करना अत्यंत आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी ऐतिहासिक विरासत से जुड़ी रहें। इसीलिए, जनकपुर आज भी भारत–नेपाल मैत्री, अगाध आस्था और साझा विरासत का सबसे महत्वपूर्ण और अटूट केंद्र माना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. उपनिषद. बृहदारण्यक उपनिषद (याज्ञवल्क्य–जनक संवाद प्रसंग), गीता प्रेस, गोरखपुर.
2. झा, डॉ. रमननाथ. मिथिला का इतिहास और संस्कृति, मैथिली अकादमी, पटना.
3. मैथिल, डॉ. सत्यनारायण. मिथिलांचल की लोककला और मधुबनी चित्रकला, ग्रंथलोक, पटना.
4. वाल्मीकि, महर्षि. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (बालकाण्ड), गीता प्रेस, गोरखपुर.
5. सिंह, डॉ. अनिरुद्ध. भारत–नेपाल सांस्कृतिक संबंध और जनकपुरधाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

Sharmilabaghel02@gmail.com | 99268 97159

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 236-238

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल में पाली और प्राकृत भाषाओं का संरक्षण

शोभा मेवाड़ा

शोधार्थी, महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल, म.प्र.।

शोधसार :

पाली और प्राकृत भाषाएँ भारतीय आर्य भाषाओं की प्राचीन धरोहर हैं, जिनका संबंध बौद्ध और जैन साहित्य, संस्कृति तथा दर्शन से है। नेपाल, प्राचीन काल से ही बौद्ध संस्कृति और ज्ञान–परंपरा का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ पाली भाषा के माध्यम से बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन तथा प्राकृत के माध्यम से सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अभिलेखों का संरक्षण हुआ। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था तथा अंग्रेजी एवं नेपाली भाषा के बढ़ते प्रभाव के कारण पाली और प्राकृत भाषाओं का प्रयोग सीमित होता जा रहा है। फिर भी नेपाल के विभिन्न मठों, विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा सांस्कृतिक संगठनों द्वारा इन भाषाओं के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में नेपाल में पाली और प्राकृत भाषाओं की स्थिति, संरक्षण के उपाय, चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। नेपाल की बहुभाषिक संस्कृति में इन भाषाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा इनके संरक्षण से सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है।

कुंजी शब्द – पाली भाषा, प्राकृत भाषा, नेपाल, भाषा संरक्षण, बौद्ध साहित्य, सांस्कृतिक विरासत, नेपाल लिपि, बहुभाषिकता।

प्रस्तावना –

नेपाल प्राचीन काल से ही धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषायी विविधता का केंद्र रहा है। भगवान बुद्ध का जन्मस्थल होने के कारण नेपाल में बौद्ध धर्म का विशेष प्रभाव रहा है। पाली भाषा बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथों की भाषा है, जबकि प्राकृत भाषाएँ भारतीय जनभाषाओं का प्रारंभिक रूप मानी जाती हैं। नेपाल में अनेक बौद्ध विहारों, मठों और शिलालेखों में पाली एवं प्राकृत भाषाओं के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

नेपाल की प्राचीन "नेपाल लिपि" तथा "रंजना लिपि" का उपयोग संस्कृत, पाली और नेपाल भाषा के लेखन में किया जाता था। समय के साथ देवनागरी लिपि के प्रसार और प्रशासनिक परिवर्तनों के कारण इन लिपियों तथा भाषाओं का प्रयोग कम होता गया। वर्तमान समय में नेपाल में अनेक भाषाएँ संकटग्रस्त स्थिति में हैं। भाषा संरक्षण से संबंधित अध्ययनों में यह स्पष्ट हुआ है कि नेपाल की अनेक पारंपरिक भाषाएँ और बोलियाँ धीरे–धीरे विलुप्ति की ओर बढ़ रही हैं। ऐसे में पाली और प्राकृत भाषाओं का संरक्षण केवल भाषाई कार्य नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक चेतना को बचाने का प्रयास भी है।

नेपाल में पाली और प्राकृत भाषाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

नेपाल में लिच्छवि काल से ही बौद्ध धर्म का व्यापक प्रभाव रहा है। इस काल में पाली भाषा का उपयोग धार्मिक उपदेशों, शिलालेखों तथा बौद्ध साहित्य में होता था। काठमांडू घाटी के अनेक स्तूपों और विहारों में पाली भाषा के अभिलेख पाए जाते हैं।प्राकृत भाषा का उपयोग जनसामान्य की भाषा के रूप में हुआ तथा इसने नेपाल की स्थानीय भाषाओं को भी प्रभावित किया। नेपाल की "नेपाल भाषा" (नेवारी) तथा अन्य भाषाओं में प्राकृत और पाली शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। नेपाल के बौद्ध भिक्षुओं ने पाली त्रिपिटक तथा अन्य बौद्ध ग्रंथों का संरक्षण किया। नेपाल के अनेक मठों में आज भी पाली भाषा का अध्ययन धार्मिक शिक्षा के रूप में कराया जाता है।

पाली और प्राकृत भाषाओं के संरक्षण के प्रमुख आधार :

1. **धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ :**

नेपाल के बौद्ध विहार, मठ तथा संघ पाली भाषा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। लुंबिनी, काठमांडू तथा पोखरा जैसे क्षेत्रों में बौद्ध अध्ययन केंद्र सक्रिय हैं। वहाँ पाली भाषा में धार्मिक अनुष्ठान और अध्ययन किए जाते हैं।

2. **विश्वविद्यालय एवं शोध संस्थान :**

नेपाल के विश्वविद्यालयों में पाली एवं बौद्ध अध्ययन से संबंधित पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। त्रिभूवन तथा नेपाल संस्कृत यूनिवर्सिटी जैसे संस्थान भाषा एवं संस्कृति के अध्ययन को बढ़ावा दे रहे हैं।इसी प्रकार नेपाल अकादमी, नेपाल की भाषाओं, साहित्य और संस्कृति के संवर्धन हेतु अनुसंधान एवं प्रकाशन कार्य कर रही है।

3. **पांडुलिपियों का संरक्षण :**

नेपाल में हजारों प्राचीन पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं जिनमें पाली, संस्कृत और प्राकृत सामग्री उपलब्ध है। नेपाल लिपि और रंजना लिपि में लिखित अनेक ग्रंथों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है।

4. **संविधान और भाषा नीति :**

नेपाल के संविधान में देश की सभी मातृभाषाओं को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। इससे भाषाई विविधता के संरक्षण को संवैधानिक आधार प्राप्त हुआ है।

संरक्षण में आने वाली चुनौतियाँ :

1. **आधुनिक भाषाओं का प्रभाव :**

अंग्रेजी और नेपाली भाषा के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी पाली और प्राकृत भाषाओं से दूर होती जा रही है।

2. **सीमित शिक्षण व्यवस्था :**

पाली और प्राकृत भाषाओं के अध्ययन के लिए पर्याप्त विद्यालय और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं।

3. **तकनीकी संसाधनों की कमी :**

इन भाषाओं के डिजिटल संसाधन सीमित हैं। यद्यपि हाल के वर्षों में लिपियों और भाषाओं के डिजिटलीकरण के प्रयास बढ़े हैं।

4. भाषा परिवर्तन और शहरीकरण :

नेपाल में बहुभाषिकता और शहरीकरण के कारण स्थानीय भाषाओं में भाषा–परिवर्तन की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

संरक्षण के लिए आवश्यक उपाय :

पाली और प्राकृत भाषाओं को विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल किया जाए। प्राचीन पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण और अनुवाद कार्य तेज किया जाए। बौद्ध विहारों और सांस्कृतिक संस्थाओं को सरकारी सहायता प्रदान की जाए। नेपाल और भारत के संयुक्त प्रयासों से शोध परियोजनाएँ संचालित की जाएँ। इंटरनेट, मोबाइल एप तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पाली और प्राकृत भाषाओं की सामग्री उपलब्ध कराई जाए। युवाओं में भाषाई जागरूकता बढ़ाने हेतु संगोष्ठी, कार्यशाला और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

उपसंहार :

पाली और प्राकृत भाषाएँ नेपाल की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर की अमूल्य संपत्ति हैं। इन भाषाओं ने बौद्ध दर्शन, साहित्य और मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से ये भाषाएँ संकट का सामना कर रही हैं, किंतु नेपाल की सांस्कृतिक चेतना और शैक्षिक संस्थाओं के प्रयास इनके संरक्षण की दिशा में आशा उत्पन्न करते हैं। यदि सरकार, विश्वविद्यालय, धार्मिक संस्थाएँ और समाज मिलकर कार्य करें, तो पाली और प्राकृत भाषाओं का पुनर्जीवन संभव है। इन भाषाओं का संरक्षण केवल अतीत की रक्षा नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान और संस्कृति की विरासत को सुरक्षित रखना भी है।

संदर्भ सूची :–

1. नेपाली स्क्रिप्ट और नेपाली लिपि – विकिपीडिया।
2. नेपाल का संविधान, 2015 – भाषा संबंधी प्रावधान।
3. नेपाल जर्नल ऑनलाइन।
4. Ethnologue. Languages of Nepal.
5. Regmi, Dan Raj. Ancestral Languages of Nepal in the 2021 Census. Nepalese Linguistics] 2024.
6. Gautam, Bhim Lal. Multilingualism and Language Shift in Tamang, 2024.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 239-243

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल के प्रमुख त्योहार (दशई, तिहार) और भारतीय रूप

सिंगराय मुण्डा

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

भूमिका :

नेपाल और भारत पड़ोसी देश ही नहीं रहा, बल्कि दोनों देशों के बीच संबंध इतने मजबूत है कि शायद ही और किसी देश में नहीं है। यहाँ तक की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रीति रिवाजों की दृष्टिकोण से भी इन दोनों देशों की हाव–भाव, बात–विचार, रहन–सहन, से लेकर खान–पान तक का अत्यंत व्यापक रूप मेल खाता है। नेपाल और भारत ऐसी दो देश हैं जहाँ धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों पर प्रायः समानताएँ देखने को मिलती है। नेपाल और भारत दोनों विभिन्नताओं का देश है, फिर भी यहाँ के लोगों में एकजुटता की भावना आपस में देखने को मिलती है। दोनों ही देशों में अधिकतर हिन्दू धर्म को मानने वाले लोगों की संख्या काफी ज्यादा देखने को मिलती है। इसीलिए नेपाल और भारत जैसे हिन्दू धर्म के राष्ट्रों से जुड़े पर्व–त्योहारों मानने वाले लोगों की संख्या काफी ज्यादा है। यही कारण है कि नेपाल और भारत जैसे देशों में हिन्दुओं की प्रमुख त्योहारों में दशहरा/दशईं, दीपावली/तिहार, होली, तीज, छठ पर्व, कृष्णाष्टमी, महाशिवरात्रि, मकर संक्रांति, रक्षाबंधन जैसे त्योहारों को बड़े धूमधाम से मनाने की परंपरा देखने को मिलती है। दोनों देशों की क्षेत्रीय व भौगोलिक स्थिति के हिसाब से भी इन त्योहारों को मनाने की विधियों में थोड़ा बहुत अंतर देखने को मिलती है। फिर भी ये दोनों देश पर्व–त्योहारों के मामले में ही नहीं, अन्य क्षेत्रों में भी आपसी सौहार्द्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं और न ही जाति आधारित भेदभाव, लिंग, भाषा व क्षेत्रों के आधार पर देखने को मिलती है। तो चलिये नेपाल और भारत की प्रमुख त्योहारों में नजर डालते हैं। विशेषकर नेपाल की दशईं और तिहार त्योहार की चर्चा करते हैं और भारतीय रूप में ये दोनों त्योहारों का कितना महत्वपूर्ण है, किस प्रकार से मनाया जाता है।

दशई यानी दशहरा :

दशईं नेपाल की हिन्दुओं का सबसे बड़ा एवं सबसे लंबा दिन तक मनाया जाने वाला प्रमुख त्योहारों में से एक है। नेपाल में हिन्दुओं के इस महापर्व को बौद्ध धर्म के नेवार समुदाय के लोगों द्वारा भी पूरी आस्था और हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। दशहरा को नेपाल में दशईं/दशैन के नाम से जाना जाता है। यह बिल्कुल भारत की दशहरा का ही नेपाली और विस्तृत रूप है। नेपाल में इस त्योहार को नेपाली पंचांग (विक्रम संवत्) के अनुसार आश्विन के शुक्ल पक्ष से लेकर पूर्णिमा के 15 दिनों तक मनाने की परंपरा चलती है। नेपाल में यह 15 दिनों तक चलने वाले घटस्थापना से लेकर नवरात्रि तक माँ दुर्गा के विभिन्न रूपों का पूजा से लेकर प्रत्येक दिन का अपना अनुष्ठान, रीति–रिवाज व उत्सव होते हैं। दशमी तिथि को विजयदशमी के रूप में मनाया जाता है, इसी

दिन बड़े बुजुर्गों द्वारा अपने से छोटों को माथे पर जमरा (जौ के पौधे) और लाल टीका (जिसमें चावल, दही व सिन्दूर का मिश्रण) लगाकर आशीर्वाद देते हैं। ताकि वे अपने शक्ति, सामर्थ्य व भावनाओं को उनमें हस्तांतरण कर सके। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। जिसे विभिन्न पौराणिक कथाओं को अनुसार, हिन्दू देवी देवताओं का राक्षसों पर विजय को दर्शाता है। वही जब भारत में इस त्योहार की बात करे तो यह दशहरा या विजयदशमी के नाम से जानते हैं। भारतीय हिन्दू पंचांग के अनुसार आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। नवरात्रि के दौरान माँ देवी दुर्गा की विभिन्न रूपों का अनुष्ठान, रीति रिवाजों एवं परंपरा के तहत किया जाता है। भारत में भी यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है।

धार्मिक, पौराणिक कथाएं और मान्यताएं :

हिन्दूओं की प्रत्येक त्योहार किसी न किसी धार्मिक/पौराणिक कथाएं व मान्यताओं से जुड़ी हुई है जो कि इसका काफी महत्व है। दशईं त्योहार का पौराणिक कथाओं के अनुसार, नेपाल के लोगों का मानना है कि यह देवी दुर्गा माता और महिषासुर की युद्ध से जुड़ी हुई है। इसी दिन देवी दुर्गा माता ने महिषासुर का वध किया था। क्योंकि उस महिषासुर ने अपनी शक्तियों से पूरे संसार में हाहाकार व भय का कोहराम मचा रखा था। तब सभी देवी देवताओं ने दुर्गा माता को अपनी पूरी शक्ति उन्हें सौंप दी थी और महिषासुर का वध करने को कहा। नौ दिनों तक इन दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ और दशमी दिन महिषासुर का वध किया था। दूसरी कथा के अनुसार यह राम का लंकापति रावण के वध से जुड़ी है। रावण द्वारा सीता माता अपहरण के आरोप में राम ने रावण से युद्ध किया था। इसी कड़ी में श्री राम ने दुर्गा माता की नौ दिनों तक पूजा की और दशमी दिन रावण को वध किया। इसी दिन को विजयदशमी के नाम से जानते हैं। भारतीय रूप में दशहरा की पौराणिक कथाएँ नेपाल के अनुसार ही समान पायी जाती है। इन पौराणिक कथाएँ व मान्यता से पता चलता है कि इसमें बुराई से अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

दशहरा/दशाई का अनुष्ठान, परंपरा एवं रीति रिवाजें :

नेपाल में दशईं त्योहार घाट स्थापना के दिन मिट्टी व बालू में गेहूँ, जौ, मक्का की बीज डाला जाता है। यही दिन इस त्योहार की शुरुआत को समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। 2–6वाँ दिन– उस दिन लोग दुर्गा मां के विभिन्न रूपों की पूजा होती है। फूलफाती यानी सातवें दिन नेपाल के राजमहल से हनुमान धोखा महल तक फूलफाती सहित चढ़ावा का जुलुस निकाला जाता है। अष्टमी के दिन माँ काली के उग्र रूप मंदिरों व घरों में विशेष पूजा और पशु बलि दी जाती है ताकि माँ काली का आशीर्वाद और सुरक्षा मिलता रहे। महानवमी देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों को समर्पित है। देवी को प्रसन्न करने के लिए पूजा करते हैं, साथ ही देवी देवताओं की वाहनों जैसे हाथी, बाघ, बैल का सम्मान करने के लिए और पशुओं की बलि दी जाती है। विजयदशमी बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। उसी दिन छोटों को अपने से बड़ों का टीका व आशीर्वाद मिलता है। यही दिन लोग नए–नए व्यवसाय शुरू करते हैं जो कि यह सफलता का शुभ समय है। 11–14वाँ दिन सभी परिवार एक दूसरे से मिलते हैं, टीका लगवाते हैं और आशीर्वाद का आदान–प्रदान करते हैं और आनंद लेते हैं। कोजाग्रत के दिन धन की देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। दशईं का प्रत्येक 1–15 दिनों तक अपने आप में अनूठा सांस्कृतिक पहचान है। जबकि भारत में दशहरा के अवसर पर मेला एवं रामलीला का

आयोजन होता है। दशहरा के दिन शुभ मुहूर्त में रावण दहन के साथ कुंभकरण, मेघनाथ का पुतला दहन किया जाता है। इसी दिन शस्त्र पूजन भी किया जाता है। व्यापारी वर्ग के लोग विजयदशमी के पवित्र दिन पर नई दुकानें, शोरूम आदि का आरंभ करना शुभ मानते हैं। इस मौके पर भारत में सिंदूर खेला जैसे पश्चिम बंगाल और पूर्वी भारत के इलाकों में महिलाओं द्वारा देवी दुर्गा के माथे पर सिंदूर लगाने की प्रथाएं देखने को मिलती है। कर्नाटक और मैसूर दशहरा की शाही परंपरा के तहत चामुंडा देवी की भव्य शोभायात्रा निकालते हैं, जो कि यह परंपरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक झलक को दिखाती है। नवरात्रि की दुर्गा मां की पूजा होने के बाद यानी विजयदशमी के दिन ही मां दुर्गा का विसर्जन कहीं–कहीं उसी दिन होती है और कहीं कहीं बाद में भी किया जाता है। लोग गाजा–बाजा, भजन–कीर्तन के साथ एवं आतिशबाजी– पटाखों के साथ देवी दुर्गा माँ की अंतिम विदाई देकर इसका विसर्जन नदियों एवं तालाबों में किया जाता है।

दशहरा/दशई का विभिन्न क्षेत्रों में मनाने के तरीके और विशेषताएं :

भारत में स्थानीय व क्षेत्रीय आधार पर देखा जाए तो कहीं कहीं मनाने के तरीके और उनके विशेषताओं में भी अंतर देखने को मिलती है –

दक्षिण भारत में – कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश राज्यों में इसे नवरात्रि और गोम्बे हब्बा के रूप में मनाई जाती है। कर्नाटक के मैसूर में हाथियों का भव्य परेड देखने को मिलता है। इन राज्यों में आयुध पूजा की जाती है। लोग अपनी जीविका हेतु औजारों वाहनों की पूजा करते हैं।

पश्चिम भारत में – नवरात्रि के बाद यह बेहद ऊर्जा के साथ मनाया जाने वाला त्योहार है। इस अवसर पर गुजरात के डांडिया व गरबा नृत्य का आयोजन होता है।

हिमाचल प्रदेश का कुल्लू दशहरा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यहां रावण दहन की बजाय श्री राम का भव्य रथ यात्रा निकाली जाती है।

छत्तीसगढ़ (बस्तर दशहरा) – यह दुनिया का सबसे लंबा त्योहारों में से एक है। भारतीय देवी दंतेश्वरी को समर्पित है और लकड़ी के विशाल रथों को खींचने की अनुपम परंपरा है।

पश्चिम बंगाल व झारखंड – दुर्गा पूजा के अवसरों पर बड़े–बड़े पंडालें व मूर्तियां बनाई जाती है। झारखंड के रांची, जमशेदपुर, बुण्डू में लोग गाँव देहात से मेला देखने के लिए आते हैं। झारखंड में हिंदुओं के अलावा संथालों व मुंडा समुदायों इस अवसर पर मठों में तंत्र–मंत्र सीखने का होता है और पुरुष धोती–कुर्ता एवं महिलाओं के वेशभूषा पहनकर घंटा, थाली–कटोरी बजाते हुए घर–घर जाकर नृत्य करते हैं। नृत्य के उपरांत प्रत्येक घर से अनाज या चावल दिया जाता है। इसे जालि नृत्य या जालि सुसुन कहा जाता है।

दीपावली/तिहार :

यह मुख्यतः हिंदुओं का त्योहार है। नेपाल में इसे तिहार के नाम से जानते हैं। यह नेपाल का दूसरा सबसे बड़ा त्योहार है। नेपाल में यह त्योहार पांच दिनों तक मनाई जाती है जबकि भारत में दीपावली या दीपों का त्योहार के रूप में मनाते हैं। भारत में मुख्य रूप से पाँच दिनों का त्योहार है। यह अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना अर्थात् बुराई पर अच्छे की विजय का संदेश देता है।

धार्मिक, पौराणिक कथाएं और मान्यताएं :

नेपाल और भारत दोनों देशों में दीपावली या तिहार संबंधित पौराणिक कथाओं एवं मान्यताओं में थोड़े

बहुत अंतर देखने को मिल सकती है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार भगवान श्री राम ने रावण का वध करके और 14 वर्ष की वनवास काटकर वापस अयोध्या लौटने की खुशी में प्रभु श्री राम लक्ष्मण सीता के स्वागत में यह त्योहार दिवाली के रूप में मनाया गया। उसी दिन से अब तक नेपाल और भारत में दीपावली मनाई जाती है। वहीं कृष्ण भक्ति धारा के लोगों का मानना है कि इसी दिन कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर राजा का नरसंहार किया था और इस खुशी में दीपों का उत्सव मनाया गया। पौराणिक कथाओं के अनुसार दीपावली के दिन मां लक्ष्मी शीरसागर से उत्पन्न हुई थी, साथ ही समुद्र मंथन से आरोग्य धनवंतरी और भगवान कुबेर भी प्रकट हुए थे। एक और मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया था। इसकी मृत्यु पर उसकी प्रजा ने घी के दीए जलाए। ऐसी मान्यता है कि लक्ष्मी की पूजा करने से रिद्धि, समृद्धि, ऐश्वर्य व यश की प्राप्ति होती है। यह समृद्धि पर्व के रूप में मनाया जाता है।

तिहार/दीपावली का अनुष्ठान, परंपरा एवं रीति रिवाज :

- **पहला दिन : काग तिहार (कौवे की पूजा)** – हिन्दू मान्यताओं में कौवे को मृत्यु के देवता यमराज का संदेश वाहक माना जाता है। नेपाल में पहला दिन काग तिहार के नाम से जाना जाता है। इस दिन कौवे की पूजा की जाती है क्योंकि उसे यमराज का दूत माना जाता है। इस दिन कौवे को भोजन खिलाया जाता है। क्योंकि वह पूरे साल घर में कोई बुरा समाचार ना लाएँ।
- **दूसरा दिन : कुकुर तिहार (कुत्तों की पूजा)** – हिंदू धर्म में कुत्तों को यमराज का रक्षक और मार्गदर्शक माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि स्वर्ग के राजा युधिष्ठिर भी अंतिम समय में एक कुत्ते के साथ गए थे। इस दिन कुत्तों की पूजा की जाती है। कुत्तों को माला पहना दी जाती है, तिलक लगाया जाता है और इन्सान की भांति उनके अटुट बंधन का सम्मान किया जाता है एवं विशेष भोजन दिया जाता है। यह परंपरा नेपाल की अनोखी सांस्कृतिक पहचान मानी जाती है।
- **तीसरा दिन : गाय तिहार/लक्ष्मी पूजा और धन की पूजा :–** इस दिन गाय को हिंदू धर्म में माता और लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। इस दिन सुबह गाय की पूजा होती है। इसी दिन शाम को धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी का आह्वान करने के लिए घरों में दीये और रंगोली से सजाया जाता है। इस दिन रात भर घर घर जाकर भैलों गाने की परंपरा है।
- **चौथा दिन : गोवर्धन पूजा (हली तिहार और म्हा पूजा) :–** इस दिन भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा को याद किया जाता है। इसके साथ ही खेतों में मदद करने वाले बैलों की पूजा होती है। नेपाल के नेवार समुदाय के लिए यह दिन विशेष रूप से म्हा पूजा का होता है जिसका अर्थ है– "स्वयं की आत्मा की पूजा करना"। इस दिन वे अपने भीतर की दिव्यता का सम्मान करते हैं। साथ ही इस दिन युवा और बच्चे समूहों में देउसी खेलते हैं।
- **पांचवा दिन : भाई टीका (भाई बहनों का त्योहार) :–** मृत्यु को देवता यमराज अपनी बहन यमुना के बुलावे पर कार्तिक शुक्ल द्वितीया को उनके घर गये थे। यमुना ने यमराज को तिलक लगाकर उनकी लंबी उम्र की प्रार्थना की थी। प्रसन्न होकर यमराज ने वरदान दिया था कि जो भाई इस दिन अपनी बहन से टीका लगवाएगा, उसकी कभी अकाल मृत्यु नहीं होगी। बहनें भाइयों को मखमली फूलमाला पहनाकर माथे पर सप्तरंगी टीका लगाती है। भाई बदले में अपनी बहनों को उपहार और आशीर्वाद देते हैं।

भारतीय दृष्टिकोण में भारत में भी दीपावली का त्योहार मुख्य रूप से 5 दिनों तक बहुत उत्सव के साथ मनाया जाता है। यह अंधकार से प्रकाश की ओर और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इन पांच दिनों में घर की सफाई सजावट एवं देवी लक्ष्मी की पूजा एवं मिठाइयों का आदान–प्रदान किया जाता है।

- **पहला दिन धनतेरस :–** इस दिन लोग सौभाग्य और समृद्धि के लिए सोना, चांदी, बर्तन अनेक सामान खरीदते हैं। शाम के समय धन के देवता कुबेर और भगवान धन्वंतरि की पूजा की जाती है।
- **दूसरा छोटी दिवाली :–** इससे रूप चौदस भी कहा जाता है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर उबटन लगाने और स्नान करने की परंपरा है। माना जाता है कि इसी दिन भगवान कृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था और लोगों को उसकी अत्याचारों से मुक्त कराया था।
- **तीसरा दीपावली (मुख्य पर्व) :–** यह उत्सव सबसे महत्वपूर्ण दिन होता है जो कार्तिक मास की अमावस्या की रात को मनाया जाता है। घरों और कार्य स्थलों को मिट्टी के दीये, मोमबत्ती एवं रंगोलियों से सजाया जाता है। शाम को धन और समृद्धि के देवी मां लक्ष्मी और गणेश की पूजा होती है। पूजा के बाद आतिशबाजी की जाती है, दावतों का आदान प्रदान होता है। परिवार के लोग एक दूसरे को उपहार और मिठाईयां बाँटते हैं।
- **चौथा दिन गोवर्धन पूजा :–** इस दिन भगवान श्री कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा का स्मरण किया जाता है। घर में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाकर इसकी पूजा की जाती है। कई लोग इस दिन को अन्नकूट का प्रसाद भी बनाते हैं।
- **पांचवा दिन भैया दूज :–** यह त्योहार भाई बहनों के पवित्र रिश्ते को समर्पित है। इस दिन बहनें भाइयों की लंबी उम्र और सलामती के लिए तिलक करती है और भाई उन्हें उपहार देते हैं।

निष्कर्ष :–

भारत और नेपाल का प्रमुख पर्व दशहरा/दशईं न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है बल्कि यह दोनों देश की सांस्कृतिक संबंधों को भी मजबूत करता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि सत्य और धर्म की हमेशा विजय होती है और समाज में एकता प्रेम और सद्भाव बनाए रखने की आवश्यक है। दशहरा दोनों देशों की साझा विरासत का एक उज्ज्वल उदाहरण है जो अपने आप में लोगों को एक दूसरे के करीब लाता है। वहीं दिवाली त्योहार की बात करें तो यह परंपरा दोनों देशों की सांस्कृतिक समानता और ऐतिहासिक निकटता का सुंदर उदाहरण है। यह पर्व केवल रोशनी का उत्सव ही नहीं बल्कि प्रेम सम्मान, भाईचारा और सांस्कृतिक एकता का संदेश भी देता है। दोनों देशों के लोग इस पर्व को बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाते हैं। इससे भारत नेपाल संबंध और अधिक मजबूत होते हैं।

संदर्भ :–

1. जैन, रोशनलाल, हमारे पर्व त्योहार, देवनागरी प्रकाशन, जयपुर।
2. मिश्र, सुनील, हिन्दुओं के व्रत एवं त्योहार, अरूण प्रकाशन, दिल्ली।
3. 'निशंक' डॉ० रमेश पोखरियाल, एक दिन नेपाल में, पृष्ठ 102–103
4. सिंह, हरिहर, हमारे पर्व एवं त्योहार, अरूण प्रकाशन, दिल्ली।

मो०नं० :– 9608637522, ईमेल :– singraymunda07011999@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 244-251

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल की अर्थव्यवस्था में भारतीय विदेशी प्रत्यक्ष निवेश : एक विश्लेषण

डॉ. सोनम गुप्ता

सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग,

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0 प्र0।

सार :

किसी देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार के निवेश प्राप्त करने वाला देश पूंजी, तकनीक और प्रबन्धन की विशेषज्ञता के प्रवाह को आसान बनाता है, जिससे एक तरफ बाजार तक पहुँच बेहतर होती है, तो दूसरी तरफ रोजगार के अवसर सृजित होते हैं। इस प्रकार विदेशी प्रत्यक्ष निवेश सत्त विकास की नींव बनता है। इस अध्ययन का उद्देश्य नेपाल में भारत द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की वर्तमान स्थिति का गहराई से विश्लेषण करना है। इसके लिए क्षेत्र–वार एवं काल श्रेणी आकड़ो से विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है, जिसे मुख्यतः एशियन इन्सटीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड इण्टरनेशनल अफेयर्स, सर्वे रिपोर्ट ऑन एफ.डी.आई. इन नेपाल, 2023–24 आदि से लिया गया है, यह अध्ययन लगभग 24 वर्षों के आकड़ों पर आधारित है, जिससे नेपाल में भारत द्वारा किये गए एफ.डी.आई. निवेश की दीर्घकालीक प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है, साथ ही भविष्य में भारत द्वारा नेपाल में किये जा रहे विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के प्रवाह को बढ़ाने के लिए नीतिगत सुझाव दिए गये है। नेपाल ने 1992 में 'विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण अधिनियम' (एफ.आई.टी.टी.ए.) की घोषणा की और 1996 में नियमों को उदार बना कर अपनी अर्थव्यवस्था को एफ.डी.आई. के लिए अधिकारीक रूप से खोला तथा 2019 में निवेश को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए विस्तृत कानून बनाया।

'विश्व निवेश रिपोर्ट 2024' के अनुसार, 2022 की तुलना में 2023 में वैश्विक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह 2 प्रतिशत की कमी देखी गयी। इस प्रवृत्ति के बाद भी वित्त वर्ष 2022–23 में नेपाल का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश वित्त वर्ष 2021–22 की तुलना में 11.8 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 295.50 अरब नेपाली रुपये तक पहुँच गया। नेपाल में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का प्रवाह 58 देशों से आया है, जिसमें भारत 103.5 अरब नेपाली रुपये के साथ सबसे आगे है, और उसके बाद चीन 35.5 अरब नेपाली रुपये के साथ दूसरे स्थान पर है। विदेशी निवेश को आकर्षित करने में नेपाल का एफ.डी.आई. से जी.डी.पी. अनुपात जो कि वर्ष 2024–25 में 0.13 प्रतिशत पर था, एक महत्वपूर्ण चुनौति को दर्षाता है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए, संघीय सरकार को शासन प्रणालियों

को मजबूत करना होगा, राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करनी होगी और भारत द्वारा नेपाल में किये जा रहें एफ. डी.आई. की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए एक साझा आर्थिक दृष्टिकोण विकसित करना होगा।

प्रस्तावना :–

अपनी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति और जलविद्युत, कृषि, पर्यटन, वानिकी, खनन और मानव संसाधन जैसे क्षेत्रों में भरपूर अवसरों के कारण, नेपाल में दक्षिण एशिया के सबसे समृद्ध देशों में से एक के रूप में उभरने की क्षमता है। ये क्षेत्र टिकाऊ विकास और आर्थिक वृद्धि के लिए अच्छे एवं सशक्त मार्ग प्रशस्त करते हैं। युवा और गतिशील कार्यबल के साथ दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच अपनी स्थिति के कारण, नेपाल निवेश आकर्षित करने की अच्छी स्थिति में है। यह निवेश दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा दे सकता है, नवप्रर्वतन को प्रोत्साहित कर सकता है और आत्मनिर्भरता बढ़ा सकता है। विदेशी निवेश से जहॉ श्रम कौशल में सुधार होगा वही दूसरी ओर रोजगार सृजन में वृद्धि के साथ नवप्रर्वतन को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि विदेशी सहायता ने ऐतिहासिक रूप से नेपाल के मानव और सामाजिक विकास में मदद की है, लेकिन बाहरी निर्भरता को कम करने और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय संसाधनों और तकनीक में निवेश बहुत जरूरी है। काठमांडू में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारें भी वर्ष 2030 तक कम आय वाली अर्थव्यवस्था से मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। वे बुनियादी ढांचे, रोजगार सृजन और सामाजिक–आर्थिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अधिक निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से सुधारों पर महत्वपूर्ण जोर दे रही हैं। बड़े आर्थिक सुधारों और राजनीतिक स्थिरता की आवश्यकता जैसी मौजूदा चुनौतियों के बावजूद, नेपाल के भरपूर प्राकृतिक संसाधन और अप्रयुक्त क्षमता नेपाल को आने वाले वर्षों में महत्वपूर्ण विकास की स्थिति में लाने में मील का पत्थर साबित होगी। चूंकि लगभग दो–तिहाई आबादी कृषि में लगी हुई है, पूंजी का प्रवाह प्रगति को और गति देगा, इसलिए इस क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने से जीडीपी में काफी वृद्धि हो सकती है। जबकि निवेश–अनुकूल माहौल को बढ़ावा देने पर लगातार जोर देकर, नेपाल अपनी पूरी आर्थिक क्षमता को साकार करने और अपने दीर्घकालिक विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की अच्छी स्थिति में है।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफ.डी.आई.) :

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश वह निवेश है जिसमें कोई विदेशी कंपनी या व्यक्ति सीधे किसी दूसरे देश की कंपनी या उद्योग में पूँजी लगाता है और उसके प्रबंधन में हिस्सेदारी प्राप्त करता है। आमतौर पर इसे मान्यता तब मिलती है जब विदेशी निवेशक कंपनी में कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सेदारी लेता है। लम्बी अवधि का निवेश, यह अल्पकालिक नहीं बल्कि दीर्घकालिक निवेश होता है। प्रबंधन में भागीदारी, निवेशक कंपनी के निर्णयों और संचालन में हिस्सा ले सकता है। एफ.डी.आई. तीन प्रकार के होते है, ग्रीनफील्ड निवेश में विदेशी कंपनी नए उद्योग या कारखाने स्थापित करती है। ब्राउनफील्ड निवेश में मौजूदा कंपनी का अधिग्रहण या उसमें हिस्सेदारी खरीदना। संयुक्त उद्यम में विदेशी और स्थानीय कंपनी मिलकर नया व्यवसाय शुरू करती हैं। एफ.डी.आई. किसी देश की आर्थिक वृद्धि, तकनीकी विकास और रोजगार सृजन में अहम भूमिका निभाता है। हालांकि, इसे संतुलित तरीके से अपनाना जरूरी है जिससे घरेलू उद्योगों को हानि न हो।

शोध विधि एवं उद्देश्य :

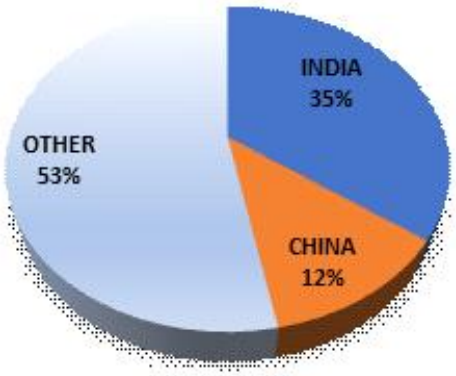
यह अध्ययन द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है, जिसे मुख्यतः एशियन इन्सटीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड

इण्टरनेशनल अफेयर्स, सर्वे रिपोर्ट ऑन एफ.डी.आई. इन नेपाल, 2023–24 आदि से लिया गया है, यह अध्ययन लगभग 24 वर्षों के आकड़ों पर आधारित है, जिससे नेपाल में भारत द्वारा किये गए एफ.डी.आई. निवेश की दीर्घकालीक प्रवृत्ति का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

नेपाल में एफ.डी.आई. स्टॉक का संघटन :

जुलाई 2023 के मध्य तक, नेपाल को 58 अलग–अलग देशों से विदेशी निवेश मिला है। कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश स्टॉक के मामले में, भारत 103.5 अरब रुपये (35 प्रतिशत) के साथ पहले स्थान पर है, जिसके बाद चीन 35.5 अरब रुपये (12 प्रतिशत), आयरलैंड 22.6 अरब रुपये, ऑस्ट्रेलिया 19.1 अरब रुपये और सिंगापुर 18.8 अरब रुपये का स्थान है।

ग्राफ–1 नेपाल में एफ.डी.आई. स्टॉक का संघटन 2022–23



स्त्रोत : शोधकर्ता द्वारा।

नेपाल में भारत द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश :

भारत और नेपाल के आर्थिक रिश्तों का विश्लेषण तीन मुख्य क्षेत्रों के आधार पर किया जा सकता है : वर्षवार मदद और विकास के लिए सहायता, दोनों देशों के बीच व्यापार, और निवेश। हालाँकि, 2000 के दशक के बाद से कई वजहों से भारतीय निवेश में उतार–चढ़ाव आते रहे हैं, जिनमें राजनीतिक अस्थिरता, आंतरिक संघर्ष और नेपाल की बदलती आर्थिक नीतियां शामिल हैं। नेपाल में शांति प्रक्रिया के बाद वर्ष 2006 के बाद भारतीय निवेश में फिर से तेजी आई, लेकिन यह बढ़ोतरी एक जैसी नहीं रही। भले ही भारत नेपाल में सबसे बड़ा निवेशक बना हुआ है, लेकिन निवेश का प्रवाह वर्ष 2000 से पहले के स्तर पर वापिस नहीं आया है। तालिका–1 में दर्शाए गये आकड़े नेपाल में मुख्य निवेशक के तौर पर भारत की ऐतिहासिक अहमियत को बताता है। वित्त वर्ष 1998–99 में, नेपाली सरकार ने 19 भारतीय प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी थी, यह संख्या वित्त वर्ष 2000–01 तक बढ़कर 37 हो गई। हालाँकि, वित्त वर्ष 2001–02 में निवेश की गतिविधियों में गिरावट आने लगी।

खास बात यह है कि वित्त वर्ष 2005–06 से भारतीय निवेश में फिर से तेजी आई। यह समय माओवादियों और नेपाल की सात प्रमुख राजनीतिक पार्टियों के बीच 12–सूत्रीय समझौते और उसके बाद नवंबर 2006 में शांति प्रक्रिया समझौते का दौर था। शांति प्रक्रिया और लोकतंत्र की बहाली में भारत की सक्रिय भूमिका रही थी,

जिससे भारत के निवेशकों का भरोसा फिर से बढ़ा। संघर्ष के बाद के दौर एवं 2008 से 2015 तक संविधान बनाने की प्रक्रिया के दौरान निवेश में बढ़ोतरी के बावजूद, 2018 में नए संविधान के तहत सरकारें बनने के बाद भारतीय निवेश में गिरावट देखी गई।

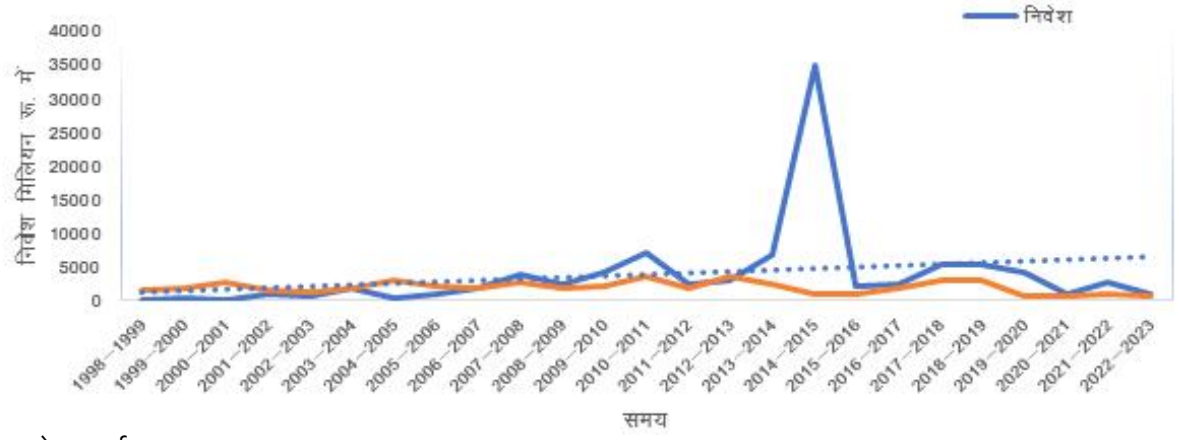
तालिका-1 नेपाल में भारत द्वारा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (मिलियन रू. में)

वर्ष	प्रोजेक्ट की संख्या	एफ.डी.आई.	रोजगार (संख्या में)
1998–1999	19	724.19	1,361
1999–2000	23	243.31	1,628
2000–2001	37	1281.77	2,524
2001–2002	20	678.27	1,452
2002–2003	24	504.95	1,065
2003–2004	10	1,696.48	1,560
2004–2005	9	223.76	2,849
2005–2006	25	803.99	2,039
2006–2007	22	1719.54	1,602
2007–2008	29	3645.4	2,569
2008–2009	28	2341.31	1,756
2009–2010	27	3993.54	1,835
2010–2011	38	7007.26	3,274
2011–2012	24	2298	1,754
2012–2013	41	2809.07	3,471
2013–2014	22	6,540.83	2,108
2014–2015	25	34,719	712
2015–2016	23	1,941.91	764
2016–2017	41	2,082.89	1,622
2017–2018	53	5,098.81	2,719
2018–2019	53	5,098.81	2,719
2019–2020	19	3,897.09	561
2020–2021	9	726	380
2021–2022	12	2,485.40	663
2022–2023	11	604.94	510

स्त्रोत : एशियन इन्सटीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड इण्टरनेशनल अफेयर्स, मार्च–अप्रैल, 2024

यह उतार–चढ़ाव दिखाता है कि राजनीतिक समझौतों और स्थिरता ने शुरू में निवेश को बढ़ावा दिया, लेकिन बाद में राजनीतिक या आर्थिक अनिश्चितताओं ने लगातार निवेश के प्रवाह में बाधा उत्पन्न की। वित्त वर्ष 2019–20 से भारी गिरावट आई, जिसके कारण सिर्फ 19 प्रोजेक्ट्स को मंजूरी मिली, जबकि वित्त वर्ष 2018–19 में 53 प्रोजेक्ट्स मंजूर हुए थे। वित्त वर्ष 2020–2021 में यह संख्या 09 पर आ गई, जो 1981 के बाद से सबसे कम थी। हालांकि बाद के वित्तीय वर्षो में प्रोजेक्ट्स की संख्या में थोड़ी बढ़ोतरी हुई। इसके बाद भी, इसी दौरान नेपाल में भारत का एफ.डी.आई. स्टॉक सबसे ज्यादा था। इसकी वजह शायद सरकारी कंपनियों का हाइड्रो–एनर्जी, वित्तीय और बीमा क्षेत्र में बड़े पैमाने पर किया गया निवेश हो सकता है।

ग्राफ–2 नेपाल में भारत द्वारा निवेश और रोजगार की प्रवृत्ति



स्त्रोत : शोधकर्ता द्वारा।

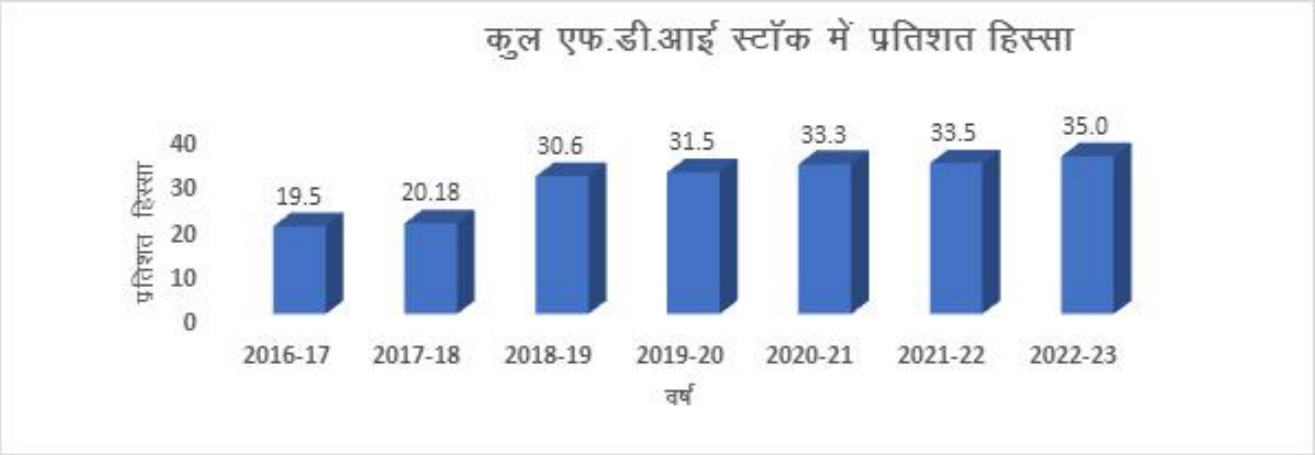
ग्राफ–2 में भारत द्वारा नेपाल में किए गए निवेश तथा रोजगार की प्रवृत्ति दर्शाई गई है, जिससे निवेश में असंसत् प्रवृत्ति देखने को मिलती है, जो कि लगातार 5000 मिलियन नेपाली रूपये या उससे कम की बनी रही है। 1998–99 से 2013–14 तक रोजगार की संख्या में वृद्धि दिखाई देती है परन्तु 2014–15 के बाद से रोजगार की संख्या में गिरावट आयी है। उपर्युक्त ग्राफ में बिन्दू रेखा निवेश की दीर्घकालिन प्रवृत्ति को दर्शा रही है, जिससे सतत् परन्तु धीमी गति से निवेश में बढ़ने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है।

नेपाल के कुल एफ.डी.आई स्टॉक में भारत का हिस्सा :

तलिका–2 नेपाल के कुल एफ.डी.आई स्टॉक में भारत का हिस्सा (मिलियन नेपाली रू. में)

वित्तीय वर्ष	एफ.डी.आई स्टॉक	कुल हिस्सा (प्रतिशत में)
2016–2017	32,868.4	19.5
2017–2018	41,737.3	20.18
2018–2019	56,054.6	30.6
2019–2020	62,447.2	31.5
2020–2021	75,814.2	33.3
2021–2022	88,592.6	33.5
2022–2023	103,452.3	35.0

स्त्रोत : एशियन इन्सटीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड इण्टरनेशनल अफेयर्स, मार्च–अप्रैल, 2024



स्त्रोत : शोधकर्ता द्वारा।

तालिका–2 के अनुसार, नेपाल के कुल एफ.डी.आई. स्टॉक में भारत का हिस्सा जो 2016–17 में 19.5 प्रतिशत था, 2022–23 में बढ़कर 35 प्रतिशत हो गया है अर्थात् 6 वर्षो में एफ.डी.आई. स्टॉक में लगभग 15.5 बिन्दू प्रतिशत की कमी आई है।

भारत द्वारा नेपाल में पूँजी संघटक के साथ एफ.डी.आई. स्टॉक की संरचना :

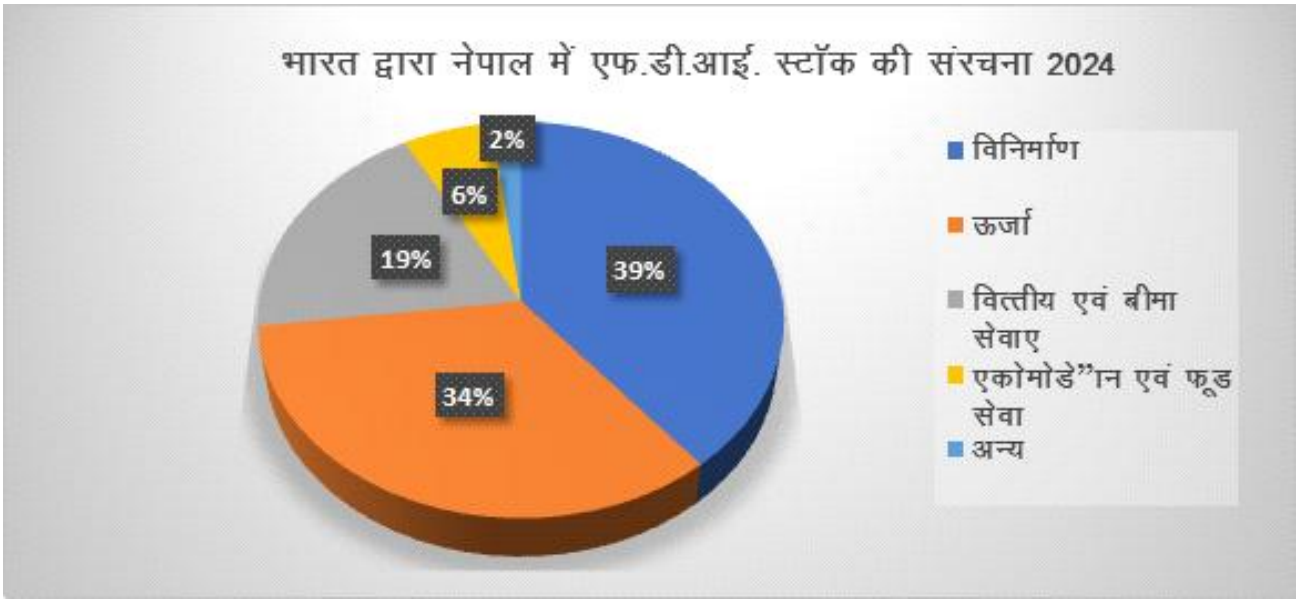
भारत का अधिकांश प्रत्यक्ष विदेशी निवेश स्टॉक तीन सेक्टर में है विनिर्माण (39 प्रतिशत), बिजली, गैस, स्ट्रीम और एयर कंडीशनिंग अर्थात् ऊर्जा (34 प्रतिशत), और वित्तीय और बीमा सेवा (19 प्रतिशत)। पेड–अप कैपिटल के मामले में, बिजली, गैस, स्ट्रीम और एयर कंडीशनिंग में इन्वेस्टमेंट सबसे ज्यादा है।

तालिका–3 भारत द्वारा नेपाल में पूँजी संघटक के साथ एफ.डी.आई. स्टॉक की संरचना

(नेपाली मिलियन रू. में)

संघटक	पेड–अप पूँजी	रिजर्व	ऋण	एफ.डी.आई स्टॉक	भारत की एफ.डी.आई. स्टॉक में हिस्सा (प्रतिशत में)
विनिर्माण	7.3 (13.1)	31.5 (70.0)	2.8 (39.1)	41.5 (38.2)	39
ऊर्जा	34.6 (62.1)	0.7 (1.5)	1.0 (13.5)	36.2 (33.6)	34
वित्तीय एवं बीमा सेवाए	9.6 (17.2)	10.4 (23.2)	0.0 (0.7)	20.1 (18.6)	19
एकोमोडेशन एवं फूड सेवा	2.5 (4.5)	3.1 (6.9)	1.0 (14.5)	6.6 (6.1)	6.0
अन्य	1.7 (3.0)	–0.7 (–1.5)	2.3 (32.3)	3.3 (3.0)	2.0
कुल	55.63	44.94	7.07	107.64	100

स्त्रोत : नेपाल राष्ट्र बैंक की एफ.डी.आई सर्वे रिपोर्ट 2023–24 नोट : कोष्ठक में आकड़े प्रतिशत में।



स्त्रोत : शोधकर्ता द्वारा।

मुख्य बिन्दू :

- भारत नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में सबसे बड़ा भागीदार (35 प्रतिशत) है, जो कि 2016 में 19.5 प्रतिशत था अर्थात् पिछले 6 वर्षो में भारत के हिस्से में लगातार वृद्धि हुई है।
- नेपाल मे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 1996 से अधिकारिक रूप से आया, अतः 1998–99 से 2023–24 तक लगातार 24 वर्षो में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की दीर्घकालिन प्रवृत्ति असंसत् रही है। वर्ष 2013–14 तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में लगातार वृद्धि प्रदर्शित हुई है, परन्तु 2013–14 के बाद से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में असंसत् प्रवृत्ति देखने को मिलती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के परिणामस्वरूप उत्पन्न रोजगार की संख्या में भी 2013–14 तक बढ़ने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है, परन्तु 2013–14 से रोजगार की संख्या में गिरावट आयी है।
- भारत द्वारा नेपाल में पूँजी संघटक के साथ एफ.डी.आई. स्टॉक की संरचना के अनुसार वर्ष 2024 मे सबसे अधिक निवेश क्रमशः विनिर्माण क्षेत्र, ऊर्जा तथा वित्तीय एवं बीमा सेवाओं मे परिलक्षित होता है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त चरो के अनुसार भारत नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत है, विशेषकर ऊर्जा (हाइड्रोपावर), पर्यटन और बुनियादी ढाँचे में। 2026 तक नेपाल ने अपनी निवेश नीतियों को और उदार बनाया है, जिससे भारतीय कंपनियों के लिए निवेश करना आसान हो गया है। आने वाले वर्षों में हाइड्रोपावर, पर्यटन और आई.टी. सेक्टर में निवेश की संभावनाएँ और बढ़ेंगी। नेपाल की नई नीतियाँ भारतीय कंपनियों को तेजी से प्रवेश और लाभांश वापसी की सुविधा देती हैं।

सन्दर्भ-सूची :

- (सितम्बर, 2025). सर्वे रिपोर्ट ऑन फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट इन नेपाल, इक्नॉमिक रिसर्च डिपार्टमेन्ट,

नेपाल राष्ट्र बैंक.

- निहार, आर. नायक एण्ड राय, साजिना. (2024).फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट फ्लोः इण्डिया टू नेपाल सिन्स द 1990. द एशियन इन्सटीट्यूट ऑफ डिप्लोमेसी एण्ड इण्टरनेशनल अफेयर्स. काण्ठमान्डू. नेपाल. वाल्यूम–2. इश्यू–2.
- सिंह, के. एम. (2024). एफ.डी.आई. सर्वे रिपोर्ट नेपाल राष्ट्र बैंक. नेपाल–इण्डिया चैम्बर ऑफ कॉमर्स इण्डस्ट्री.
- (2024). फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेन्ट इन नेपाल 2024 एनुवल रिपोर्ट. मिनिस्ट्री ऑफ इण्डस्ट्री कॉमर्स एण्ड सप्लाई. गवर्नमेन्ट ऑफ नेपाल. त्रिपुरेश्वर. काण्ठमान्डू.
- (जून, 2023). आर्थिक पहलू पर जोरः भारत–नेपाल सम्बन्ध. द हिन्दू. https://www.thehindu.com/hindi/editorial/economic-emphasis-the-hindu-hindi-editorial-on-india-nepal-ties/article66949257.ece

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 252-257

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Digital Payments and UPI Expansion in Nepal : Opportunities and Challenges for India–Nepal Economic Cooperation

Sonam Yadav
Assistant Librarian,
St. Aloysius College, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Abstract :

The rapid growth of digital financial technologies has significantly changed the nature of economic transactions worldwide. Among various innovations, India's Unified Payments Interface (UPI) has emerged as a highly successful platform for instant and secure digital payments. The recent introduction of UPI-based services in Nepal represents an important development in bilateral financial cooperation between India and Nepal. This initiative can simplify cross-border transactions, improve payment convenience for tourists and traders, encourage financial inclusion, and strengthen economic connectivity between the two neighbouring countries. At the same time, issues such as cyber threats, regulatory coordination, digital awareness, and technological infrastructure require careful attention. This paper examines the significance of UPI expansion in Nepal, evaluates its potential contribution to India–Nepal economic cooperation, and discusses the major opportunities and challenges associated with cross-border digital payment integration.

Keywords : UPI, Digital Payments, India–Nepal Relations, Financial Inclusion, Cross-Border Payments, Economic Cooperation

1. Introduction :

Digital transformation has become a defining feature of modern economies. Technological innovations in the financial sector have enabled faster, safer, and more accessible methods of conducting transactions. Digital payment platforms are increasingly contributing to economic efficiency, transparency, and broader participation in formal financial systems.

India has made remarkable progress in digital payments through the development of the Unified Payments Interface (UPI), introduced by the National Payments Corporation of India in 2016. The

platform has revolutionised payment practices by enabling instant bank-to-bank transfers through mobile devices and has become one of the most widely used digital payment systems globally.

India and Nepal maintain a long-standing relationship based on geographical proximity, cultural linkages, open borders, and extensive economic interactions. Trade, tourism, education, employment, and people-to-people exchanges form the foundation of bilateral cooperation. In recent years, both countries have increasingly explored technology-driven approaches to strengthen economic integration.

The extension of UPI services into Nepal marks a significant step toward improving financial connectivity between the two nations. By enabling seamless digital transactions, the initiative has the potential to support businesses, facilitate tourism, reduce transaction barriers, and promote greater financial inclusion. This study investigates the opportunities created by UPI expansion in Nepal, identifies the challenges that may affect its implementation, and assesses its broader implications for India–Nepal economic relations.

2. Literature Review :

Digital payment systems play an important role in promoting financial inclusion and economic development. The World Bank (2023) and OECD (2023) highlighted that digital financial services improve access to banking and reduce transaction costs. The RBI (2024) and NPCI (2024) reported that India's UPI has transformed digital payments through secure and instant transactions.

Studies by Kumar (2013) and Tripathi (2019) emphasised the significance of India–Nepal economic cooperation through trade, tourism, and cross-border connectivity. Sharma and Adhikari (2024) noted that fintech innovations can strengthen bilateral economic integration by improving payment efficiency.

Nepal Rastra Bank (2024) reported increasing adoption of digital financial services in Nepal, creating opportunities for UPI integration. However, challenges such as cybersecurity, digital literacy, infrastructure limitations, and regulatory coordination remain important concerns. Existing studies provide limited analysis of UPI expansion in Nepal; therefore, this study examines its opportunities and challenges for India–Nepal economic cooperation.

3. India–Nepal Economic Relations : An Overview :

India is Nepal's largest trading partner and a major source of foreign investment. The economic relationship between the two countries is supported by geographical proximity, open borders, cultural affinity, and extensive people-to-people connections.

Trade between India and Nepal has expanded significantly over the past two decades. India accounts for a substantial share of Nepal's imports and exports. Additionally, Nepal relies heavily on

India for transit facilities, energy cooperation, and investment in infrastructure projects.

Tourism also plays a crucial role in bilateral economic relations. Every year, millions of Indian tourists visit Nepal, while Nepalese citizens frequently travel to India for education, employment, healthcare, and religious purposes. The adoption of digital payment systems can further facilitate these economic interactions by simplifying financial transactions.

4. UPI and the Digital Payment Ecosystem :

The Unified Payments Interface (UPI) was developed by the National Payments Corporation of India to enable instant money transfers between bank accounts through mobile devices. UPI allows users to make payments, transfer funds, and conduct transactions in real time without requiring detailed bank account information.

The success of UPI in India has been remarkable. It has significantly reduced dependence on cash transactions and increased access to formal financial services. Millions of transactions are processed daily through UPI, making it one of the world's most advanced digital payment systems.

Nepal has also made significant progress in digital finance. Mobile banking, QR code payments, and digital wallets have gained popularity in recent years. The integration of UPI with Nepal's payment ecosystem provides an opportunity to connect the financial systems of both countries and improve cross-border transaction efficiency.

5. Opportunities Created by UPI Expansion in Nepal

5.1 Enhanced Cross-Border Transactions :

One of the major benefits of UPI integration is the simplification of cross-border payments. Travellers, students, businesspersons, and tourists can conduct transactions quickly and securely without exchanging large amounts of cash.

5.2 Promotion of Tourism :

Tourism is an important sector for both India and Nepal. The availability of digital payment options enables tourists to make purchases conveniently, improving their travel experience. Indian tourists visiting Nepal can use familiar payment platforms, increasing spending and supporting local businesses.

5.3 Financial Inclusion :

Digital payment systems promote financial inclusion by providing access to financial services for individuals who may not have access to traditional banking infrastructure. UPI can support financial participation among rural populations and small business owners.

5.4 Support for Small and Medium Enterprises (SMEs) :

Small and medium-sized enterprises play a vital role in Nepal's economy. Digital payment

solutions reduce transaction costs, improve record-keeping, and facilitate participation in the formal economy.

5.5 Strengthening Bilateral Economic Integration :

The integration of payment systems contributes to broader economic cooperation. Efficient financial connectivity supports trade, investment, and business partnerships between India and Nepal.

6. Challenges and Constraints

6.1 Cybersecurity Risks :

As digital transactions increase, cybersecurity threats such as fraud, phishing, and data breaches become more significant. Ensuring secure payment infrastructure is essential for maintaining public trust.

6.2 Regulatory Differences :

India and Nepal have distinct financial regulations and banking policies. Harmonising regulatory frameworks is necessary for smooth cross-border payment operations.

6.3 Digital Literacy Gap :

A considerable portion of the population in rural areas may lack the digital skills required to use advanced payment technologies effectively. Educational and awareness programs are needed to address this challenge.

6.4 Infrastructure Limitations :

Reliable internet connectivity and digital infrastructure are prerequisites for successful digital payment adoption. Remote and mountainous regions of Nepal continue to face connectivity challenges.

6.5 Data Privacy Concerns :

The growing use of digital financial platforms raises concerns regarding data protection and privacy. Both countries must establish robust legal frameworks to safeguard consumer information.

7. Future Prospects :

The future of digital payment cooperation between India and Nepal appears promising. Several developments can further strengthen this partnership :

- Expansion of QR-code interoperability.
- Integration of additional banking and fintech platforms.
- Development of cross-border remittance solutions.
- Promotion of digital financial literacy programs.
- Enhanced cooperation between central banks and financial regulators.
- Adoption of emerging technologies such as artificial intelligence and blockchain for payment security.

These initiatives can contribute to deeper economic integration and support sustainable economic growth in both countries.

8. Conclusion :

The expansion of UPI services into Nepal represents an important milestone in India–Nepal economic cooperation. Digital payment systems have the potential to transform cross-border transactions, promote tourism, enhance financial inclusion, and support economic development. Despite challenges related to cybersecurity, infrastructure, regulation, and digital literacy, the benefits of digital financial integration are substantial.

By strengthening institutional cooperation, investing in digital infrastructure, and promoting financial literacy, India and Nepal can maximise the advantages of cross-border digital payments. The successful implementation of UPI in Nepal can serve as a model for regional financial integration in South Asia and contribute to a more connected and inclusive digital economy.

References :

- Asian Development Bank. (2024). *Asian economic integration report 2024*. Asian Development Bank. https://www.adb.org/publications/series/asian-economic-integration-report
- Das, P. (2008). Towards a regulated Indo–Nepal border. *Strategic Analysis, 32*(5), 879–900.
- International Monetary Fund. (2024). *Regional economic outlook: Asia and Pacific*. International Monetary Fund. https://www.imf.org/en/Publications
- Kumar, R. (2013). India–Nepal open border: Springboard for opportunities. *International Studies, 50*(1–2), 165–183.
- Ministry of External Affairs, Government of India. (2024). *India–Nepal bilateral relations*. https://www.mea.gov.in
- National Payments Corporation of India. (2024). *UPI statistics and annual report*. https://www.npci.org.in/product/upi/product-statistics
- Nepal Rastra Bank. (2024). *Payment systems annual report 2023–24*. Nepal Rastra Bank. https://www.nrb.org.np
- Organisation for Economic Co-operation and Development. (2023). *Digital economy outlook 2023*. OECD Publishing. https://www.oecd.org/digital/digital-economy-outlook
- Reserve Bank of India. (2024). *Annual report 2023–24*. Reserve Bank of India. https://www.rbi.org.in
- Sharma, P., & Adhikari, S. (2024). Financial technology and economic integration: Opportunities

for Nepal and India. *Journal of Asian Economic Studies, 18*(1), 55–72.

- Tripathi, D. (2019). Influence of borders on bilateral ties in South Asia: A study of contemporary India–Nepal relations. *International Studies, 56*(2–3), 189–208.
- United Nations Conference on Trade and Development. (2023). *Digital economy report 2023*. United Nations. https://unctad.org/topic/ecommerce-and-digital-economy/digital-economy-report
- United Nations Economic and Social Commission for Asia and the Pacific. (2023). *Digital economy report for South Asia*. UNESCAP. https://www.unescap.org/publications
- World Bank. (2023). *Digital financial inclusion and economic development in South Asia*. World Bank. https://www.worldbank.org/en/topic/financialinclusion
- World Bank. (2024). *South Asia's digital opportunity: Accelerating growth and transforming lives*. World Bank. https://www.worldbank.org/en/topic/digital
- World Bank. (2024). *South Asia digital finance data portal*. World Bank. https://digitalfinance.worldbank.org/region/south-asia

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 258-263

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध

डॉ. सुनिता सारस्वत

सह–प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू) राज।

सारांश –

प्राचीन भारत और नेपाल के संबंध केवल पड़ौसी देशों के संबंध नहीं थे, बल्कि वे साझा संस्कृति, धर्म और इतिहास पर आधारित एक गहरे सभ्यतागत संबंध थे। यही कारण है कि आज भी दोनों देशों के बीच "रोटी–बेटी का संबंध" कहा जाता है। रोटी–बेटी का रिश्ता, एक बोलचाल का और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण शब्द है, जिसका उपयोग भारत और नेपाल के बीच गहरे और बहुआयामी संबंधों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। यह आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में दोनों देशों की अद्वितीय और व्यापक परस्पर निर्भरता को उजागर करता है। दोनों देशों के बीच 'रोटी–बेटी के रिश्ते' की इस अनूठी कड़ी के कारण, नेपाल का भारत के साथ एक रक्त संबंध है। इसलिए, भारत और नेपाल के बीच का रिश्ता किसी भी तीसरे देश की तुलना में कहीं अधिक विशेष है। इस विशेष रिश्ते का आनंद दोनों देशों के नागरिकों की सीमाओं पर बिना किसी रोक–टोक के आवाजाही और खुली सीमाओं के रूप में उठाया जाता है, जिससे यह रिश्ता और भी अधिक मजबूत होता है। 'रोटी–बेटी के रिश्ते' को और अधिक सुदृढ़ बनाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारक दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं की एक ही उत्पत्ति है। मिथिला क्षेत्र में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली लोकप्रिय 'मिथिला मध्य परिक्रमा' एक ऐसी तीर्थयात्रा है, जो भारत और नेपाल के समुदायों को मिथिला में भगवान राम और सीता के पौराणिक विवाह से जुड़ी साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के माध्यम से जोड़कर 'रोटी–बेटी के रिश्ते' का प्रतीक बनती है।

बीज शब्द – प्राचीन भारत और नेपाल, पौराणिक संबंध, रोटी–बेटी।

प्रस्तावना –

प्राचीन भारत और नेपाल के संबंध बहुत गहरे, बहुआयामी और ऐतिहासिक रूप से जुड़े हुए थे। ये संबंध धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर विकसित हुए। संक्षेप में प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं :

1. **धार्मिक और सांस्कृतिक संबंध :**

- भारत और नेपाल दोनों ही प्राचीन काल से हिंदू और बौद्ध संस्कृति के केंद्र रहे हैं।
- गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी में हुआ, जबकि उनका ज्ञान और धर्म–प्रचार मुख्यतः भारत में हुआ।
- नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर जैसे प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ हैं, जिनका भारतीय श्रद्धालुओं से गहरा संबंध रहा है।

- रामायण परंपरा में नेपाल के जनकपुर को माता सीता की जन्मभूमि माना जाता है। सीता और राम की कथा दोनों देशों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ती है।

2. राजनीतिक संबंध :

- प्राचीन काल में नेपाल छोटे–छोटे राज्यों में विभाजित था, जबकि भारत में मौर्य, गुप्त आदि बड़े साम्राज्य थे।
- मौर्य साम्राज्य के समय भारत और नेपाल के बीच संपर्क बढ़ा।
- सम्राट अशोक ने नेपाल में बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु स्तूप और विहार बनवाए।
- गुप्त काल में भी भारत का सांस्कृतिक प्रभाव नेपाल पर स्पष्ट दिखाई देता है।

3. व्यापारिक संबंध :

- हिमालयी मार्गों के माध्यम से भारत और नेपाल के बीच व्यापार होता था।
- नेपाल से लकड़ी, जड़ी–बूटियाँ और ऊन का व्यापार होता था, जबकि भारत से वस्त्र, धातु और कृषि उत्पाद नेपाल जाते थे।
- काठमांडू घाटी प्राचीन व्यापार मार्गों का महत्वपूर्ण केंद्र थी।

4. सामाजिक और भाषाई संबंध :

- दोनों देशों की भाषाओं और परंपराओं में समानता रही।
- संस्कृत भाषा का प्रभाव नेपाल की संस्कृति और साहित्य पर गहरा पड़ा।
- विवाह, त्यौंहार, रीति–रिवाज और धार्मिक अनुष्ठानों में भी समानताएँ देखने को मिलती हैं।

5. बौद्ध धर्म का सेतु :

- भारत और नेपाल बौद्ध धर्म के माध्यम से एशिया के अन्य देशों से जुड़े।
- नेपाल के बौद्ध भिक्षु भारत के नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते थे।

प्राचीन भारत और नेपाल के संबंध केवल पड़ोसी देशों के संबंध नहीं थे, बल्कि वे साझा संस्कृति, धर्म और इतिहास पर आधारित एक गहरे सभ्यतागत संबंध थे। यही कारण है कि आज भी दोनों देशों के बीच "रोटी–बेटी का संबंध" कहा जाता है।

रोटी–बेटी का रिश्ता, एक बोलचाल का और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण शब्द है, जिसका उपयोग भारत और नेपाल के बीच गहरे और बहुआयामी संबंधों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। यह आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में दोनों देशों की अद्वितीय और व्यापक परस्पर निर्भरता को उजागर करता है।

शब्द–व्युत्पत्ति :

'रोटी' शब्द का अर्थ भोजन के लिए है। यह पहलू आर्थिक परस्पर निर्भरता और दैनिक आजीविका का प्रतीक है। इसी तरह, 'बेटी' शब्द का अर्थ पुत्री है और यह भारत और नेपाल के बीच वैवाहिक संबंधों का प्रतीक है। यह पहलू दोनों देशों के बीच मजबूत पारिवारिक और वैवाहिक संबंधों को उजागर करता है। 'रोटी–बेटी का रिश्ता' वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ 'रोटी और बेटी का संबंध' है।

उत्पत्ति :

दोनों देशों के बीच 'रोटी–बेटी' संबंध का पता रामायण काल से लगाया जा सकता है। रामायण ग्रंथ में, अयोध्या के राजकुमार राम का विवाह मिथिला की राजकुमारी सीता से हुआ था। भगवान राम और देवी सीता के बीच इस वैवाहिक संबंध को वर्तमान के दो देशों – भारत और नेपाल – के बीच 'रोटी–बेटी' संबंध की प्राचीन उत्पत्ति में से एक माना जाता है।

संक्षेप में, 'रोटी–बेटी' संबंध का तात्पर्य यह है कि भारत और नेपाल केवल पड़ोसी देश ही नहीं हैं, बल्कि वे पारिवारिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बंधनों से जुड़े हुए हैं, जो उनके लोगों के दैनिक जीवन और पहचान का अभिन्न अंग हैं।

विवरण :

भारत और नेपाल ने अपनी स्थापना के समय से ही एक ऐसे संबंध को संजोकर रखा है, जिसे 'रोटी–बेटी का रिश्ता' के रूप में वर्णित किया जाता है। भारत और नेपाल के बीच 'रोटी–बेटी' संबंध दोनों देशों के बीच अद्वितीय और गहरे रूप से गुंथे हुए सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक बंधनों को संदर्भित करता है। इसमें व्यापार, वाणिज्य, रोजगार, आजीविका, सीमा पार विवाह, साझा सांस्कृतिक विरासत और लोगों के बीच आपसी जुड़ाव आदि शामिल हैं। हिंदी वाक्यांश 'रोटी–बेटी का रिश्ता' का उपयोग दोनों देशों के लोगों द्वारा भारत और नेपाल के बीच मजबूत सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को दर्शाने के लिए भावनात्मक और आम बोलचाल के रूप में किया जाता है। यह संबंध रोटी (भोजन) और बेटी (विवाह) के माध्यम से जुड़ा हुआ है, जो दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी सहयोग, प्रेम और आत्मीयता का प्रतीक है। दोनों देशों के बीच 'रोटी–बेटी' का रिश्ता आज भी 1950 की भारत–नेपाल शांति और मैत्री संधि के माध्यम से कायम और बरकरार है।

दोनों देशों के बीच 'रोटी–बेटी के रिश्ते' की इस अनूठी कड़ी के कारण, नेपाल का भारत के साथ एक रक्त संबंध है। इसलिए, भारत और नेपाल के बीच का रिश्ता किसी भी तीसरे देश की तुलना में कहीं अधिक विशेष है। इस विशेष रिश्ते का आनंद दोनों देशों के नागरिकों की सीमाओं पर बिना किसी रोक–टोक के आवाजाही और खुली सीमाओं के रूप में उठाया जाता है, जिससे यह रिश्ता और भी अधिक मजबूत होता है। 'रोटी–बेटी के रिश्ते' को और अधिक सुदृढ़ बनाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारक दोनों देशों की साझा सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं की एक ही उत्पत्ति है। मिथिला क्षेत्र में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली लोकप्रिय 'मिथिला मध्य परिक्रमा' एक ऐसी तीर्थयात्रा है, जो भारत और नेपाल के समुदायों को मिथिला में भगवान राम और सीता के पौराणिक विवाह से जुड़ी साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के माध्यम से जोड़कर 'रोटी–बेटी के रिश्ते' का प्रतीक बनती है।

हाल के दिनों में, 'देव शिला यात्रा' दोनों देशों के बीच एक प्रमुख सांस्कृतिक और धार्मिक यात्रा रही है, जिसके माध्यम से दोनों देशों के बीच 'रोटी–बेटी के रिश्ते' की कड़ियों को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया

गया।

चुनौतियाँ और बदलती परिस्थितियाँ :

हालांकि पारंपरिक रूप से यह 'रोटी–बेटी' का रिश्ता काफी मजबूत रहा है, फिर भी हाल के वर्षों में इसे कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। नेपाल का नया नागरिकता कानून, राजनीतिक बदलाव और उनसे जुड़ी भारत–विरोधी भावनाएँ, तथा सीमा विवाद– ये कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं जिनका सामना दोनों देशों के बीच के इस पारंपरिक 'रोटी–बेटी के रिश्ते' को करना पड़ रहा है। हाल के वर्षों में, इन्हीं चुनौतियों के चलते 'रोटी–बेटी के रिश्ते' में कुछ हद तक गिरावट देखने को मिली है। इसी प्रकार, विशेषज्ञों के अनुसार, नेपाल में बढ़ता चीनी प्रभाव भी 'रोटी–बेटी' के रिश्ते के लिए एक संभावित चुनौती बनकर उभर रहा है। इसमें भविष्य में 'रोटी–बेटी के रिश्ते' की कड़ियों को कमजोर करने की क्षमता निहित है।

यह एक अत्यंत विस्तृत विषय है जो भारतीय उपमहाद्वीप (विशेषकर भारत–नेपाल संबंधों) की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक नींव को दर्शाता है। 'रोटी–बेटी का रिश्ता' केवल एक मुहावरा नहीं, बल्कि दो समाजों के बीच आत्मिक, पारिवारिक और आर्थिक अंतर्निर्भरता का प्रतीक है।

1. **भविष्य की दिशा** – रोटी–बेटी के रिश्ते का अर्थ 'रोटी–बेटी का रिश्ता' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– 'भोजन' (आर्थिक जीवन) और 'बेटी' (विवाह संबंध) का अटूट बंधन। यह एक ऐसी प्रगाढ़ दोस्ती या पारिवारिक संबंध को दर्शाता है, जहाँ दो परिवार, समुदाय या राष्ट्र केवल व्यापार या कूटनीति के लिए नहीं, बल्कि एक–दूसरे के साथ मिलकर खाने (रोटी) और अपनी बेटियां ब्याहने (बेटी) के लिए तैयार होते हैं। यह विश्वास की सर्वोच्च पराकाष्ठा है।

2. **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – प्राचीन काल (रामायण और महाभारत) :** इस रिश्ते की जड़ें पौराणिक काल में निहित हैं। मिथिला (नेपाल) की बेटी सीता का विवाह अयोध्या (भारत) के राम से होना, रोटी–बेटी के रिश्ते का सबसे पहला और बड़ा ऐतिहासिक प्रमाण माना जाता है। यह सिद्ध करता है कि भारत और नेपाल के बीच सामाजिक और पारिवारिक संबंध सदियों पुराने हैं। **मध्यकाल और आधुनिक काल :** सदियों से उत्तर प्रदेश, बिहार और उत्तराखंड के तराई क्षेत्रों के लोग नेपाल के साथ रोटी और बेटी के संबंध से जुड़े रहे हैं। राजशाही के दौरान और बाद में, दोनों ओर की सीमा पर स्थित लोगों के बीच शादियां एक सामान्य प्रक्रिया रही हैं। ऐतिहासिक रूप से, इस रिश्ते को कभी भी सीमा से विभाजित नहीं माना गया।

3. **सामाजिक परिप्रेक्ष्य – रोटी (भोजन) और बेटी (विवाह) का महत्व रोटी (समानता का प्रतीक) :** भारतीय समाज में, किसी के साथ बैठकर रोटी खाना एक–दूसरे को समान मानने का प्रतीक है। जाति व्यवस्था के विपरीत, रोटी का साझा होना यह दर्शाता है कि आपसी विश्वास है। यह भोजन, आजीविका और संसाधनों को साझा करने का प्रतीक है। **बेटी (वैवाहिक संबंध) :** भारत के सामाजिक ढांचे में अपनी बेटी की शादी करना

किसी के साथ सबसे गहरे पारिवारिक रिश्ते (रिश्तेदारी) का प्रतीक है। जब दो समूह 'बेटी' का आदान–प्रदान करते हैं, तो वे एक–दूसरे को 'अपना' (रिश्तेदार) मान लेते हैं। यह ष्पराया धनष् की सोच के बावजूद एक–दूसरे के प्रति सम्मान का परिचायक है।

4. **भौगोलिक और सांस्कृतिक : समरूपता** – रोटी–बेटी के रिश्ते को भौगोलिक निकटता ने और प्रगाढ़ बनाया है। सीमा के दोनों ओर त्योहार होली, दिवाली, दशहरा एक जैसे मनाए जाते हैं। भाषा– भोजपुरी, मैथिली, और नेपाली भाषाएं दोनों तरफ बोली जाती हैं। धर्म– हिंदू और बौद्ध धर्म के साझा तीर्थ स्थल (जैसे पशुपतिनाथ, जानकी मंदिर) दोनों देशों के लोगों को जोड़ते हैं।

5. **भारत–नेपाल संबंधों में रोटी–बेटी का विशेष महत्व :** भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे 'दिल का रिश्ता' कहा है। **अनूठी खुली सीमा :** भारत और नेपाल के बीच 1,850 किमी से अधिक की खुली सीमा है, जो दुनिया में अद्वितीय है। **व्यापार और आजीविका :** लाखों लोग शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के लिए सीमा के दोनों पार जाते हैं। **सांस्कृतिक एकता :** यह रिश्ता दोनों देशों के बीच कूटनीतिक मतभेदों के बावजूद, जन–स्तर पर मैत्री को बनाए रखता है।

6. **आर्थिक अंतर्निर्भरता और खुली सीमा** 'रोटी' का एक पहलू आर्थिक –निर्भरता भी है। नेपाल की अर्थव्यवस्था के लिए भारत का बाजार, बंदरगाह और रोजगार के अवसर महत्वपूर्ण हैं। इसके विपरीत, भारत के तराई क्षेत्रों के लिए नेपाली बाजार और संसाधन महत्वपूर्ण हैं। खुली सीमा के कारण, दोनों तरफ के नागरिकों को वीजा की आवश्यकता नहीं होती, जिससे यह रिश्ता पारिवारिक स्तर पर बना रहता है।

7. **बदलते सामाजिक परिवेश और वैवाहिक प्रथाएं** – आधुनिकीकरण, शहरीकरण और नई पीढ़ियों की सोच के कारण इस रिश्ते की गतिशीलता में बदलाव आया है। **जातिगत दीवारें :** परंपरागत रूप से, यह रिश्ता अपनी जाति के भीतर ही सीमित था, लेकिन अब अंतर्जातीय विवाहों के साथ इसके मायने बदल रहे हैं। **पूंजीवाद और शहरीकरण :** गांवों में अभी भी यह रिश्ता अपनी पुरानी परंपरा के साथ मौजूद है, लेकिन शहरों में वैवाहिक रिश्ते अब केवल 'रोटी–बेटी' के भौगोलिक आधार पर नहीं बनते।

8. **चुनौतियां और समकालीन दरारें** –

ऐतिहासिक रूप से गहरे होने के बावजूद, हाल के वर्षों में इस रिश्ते में दरारें देखी गई हैं :

- **राजनीतिक अस्थिरता :** सीमा विवाद और नेपाल में चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण रिश्तों में कड़वाहट आई है।
- **नागरिकता कानून (नेपाल) :** नेपाल के कुछ कानूनों में बदलाव के कारण, भारतीय महिलाओं को नेपाली नागरिकता मिलने में कठिनाई (जैसे 7 साल का इंतजार) रोटी–बेटी के रिश्ते के लिए चुनौती है।
- **युवा पीढ़ी का दृष्टिकोण :** युवा पीढ़ी अब 'रोटी–बेटी' के बजाय रणनीतिक और आर्थिक हितों पर अधिक जोर दे रही है, जिससे पारंपरिक भावनात्मक जुड़ाव कम हो रहा है।

निष्कर्ष :

भविष्य की दिशा रोटी–बेटी का रिश्ता केवल एक मुहावरा नहीं, बल्कि एक जीवंत सामाजिक और ऐतिहासिक सत्य है। रामायण काल से लेकर आज तक, इसने भारत–नेपाल संबंधों को विषम परिस्थितियों में भी जीवित रखा है। हालांकि, आधुनिक समय में इसे केवल परंपरा पर नहीं, बल्कि समकालीन जरूरतों (शिक्षा, तकनीक, व्यापार) के साथ भी तालमेल बिठाना होगा। यदि इस रिश्ते को मजबूत रखना है, तो दोनों देशों की सरकारों को पारंपरिक सामाजिक संबंधों का सम्मान करते हुए, राजनीतिक मुद्दों को बातचीत (Dialogue) से हल करना होगा। यह रिश्ता सिर्फ पड़ोसी होने का नहीं, बल्कि 'एक होने' का एहसास है।

संदर्भ :-

- 'प्यार सरहद पार : नेपाल और भारत में शादियों पर क्यों लग रहा है ग्रहण'. bbc.com. 2025–08–05 को पुनःप्राप्त।
- "Nepal has roti-beti ka rishta with India: Deep Upadhyay". The Times of India. 2016–05–10. आईएसएसएन 0971–8257। 2025–07–27 को पुनःप्राप्त।
- 'रोटी–बेटी, बिजली, कनेक्टिविटी, सुरक्षा और उससे आगे'। myrepublica.nagariknetwork.com. 2024–08–08. 2025–07–27 को पुनःप्राप्त.
- मिश्रा, धर्मेंद्र, हिंदी, इंडिया टीवी (2024–01–14)। 'नेपाल ने कहा कि भारत के साथ है 'बेटी–रोटी और खून का रिश्ता'...इस नेता का जवाब, चीन को ही मिलेगी सदमा' इंडिया टीवी हिंदी (हिंदी में)। 2025–07–27 को पुनःप्राप्त।
- 'सीता–राम विवाह से बना भारत–नेपाल का रिश्ता, रोटी–बेटी का रिश्ता आज भी कायमय प्राण प्रतिष्ठा पर जन्मपुर में उत्सव'। हिंदुस्तान (हिन्दी में)। 2024–01–23 को मूल से संग्रहीत। 202 को पुनःप्राप्त।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 264-268

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल की लैंड-लाक्ड से लैंड-लिंक्ड बनने की यात्रा

तृप्ति मौर्या

शोध छात्रा, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

सारांश :

नेपाल का यह मानना है कि भारत और चीन के साथ अपने हितों के लिए संतुलन बनाए रखते हुए अपनी भौगोलिक संरचना में सुधार करने का प्रयास करते हुए भू–आबद्ध देश से मुख्य भूमि से जुड़ सके। तीसरे देशों के साथ अपने व्यापार को बढ़ा सके, अपनी रणनीतिक और बुनियादी ढ़ाचागत प्रयासों का विश्लेषण कर सके, साथ ही नेपाल आर्थिक विकास और औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर हो सके।

मुख्य भाब्द – भू–आबद्ध, भारत–नेपाल, नेपाल–चीन, आर्थिक विकास, औद्योगिक विकास, भौगोलिक संरचना।

भौगोलिक क्षेत्र महत्वपूर्ण क्यों?

भूगोल किसी देश की आर्थिक प्रगति के साथ–साथ उसकी रणनीतिक और विदेश नीति के निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण दिशा देने का काम करता है। आकार, स्थान, जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और पहुंच जैसे कारक किसी देश की शक्ति और कमजोरियों को निर्धारित करते हैं उसके दर्शन, दृष्टिकोण और गौरव को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार देश अपनी शक्ति पहाडों, लम्बी तट रेखाओं और विभिन्न अन्य प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच जैसे रणनीतिक वातावरण से प्राप्त करते हैं। भू–राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जो भूगोल और राष्ट्रीय रणनीति को आपस में जोड़ता है, जिसमें भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र और अंतर्राष्ट्रीय संबंध जैसे विषय शामिल है। यह क्षेत्रीय सीमाओं, रणनीतिक संसाधनों और क्षेत्रीय शक्ति गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक व्यवस्था के ढ़ाचों का विश्लेषण करता है।

नेपाल एक भू–आबद्ध देश है जो कि एक संप्रभु देश के रूप में एक अनूठी पहचान रखता है। भारत और चीन के बीच स्थित एक भू–भाग से घिरे देश नेपाल को शताब्दियों से अधिक समय से दो पत्थरों के बीच फंसा शकरकंद कहा जाता रहा है। इन दो शक्तिशाली देशों के बीच नेपाल की रणनीतिक स्थिति आज भी प्रमुख प्रभाव डालती है, जो विश्व के साथ इसके संबंधों और आंतरिक गतिशीलता को आकार देती है। आज, ये पत्थर अब 18वीं शताब्दी के नवजात साम्राज्य नहीं हैं, बल्कि वैश्विक परिदृश्य को नया रूप देने वाली आर्थिक महाशक्तियां हैं। विश्व की उभरती अर्थव्यवस्था चीन, वाणिज्य, प्रौद्योगिक और कूटनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, जबकि पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत, वैश्विक मंच पर एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में तेजी से उभर रहा है। भौगोलिक रूप से इन दो शक्तिशाली देशों के बीच स्थित नेपाल अपने राष्ट्रीय हितों और स्वायतत्ता की रक्षा करते हुए, दोनों पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों की जटिलताओं को संभालते हुए संतुलन

बनाने की कोशिश कर रहा है।

दो देशों के बीच का सम्बन्ध केवल दो देशों के बीच का नही होता बल्कि वह उस विशेष समय व विशेष परिस्थिति में पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण होता है। वैश्वीकरण की धारणा सही परिलक्षित होती नजर आ रही कि सम्पूर्ण विश्व एक गांव की तरह नजर आता है। इसलिए जो आदमी आज अकेले रहता है वह या तो भगवान है या जानवर है। वर्तमान समय में कोई भी देश अलग थलग रह कर सुरक्षित नहीं रह सकता। देशों के बीच सहअस्तित्व आज की आवश्यकता है।

हिमालय की गोद में बसा नेपाल एक खूबसूरत देश है। विश्व की सबसे उँची चोटी सागरमाथा (मांउट एवरेस्ट) सहित कई पर्वतमालाएं है। नेपाल में अलग–अलग समुदाय के लोग आपसी तालमेल के साथ रहते है। यह देश हजारों सालों से दो सबसे पुराने और बड़े धर्म – हिन्दू और बौद्ध धर्म का केंद्र रहा है। नेपाल के दक्षिणी हिस्से में स्थित पवित्र जगह लुंबिनी में महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ और जनकपुर में माता सीता का जन्म हुआ था। हिन्दुओं के आस्था के केंद्र और रक्षक भगवान पशुपतिनाथ जी का मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू में है।

भारत – नेपाल जुड़ाव :

नेपाल की भौगोलिक स्थिति भारत और चीन के तिब्बती क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। नेपाल चारों तरफ से जमीन से घिरा हुआ देश है इसके सभी आयात कोलकाता के बन्दरगाह से होते है। नेपाल भारत पर बड़ी सीमा पर आश्रित है। इस क्षेत्र में नेपाल एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, न केवल जनसंख्या की दृष्टि से बल्कि रणनीतिक कारणों से भी महत्वपूर्ण है। यह दो देशों के बीच बफर स्टेट का काम करता है। नेपाल की सीमाएं भारत के साथ पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम में मिलती हैं जिसको 'मुर्गे की गर्दन' के रूप में सिलीगुड़ी में देखा जा सकता है।

भारत–नेपाल के बीच संबंध बहुत गहरा रहा है, भौगोलिक निकटता के साथ–साथ सांस्कृतिक निकटता भी रही है। भारत–नेपाल संबंध व्यापक संस्थागत तथा भौगोलिक कारकों के साथ–साथ दोनों के बीच साझा धर्म की द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती देता है। नेपाल की सीमाएं 1850 किमी0 भारत के पांच राज्यों सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड से लगी हुई है। इसके अलावा भारत–नेपाल के बीच 1700 किमी0 खुली सीमाएं है। इससे दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक संबंधों को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। इससे दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंधों को मजबूत करने में सहायता मिलती है।

प्राचीन काल से ही भारत–नेपाल के बीच अत्यंत निकट का संबंध रहा हैं। इसके पीछे भौगोलिक निकटता के साथ–साथ साझा धर्म, भाषा तथा सांस्कृतिक पहचान का कारण भी दोनों देशों को जोड़ता है। ऐसा कहा जाता है कि दोनों देशों के बीच समानता तथा पारस्परिक अर्न्तसंबन्ध हमेशा से बना रहा है। वर्तमान में देशों के बीच संबंध एक चौराहे पर खड़ा हैं जहां नयी दिशा की खोज जारी है, इसके पीछे नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन का कारक भी है, नयी आर्थिक उदारीकरण की नीतियां भी हैं।

1947 में ब्रिटिश शासन से मुक्ति के उपरांत भारत ने 1950 में नेपाल के साथ शांति व मित्रता की संधि की। यह समझौता 31 जुलाई 1950 को नेपाल के प्रधानमंत्री मोटन शमशेर जंग बहादुर राणा तथा भारत के नेपाल में राजदूत चन्द्रशेखर नरायण सिंह ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किया। इस समझौते के बाद दोनों देशों के संबंधों को और मजबूत किया। संधि के माध्यम से नेपाल के नागरिकों को भारत में बहुत सारी सुविधाएं मिली

है और उन्हें भारतीय नागरिकों की तरह कई विशेष अधिकार और मौके दिये गये हैं। दोनों देशों के मध्य सीमा के आर–पार अबाध रूप जाने आने की सुविधा है। भारत नेपाल में शांति के लिए हमेशा एक निर्णायक भूमिका निभाई है और लोकतंत्र को बनाये रखने में पूरा सहयोग दिया है। विगत वर्षों में नेपाल के आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाने में भारत का सहयोग रहा, जिसमें मुख्यतः द्विपक्षीय व्यापार, निवेश और तकनीकी हस्तांतरण की मुख्य भूमिका रही है। समुद्र तक पहुंच न होने के कारण, नेपाल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और निर्यात के लिए भारत के ऊपर निर्भर है। नेपाल के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 2/3 व्यापार भारत से होता है। भारत के माध्यम से लैण्ड–लाक्ड से लैण्ड–लिक्ंड की ओर –

1. **हाइड्रोपावर** – नेपाल की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार जल संसाधन है। प्रत्येक वर्ष नेपाल में मानसून के समय बाढ़ आने पर जन–धन की हानि होती है।
2. **व्यापार व वाणिज्य** – व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में भारत नेपाल का सबसे बड़ा साझीदार है, विदेशी निवेश तथा पर्यटन की दृष्टि से भी विगत वर्षों से दोनों देशों में द्विपक्षीय संबंध आगे बढ़े है।
3. **सामाजिक–सांस्कृतिक समझौता** – सामाजिक–सांस्कृतिक विषयों की दृष्टि से दोनों देशों में घनिष्ट संबंध है। दोनों देशों के बीच खुली सीमा होने के कारण दोनों तरफ के लोगों को एक दूसरे देश में आने–जाने में कोई परेशानी नहीं होती।
4. **भाशा** – नेपाल व भारत के बीच सांस्कृतिक रूप से जोड़ने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। दोनों देशों के बीच कई भाषाओं को लोग साझा करते हैं। जिसमें मुख्यता नेपाली, मैथली, भोजपूरी, हिन्दी, अवधी आदि सम्मिलित है।
5. **सेना** – नेपाल की सेना को आधुनिक बनाने में भारतीय सेना का मुख्य योगदान है जिसमें सामानों व प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है।
6. **सांस्कृतिक समझौता** – दोनों देशों के बीच मजबूत सांस्कृतिक संबंधों को देखना आवश्यक है।

भारत–नेपाल फाउण्डेशन के माध्यम से दोनों देशों की जनता के बीच लोगों–से–लोगों के संबंध को आगे बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम जिसमें विभिन्न क्षेत्रों को संस्कृति, कला, तकनीकी, अकादमी तथा मीडिया को सम्मिलित किया गया।

- मल्टीमॉडल लाजिस्टिकस और चेकपोस्ट।
- रेलवे और ऊर्जा लिंकेज।
- अंतर्देशीय जलमार्ग।

नेपाल–चीन जुड़ाव :

नेपाल की रणनीतिक स्थिति, जो सदियों से चले आ रहे भारत–चीन के बीच आदान प्रदान का केंद्र रही है, नेपाल के सामाजिक, राजनीतिक और राजनयिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भौगोलिक रूप से दुर्गम और विशाल हिमालयी चोटियों की मौजूदगी के बावजूद, जातीय जुड़ाव, धार्मिक और सांस्कृतिक समानताओं और लोगों और विचारों के आदान–प्रदान के अलावा, नेपाल और चीन के बीच घनिष्ट संबंध रहे है। दोनों देशों ने 1955 में औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित किए, जिससे उनके द्विपक्षीय संबंधों को एक नया आयाम मिला और तिब्बत क्षेत्र के विकास ने इन संबंधों को काफी प्रभावित किया है। नेपाल और चीन 1414 किमी0 की सीमा

साझा करता है। इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और एक महान आर्थिक और तकनीकी शक्ति के रूप में चीन के उदय ने दोनों देशों के बीच आपसी संबंधों को और मजबूत करने के नए अवसर प्रदान किए है।

नेपाल अपनी एकल निर्भरता को कम करने के लिए चीन की तरफ बढ़ा है, लैण्ड–लाक्ड से लैण्ड–लिंक्ड की नयी राह बनी। चीन नेपाल के साथ व्यापारिक मार्गों का निर्माण करता है, पहला मार्ग कासा के माध्यम से चीन को जोड़ता है, यह चीन का सबसे करीबी संवाद केन्द्र रोड ट्रांसपोर्ट से है, जो नेपाल की राजधानी से 130 किमी0 की दूरी पर है। दूसरा मार्ग जो रसूलगडी–केरंग से होकर जाएगा। इसकी दूरी ल्हासा से केरंग की लगभग 1000 किमी0 है और केरंग से नेपाल का रसवा की दूरी केवल 22 किमी0। यहां की पहाड़िया व मौसम भी चीन–नेपाल के बीच सर्म्पक को प्रभावित करते है।

चीन और नेपाल के मध्य पारगमन और परिवहन समझौता किया गया। इसके माध्यम से नेपाल चीन के बंदरगाहों का उपयोग कर सकता है, और भारत पर अपनी निर्भरता कम कर सकता है, साथ ही चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के माध्यम से नेपाल में ट्रांस–हिमालयन मल्टी डायमेंशनल कनेक्टिविटी नेटवर्क के द्वारा रेलवे मार्ग बनाने काम होगा।

चुनौतियां :

नेपाल के लैण्ड–लाक्ड से लैण्ड लिंक्ड बनने के यात्रा में बहुत सारी चुनौतियां भी है जो निम्न प्रकार है–

- नेपाल की मुख्य समस्या वहां की भौगोलिक संरचना विश्व की ऊंची पहाड़ियों में सबसे ज्यादा पर्वत श्रृंखलाएं नेपाल में ही है, जिस कारण बुनियादी ढांचों का निर्माण करना मुश्किल है।
- नेपाल में प्राकृतिक आपदाएं भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ जिसके कारण बुनियादी ढांचे का निर्माण ठीक प्रकार से नहीं हो पा रहा है। भारत और चीन के साथ जोड़ने वाले मार्ग का निर्माण भी अविकसित ही है।
- आर्थिक रूप से कुछ सीमाओं को झेलना पड़ता है, बुनियादी निर्माण ना होने के कारण आयात और निर्यात के लिए अत्यधिक सीमा शुल्क का भुगतान करना, चीन के बंदरगाह से नेपाल की दूरी ज्यादा है, जिससे व्यापार में समय ज्यादा लग जाता है।
- चीन के प्रोजेक्ट के तहत नेपाल कर्ज के जाल में फंस सकता है।
- नेपाल को अपने दोनों पड़ोसियों के साथ संबंधों को संतुलित कर के चलना होगा। किसी एक की तरफ झुकाव दूसरे को नाराज कर सकता है।

निष्कर्ष :

नेपाल चीन व भारत के बफर स्टेट के रूप में काम करता है। अपने व्यापक हितों स्वायत्तता व सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नेपाल चीन व भारत के साथ संतुलन बनाये रखने का प्रयास करता है। नेपाल के प्रथम सम्राट पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल को थम कहा था जो दो मध्यकाय शक्तियों के भारत व चीन के बीच स्थित है। इसका प्रभाव यह हुआ कि नेपाल इन दो मध्यकाय व शक्तिशाली पड़ोसियों के बीच रहकर अपना अधिकतम हित पूरा करता है, क्योंकि भौगोलिक स्थिति को परिर्वतित नहीं किया जा सकता है, परन्तु कनेक्टिविटी के द्वारा

उसके परिणाम को परिर्वतित करने की कोशिश की जा सकती है। नेपाल की 'लैण्ड लाॅक्ड से लैण्ड–लिंक्ड बनने की यात्रा इसका उदाहरण दिखाई पड़ता है। नेपाल की सफलता वहां प्रदर्शित होगी कि वह भारत और चीन के साथ किये समझौतों के द्वारा वहां आर्थिक प्रगति अग्रसर होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. वर्ल्ड फोकस – भारत और पड़ोसी देश (विशेषांक) अंक–43, संस्करण–अक्टूबर, 2015
2. वर्ल्ड फोकस – भारत और पड़ोसी देश (विशेषांक) अंक–73, संस्करण–अप्रैल 2018
3. वर्ल्ड फोकस – भारत और पड़ोसी देश (विशेषांक) अंक–92, संस्करण–नवंबर, 2019
4. वर्ल्ड फोकस – भारत और उसके पड़ोसी देश (विशेषांक) अंक–97, संस्करण–अप्रैल 2020
5. https://share.google/1aM8UN4wmODM1VWOq
6. https://www.icwa.in/show/indian" Council of World Affairs(Government of India)
7. https://www.jetir.org
8. https://idsa.in/issuebrief/nepal-china-transit-agreement
9. Panda, Bajjayanti, "India's Foreign Policy: Gentrify Relations with Neighbours"The Economic Times.
10. Pant, Harsh V.(2018) Why India needs to Safeguard her ties with Nepal, Observer Research Foundations, June 13, 2018
11. https://www.orfonline.org/"reaserch
12. http://www.allmutidisplinaryjournal.com
13. http://ejournals.pncampus.edu.np/ejournals/jps/

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 269-273

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सार्क के पुनरूद्धार में भारत और नेपाल की भूमिका : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं भविष्य की दिशा

डॉ. विनीता भालसे

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग,

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय मोतीतबेला, इंदौर (म.प्र) भारत।

सारांश :

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने हेतु स्थापित सबसे महत्वपूर्ण अंतर–सरकारी संगठन है। इसकी स्थापना 1985 में आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, सांस्कृतिक सहयोग तथा क्षेत्रीय स्थिरता के उद्देश्य से की गई थी। यद्यपि सार्क ने क्षेत्रीय सहयोग की अवधारणा को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया, तथापि राजनीतिक मतभेदों, विशेषकर भारत–पाकिस्तान तनाव, सुरक्षा संबंधी चुनौतियों, आर्थिक असमानताओं तथा संस्थागत कमजोरियों के कारण यह अपनी अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सका। 2014 के काठमांडू शिखर सम्मेलन के बाद संगठन की गतिविधियाँ काफी सीमित हो गईं। वर्तमान वैश्विक एवं क्षेत्रीय परिस्थितियों में सार्क के पुनर्जीवन की आवश्यकता पुनः महसूस की जा रही है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सार्क के विकास, चुनौतियों, उपलब्धियों तथा पुनरुद्धार में भारत और नेपाल की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारत की आर्थिक एवं रणनीतिक क्षमता तथा नेपाल की संतुलित कूटनीतिक भूमिका सार्क को पुनः सक्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

कुंजी शब्द : सार्क, भारत, नेपाल, क्षेत्रीय सहयोग, दक्षिण एशिया, क्षेत्रीय एकीकरण, कूटनीति।

1. प्रस्तावना :

वैश्वीकरण और क्षेत्रीयकरण के युग में क्षेत्रीय सहयोग अंतरराष्ट्रीय राजनीति और अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। यूरोपीय संघ, आसियान और अफ्रीकी संघ जैसे संगठनों ने यह सिद्ध किया है कि क्षेत्रीय सहयोग साझा विकास का प्रभावी माध्यम हो सकता है। दक्षिण एशिया में इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सार्क की स्थापना की गई।

दक्षिण एशिया विश्व की लगभग एक–चौथाई जनसंख्या का निवास क्षेत्र है, परंतु आर्थिक एकीकरण और क्षेत्रीय व्यापार के मामले में यह विश्व के सबसे कम एकीकृत क्षेत्रों में से एक है। ऐसे में सार्क का पुनर्जीवन केवल संगठनात्मक आवश्यकता नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास की अनिवार्यता है।

2. शोध समस्या :

सार्क की स्थापना के लगभग चार दशक बाद भी दक्षिण एशिया क्षेत्रीय एकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका है। संगठन की निष्क्रियता ने यह प्रश्न उत्पन्न किया है कि क्या भारत और नेपाल मिलकर सार्क को पुनः प्रभावी बना सकते हैं?

3. अध्ययन के उद्देश्य :

1. सार्क की स्थापना एवं विकास का अध्ययन करना।
2. सार्क की निष्क्रियता के कारणों का विश्लेषण करना।
3. सार्क पुनरुद्धार में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4. सार्क पुनरुद्धार में नेपाल की भूमिका का अध्ययन करना।
5. भारत–नेपाल सहयोग की संभावनाओं का विश्लेषण करना।

4. परिकल्पनाएँ :

1. भारत की सक्रिय भूमिका सार्क के पुनर्जीवन को गति प्रदान कर सकती है।
2. नेपाल की संतुलित कूटनीति सदस्य देशों के मध्य विश्वास निर्माण में सहायक हो सकती है।
3. आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग आधारित एजेंडा सार्क को पुनः सक्रिय बना सकता है।

5. अनुसंधान पद्धति :

यह अध्ययन गुणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

स्रोत :

- सार्क चार्टर।
- भारत एवं नेपाल के विदेश मंत्रालय की रिपोर्टें।
- शोध–पत्र एवं पुस्तकें।
- विश्व बैंक एवं एडीबी रिपोर्ट।
- जर्नल लेख एवं नीति दस्तावेज।

6. साहित्य समीक्षा :

बिमल प्रसाद, एस. डी. मुनी, अमिता बत्रा एवं सी. राजा मोहन जैसे विद्वानों ने दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया है। अधिकांश अध्ययनों में भारत की भूमिका पर विशेष बल दिया गया है, जबकि नेपाल की भूमिका पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन उपलब्ध हैं। भारत और नेपाल की संयुक्त भूमिका पर शोध का अभाव इस अध्ययन को विशेष महत्व प्रदान करता है।

आधुनिक विश्व में राष्ट्र केवल सुरक्षा के आधार पर नहीं, बल्कि आर्थिक, पर्यावरणीय और तकनीकी स्तरों पर भी परस्पर निर्भर होते हैं।

7. सार्क : स्थापना, उद्देश्य एवं विकास :

सार्क की स्थापना 8 दिसंबर 1985 को ढाका में हुई। इसके संस्थापक सदस्य भारत, नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान और मालदीव थे। 2007 में अफगानिस्तान इसका आठवाँ सदस्य बना।

प्रमुख उद्देश्य :

- आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करना।
- सांस्कृतिक सहयोग को मजबूत करना।
- क्षेत्रीय शांति एवं स्थिरता स्थापित करना।
- विकासशील देशों के साझा हितों की रक्षा करना।

10. सार्क की प्रमुख उपलब्धियाँ :

1. दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA)
2. दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय।
3. सार्क विकास कोष।
4. कृषि एवं स्वास्थ्य सहयोग कार्यक्रम।
5. आपदा प्रबंधन तंत्र।

11. सार्क के समक्ष चुनौतियाँ :

राजनीतिक चुनौतियाँ :

- भारत–पाकिस्तान तनाव।
- सीमा विवाद।
- आतंकवाद।

आर्थिक चुनौतियाँ :

- निम्न क्षेत्रीय व्यापार।
- आर्थिक असमानताएँ।
- सीमित निवेश।

संस्थागत चुनौतियाँ :

- कमजोर सचिवालय।
- सीमित वित्तीय संसाधन।
- सर्वसम्मति आधारित निर्णय प्रक्रिया।

12. सार्क के पुनरुद्धार में भारत की भूमिका :

भारत दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और प्रमुख शक्ति है। इसलिए उसकी भूमिका निर्णायक है।

आर्थिक नेतृत्व :

भारत को क्षेत्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना चाहिए।

संपर्क अवसंरचना :

- सड़क संपर्क
- रेल संपर्क

- ऊर्जा संपर्क।
- डिजिटल संपर्क।

विकास सहयोग :

तकनीकी सहायता, क्षमता निर्माण एवं शिक्षा सहयोग के माध्यम से भारत क्षेत्रीय विकास में योगदान दे सकता है।

सुरक्षा सहयोग :

आतंकवाद और संगठित अपराध के विरुद्ध क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

13. सार्क के पुनरूद्धार में नेपाल की भूमिका :

नेपाल सार्क सचिवालय का मेजबान देश है तथा क्षेत्रीय सहयोग का निरंतर समर्थक रहा है।

- **कूटनीतिक भूमिका :**

नेपाल सदस्य देशों के बीच संवाद और विश्वास निर्माण को बढ़ावा दे सकता है।

- **संस्थागत भूमिका :**

सार्क सचिवालय को अधिक सक्रिय और प्रभावी बनाने में नेपाल महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

क्षेत्रीय पहल :

- नेपाल ऊर्जा, पर्यटन, पर्यावरण और आपदा प्रबंधन के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दे सकता है।

14. भारत-नेपाल सहयोग की संभावनाएँ

ऊर्जा सहयोग :

नेपाल की जलविद्युत क्षमता और भारत की ऊर्जा आवश्यकता क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा का आधार बन सकती है।

पर्यटन सहयोग

- बौद्ध सर्किट
- रामायण सर्किट
- हिमालयी पर्यटन

पर्यावरणीय सहयोग :

हिमालयी पारिस्थितिकी, जल संसाधन संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में संयुक्त प्रयास किए जा सकते हैं।

15. विश्लेषण एवं निष्कर्ष :

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सार्क की वर्तमान निष्क्रियता स्थायी नहीं है। दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी इसकी स्थापना के समय थी।

भारत आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता और क्षेत्रीय प्रभाव के आधार पर संगठन को नेतृत्व प्रदान कर सकता है। दूसरी ओर नेपाल अपनी संतुलित विदेश नीति, कूटनीतिक स्वीकार्यता और सचिवालय की मेजबानी के माध्यम से सार्क के पुनर्जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत और नेपाल का सहयोग ऊर्जा, संपर्क, पर्यटन, डिजिटल नेटवर्क तथा पर्यावरणीय सहयोग के माध्यम से दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण को

नई दिशा दे सकता है।

16. नीति-सुझाव :

1. सार्क शिखर सम्मेलन का नियमित आयोजन।
2. 'सार्क विजन 2040' का निर्माण।
3. दक्षिण एशियाई ऊर्जा ग्रिड की स्थापना।
4. क्षेत्रीय डिजिटल भुगतान प्रणाली का विकास।
5. सार्क विकास कोष को सशक्त बनाना।
6. शिक्षा एवं अनुसंधान सहयोग को बढ़ावा देना।
7. जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन हेतु संयुक्त तंत्र विकसित करना।
8. राजनीतिक विवादों को आर्थिक सहयोग से पृथक रखना।

संदर्भ सूची :

1. सार्क चार्टर, 1985।
2. मुनी, एस. डी. (2003), दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग।
3. प्रसाद, बिमल (1994), दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग।
4. बत्रा, अमिता (2012), दक्षिण एशिया में आर्थिक एकीकरण।
5. मोहन, सी. राजा (2021), भारत की क्षेत्रीय कूटनीति।
6. विश्व बैंक, दक्षिण एशिया आर्थिक रिपोर्ट।
7. एशियाई विकास बैंक, क्षेत्रीय सहयोग रिपोर्ट।
8. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय वार्षिक प्रतिवेदन।
9. नेपाल सरकार, विदेश मंत्रालय प्रतिवेदन।
10. दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के शोध प्रकाशन।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 274-279

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Himalaya Sangam : A Global Model For World Peace and Stability

Dr. Vinita Swarnkar
Assistant Professor. Psychology,
Govt. J. Y. C. G. College, Raipur (C.G.)

ABSTRACT :

This paper introduces the concept of Himalaya Sangam as an integrative civilizational framework that reimagines the Himalayan region not merely as a geographic entity but as a dynamic "confluence system" of ecological intelligence, cultural memory, and trans boundary ethics. Unlike conventional peace models grounded primarily in political agreements or economic interdependence, this study proposes a multi-layered paradigm where stability emerges from the synchronization of three core dimensions: (i) ecological reciprocity between high-altitude ecosystems and downstream civilizations, (ii) cultural convergence rooted in shared Himalayan spiritual epistemologies, and (iii) participatory diplomacy inspired by indigenous conflict-resolution practices.

The paper conceptualizes the Himalayas as a "stability generator" whose environmental fragility necessitates cooperative governance, thereby transforming ecological vulnerability into a catalyst for regional peace architecture. Through a synthetic analytical approach, the study frames Sangam as a process rather than a place—an ongoing negotiation of identities, resources, and moral responsibilities among Himalayan and non-Himalayan societies.The findings suggest that embedding Himalayan principles of interdependence, restraint, and coexistence into global governance systems could offer an alternative pathway to peace that transcends state-centric security models. Ultimately, Himalaya Sangam is proposed as a proto-theory of planetary stability, where environmental stewardship and cultural synthesis operate as foundational pillars for long-term global harmony.

KEYWORD :

Himalaya, spiritual, sangam, conection, compassion, psychological.

INTRODUCTION :

The Himalayas are often seen as one of the strongest natural symbols of peace, silence ,and inner reflection. Rising across India, Nepal, Bhutan, China, and Pakistan, the Himalayas create a vast barrier of snow-covered peaks, deep valleys, and ancient landscapes. Their sheer scale makes human concerns feel small, which is one reason many people associate them with calmness and mental clarity.

The first impression of the Himalayas is silence—not absolute silence, but a quiet shaped by wind, snow, and distance. There are fewer cities, fewer sounds of traffic, and more natural rhythm. This environment naturally slows down thoughts.

Spiritually, the Himalayas have long been linked with meditation and inner peace. Many sages and monks chose these mountains for solitude, believing that the stillness of nature helps the mind become still as well. Places like Uttarakhand and Tibet have centuries of spiritual tradition rooted in Himalayan landscapes. Visually, the snow peaks, misty valleys, and slow-moving clouds create a feeling of timelessness. Unlike busy urban spaces, everything there seems steady and unhurried. For many people, the Himalayas represent: Escape from stress and noise Connection with nature A sense of humility and awe Space for reflection and meditation. In short, the Himalayas are not just mountains—they are often experienced as a state of mind, where peace comes naturally from simplicity and vastness.

On the contrary, the twenty-first century has entered an era of paradox. Humanity possesses unprecedented technological power, yet global instability continues to intensify. Wars, environmental crises, mental health epidemics, consumerism, cultural alienation, and moral decline indicate that material progress alone cannot guarantee human stability. Modern civilization increasingly faces what many philosophers call a "crisis of consciousness."

In this context, the Himalayas emerge not merely as a mountain range but as a spiritual archetype. For millennia, the Himalayas have served as the abode of sages, saints, yogis, and seekers who pursued universal truths beyond divisions of race, religion, and nationality. The term "Himalayan Sangam" signifies a sacred convergence — a meeting point of spirituality, humanity, ecology, and universal consciousness. This paper investigates how Himalayan spiritual philosophy can contribute to contemporary global peace building and human stability. It examines ancient Himalayan wisdom traditions and interprets them within the framework of modern global challenges.

The Spiritual Significance of the Himalayas :

The Himalayas occupy a unique place in human civilization. Across Hindu, Buddhist, Jain, Bon, and Sikh traditions, the Himalayas symbolize transcendence, purity, and divine consciousness.

In Indic cosmology, the Himalayas are described as :

The abode of Lord Shiva, representing cosmic stillness and transformation. The source of sacred rivers symbolizing life, purification, and continuity. A center of tapasya (spiritual discipline), meditation, and enlightenment. A bridge between the earthly and the transcendental.Ancient scriptures such as the Vedas, Upanishads, and Puranas portray the Himalayas as a living spiritual organism rather than inert geography. Himalayan wisdom emphasizes inner harmony as the basis for outer peace.This spiritual worldview contrasts sharply with contemporary materialistic paradigms that prioritize competition, accumulation, and domination.

Himalayan Consciousness and Human Stability :

Human stability is often interpreted economically or politically. However, spiritual traditions define stability as balance between body, mind, intellect, society, and nature.The Himalayan model proposes five dimensions of human stability:

Inner Psychological Stability :

Meditation traditions originating in the Himalayas emphasize mastery over fear, desire, anger, and ego. Yogic sciences teach that mental turbulence is the root cause of social conflict.The yogic principle of consciousness may be expressed through the union of mind and inner awareness:
Practices such as:Dhyana (meditation) Pranayama (breath regulation) Mauna (silence) Self-observation help cultivate emotional resilience and clarity.

Ecological Stability :

The Himalayan worldview considers nature sacred. Rivers, forests, mountains, and animals are treated as manifestations of divine consciousness. Modern ecological crises stem largely from exploitative attitudes toward nature. Himalayan spirituality advocates: Simplicity Non-violence toward ecosystems Sustainable living Sacred ecology This ecological ethic aligns with modern sustainability discourse but extends beyond utility into spiritual reverence.

Social Stability :

The principle of "Sarve Bhavantu Sukhinah" ("May all beings be happy") promotes inclusive well-being rather than individualistic success. Himalayan communities historically emphasized: Cooperation over competition Community-centered living Intergenerational wisdom Ethical responsibility Such models can counter rising social isolation and fragmentation.

Moral Stability :

Contemporary instability is deeply linked to ethical decline. Himalayan ethics are rooted in :

- Satya (truth)
- Ahimsa (non-violence)

- Aparigraha (non-possessiveness)
- Karuna (compassion)

These values create the moral foundation necessary for peaceful societies.

Spiritual Stability :

The deepest contribution of Himalayan spirituality lies in transcending narrow identities. Spiritual awareness dissolves divisions based on religion, ethnicity, nationalism, and ideology.

The Upanishadic vision of unity may be represented philosophically as: Aham Brahmasmi This principle emphasizes the interconnectedness of all existence.

Himalayan Sangam as a Model for Global PeaceBeyond Political Peace :

Most modern peace frameworks focus on diplomacy, military balance, or economic cooperation. While necessary, these mechanisms often fail because they do not address the psychological roots of violence. Himalayan Sangam introduces the idea that: "Peace is not merely the absence of war but the presence of awakened consciousness." This model suggests that collective transformation begins with individual awakening.

Interfaith Harmony :

The Himalayan region historically facilitated coexistence among multiple traditions :

- Hinduism
- Buddhism
- Sikhism
- Indigenous spiritual systems
- Sufi traditions

The Himalayan approach promotes spiritual pluralism rather than religious absolutism.

This pluralistic framework is urgently relevant in an age of ideological polarization.

Meditation as Peace Technology :

Modern neuroscience increasingly validates meditation's effects on stress reduction, empathy, and emotional regulation. Meditative traditions from the Himalayas may serve as nonviolent technologies for : Conflict transformation, Trauma healing, Social reconciliation, Educational reform, Global institutions can integrate contemplative practices into leadership, diplomacy, and education systems.

The Role of Silence :

The modern world is overwhelmed by noise, information overload, and constant stimulation. Himalayan spirituality values silence as a medium of self-realization. Silence: Enhances self-awareness Reduces aggression Encourages reflection Restores psychological equilibrium. The spiritual ecology

of silence could become essential for future human stability.

The Concept of Vasudhaiva Kutumbakam :

One of the most profound contributions of Indic civilization is the principle: "Vasudhaiva Kutumbakam" — The world is one family. This philosophy transcends geopolitical nationalism and envisions humanity as spiritually interconnected. The conceptual unity of humanity may symbolically be represented as: Humanity=Unity+ Compassion+ Consciousness Though symbolic rather than mathematical, this formulation captures the essence of Himalayan Sangam. The principle encourages : Universal empathy Shared responsibility Cooperative global governance Human-centered development

Relevance in the Contemporary World :

The Himalayan Sangam model offers practical relevance in addressing modern crises :

- Global Crisis Himalayan Response
- Mental health crisis Meditation and mindfulness
- Ecological collapse Sacred ecological ethics
- Violence and war Non-violence and compassion
- Consumerism Simplicity and inner fulfillment
- Social alienation Community-centered living
- Identity conflicts Spiritual universalism

The COVID-19 pandemic further demonstrated the fragility of modern civilization and the need for inner resilience.

Toward a New Civilizational Paradigm :

The future of humanity may depend on integrating scientific progress with spiritual maturity. Himalayan Sangam proposes a civilizational shift :

- From consumption to consciousness
- From competition to cooperation
- From domination to harmony
- From fragmentation to unity.

The Himalayas symbolize elevation — not only geographically but spiritually. Their wisdom traditions remind humanity that peace begins within and radiates outward into society and the planet.

CONCLUSION :

Himalayan Sangam represents a deeply spiritual framework for reimagining global peace and human stability. In a world increasingly divided by ideology, materialism, and ecological destruction, the Himalayan vision offers an alternative rooted in compassion, consciousness, simplicity, and

universal unity.

True peace cannot be sustained solely through political agreements or technological advancement. It requires inner transformation, ethical awakening, and spiritual integration. The Himalayas, long revered as the cradle of higher consciousness, continue to offer timeless guidance for humanity's future.

By embracing the principles of Himalayan Sangam, humanity may move toward a more balanced civilization where spiritual wisdom complements scientific progress and where global peace emerges from the awakening of human consciousness itself.

REFRENCE :

- The Upanishads.
- Bhagavad Gita.
- Patanjali, Yoga Sutras.
- Swami Vivekananda, Jnana Yoga.
- Dalai Lama, The Art of Happiness.
- Sri Aurobindo, The Life Divine.
- Mahatma Gandhi, Hind Swaraj.
- Fritjof Capra, The Tao of Physics.
- Thich Nhat Hanh, Peace Is Every Step.
- Arnold Toynbee, A Study of History.
- UNESCO Reports on Culture and Peace Studies.
- Contemporary research on meditation and neuroscience.

Email ID: sdrvinita@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 280-284

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Cartographic Nationalism and Bilateral Diplomacy : From Historical Boundaries to Contemporary Politics in the Nepal–India Border Dispute

Yash Singh Thakur

Research Scholar, Department of Political Science,
Mata Jeejabai Govt. PG Girls College, Moti Tabela, Indore (M.P.)

Abstract :

The Nepal–India border dispute has emerged as one of the most significant territorial and diplomatic issues in South Asia. While the origins of the dispute can be traced to the 1816 Treaty of Sugauli, contemporary developments have transformed it into a complex interaction of nationalism, sovereignty, geopolitics, and bilateral diplomacy. The controversy intensified in 2020 when Nepal adopted a new political map incorporating Kalapani, Lipulekh, and Limpiyadhura within its national boundaries. Since then, the issue has become deeply intertwined with domestic politics and foreign policy in both countries. Recent developments in 2026, including statements by Nepal's Prime Minister Balendra Shah and India's response emphasizing bilateral mechanisms, have once again brought the dispute into the spotlight. This paper examines the historical foundations, political significance, strategic dimensions, diplomatic engagements, and contemporary developments of the dispute through the lens of cartographic nationalism and international relations theory. The study argues that although competing historical narratives continue to shape territorial claims, sustained diplomatic engagement remains the most viable path toward peaceful resolution.

Keywords : Cartographic Nationalism, Nepal–India Relations, Border Dispute, Diplomacy, Sovereignty, South Asia, Geopolitics.

Introduction :

Borders are central to the modern nation-state system because they define territorial sovereignty, political authority, and national identity. In South Asia, colonial legacies have left several unresolved boundary disputes. Among these, the Nepal–India border dispute involving Kalapani,

Lipulekh, and Limpiyadhura occupies a unique position because it combines historical treaty interpretation, strategic competition, domestic politics, and diplomatic negotiations.

The dispute gained renewed prominence in May 2020 when Nepal issued a revised political map that included the disputed territories within its sovereign territory. The move was followed by a constitutional amendment incorporating the map into Nepal's national emblem. Since then, maps have become instruments of political mobilization, transforming territorial claims into symbols of nationalism.

The concept of "cartographic nationalism" is particularly useful for understanding this phenomenon. Maps are not merely geographical representations; they are political tools through which states construct and communicate territorial identities. In Nepal's case, the revised map reflects both a historical claim and a political assertion of sovereignty.

Historical Background :

The origins of the dispute lie in the Anglo-Nepalese War (1814–1816), which concluded with the Treaty of Sugauli between Nepal and British India. The treaty designated the Kali River as Nepal's western boundary. However, ambiguity regarding the river's exact source generated differing interpretations.

Nepal argues that the river originates at Limpiyadhura, placing Kalapani and Lipulekh within Nepalese territory. India maintains that the river originates farther east, thereby placing the disputed territories within India. This disagreement over historical cartography forms the foundation of contemporary territorial claims.

Following India's independence in 1947, the dispute remained relatively dormant for decades. However, geopolitical developments, infrastructure projects, and changing domestic political dynamics periodically revived the issue. The deployment of Indian security forces in the Kalapani region after the 1962 India–China War further complicated the territorial question.

Literature Review :

Scholars studying border disputes emphasize the importance of historical narratives, territorial sovereignty, and identity politics. Anderson (1991) argues that nations are "imagined communities" constructed through symbols, maps, and shared historical narratives. Similarly, Harley (1989) demonstrates that maps often reflect political interests rather than objective geographical realities.

Research on Nepal–India relations highlights the asymmetrical nature of bilateral interactions. Baral (2012) argues that Nepal's foreign policy is frequently influenced by its geographical position between India and China. Meanwhile, Rose (1971) notes that border disputes in South Asia are often rooted in colonial-era cartographic ambiguities.

Recent studies suggest that Nepal's revised map represents a form of cartographic nationalism designed to reinforce national identity and territorial sovereignty. However, scholars also warn that excessive politicization of boundary issues may complicate diplomatic negotiations.

Theoretical Framework :

Realist Perspective :

Realism views the dispute as a struggle over territory, security, and strategic interests. Kalapani and Lipulekh possess considerable geopolitical value because they are located near the India–Nepal–China tri-junction. From a realist perspective, both states seek to maximize security and preserve territorial integrity.

Constructivist Perspective :

Constructivism emphasizes the role of identity, nationalism, and historical narratives. Competing interpretations of the Sugauli Treaty shape how both countries understand the dispute. Maps become symbolic representations of national identity and sovereignty.

Liberal Perspective :

Liberal theory highlights diplomacy, institutions, and economic interdependence. Nepal and India share an open border, extensive trade relations, and deep cultural ties. These factors create incentives for peaceful conflict resolution through dialogue and cooperation.

Cartographic Nationalism and the 2020 Map Controversy :

The publication of Nepal's revised political map in 2020 marked a turning point in bilateral relations. The decision followed India's inauguration of a road connecting to Lipulekh Pass, which Nepal viewed as construction within disputed territory.

Nepal's Parliament subsequently approved a constitutional amendment incorporating the revised map into the national emblem. The issue transcended partisan politics and became a symbol of national sovereignty.

From the perspective of cartographic nationalism, the map served multiple purposes. It reinforced Nepal's territorial claims, strengthened domestic political legitimacy, and communicated a clear diplomatic message to India. Simultaneously, India rejected the revised map, describing it as a unilateral action inconsistent with historical facts.

Strategic Significance of the Disputed Region :

The disputed territories possess considerable strategic importance.

First, the region lies near the India–China border, making it significant from a security perspective. Second, Lipulekh serves as an important trade route connecting India and Tibet. Third, the route is used by pilgrims traveling to Mount Kailash and Lake Mansarovar.

The strategic location of the disputed territories means that the issue cannot be understood solely through historical claims. Contemporary security considerations and regional geopolitics also influence policy decisions.

The 2026 Developments: A New Phase of Diplomatic Debate :

The dispute entered a new phase in 2026 following remarks by Nepal Prime Minister Balendra Shah in Parliament. Shah stated that border issues between Nepal and India should be examined through historical evidence and expert consultation. However, his observation that both sides had experienced forms of territorial encroachment generated significant controversy within Nepal and renewed public debate regarding the border issue.

The remarks triggered criticism from opposition parties, former diplomats, and border experts, many of whom argued that the statement could weaken Nepal's traditional position regarding disputed territories. Parliamentary protests and public demonstrations followed.

India responded by reiterating that all outstanding boundary issues should be resolved exclusively through existing bilateral mechanisms and that there was no role for third-party mediation. The Indian Ministry of External Affairs emphasized that approximately 98 percent of the Nepal–India border had already been demarcated and that remaining issues should be addressed through established diplomatic frameworks.

At the same time, India sought to maintain positive diplomatic engagement. Prime Minister Narendra Modi reaffirmed that Nepal remains a "priority partner" under India's Neighbourhood First Policy, indicating New Delhi's commitment to preserving stable bilateral relations despite continuing disagreements.

These developments demonstrate that while the territorial dispute remains unresolved, both countries continue to prioritize dialogue over confrontation.

Challenges to Resolution :

Several factors complicate dispute resolution :

- Divergent interpretations of historical documents.
- Domestic political pressures and nationalist sentiments.
- Strategic concerns involving China.
- Constitutional incorporation of Nepal's revised map.
- Public expectations regarding sovereignty and territorial integrity.

These challenges make compromise politically difficult for leaders in both countries.

Prospects for Resolution :

Despite these obstacles, several pathways remain available.

A joint historical commission could examine archival documents and maps. Technical surveys conducted by experts from both countries could clarify disputed boundary segments. Existing bilateral mechanisms should be strengthened through regular meetings and transparent communication.

Confidence-building measures in trade, infrastructure, tourism, and cultural cooperation could reduce mistrust and create a favorable environment for negotiations. Most importantly, political leadership on both sides must prioritize long-term regional stability over short-term domestic gains.

Conclusion :

The Nepal–India border dispute demonstrates how historical ambiguities can evolve into contemporary geopolitical challenges. The controversy surrounding Nepal's revised map reflects the growing significance of cartographic nationalism in shaping state identity and foreign policy. While competing territorial narratives continue to influence public discourse, recent developments in 2026 suggest that both Nepal and India remain committed to diplomatic engagement.

The future of the dispute will depend upon sustained dialogue, historical reassessment, technical cooperation, and political willingness to pursue mutually acceptable solutions. Given the extensive cultural, economic, and social connections between the two countries, diplomacy rather than confrontation remains the most effective path toward lasting resolution.

References (APA 7th Edition) :

- Al Jazeera. (2026, June 2). *Why India–Nepal border dispute is heating up again*. https://www.aljazeera.com
- Government of India, Ministry of External Affairs. (2026). *Official statements on India–Nepal boundary issues*. New Delhi: MEA.
- Government of Nepal. (2020). *Constitutional amendment incorporating the revised political map of Nepal*. Kathmandu: Government of Nepal.
- Jha, P. (2014). *Battles of the new republic: A contemporary history of Nepal*. Oxford University Press.
- Kansakar, V. B. (2012). Nepal–India border relations: Historical and contemporary perspectives. *Tribhuvan University Journal, 28*(1), 45–62.
- Shrestha, B. N. (2020). *Border management and Nepal–India relations*. Kathmandu: Nepal Institute of Policy Studies.
- The Week. (2026, June 2). *India rejects third-party role in boundary matters with Nepal after PM Balen Shah's remarks*.
- Times of India. (2026, June 4). *PM Modi: Nepal is India's priority partner*.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 285-289

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

प्राचीन भारत एवं नेपाल के पौराणिक संबंध धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

डॉ. वंदना चौहान

प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

सारांश :

भारत और नेपाल के संबंध केवल भौगोलिक निकटता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये संबंध हजारों वर्षों पुरानी धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक एवं सामाजिक परंपराओं पर आधारित हैं। रामायण, महाभारत, बौद्ध परंपरा, शिव–पार्वती उपासना तथा हिमालय की देवभूमि की अवधारणा ने दोनों देशों को आध्यात्मिक रूप से एक सूत्र में बांधा है। भारत और नेपाल के मध्य "रोटी–बेटी" का संबंध केवल एक कहावत नहीं, बल्कि साझा संस्कृति, भाषा, धर्म और सामाजिक जीवन की वास्तविक अभिव्यक्ति है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत और नेपाल के पौराणिक संबंधों का विश्लेषण करते हुए उनके धार्मिक, सांस्कृतिक, वैदिक, ऐतिहासिक तथा आधुनिक संदर्भों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : भारत–नेपाल संबंध, रामायण, बौद्ध धर्म, पशुपतिनाथ, हिमालय, सांस्कृतिक संबंध, पौराणिक परंपरा।

प्रस्तावना :

"भारत और नेपाल का रिश्ता हिमालय सा महान,
सीमाएँ अलग सही, पर धड़कता एक ही प्राण।
रोटी-बेटी का नाता, सदियों से है पहचान,
दो दिल, दो देश सही – पर आत्मा एक समान।"

भारत और नेपाल दक्षिण एशिया के दो ऐसे राष्ट्र हैं जिनके मध्य संबंध केवल राजनीतिक या राजनयिक नहीं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पौराणिक आधारों पर निर्मित हैं। दोनों देशों की सभ्यता का विकास हिमालय की गोद में हुआ और दोनों ने वैदिक संस्कृति, हिंदू धर्म तथा बौद्ध दर्शन की साझा विरासत को आगे बढ़ाया। नेपाल को लंबे समय तक विश्व का एकमात्र हिंदू राष्ट्र माना जाता रहा है, वहीं भारत को सनातन संस्कृति की जन्मभूमि कहा जाता है।

नेपाल की सांस्कृतिक संरचना में हिंदू एवं बौद्ध परंपराओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। मंदिर, तीर्थ, पर्व–त्योहार, लोककथाएँ तथा धार्मिक अनुष्ठान भारत और नेपाल के सांस्कृतिक सामंजस्य को प्रदर्शित करते हैं।

जनकपुर, लुंबिनी, पशुपतिनाथ, मुक्तिनाथ तथा काठमांडू जैसे धार्मिक केंद्र भारत के अयोध्या, वाराणसी, बोधगया और हरिद्वार से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं।

भारत और नेपाल के संबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दोनों देशों के नागरिकों के मध्य सदियों से सामाजिक और पारिवारिक संबंध स्थापित होते रहे हैं। विवाह, व्यापार, धार्मिक यात्राएँ और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने दोनों देशों को एक साझा सभ्यता के रूप में स्थापित किया है। यही कारण है कि भारत–नेपाल संबंधों को "रोटी–बेटी का संबंध" कहा जाता है।

1. रामायण और भारत-नेपाल संबंध :

भारत और नेपाल के पौराणिक संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण आधार रामायण है। रामायण केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। नेपाल के मिथिला क्षेत्र, वर्तमान जनकपुर, को माता सीता की जन्मभूमि माना जाता है। राजा जनक की पुत्री सीता का विवाह अयोध्या के राजकुमार भगवान श्रीराम से हुआ था। यह विवाह दो राजपरिवारों का ही नहीं, बल्कि दो महान सभ्यताओं और संस्कृतियों के मिलन का प्रतीक था।

जनकपुर आज भी नेपाल का प्रमुख धार्मिक केंद्र है, जहाँ प्रत्येक वर्ष राम–जानकी विवाह उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। भारत से हजारों श्रद्धालु इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए नेपाल जाते हैं। इसी प्रकार अयोध्या में भी माता सीता और भगवान राम की पूजा समान श्रद्धा से की जाती है।

"जनकपुर की पावन धरती, अयोध्या का सम्मान,
सीताराम के बंधन से जुड़ा भारत-नेपाल महान।"

रामायण ने भारत और नेपाल के बीच सांस्कृतिक निकटता को स्थायी स्वरूप प्रदान किया। विवाह संबंधों के माध्यम से दोनों देशों के लोगों के बीच सामाजिक जुड़ाव बढ़ा। यही कारण है कि भारत और नेपाल के संबंधों को "रोटी–बेटी का संबंध" कहा जाता है।

रामायण में वर्णित मिथिला संस्कृति आज भी नेपाल और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में जीवंत है। मैथिली भाषा, लोकगीत, विवाह परंपराएँ तथा धार्मिक संस्कार दोनों देशों की सांस्कृतिक समानता को दर्शाते हैं।

2. बौद्ध धर्म और भारत-नेपाल संबंध :

भारत और नेपाल का संबंध केवल हिंदू धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि बौद्ध धर्म ने भी दोनों देशों को गहरे रूप से जोड़ा है। गौतम बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनी में हुआ था, जबकि उन्हें ज्ञान की प्राप्ति भारत के बोधगया में हुई। इस प्रकार बुद्ध का जीवन स्वयं भारत और नेपाल की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है।

लुंबिनी आज विश्व के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थलों में से एक है। वहीं बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर भारत में बौद्ध धर्म के प्रमुख केंद्र हैं। नेपाल और भारत दोनों देशों में बौद्ध संस्कृति का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है।

"लुंबिनी की पावन माटी, गौतम बुद्ध का ज्ञान,
भारत की धरती ने पाया, शांति और धर्म का दान।"

बौद्ध धर्म ने शांति, अहिंसा, करुणा और मानवता का संदेश दिया। इन मूल्यों ने भारत और नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक मजबूत किया। दोनों देशों के बीच बौद्ध तीर्थ यात्रा का विशेष महत्व है। नेपाल के बौद्ध अनुयायी भारत के बौद्ध स्थलों की यात्रा करते हैं, जबकि भारत के श्रद्धालु लुंबिनी को पवित्र तीर्थ मानते

हैं।

काठमांडू घाटी के स्तूप, विहार और मंदिर बौद्ध तथा हिंदू संस्कृति के अद्भुत समन्वय को दर्शाते हैं। यह समन्वय भारत और नेपाल की साझा धार्मिक विरासत का प्रतीक है।

3. वैदिक एवं सांस्कृतिक संबंध :

भारत और नेपाल की संस्कृति का मूल आधार वैदिक परंपरा है। दोनों देशों में वेद, उपनिषद, पुराण और स्मृतियों की शिक्षाओं का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। हिंदू धर्म के प्रमुख देवी–देवताओं की पूजा भारत और नेपाल दोनों में समान रूप से की जाती है।

नेपाल में दशैं, तिहार, छठ, होली, रामनवमी और महाशिवरात्रि जैसे पर्व अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। भारत और नेपाल की भाषाओं, वेशभूषा, संगीत, नृत्य, लोककथाओं और धार्मिक अनुष्ठानों में भी व्यापक समानता दिखाई देती है।

"हिमगिरि से गूंज रही है, ऋषियों की यह वाणी,
जहाँ वेदों की धुन बसी है, वहीं जन्मी थी कहानी।"

भारत और नेपाल के संबंधों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। यह अवधारणा सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की शिक्षा देती है। दोनों देशों के लोग धार्मिक तीर्थ यात्राओं, सांस्कृतिक आयोजनों और सामाजिक संबंधों के माध्यम से निरंतर जुड़े हुए हैं।

नेपाल के तराई क्षेत्र और भारत के बिहार तथा उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में सांस्कृतिक समानता अत्यंत स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ के लोग समान भाषा बोलते हैं और समान सामाजिक परंपराओं का पालन करते हैं।

4. शिव-पार्वती परंपरा और हिमालय का संदर्भ :

हिमालय को भारतीय संस्कृति में "देवभूमि" कहा गया है। पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में हिमालय को भगवान शिव का निवास स्थान माना गया है। नेपाल तथा भारत के हिमालयी क्षेत्रों में शिव और पार्वती से संबंधित अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

नेपाल का प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर भगवान शिव का अत्यंत पवित्र धाम है। यह मंदिर हिंदू धर्मावलंबियों की आस्था का प्रमुख केंद्र है। भारत से प्रत्येक वर्ष लाखों श्रद्धालु पशुपतिनाथ के दर्शन के लिए नेपाल जाते हैं। इसी प्रकार भारत में स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर और नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के मध्य आध्यात्मिक समानता दिखाई देती है।

"पशुपतिनाथ की महिमा, काशी का उजियार,
एक ही संस्कृति के दीपक, इनमें भरा प्रेम अपार।"

हिमालय क्षेत्र में कैलाश–मानसरोवर, मुक्तिनाथ और केदारनाथ जैसे तीर्थ दोनों देशों की साझा धार्मिक चेतना को प्रकट करते हैं। शिव–पार्वती परंपरा ने भारत और नेपाल के मध्य धार्मिक एकता को सुदृढ़ बनाया है।

5. महाभारतकालीन भारत-नेपाल संबंध :

महाभारत में नेपाल और हिमालय क्षेत्र का उल्लेख "किरात" प्रदेश के रूप में मिलता है। माना जाता है कि महाभारत युद्ध में हिमालय क्षेत्र की अनेक जनजातियों ने भाग लिया था। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन

काल में भारत और नेपाल के मध्य राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संपर्क स्थापित थे।

महाभारत में वर्णित हिमालय क्षेत्र को तपस्या, योग और आध्यात्मिक साधना का केंद्र माना गया है। नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में आज भी अनेक प्राचीन आश्रमों और धार्मिक स्थलों की मान्यताएँ प्रचलित हैं।

महाभारतकालीन परंपराओं ने भारत और नेपाल के संबंधों को धार्मिक और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। यह संबंध समय के साथ और अधिक सुदृढ़ होते गए।

6. भारत-नेपाल संबंध : आधुनिक परिप्रेक्ष्य :

भारत और नेपाल के पौराणिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को आधुनिक काल में भी विशेष महत्व प्राप्त है। वर्ष 1950 की भारत–नेपाल मैत्री संधि ने दोनों देशों के ऐतिहासिक संबंधों को राजनीतिक आधार प्रदान किया। इस संधि के अंतर्गत दोनों देशों के नागरिकों को आवागमन, व्यापार और निवास की विशेष सुविधाएँ प्रदान की गईं।

भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा व्यवस्था दोनों देशों के विश्वास और आत्मीयता का प्रतीक है। लाखों नेपाली नागरिक भारत में कार्य करते हैं और भारतीय नागरिक नेपाल में व्यापार एवं धार्मिक गतिविधियों में संलग्न हैं।

आज भी दोनों देशों के मध्य विवाह संबंध, सांस्कृतिक कार्यक्रम, धार्मिक यात्राएँ तथा व्यापारिक संपर्क निरंतर बढ़ रहे हैं। भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया में सहयोग, शांति और सांस्कृतिक एकता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

नेपाल में भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, वहीं भारत में भी नेपाली संस्कृति और परंपराओं का सम्मान किया जाता है। हिंदी, नेपाली और मैथिली भाषाएँ दोनों देशों के लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं।

निष्कर्ष :

भारत और नेपाल का संबंध हजारों वर्षों पुरानी साझा सांस्कृतिक, धार्मिक और पौराणिक विरासत पर आधारित है। राम–सीता विवाह, गौतम बुद्ध की परंपरा, शिव–पार्वती उपासना तथा हिमालय की देवभूमि की अवधारणा ने दोनों देशों को आत्मिक रूप से जोड़ रखा है।

भारत और नेपाल के संबंध केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि जन–जन की भावनाओं, विश्वास और सांस्कृतिक एकरूपता पर आधारित हैं। "रोटी–बेटी" का संबंध दोनों देशों की सामाजिक निकटता का प्रतीक है। धार्मिक यात्राएँ, सांस्कृतिक उत्सव, भाषाई समानता और साझा परंपराएँ दोनों देशों की मित्रता को और अधिक सुदृढ़ बनाती हैं।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत और नेपाल के संबंध दक्षिण एशिया में शांति, सहयोग और सांस्कृतिक समन्वय का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। दोनों देशों के मध्य पौराणिक और सांस्कृतिक संबंध आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, रामनाथ – नेपाल का इतिहास एवं संस्कृति।

2. उपाध्याय, बलदेव – भारतीय एवं नेपाली संस्कृति।
3. मिश्र, रामनारायण – भारतीय संस्कृति और नेपाल।
4. Michael Hutt — Nepal : A Cultural Study.
5. Drishti IAS — India and Nepal Relations.
6. वाल्मीकि – रामायण।
7. वेदव्यास – महाभारत।
8. राहुल सांकृत्यायन – बौद्ध संस्कृति और हिमालय।

Mail : vandanapg123@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 290-294

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Digital Inequality and the Reproduction of Social Stratification in South Asia : A Sociological Analysis

Dr. Ruqqia Hashmi

Assistant Professor, Department of Sociology,

Anjuman Arts, Science and Commerce College, Vijayapur, Karnataka, India.

Abstract :

The rapid diffusion of digital technologies has transformed communication, education, employment, governance, and social interaction across the globe. While digitalization is often promoted as a pathway to social inclusion and development, access to digital resources remains unevenly distributed. This paper examines digital inequality as a contemporary mechanism through which social stratification is reproduced in South Asia. Drawing upon Pierre Bourdieu's theory of cultural capital, Manuel Castells' concept of the network society, and digital divide scholarship, the study argues that unequal access to technology, digital literacy, and online opportunities reinforces existing disparities based on class, gender, education, and geography. The paper highlights how digital inequalities shape educational outcomes, employment opportunities, civic participation, and social mobility. Rather than reducing inequalities, digital technologies often reproduce pre-existing social hierarchies by privileging individuals and groups possessing greater economic and cultural resources.

The study concludes that addressing digital inequality requires not only technological expansion but also structural interventions aimed at promoting digital literacy, affordability, accessibility, and social justice. Understanding digital inequality as a sociological phenomenon is essential for achieving inclusive and sustainable development in South Asia.

Keywords : Digital Inequality, Social Stratification, Digital Divide, Cultural Capital, South Asia, Social Inclusion.

Introduction :

The twenty-first century has witnessed an unprecedented expansion of digital technologies. Internet connectivity, smartphones, artificial intelligence, digital governance, online education, and

social media platforms have become integral components of everyday life. Governments across South Asia increasingly view digital transformation as a catalyst for economic growth, social development, and improved governance. Initiatives promoting digital literacy, e-governance, and digital financial inclusion are often presented as solutions to longstanding social and economic challenges.

Despite these developments, access to digital technologies remains highly unequal. The COVID-19 pandemic revealed significant disparities in access to online education, remote employment, healthcare information, and government services. Individuals without reliable internet connectivity, digital devices, or technological skills were disproportionately disadvantaged. These disparities highlighted the emergence of digital inequality as a critical social issue.

Sociologists argue that technological innovations do not operate independently of social structures. Rather, access to and benefits derived from technology are shaped by existing inequalities related to class, gender, education, and geography. Consequently, digital technologies may reproduce rather than eliminate social inequalities. This paper explores how digital inequality functions as a contemporary mechanism of social stratification in South Asia.

Theoretical Framework :

Bourdieu and Digital Capital :

Pierre Bourdieu's theory of cultural capital provides a useful framework for understanding digital inequality. Bourdieu (1986) argued that social advantages are transmitted through access to cultural resources. Cultural capital exists in embodied, objectified, and institutionalized forms.

In contemporary society, digital skills and technological competencies can be viewed as embodied cultural capital. Access to smartphones, computers, and internet services represents objectified capital, while digital certifications and technological qualifications constitute institutionalized capital. Individuals possessing greater digital capital enjoy enhanced opportunities for educational achievement, employment, and social mobility.

Castells' Network Society :

Manuel Castells (1996) argues that contemporary societies increasingly operate through information networks. Access to these networks determines participation in economic, social, and political life. Those integrated into digital networks gain access to information and opportunities, whereas those excluded face marginalization. Consequently, digital exclusion becomes a new form of social exclusion.

Digital Divide Theory :

Digital divide scholarship identifies three dimensions of inequality :

- Access Divide – unequal access to devices and internet connectivity.

- Skills Divide – unequal digital literacy and competencies.
- Outcome Divide – unequal ability to convert digital access into social and economic benefits.

These dimensions demonstrate that digital inequality extends beyond simple technological access.

Digital Inequality and Social Stratification :

Digital inequality mirrors existing social divisions across South Asia. Economic resources significantly influence technological access. Wealthier households are more likely to possess computers, smartphones, broadband connectivity, and digital learning resources. Lower-income households often rely on shared devices and limited internet access.

Educational attainment further shapes digital participation. Individuals with higher levels of education typically possess stronger digital skills and greater confidence in navigating online environments. Educational institutions increasingly depend on digital technologies, making digital literacy essential for academic success.

Gender inequality remains a major challenge. In many South Asian societies, women and girls experience lower rates of internet usage and digital access than men. Economic dependence, cultural restrictions, and educational disparities contribute to this gendered digital divide. As a result, women often face barriers in accessing educational opportunities, online employment, and digital financial services.

Geographical disparities also contribute to digital inequality. Urban areas generally benefit from superior digital infrastructure, while rural and remote communities frequently experience poor connectivity and limited technological resources. Such spatial inequalities create unequal opportunities for participation in digital society.

Digital inequality directly affects social mobility. Access to online education, digital employment platforms, professional networking opportunities, and information resources increasingly determines life chances. Individuals possessing digital capital can acquire new skills, improve employability, and participate in knowledge economies. Conversely, those lacking digital resources face disadvantages that limit social advancement.

The relationship between digital inequality and citizenship is equally significant. Governments increasingly deliver services through digital platforms. Civic participation, political engagement, and access to public information often depend upon digital connectivity. Individuals excluded from digital spaces risk exclusion from democratic processes and public services.

From a sociological perspective, digital inequality demonstrates how technological change interacts with existing systems of power and privilege. Rather than creating a level playing field,

digital technologies frequently reinforce established social hierarchies. Digital capital has become a significant determinant of social position in contemporary societies.

Digital Inclusion and Social Justice :

Addressing digital inequality requires a comprehensive approach. Expanding technological infrastructure alone is insufficient. Policymakers must address affordability, accessibility, digital literacy, and social barriers that limit participation.

Educational institutions play a crucial role in promoting digital inclusion through skill development and equitable access to technological resources. Governments must prioritize rural connectivity, gender-sensitive digital policies, and affordable internet access. Civil society organizations can contribute by promoting digital literacy and community-based technological initiatives.

A sociological understanding of digital inequality emphasizes that technology is embedded within broader social structures. Consequently, efforts to achieve digital inclusion must address underlying social inequalities. Digital justice requires ensuring that all individuals possess the resources and capabilities necessary to participate meaningfully in digital society.

Conclusion :

Digital inequality has emerged as a defining feature of contemporary social stratification. While digital technologies offer significant opportunities for development and inclusion, access to and benefits derived from these technologies remain unevenly distributed. Drawing upon Bourdieu's theory of cultural capital and Castells' network society perspective, this paper has argued that digital resources function as a new form of capital influencing educational attainment, employment opportunities, civic participation, and social mobility.

In South Asia, digital inequality reflects and reinforces existing disparities based on class, gender, education, and geography. Consequently, digital exclusion should be understood not merely as a technological issue but as a broader sociological problem rooted in structural inequalities. Achieving inclusive digital development requires policies that address affordability, accessibility, digital literacy, and social justice. As societies become increasingly dependent on digital technologies, reducing digital inequality will be essential for promoting equitable and sustainable development.

References :

- Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), *Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education* (pp. 241–258). Greenwood Press.
- Castells, M. (1996). *The Rise of the Network Society*. Blackwell.

- Ragnedda, M. (2017). *The Third Digital Divide: A Weberian Approach to Digital Inequalities*. Routledge.
- Robinson, L., Cotten, S. R., Ono, H., Quan-Haase, A., Mesch, G., Chen, W., Schulz, J., Hale, T., & Stern, M. J. (2015). Digital inequalities and why they matter. *Information, Communication & Society, 18*(5), 569–582.
- van Dijk, J. (2020). *The Digital Divide*. Polity Press.
- Warschauer, M. (2004). *Technology and Social Inclusion: Rethinking the Digital Divide*. MIT Press.
- Wei, L., & Hindman, D. B. (2011). Does the digital divide matter more? Comparing the effects of new media and old media use on political participation. *Mass Communication and Society, 14*(2), 216–235.

Email: hashmiruqqia@gmail.com. ORCID: 0000-0002-8782-3100.
Mobile: +91 9902153784.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2026 Page No. : 295-297

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नेपाल और भारत : मानवाधिकार पर सांझा वैश्विक परिदृश्य

डॉ. मो. रियाज खान
हिंदी विभागाध्यक्ष
बी. एम. एस. महिला महाविद्यालय, स्वायत्त, बेंगलुरू।

परिचय :

नेपाल और भारत दक्षिण एशिया के दो निकटतम पड़ोसी देश हैं, जिनके बीच साझा सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक संबंध हैं। दोनों देशों में लोकतंत्र, संवैधानिक ढांचे और मानवाधिकारों की रक्षा के प्रयास देखे जाते हैं, हालांकि चुनौतियां भी पर्याप्त हैं। 'सांझा वैश्विक परिदृश्य' से तात्पर्य है कि दोनों देश संयुक्त राष्ट्र (UN), क्षेत्रीय मंचों (जैसे SAARC, BIMSTEC) और द्विपक्षीय सहयोग के माध्यम से मानवाधिकार मुद्दों पर समान दृष्टिकोण अपनाते हैं, जैसे महिला अधिकार, बाल अधिकार, जातीय/धार्मिक अल्पसंख्यकों की सुरक्षा, और मानव तस्करी का मुकाबला।

दोनों देशों के बीच खुली सीमा (लगभग 1850 किलोमीटर) मानवाधिकारों के संदर्भ में एक दोधारी तलवार साबित होती है। यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है, लेकिन साथ ही महिलाओं, बच्चों और श्रमिकों की तस्करी का प्रमुख मार्ग भी बन गई है। नेपाल से भारत की ओर महिलाओं और लड़कियों की तस्करी यौन शोषण और घरेलू काम के लिए एक गंभीर समस्या है। Maiti Nepal और अन्य NGOs के अनुसार, हजारों मामले दर्ज होते हैं।

दोनों देशों के संविधान मौलिक अधिकारों की गारंटी देते हैं। भारत का संविधान (1950) और नेपाल का संविधान (2015) सामाजिक–आर्थिक अधिकारों पर जोर देते हैं। फिर भी, दोनों में जाति–आधारित भेदभाव, लैंगिक हिंसा, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध जैसी समस्याएं मौजूद हैं। यह शोध पत्र इन साझा पहलुओं, चुनौतियों और वैश्विक सहयोग का विश्लेषण करता है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ :

भारत–नेपाल संबंध 1950 के शांति और मित्रता संधि से परिभाषित हैं, जो सुरक्षा, व्यापार और पारगमन को नियंत्रित करता है। दोनों देशों में हिंदू–बौद्ध सांस्कृतिक विरासत साझा है, जो मानवाधिकारों की अवधारणा को प्रभावित करती है – जैसे समानता और न्याय। नेपाल में 2006 के शांति समझौते के बाद गणतंत्र स्थापना हुई, जबकि भारत में स्वतंत्रता के बाद संवैधानिक लोकतंत्र मजबूत हुआ।

मानवाधिकारों के क्षेत्र में, दोनों देश UN मानवाधिकार घोषणा (UDHR) के सिद्धांतों को मानते हैं। नेपाल ने 1990 के दशक में लोकतंत्र बहाली के बाद और 10 वर्षीय माओवादी संघर्ष (1996–2006) के बाद

संक्रमणकालीन न्याय की प्रक्रिया अपनाई। भारत ने स्वतंत्रता के बाद अल्पसंख्यकों और दलितों के अधिकारों पर जोर दिया। दोनों में ट्रांसजेंडर और LGBT अधिकारों में प्रगति हुई है, नेपाल इसे अग्रणी माना जाता है।

दोनों देशों में मानवाधिकार स्थिति : तुलनात्मक विश्लेषण –

- **समानताएं :**

– **लैंगिक हिंसा और महिला अधिकार :** दोनों देशों में घरेलू हिंसा, बाल विवाह और तस्करी प्रमुख मुद्दे हैं। नेपाल से भारत में महिलाओं की तस्करी एक साझा चिंता है, Maiti Nepal जैसे संगठन सक्रिय हैं।

– **जाति/समुदाय आधारित भेदभाव :** भारत में दलित और आदिवासी, नेपाल में दलित और जनजाति समुदायों के साथ भेदभाव। दोनों में आरक्षण/कोटा प्रणालियां लागू हैं।

– **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता :** पत्रकारों पर हमले, सोशल मीडिया प्रतिबंध और सभा की स्वतंत्रता पर अंकुश दोनों में देखा जाता है।

– **पुलिस/सुरक्षा बलों द्वारा दुरूपयोग :** यातना, मनमानी हिरासत और हत्याएं रिपोर्टेड हैं।

- **अंतर :**

नेपाल में संक्रमणकालीन न्याय (माओवादी काल के अपराध) और तिब्बती शरणार्थियों पर चीन का दबाव एक विशिष्ट मुद्दा है। भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों (विशेषकर मुस्लिम) पर हमलों और कश्मीर/मणिपुर जैसे क्षेत्रीय संघर्षों की रिपोर्टें अधिक प्रमुख हैं। न्छ विशेषज्ञों ने भारत में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर चिंता जताई है।

साझा वैश्विक परिदृश्य और अंतरराष्ट्रीय सहयोग :

दोनों देश UN Human Rights Council (HRC) में सक्रिय हैं। भारत 2026–28 के लिए HRC सदस्य चुना गया है। नेपाल UN के साथ शरणार्थी और बाल अधिकारों पर सहयोग करता है।

क्षेत्रीय मंच :

– **SAARC और BIMSTEC :** SAARC में मानवाधिकार तंत्र की स्थापना के प्रयास (जैसे South Asians for Human Rights & SAHR) दोनों देशों की भागीदारी से हुए। BIMSTEC में आतंकवाद, तस्करी और आपदा प्रबंधन पर सहयोग मानवाधिकारों से जुड़ा है।

– **द्विपक्षीय :** सीमा प्रबंधन, तस्करी रोकथाम और न्यायिक सहयोग (2025 में सुप्रीम कोर्ट MoU)। भारत नेपाल को विकास सहायता देता है, जो सामाजिक–आर्थिक अधिकारों को मजबूत करता है।

UN Universal Periodic Review (UPR) में दोनों देशों ने समान सिफारिशें प्राप्त कीं : यातना विरोधी संधि की पुष्टि, अल्पसंख्यक सुरक्षा, और NGO पर प्रतिबंध हटाना।

चुनौतियां और सुझाव :

– सीमा विवाद (कलापानी आदि) और 2015 मधेसी संकट ने संबंधों को प्रभावित किया, जो मानवाधिकार संवाद को जटिल बनाते हैं।

– दोनों में Impunity (दंडमुक्ति) और न्यायिक स्वतंत्रता की कमी।

– **सुझाव :** संयुक्त कार्यबल तस्करी और यातना पर; SAHR जैसे नागरिक समाज मंचों को मजबूत करना, UN विशेषज्ञों की यात्राओं की अनुमति।

निष्कर्ष :

नेपाल और भारत के मानवाधिकार परिदृश्य साझा चुनौतियों और अवसरों से भरे हैं। सांस्कृतिक निकटता और लोकतांत्रिक मूल्य उन्हें वैश्विक मंचों पर सहयोगी बनाते हैं। मजबूत द्विपक्षीय और क्षेत्रीय सहयोग से दोनों देश UDHR के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं, जिससे दक्षिण एशिया में मानवाधिकार संस्कृति मजबूत होगी।

संदर्भ :–

1. US State Department, 2023 Country Reports on Human Rights Practices: Nepal.
2. Wikipedia : India-Nepal Relations (संदर्भित ऐतिहासिक तथ्य)।
3. Human Rights Watch, World Report on Nepal/India?
4. SAHR About Us?

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

- United States Department of State. (2023). *2023 Country Reports on Human Rights Practices: Nepal*. https://www.state.gov/reports/2023-country-reports-on-human-rights-practices/nepal
- Human Rights Watch. (2025). *World Report 2025: Nepal*. https://www.hrw.org/world-report/2025/country-chapters/nepal
- Wikipedia. *India–Nepal relations*. (Accessed 2026).
- South Asians for Human Rights (SAHR). *About Us*. https://southasianrights.org/about-us/
- Singh, S. "Realizing Economic and Social Rights in Nepal." Harvard Human Rights Journal.
- OHCHR Reports on India and Nepal (various).
- India Foundation & other bilateral documents.

drriyazhindi@gmail.com
8904461826

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor : 7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

गिना प्रकाशन द्वारा
जयपुर, भिवानी एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2321-0540
Impact Factor : 5.621

KANCHANLATA

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

Managing Editor :
Dr. Mukesh Verma
M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लि ए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊ संग बोई भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. अवनिन्द्र कुमार

शोधार्थी, बौद्ध–अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

for the paper titled

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी क्षितिज (ध्यान सूत्र : एक व्यावहारिक संदर्भ में)

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 13-18

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

अनामिका केण्डिया

पी.एच.डी. शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महू, इंदौर (म.प्र.)

for the paper titled

भारत–नेपाल संबंधों में साइबर सुरक्षा सहयोग की आवश्यकता : वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 19-23

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Anita Solanki

Asst. Professor, Department of Zoology,
BLP. Govt. P. G. College Mhow,
DAVV University Indore, M.P., India.

for the paper titled

Shared Technology for Pollution Control of Himalayan Rivers : A Study Review

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 24-32

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

अंजना ठाकुर

शोधार्थी, दीनदायल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला।

for the paper titled

सम्प्रभुता और समानता :
आधुनिक कूटनीति के आधार स्तंभ

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 33-35

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Archana Dubey

Librarian,

St. Aloysius College Jabalpur.

for the paper titled

Availability and Impact of Open Educational Resources for Researchers and Scholars in India and Nepal: Advancing Digital Knowledge Sharing and Cross-Border Academic Collaboration

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 36-41

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. आरती सरोज

असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0प्र0।

for the paper titled

नेपाल के संस्कृत-साहित्य पर महाकवि कालिदास का प्रभाव

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 42-46

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. बबिता सिंह

सहायक प्राध्यापक (दर्शनशास्त्र विभाग)

माता जीजाबाई शास. (स्वशासी) स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय,

इंदौर (म.प्र.)

for the paper titled

जनकपुर– रामायणकालीन संस्कृति में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम – एक दार्शनिक विश्लेषण

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 47-51

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Baburam K. C.

Principal, Mahan Siddhartha High School, Chabahil, Kumarigal, Kathmandu, Nepal.

for the paper titled

SPIRITUAL EDUCATION AND CULTURAL AWARENESS AS CATALYSTS FOR STRENGTHENING INDO-NEPAL RELATIONS

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 52-56

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

प्रोफेसर चन्द्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

for the paper titled

भारत–नेपाल के युगीन संबंधों का एक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 57-64

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. दीपिका शर्मा

for the paper titled

सांस्कृतिक सेतु तथा भाषाई आदान प्रदान : हिंदी साहित्य के विकास में नेपाली साहित्यकारों की देन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 65-68

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

दीत ओड़ेया

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,
रांची विश्वविद्यालय, रांची।

for the paper titled

मुण्डाओं में विवाह परंपराओं का दस्तावेजीकरण भारत के संदर्भ में

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 69-75

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Dilip Kumar Parsendiya

ASSISTANT PROFESSOR (COMMERCE)
GOVT. ADARSH P. G. COLLEGE, JHABUA (M.P.)

for the paper titled

विमुद्रीकरण (DEMONETIZATION) और नेपाल पर इसका प्रभाव

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 76-81

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Indu Kumari

Assistant Professor (Senior Scale)
H.O.D, Economics, B.N. College, Bhagalpur, T.MB.U

for the paper titled

An Empirical Study on Foreign Trade of Nepal with India : Strategies for increasing its export

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 82-88

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

जसकरण सिंह गिल

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इंदौर।

नीलम भटेले

कन्या कमलाराजा गर्ल्स पीजी कॉलेज, मध्य प्रदेश ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

for the paper titled

नेपाल की शांति प्रक्रिया में भारत का कूटनीतिक योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 89-95

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. जितेन्द्र कुमार

सहायक आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

for the paper titled

नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन और भारत–नेपाल संबंधों का नया आयाम

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 96-101

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

ज्योति

सहायक प्रोफेसर, आर. पी.एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन खोड अटेली– मंडी (महेंद्रगढ़) हरियाणा।

for the paper titled

जलवायु परिवर्तन : ग्लेशियरों का पिंघलना और चुनौतियाँ

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 102-105

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Krishnakant Sharma,
Akash Pandey, Research Scholars
School of Social Sciences, DAVV Indore (M.P)

for the paper titled

The 1950 Indo-Nepal Treaty of Peace and Friendship : An Article-by-Article Analysis and its Contemporary Relevance

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 106-110

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

लेखन प्रकाश मुण्डा

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,
रांची विश्वविद्यालय रांची।

for the paper titled

जनकपुर में मुण्डाओं का रामायण कालीन संस्कृति का जीवंत केंद्र

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 111-116

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. के. माधवी

एसोसिएट प्रोफेसर, मंच कला विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

for the paper titled

प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 117-119

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. बी. मल्लिका

एम.ए., पी.जी.डी.टी., पीएच.डी.,
अतिथि शिक्षिका, हिंदी विभाग,
गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान (मानित विश्व विद्यालय), गांधीग्राम, तमिलनाडु।

for the paper titled

भारत और नेपाल में बौद्ध धर्म से संबंध विभिन्न पहलुओं

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 120-123

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Manish Choudhary

ASSISTANT PROFESSOR (POLITICAL SCIENCE)
MATA JIJA BAI GOVT. GIRLS P.G. COLLEGE,
INDORE (M.P.)

for the paper titled

भारत के संदर्भ में सार्क (SAARC) एवं बिम्सटेक (BIMSTEC) संगठनों का तुलनात्मक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 124-127

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता कश्यप

प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

शासकीय टी.सी.एल. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जॉजगीर।

for the paper titled

चक्रीय अर्थव्यवस्था

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 128-131

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

प्रो. मनोहर सिंह मेवाडा

सहायक प्राध्यापक (विधि)

शासकीय विधि महाविद्यालय, शाजापुर, म. प्र.।

for the paper titled

नेपाल और भारत में मनाए जाने वाले साझा त्योहार : एक सांस्कृतिक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 132-135

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

नवीन कुमार मिश्र

शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा,
नागपुरी विभाग (राँची विश्वविद्यालय), झारखण्ड, भारत।

for the paper titled

आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का साझा विकास – भारत और नेपाल के संदर्भ में

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 136-137

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

नेहा नाज

शोधार्थी, मुंगेर विश्वविद्यालय।

जर्नल श्रेणी : अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन शोध पत्र –दक्षिण एशियाई भू–राजनीति एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।

for the paper titled

स्थल–रूद्ध नेपाल और समुद्री पहुँच : चीन के रणनीतिक विस्तार के परिप्रेक्ष्य में भारत की पारगमन कूटनीति

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 138-142

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

लेफ्टिनेंट डॉ. प्रमिला कबीर कुरेठिया

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान,
माता जीजाबाई शासकीय स्वशासी स्नाकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
मोती तबेला, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत।

for the paper titled

सीमापार लोकतंत्र की यात्रा : भारत के चुनाव आयोग और नेपाल के मध्य सहयोग का तुलनात्मक विश्लेषण

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 143-146

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. प्रतिभा राय

सहा. प्राध्यापक,

माता जीजाबाई शास. कन्या महाविद्यालय, इन्दौर, म.प्र.।

for the paper titled

भारत और नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत में नाथ सम्प्रदाय और गुरू गोरखनाथ का प्रभाव : एक मूल्यांकन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 147-149

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Pratyush Kumar
Student,
Delhi School of Journalism.

for the paper titled

Media Representation of Janakpur as a Living Center of Ramayana-Era Culture: Implications for India-Nepal Cultural Relations

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 150-153

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Pravesh Bhalse

Research Scholar, Department of Political Science,
Mata Jijabai Govt. Girls PG College, Indore (M.P) India

for the paper titled

India's Neighbourhood First Policy and Nepal : Advancing Regional Integration and Sustainable Partnership in South Asia

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 154-158

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

प्रिन्स कुमार

यूजीसी–नेट–जेआरएफ, इतिहास,
वरिष्ठ शोध अध्येता, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर।

for the paper titled

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 159-164

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Priya Singh

Assistant Professor,
Department of Commerce and Management Studies
Mahatma Gandhi Kashi Vidhyapith University, Varanasi.

for the paper titled

Varanasi : A Historical Hub for Nepali Scholars and Education

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 165-170

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Ragini

Assistant Professor, Dept. of Sociology,
Arya Kanya Degree College, AoU, Prayagraj.

for the paper titled

Climate Change and the Cryosphere: Melting Glaciers and Challenges in Hindu Kush Himalayan

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 171-176

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Rajan Kar, Researcher,
Dr. Sephali Pradhan, Supervisor,
Shivmani Home, Near Trauma Center,
Talheti, Aburoad, Raj, 307510
for the paper titled

Use of Nepali Handicrafts in Indian Temples

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 177-179

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Ram Ashish Yadav

Research Scholar,
Singhania University, Pachheribari,
Jhunjhunu, Rajasthan

for the paper titled

JANAKPUR : A LIVING CENTER OF RAMAYANA-ERA CULTURE

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 180-183

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. रामकली शर्मा

विभागाध्यक्षा, सुराणा कॉलेज पीन्या,
बैंगलोर, कर्नाटक।

for the paper titled

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेपाली सेनानियों का योगदान

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 184-189

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Raushan Kumar

Research Scholar, Department of Political Science
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi- 221002

for the paper titled

हिमालयी संगम का भविष्य : भारत–नेपाल संबंध एवं भारत के आंतरिक सुरक्षा परिदृश्यों में मधेशी समुदाय की भूमिका

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 190-196

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

रविन्द्र सोलंकी

पीएचडी शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

for the paper titled

ग्रामीण कृषक जीवन में ई–गवर्नेंस का प्रभाव : भारत और नेपाल का एक तुलनात्मक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 197-199

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

समीक्षा झा, शोधार्थी

प्रो. चंद्रशेखर सिंह

समाज कार्य विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

for the paper titled

मादक पदार्थों और अवैध हथियारों की तस्करी का समाज पर प्रभाव एवं चुनौतियों का एक अध्ययन (भारत और नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों का एक अध्ययन)

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 200-204

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Sanjay Kumar Sinha

Assistant Professor, P.G Department of Geology.
S.N.S.R.K.S. College, Saharsa.
B.N. Mandal University, Madhapura (Bihar).

for the paper titled

Climate Change : Melting Glaciers and the Challenge

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 205-210

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सरोज बाला श्याग बिश्नोई

सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान,
शास. विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मनेन्द्रगढ़, जिला–एम.सी.बी. (छ. ग.)

for the paper titled

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 211-217

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Seema Kumari, Department of Zoology,
Dronacharya Government College, Gurugram 122001, India
Umesh Kumar, Department of Zoology,
MNS Government College, Bhiwani 127021, India.

for the paper titled

Sultanpur National Park as a Wintering Ground: Linking the Indo-Gangetic Plains with Himalayan Avian Migration Routes

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 218-221

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सेवन्ती डावर

सहायक प्राध्यापक–हिन्दी

शासकीय कन्या महाविद्यालय, जिला– खरगोन, मध्यप्रदेश (भारत)

for the paper titled

पारंपरिक लोक संगीत–गंधर्व और भारतीय लोक वाद्ययंत्र (नेपाली और भारतीय वाद्ययंत्र के संदर्भ में)

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत–नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 222-226

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. शबनम खान

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग माता जीजाबाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इंदौर (म.प्र.), भारत।

for the paper titled

नेपाली साहित्य में भारतीय कवियों का प्रभाव

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 227-231

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. शर्मिला चौहान

सहायक प्राध्यापक – हिंदी,
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय,
मोती तबेला इंदौर (म.प्र.), भारत

for the paper titled

जनकपुर : रामायण कालीन संस्कृति का जीवन केंद्र तथा भारत नेपाल के संबंध

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 232-235

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

शोभा मेवाड़ा

शोधार्थी, महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल, म.प्र.।

for the paper titled

नेपाल में पाली और प्राकृत भाषाओं का संरक्षण

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 236-238

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

सिंगराय मुण्डा

शोधार्थी, विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

for the paper titled

नेपाल के प्रमुख त्योहार (दशाई, तिहार) और भारतीय रूप

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 239-243

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सोनम गुप्ता

सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग,
आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उ0 प्र0।

for the paper titled

नेपाल की अर्थव्यवस्था में भारतीय विदेशी प्रत्यक्ष निवेश : एक विश्लेषण

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 244-251

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Sonam Yadav

Assistant Librarian,
St. Aloysius College, Jabalpur, Madhya Pradesh, India

for the paper titled

Digital Payments and UPI Expansion in Nepal : Opportunities and Challenges for India–Nepal Economic Cooperation

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 252-257

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सुनिता सारस्वत

सह–प्राध्यापक, शिक्षा विभाग,
सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (झुंझुनू) राज।

for the paper titled

प्राचीन भारत और नेपाल के पौराणिक संबंध

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 258-263

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

तृप्ति मौर्या

शोध छात्रा,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

for the paper titled

नेपाल की लैंड-लाक्ड से लैंड-लिंक्ड बनने की यात्रा

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 264-268

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. विनीता भालसे

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग,
माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय मोतीतबेला,
इंदौर (म.प्र) भारत।

for the paper titled

सार्क के पुनरुद्धार में भारत और नेपाल की भूमिका : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं भविष्य की दिशा

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 269-273

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

Impact Factor : 8.642

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Vinita Swarnkar

Assistant Professor. Psychology,
Govt. J. Y. C. G. College, Raipur (C.G.)

for the paper titled

Himalaya Sangam : A Global Model For World Peace and Stability

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 274-279

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Yash Singh Thakur

Research Scholar, Department of Political Science,
Mata Jeejabai Govt. PG Girls College, Moti Tabela, Indore (M.P.)

for the paper titled

Cartographic Nationalism and Bilateral Diplomacy : From Historical Boundaries to Contemporary Politics in the Nepal–India Border Dispute

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 280-284

Editor
Dr. Naresh Sihag Advocate
M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. वंदना चौहान

प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग

माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

for the paper titled

प्राचीन भारत एवं नेपाल के पौराणिक संबंध धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 285-289

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

Dr. Ruqqia Hashmi

Assistant Professor, Department of Sociology,
Anjuman Arts, Science and Commerce College, Vijayapur,
Karnataka, India.

for the paper titled

Digital Inequality and the Reproduction of Social Stratification in South Asia : A Sociological Analysis

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज
July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 290-294

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil.
Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

9 772395 711007

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152

ISSN:2395-7115

Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

INTERNATIONAL PEER REVIEWED REFERED AND INDEXED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES

Published by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Email : grsbohal@gmail.com Website : www.bohalshodhmanjusha.com

Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. मो. रियाज खान

हिंदी विभागाध्यक्ष

बी. एम. एस. महिला महाविद्यालय, स्वायत्त, बेंगलुरू।

for the paper titled

नेपाल और भारत : मानवाधिकार पर सांझा वैश्विक परिदृश्य

Published in Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115

हिमालयी संगम : भारत-नेपाल के युगीन संबंधों एवं भविष्य के बहुआयामी सहयोग के नए क्षितिज

July 2026, Vol. 24 (Special Issue), Page No. 295-297

Editor

Dr. Naresh Sihag Advocate

M.A., LL.B. (Hon's), M.A.J.M., M.Lib.& Information Science, M.Phil. Ph.D., D.Litt (Nepal) Diploma Panchayati Raj (Silver Medalist)

#202, Old Housing Board, Bhiwani-127021 (Hry.) 8708822674, 9466532152